डा० सत्यनारायण

रोमाञ्चक रूसमें

लेखक—

डाक्टर सत्यनारायण

बेला, नाद्या, वान्का, निकिता
तथा अन्यान्य

सोवियत युवा-युवतियोंको—

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक वास्तवमें 'आवारेकी यूरोप-यात्रा' * का दूसरा भाग है। कहानीका सिलसिला भी उसीके आगेका है। यूरोप-यात्रा नैपल्समें समाप्त होती है और वहींसे रूस-यात्रा शुरू होती है। दोनों यात्राओंके ढग बहुत कुछ एक-से ही है।

अपने देश और विशेषकर साहित्यिकोंकी यात्रा-प्रणाली याद कर मुझे भय होता है, शायद ये दोनों ही यात्रायें कुछ लोगोंको बेढंगी जँचे। फिर भी मुझे हिन्दी पाठकोंकी बढती हुई रुचिपर काफी भरोसा है। इसलिए ये यात्रायें कहाँतक सफल हुई हैं इसका निर्णय हम उनके ही ऊपर छोड़ते है।

इस पुस्तकका नामकरण मेरे एक बड़े भाईने किया है। प्रेसमें जानेके पहले इसे आद्योपान्त देख डालनेका कष्ट भी उन्होंने उठाया है तथा इसके गीतोंका श्रेय भी उन्हींको है। किन्तु, वे नहीं चाहते कि मै उनका नाम दूँ और न मैं ही 'कोरे कागद' पर धन्यवादके दो शब्द लिख कर उनके स्नेहका मूल्य चुकाना चाहता हूँ।

उनके अतिरिक्त श्रीयुत भागवतशरण उपाध्याय एम० ए०, एलएल० बी० को उनकी सलाहों तथा श्री धनुषधारीजी प्रभृति काशी विद्यापीठके छात्रोंको उनकी सहायताओंके लिए इस स्थलपर याद न करके मैं कृतघ्नताका दोषी नहीं बनना चाहता। मै उन सभीका आभारी हूँ। साथ ही यह लिख देना भी आवश्यक समझता हूँ कि उनकी सहायताओंका मूल्य मेरे तुच्छ धन्य-वादसे कहीं अधिक है।

लखनऊ
अक्टूबर १९३९

सत्यनारायण

---

* यह पुस्तक पिछले साल पुस्तक-भंडार, लहेरियासरायसे निकली है।

सूची

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

तृतीय खण्ड

चतुर्थ खण्ड

पंचम खण्ड

" साश्का "

प्रथम खण्ड

रोमाञ्चक रूसमें

तवारिश*

१

" तवारिश...तवारिश..."

किसी अपरिचित युवतीका कठस्वर—

" तवारिश ! "

समुद्रका किनारा, स्मशान-घाट, आधी रात,—प्रकृतिके ऐसे ताडव-नृत्यके समय यह कैसी आवाज !

" तवारिश, उठो तवारिश ! "

---

* रूसी शब्द ' तवारिश ' दोस्त, भाई, मित्रके अर्थमे प्रयोग किया जाता है। साधारण समाजमे व्यवहार किये जानेवाले इस शब्दको लेनिनने अपने साथियोंको सबोधन करनेके लिए प्रचलित किया था। अंग्रेज़ीका ' कामरेड ' शब्द रूसी ' तवारिश ' का पूर्णतया द्योतक नहीं है।

इस बार उसने मेरा हाथ पकड़कर खींचा। मैं जग पड़ा। वास्तवमें एक युवती सामने खड़ी थी। उसने अपने हाथोंका सहारा दे मुझे खड़ा किया। वह क़दमें मुझसे थोड़ी छोटी थी। उसका चेहरा निकट रहनेपर भी अंधकारके कारण धुँधला दीख रहा था।

सरके बाल पतले रूमालके भीतरसे चमक जाते थे। ललाटकी बाईं ओरके बाल अब भी सँवारी हुई अवस्थामें थे। कुर्ती भी काले रंगकी थी। गला अँग्रेजी अक्षर V के रूपमें दीख रहा था। मुखका आकार गोल, आँखें बड़ी बड़ी, नाक थोड़ी चिपटी-सी दीखती थी। हाव-भावमें स्त्री-सुलभ कोमलताके साथ ही साथ साहस और बहादुरीके भाव टपक रहे थे।

"तू कौन?" मैंने पूछा।

"तवारिश।"

"मुझे क्यों जगाया?" मेरा स्वर रूखा हो चला।

वह मुसकराई।

"मेरी संगिनी कहाँ गई?" चारों तरफ देखकर मैंने पूछा।

"उसे मेरे साथी सुरक्षित स्थानपर ले गये।"

"आखिर कहाँ?"

बिना कुछ उत्तर दिये वह मुझे खींच ले चली।

"नहीं," बाधा देते हुए मैंने कहा, "उसे छोड़कर मैं नहीं जा सकता।"

"आओ, चलो भी तो सही।"

"नहीं, नहीं, उसके बिना मैं नहीं,—हरगिज़ नहीं..."

"यह क्या बच्चोंकी तरह पाँव पटक रहे हो!" उसने गंभीर होकर कहा, "क्या यह भी भावुकता दिखलानेका समय है?"

वह मुझे खींच ले चली।

"मुझे ले कहाँ जा रही हो?"

" वहाँ । " उसने जहाजकी रोशनी दिखलाते हुए कहा ।

धुँधली-सी चेतना आई । वास्तवमे आज ही तो मेरा जहाज खुलने-वाला था । पर वह तो शामके ही समय खुल गया होगा !

" लेकिन वह तो मेरा जहाज नहीं," रोशनीकी ओर थोडा ध्यानसे देखकर मैंने कहा ।

" खैर, वहाँ तक चलो तो सही ! "

" किस लिए ? " मैं रुक गया ।

" भावुकता छोडो, " वह भी तन कर खडी हो गई और तीव्र शब्दोमे बोली, " भावुकता ही जीवन नही । "

उसने मेरे कधेपर हाथ रखा । मुझे बिजली-सी लगी । हाथ हटा देनेका साहस नहीं हुआ । उसकी भी आगेकी बाते शरारती बच्चोको फुसलानेकी भाँति होने लगी ।

उसके साथ चलनेके लिए मै बाध्य हुआ ।

२

" भाई मेरे ! " रास्तेमे अपने छोटे भाईकी भाँति वह मुझे समझाने लगी, " बडी बेरहमीके सग्रामका ही नाम जीवन है । इस संग्राममें विश्राम नहीं, अस्त्र रखना नही, सन्धिकी आशा नहीं । अगर तुम मनुष्य बने रहना चाहते हो तो सोते-जागते, उठते-बैठते अहर्निशि तुम्हे जूझते ही रहना पडेगा । "

" लेकिन सगिनीको. . "

" तुम चाहो या न चाहो, उसे छोड़ तुम्हे जीवित रहना ही पडेगा ।" उसने बात काटते हुए कहा, " प्रेम और आनन्द धोखा देनेवाले क्षणिक मित्र हैं, उनका एकमात्र काम हृदयको दुर्बल बना डालना है । सबसे बडी लड़ाई तो यहीं हुआ करती है । तुम्हे अपनी ओरसे ललकार कर

कहते रहना पड़ेगा, ‘ संसारकी कोई भी शक्ति हमे दुर्बल नहीं बना सकती ! मैं दुर्बल नहीं बनता, नहीं बनता, हरगिज नहीं बनता ! ’ ”

मेरी ऑखोके सामने इस समय भी अँधेरा था। संसार वीरान बन चुका था। दुर्बलता, निरुत्साह और हताशाको ही मैं प्रकृतिका नियम मान सकता था,—सग्रामको हरगिज नहीं। इसीलिए मैंने कहा भी—

“ संग्रामसे होता ही क्या है ? सबका अंत तो मृत्यु ही है ! ” मै एक दीर्घ सॉस लेने जा रहा था।

“ यह क्यो भूल जाते हो,” उसने टोका, “ तुम एक धातु-विशेषके बने हो। यदि यो ही कीडे-मकोडोकी तरह मरना रहता और वही यदि उचित भी होता तो तुम अपनेको ‘ मनुष्य ’ कहलानेका अधिकारी नहीं मानते। इस नामका हकदार तुम अपनेको समझते हो इसीलिए आओ, मृत्युसे भी एक पकड भिड जाओ ! भय कैसा ? तकलीफ़े बर्दाश्त करो, हृदयको टुकडे टुकडे हो जाने दो, मर्म-स्थल भिद जाने दो, पर बने रहो वही जो रहना तुम्हारा कर्तव्य है ! यह क्यो भूल जाते हो कि तुम आदमी हो ?

“—‘आदमी’ कहलानेके हकदार संग्रामके लिए ही जीते हैं। तुम सुख और आरामके लिए नहीं बनाये गये। किसीके प्रेम-पात्र बने रहनेका मिथ्या स्वप्न देखते रहना—उसीमे भूले रहना तुम्हारा काम नहीं। तुम बनाये गये हो आदमी बने रहनेके लिए। इस अधिकारको कायम रखनेकी लडाईमे डटे रहना तुम्हारा स्वाभाविक लक्षण है। तुम्हारे लिए विश्राम नहीं, थकावट नहीं, पीछे हटना नही, हार नही। सग्रामका ही दूसरा नाम मनुष्य-जीवन है भाई ! ”

३

किलेकी घडीने दो बजाया। नैपल्सकी सडकोपर सन्नाटा था। आँधी शान्त हो चुकी थी। बिजली बहुत दूर समुद्रके उस पार क्षितिजमे चमक

रही थी। स्वयं समुद्र किसी जंगलमें छिपी झीलकी तरह मूक बन रहा था। 'बीत गया'—'बीत गया' के स्वरमें चहचहाता हुआ एक पक्षी हमारे सरसे गुजर गया। उस भयानक बवंडरके वक्त उसने शायद अपना जीवन अन्त हुआ-सा समझा था पर अब वही फिरसे नये जीवनकी ताकमें उमंग-भरी उड़ान लगाता जा रहा था।

जहाज-घाटकी रोशनीके पास पहुँचते ही मैं भी बहुत कुछ सम्हल चुका था। एक बिजलीके खम्भेके पास ही जहाज-घाटका फाटक था। वहाँ खड़े संतरियोंने हमें फाटकसे घुसते देखा। इटालियन ज़बानमें उन्होंने कुछ पूछा। तवारिशने उसका चलते चलते ही कुछ उत्तर दे दिया। हम लोग डॉक तक बेखटके आ पहुँचे।

एक धीमी रोशनीके नीचे हम जा खड़े हुए। मैंने उसके चेहरेकी ओर देखा: भरा हुआ। कंधे गोल, ललाट उन्नत। यदि उसकी आँखें उतनी बड़ी न होतीं तथा उनमें उतनी तीव्रता न रहती तो अवश्य ही उसकी गिनती विशेष सुन्दरियोंमें की जा सकती। चेहरेकी रेखाओंमें थोड़ी सख्ती थी।

"तुम हिन्दुस्तानी हो?" उसने सरसे रूमाल खोल बाल ठीक करते हुए पूछा।

"हाँ, क्यों?"

"मैं तुम्हारा इतिहास जानती हूँ।"

"सो कैसे?"

"यहाँकी अपनी पार्टीद्वारा।"

मुझे थोड़ा संतोष हुआ।

"हम यहाँ किस लिए खड़े हैं?" मैंने पूछा।

"उस जहाजमें सवार होनेके लिए।"

"वह कहाँ जायगा?"

"तुम जाना कहाँ चाहते हो?" उसने मुसकराते हुए पूछा।

" मातृ-भूमि ! पर आज न...। "

जहाजसे उतरकर एक व्यक्ति हमारे पास आया और उसने साथ चलनेका इशारा किया।

मै अपने स्थानपर ही रुका रहा। उसने धीरे पर तीव्र शब्दोमे कहा—

" आओ तवारिश, डरनेकी कोई बात नही। "

४

उन्होने मुझे एक बडे ही संकीर्ण स्थानमे छिपा दिया। उस स्थानको कोठरी न कह कर लोहेका बडा सन्दूक कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। वहाँ तनकर खडे होनेकी गुजायश नही थी। पाँव फैलाकर लेटा भी नहीं जा सकता था। किसी तरफ उचकना भी कठिन था क्योंकि वहाँ लोहेकी कीले निकली हुई थी।

उस पिंजड़ेका फाटक बन्द करनेके पहले तवारिशने मुझे सूचित किया कि इटालियन मज़दूर पार्टीके आदेशानुसार मैं सोवियट यूनियन भेजा जा रहा हूँ। यह इच्छा मैने वास्तवमे कई बार प्रकट की थी पर वह ठीक इस मौकेपर सफलीभूत होगी, इसकी आशा नहीं थी। तवारिशने जाते जाते कहा—

" फैसिस्ट सिपाही जॉच करने आयेंगे, इसलिए तुम्हे छिपाना पड़ रहा है। "

बिना जायज पासपोर्टके सफर करनेवालोंके सामने बहुत तरहकी दिक्कते आया करती हैं, यह मै जानता था। इसीलिए उसकी बातोपर मैंने विश्वास भी कर लिया।

" जहाज खुलेगा कब ? " मैंने पूछा।

" मालकी चढाई खतम होते ही। "

" वह कब तक खतम होगी ? "

" सवेरा होनेके पहले ही, " जहाजकी रेलिंगसे बाहर झाँकते हुए उसने कहा, " अब अधिक देर नहीं । "

वह चली गई । दरवाजा बद होते ही तरह तरहकी कल्पनायें मनमें आने लगीं । अपने आपसे कहने लगा, " क्या मेरे भाग्यमे सदा इसी प्रकारसे यात्रा करना वदा है ? दुनियामे हजारों आदमी सफर करते हैं; पर, इस प्रकार तो किसीको तकलीफ झेलनी नही पडती ! "

जहाज खुला । मै अपने आपको बहुत देर तक उस पिंजरेमे कोसता रहा । समयका अदाज़ लगाते हुए अनुमान किया कि धूप अवश्य ही बाहर निकल आई होगी । हमारे पिंजरेमे उस समय भी घना अंधकार था । धूप और स्वच्छ हवाकी कीमत इसी समय महसूस हो रही थी । मुझे मालूम पड रहा था मानो मेरा दम घुटा जा रहा है । अवस्था काबूके बाहर होती जा रही थी और प्रत्येक क्षण ही मूर्छा आ जानेकी नौबत आई दीखती थी ।

मैं अपनेको अचेत हो गया समझने लगा था । ठीक उसी समय दरवाजा खुला ।

५

" अब तुम स्वतत्र हवामे साँस ले सकते हो तवारिश ! " कहते हुए उसने मुझे छिपनेके स्थानसे बाहर निकाला, " अब कोई चिन्ता नहीं ! हम लोग नैपल्सकी खाडी पार कर आये । अब यहाँसे ही तुम अपनेको स्वतत्र सोवियत भूमिमें पहुँच गया समझो । "

बाहर धूप निकली हुई थी । झुंडके झुंड पक्षी स्वतत्र हवामे चहचहाते हुए जहाजके साथ बाजी लगा कर उडते चले आ रहे थे ।

हम दोनो साथ ही डेकपर आये । पिंजरेकी गीली सर्दीसे बाहर निकलनेपर धूप बडी ही अच्छी लग रही थी । शात समुद्रमे जहाज आगे बढता जा रहा था । इटलीका किनारा अभी भी आँखोके ओझल नहीं हो

पाया था। हम लोग किनारा दिखलाई देनेवाली ओरके रेलिंगके सहारे जा खड़े हुए।

हवा उसके 'स्कर्ट' (घॉघरे) के साथ खेलने लगी। इस समय उसने अपने बालोंको दो भागोंमे बॉट उन्हे गूँथ अपने दोनों कंधोंपर लटका रखा था। एक पॉव रेलिंगपर रख थोड़ा आगे झुक वह मुझे किनारेकी ओर दिखलाने लगी। इस झुकावके कारण उसके शरीरकी एक विशेष प्रकारकी सुन्दर लचक स्पष्ट दिखलाई देने लगी। घुमावकी गोल रेखायें बहुत नरम थीं। कंधे और छातीके बीचके कपड़े ढीले हो गये थे और उनके भीतरसे उसकी खिली जवानी झॉकने लगी थी।

उसके चेहरेसे यह भी अंदाज़ लगा कि कलका मेरा अनुमान बहुत कुछ ग़लत था। वह वैसी गंभीर प्रकृतिकी नहीं थी। प्रौढ विचारोंके भी चिह्न उसके चेहरेपर नहीं थे। मुखके पासकी रेखायें कल रातको शायद अन्धकारके ही कारण सख्त दीख रही थीं।

वास्तवमें उसका चेहरा चिन्तामुक्त, निष्कपट तथा पूर्णरूपसे खिला हुआ था। उस चेहरे जैसा स्वाभाविक, अछूता तथा आडंबररहित सौन्दर्य यूरोपकी सुन्दरियोंमे बिरल ही दिखाई देता है। पहली दृष्टिमे वह सौन्दर्य एशियाई जान पड़ा।

उसकी ऑखे किनारेपरके किसी विशेष स्थानको ढूँढ रही थी।

"नैपल्स बहुत पीछे छूट गया!" पंचम स्वरकी तरह सुरीली आवाज़मे उसने कहा।

मैं चुप रहा।

"आप इतने उदास क्यों है?" उसने मेरी ऑखोंमे ताकते हुए पूछा।

"तान्या!" पासकी केबिनसे किसीने पुकारा।

उसने आवाज़ अनसुनी कर दी और मुझसे कहा, "सगिनीके छूटनेका दुःख मैं समझ सकती हूँ, लेकिन उससे अलग होनेका तुम

व्यर्थ ही अफसोस कर रहे हो। तुम अभी भी नवजवान हो और तुम्हे वैसी बहुत-सी संगिनियाँ मिल सकती हैं।" कहकर वह हँसने लगी।

उसकी ये बाते यूरोपीय ढंगकी थीं। उसके सौन्दर्यके एशियाई होनेमे भी मुझे सदेह होने लगा।

पासकी केबिनसे उसीकी उम्रकी एक दूसरी लडकी हम लोगोंके पास आकर कहने लगी, "तान्या! तू तो बिल्कुल भाव विभोर—"

उसका यह कहना इस ढंगका हाव-भाव दिखलाते हुए हुआ कि हँसी रोक रखना कठिन था।

"नाद्या, तुझे तो हर वक्त थियेटर ही लगा रहता है!"

"थियेटर ही क्यो?—मैं तो उस वक्तसे ही तुझे देख रही हूँ। तू तो बिलकुल भाव-विभोर हो रही है! तुझे पुकारती हूँ तो सुनती तक नहीं! 'तान्या और अॅनेगिनका आलाप' किसी तरह भी समाप्त होते न देखा, तो अब मजबूर होकर टोकने आई हूँ।"

"अॅनेगिन तो तुझे भूलता ही नहीं। रोज स्टेजपर..."

"हाँ, मैं तो स्टेजपर जाती हूँ पर तू तो अभी गा रही थी,—'तुम ही मम जीवन-धन...प्राण..."

"चुप भी रह।" कहते हुए तान्या उसे मारने दौडी। नाद्या कुछ दूर जा खड़ी हुई और वहाँसे चिढा चिढ़ाकर गाने लगी—

"मेरे प्राण ..मेरे प्राण...
तुम ही मम..."

देर तक उनका दौड़ना, चिढाना, खदेडना चलता रहा। उनकी चपलता यूरोपीय लडकियोसे भी अधिक थी। अवस्था बीसके लगभग रहनेपर भी सात-आठ वर्ष जैसी वे दीख रही थीं। भारतवर्षमे तो उनकी अवस्थाकी युवतियाँ गंभीरताके कारण बूढी-सी दीखती है। पर उनकी तो बात ही दूर रही, चपल स्वभाव दिखलानेवाली देविका रानी जैसी अभिनेत्रियोके लिए भी इन लड़कियोंसे प्रतिद्वदिता कर पाना असभव था।

जहाजके कप्तानके उधरसे आ निकलनेपर दोनो रेलिंगके सहारे चुपचाप जा खडी हुई। कप्तानने नाद्याकी ओर देख मुसकराते हुए कहा—

'मै आपको बाधा नहीं देना चाहता! आप गाना जारी रखें!'

"तुम ही मम जीवन-धन प्राण..." नाद्याने बूढे कप्तानकी ओर देख उसे बनाते हुए गाया।

"और मै ॲनेगिनका पार्ट पूरा करूँ..." कप्तानने मोटे स्वरमे आरभ किया—

"क्या जाने कल फिर क्या होगा
मेरा जीवन स्वर्ण समान"

"लेकिन ऐसे गर्दभ स्वरसे तो तान्या राजी न होगी!" नाद्याने तान्याको चिढाते हुए कहा।

"अब बूढोको पूछता कौन है? और वह भी सोवियत भूमिमे?—ज़माना तुम्हारा है!" कहता और मुसकराता हुआ कप्तान एक ओर चला गया।

"अगर दाढी मुडा लीजिए तो थोडी पूछ हो सकती है!" कहकर नाद्या केबिनमे जा छिपी।

६

चाय पीनेके कमरेमे मै जिस समय पहुँचा वहाँ बडा शोर-गुल मचा था। सेव, नीबू, रोटीके टुकडे आदि फेक कर एक दूसरेको मारना और ठहाका लगाना चल रहा था। उनमे अधिकाशकी पोशाक खाकी रंगकी तथा एक ही काटकी थी। यह अवश्य ही उनकी वर्दी रही होगी।

"तुम तो भाई, नवजवान हो और इसीलिए हम लोगोके साथ तुम्हे खेलना ही पडेगा।" एक युवकने यह कहते हुए मेरा हाथ पकड़ कर मुझे एक कुरसीपर बैठा दिया।

"काला सागर तो अभी दूर है," एक युवतीने टोका, "पर आपने

अभी कहाँ डुबकी लगा ली जो इतने काले बन गये ? " यह वाक्य रूसी भाषामे कहा गया था। मेरे पास बैठे युवकने जर्मनमे अनुवाद कर बतलाया और मेरी ओरसे वकालत की—

" इसका जवाब मॉगनेके पहले तुम्हे इन्हे रूसी भाषा सिखलाना पडेगा। "

" और यह काम तवारिश वेरा ही अच्छी तरह कर सकती हैं। " एक दूसरी लडकीने कहा।

" तवारिश ! " पहलीने टोका, " आपसे मै स्पष्ट कहे देती हूँ, यदि आप वास्तवमे ही रूसी भाषा सीखना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले यहॉकी लडकियोसे परिचय प्राप्त करना होगा। "

" अभीसे आप दोस्ती करना आरभ करे " मेरे बगलके युवकने कहा।

" अरे, इन्हे यह भी समझानेकी जरूरत पडेगी ? " वेराने कहा, " ये खुद ही सीख जायेंगे। अगर मैं सच कहूँ, तो मुझे सफेद चमडेकी अपेक्षा काला ही अधिक सुन्दर मालूम पडता है। "

उसकी ओर देख नाद्या रूसमे खूब प्रचलित राग गुनगुनाने लगी—

" ओई चोरनिये ग्लाझा (अरी काली ऑखे ..) "

सब हॅसने लगे।

" लेकिन तवारिश चुप क्यो हैं ? " सबने मुझसे पूछा।

" क्या आपकी शादी हो चुकी है ? " दूसरीने टोका।

" शादी हो जानेसे क्या होता है ? " तीसरीने टोका।

" तू क्या जाने, " दूसरीने उत्तर दिया, " बोर्जुआ लोगोके देशमे, जैसा मैंने सुना है, विवाहित पुरुष यदि अविवाहित युवतियोकी तरफ भूलसे भी देख लेते हैं तो उन पुरुषोका सतीत्व नष्ट हो जाता है। "

" लेकिन तवारिश तो बोर्जुआ नही। "

" नहीं नहीं, हमारी तरफ देखो ! " नाद्याने लोगोका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा, " यह सिर्फ हमारे ही देशकी प्रथा है कि औरते

जब अपने पतियोंसे अलग होती हैं तो बड़ी खुश रहती हैं। देखो न, हमारी कात्याने अपने पतिको एक सालसे नहीं देखा, इसीलिए वह कितनी मोटी हो गई है!"

"यह तो सच कहती हो," वेराने कहा, "पति खटमलोंकी जाति है,—दोनों बराबर खून चूसते हैं। खुदा ही हमें उनसे बचाये रखे।"

मेरी ओर देख उसने कहा, "तवारिश, शादी करनेकी भूल कभी न करना। जर्मनीमें लोग ठीक ही कहते हैं कि शादी करनेसे बढकर दूसरी बड़ी बेवकूफी हो नहीं सकती।"

शोर काफी मच रहा था इसलिए नाद्याने खड़े होकर कहा, 'तवारिश, तुम अभी नवजवान हो। शादी मत करना। ॲनेगिन बने रहना। नहीं तो तान्या गायगी कैसे—

"मै चिर-विरहिन निशिदिन तड़पूँ—"

७

"यह तान्या और ॲनेगिन कौन-सी बला है जिसे आप हमेशा ढोती चलती हैं?" मैंने मास्को विश्वविद्यालयकी एक विद्यार्थिनीसे पूछा जो औरोंकी अपेक्षा गभीर दीखती थी और अपना अधिकाश समय डेकपर किताबे पढते रहनेमे बिताती थी।

"तान्या ही तो हम रूसी लोगोंकी जान है। संसारका हम सब कुछ भूल सकते हैं पर तान्या नहीं।" उसने उत्तर दिया, "संसारका सारा माधुर्य-लालित्य,—यहाँ तक कि कल्पनामे भी आप सौन्दर्यकी जिस सीमापर पहुँच सकते हैं उसे, यदि रूसी लोगोंके सामने व्यक्त करना चाहे तो केवल 'तान्या' कह देना पर्याप्त है।"

"यह है हमारे साहित्यकी सबसे चमकता हुआ हीरा। हमारे सर्वश्रेष्ठ कवि पुश्किनने अपनी इस कृतिमे हमारे समाजको अमर कर दिया है। यह हमारा सामाजिक इतिहास है। इतना ही नहीं, मनुष्यके भाव कितने

ऊँचे उठ सकते हैं, यह उसने इस यात्रीके साकार रूपमे रख दिया है। अगर आप हम रूसी लेगोकी मनोभावना जानना चाहते हों,—हमारा इतिहास, हमारी सभ्यता तथा हमारी संस्कृतिका अध्ययन करना चाहते हो,—एक शब्दमे यदि आप हमे पूरा पूरा जानना चाहते हो तो पुश्किनका ‘ अॅनेगिन ’, जिसका नाम वास्तवमे ‘ तान्या ’ होना चाहिए, पढिए। यह है हमोर रूसी साहित्यका विश्वकोष। ”

वह इतना कहते कहते अपनेको नही रोक सकी। उस ग्रथकी नायिका तान्याके मुखसे निकले गाने गाकर सुनाने लगी और अतमे समूचा ग्रथ ही सुना डाला।

यह लगभग सात हजार पक्तियोका एक पद्य-उपन्यास है। अॅनेगिन शहरका रहनेवाला था पर अपने चाचाकी बीमारीके कारण एक गॉवमे निवास करने आया था। वहीं जमीदारकी बडी लडकी तान्यासे उसका परिचय हुआ।

तान्या भोली-भाली देहाती लडकी थी। वह अॅनेगिनके प्रति आकर्षित हुई। अपने भाव एक पत्रमे व्यक्त कर उसने उसके पास भेजे। अॅने-गिनने उत्तर नही दिया। उल्टे एक दिन साक्षात होनेपर उसने तान्यासे कहा, “ अपना हृदय किसीके सामने खोलना मूर्खता है। मै विवाहके झंझटोमे फॅसना नहीं चाहता। ”

तान्या दिल मसोस कर रह गई।

अॅनेगिन मन ही मन इस सिद्धान्तपर विश्वास रखता था कि जितना ही कम हम औरतोको प्यार करते हैं, वे उतनी ही अधिक हमारे प्रति आकर्षित होती हैं।

अनेक वर्ष बाद एक दिन सेण्ट पिटर्स बर्गमे तान्याकी पुनः अॅनेगिनसे मुलाकात होती है। तान्याका इस बीच एक अफ़सरसे विवाह हो चुका होता है। इस बार अॅनेगिन तान्याके प्रति आकर्षित होता है और कई प्रेम-पत्र लिखता है।—कोई उत्तर नहीं। एक दिन चार ऑखे होनेपर वह स्पष्ट कहती है—

" मै अपनेको तुम्हे अर्पण नही कर सकती। मै तुम्हे प्यार करती थी और अब भी करती हूँ,—पर मेरा विवाह हो चुका है। मैं अपने पतिके प्रति सच्ची रहूँगी। "

दोनोंके ही मनमे उठता है—

" हमारा सौभाग्य कितना निकट और सभव था, पर...आह..."

लेखक अपने पात्र-पात्रियोंसे विदा लेता है।

कहानी समाप्त करनेपर उस विद्यार्थिनीने कहा—

" रूसी भाषाके सिवा और किसी भाषामे भी इतने साधारणसे विषय-पर ऐसा महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखा जाना सभव नही हो सकता। आप इसे प्रत्येक भावुक रूस निवासीकी जबानपर पायेंगे। "

" मेरी बरबादी ही सही। "

डेकपरसे नाद्याका गाना सुनाई दे रहा था।

" देखिए! " विद्यार्थिनीने कहा, " यह तान्याका ख़त है। "

देखते देखते उसे रोमाच हो आया।

८

आमोद-प्रमोदके साथ ही साथ उस जहाजमे राजनीतिक शिक्षाका भी समुचित प्रबध था। एक बड़ी-सी केबिनको लोग ' लेनिनका कोना ' अथवा ' लाल कोना ' कहा करते थे। उसमे चारो तरफकी दीवारोंपर मार्क्स, ऐंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, वोरोशिलोव, बुदयोनी आदि प्रख्यात लोगोंके चित्र टँगे थे। मेजपर समाचार-पत्र और मासिक-पत्रिकाये रखी थीं। आलमारियाँ नाना भाषाओंकी किताबोंसे भरी थीं। रेडियोद्वारा प्राप्त हुए ससारके मुख्य समाचार टाइप कर उस कमरेमे टाँग दिये जाते थे।

कभी कभी उस केबिनमे बाजा-क्लास भी लगा करता। जो अर्धशिक्षित थे उन्हें शिक्षित बनानेका भार जहाजके ही कुछ कर्मचारियोंने ले रखा था।

मेरा भी रूसी भाषा सीखनेका क्लास उसी केबिनमें आरंभ हुआ। समय

बहुत आरामके साथ कटने लगा। खेल-कूद, हँसी-मजाकके लिए साथि-योंकी कमी नहीं थी। निश्चिन्त और आरामकी यात्रा मेरे लिए यह जीवनमें पहली ही थी।

९

"जेमली! जेमली!" (जमीन! जमीन!) हठात एक दिन बड़े तडके नींद टूटते ही चारों तरफसे आवाज़ सुनाई पडने लगी।

जहाजके सब लोग डेकपर आ इकट्ठे हुए थे। जितनी खुशी सोवियत भूमि देख कर उस दिन हम लोगोंको हो रही थी उतनी शायद कोलंबसको भी पहले पहल अमेरिका दिखाई पडनेपर न हुई होगी।

"दा ज्द्रास्त्व्युते सोवियत्स्की सोयूज! (सोवियत यूनियन जिन्दा-बाद!)" सब युवा-युवती एक स्वरसे तीन बार चिल्ला उठे।

बहुतेरे खुशीके मारे उछलने लगे, कितने एक दूसरेको आलिंगन कर नाचने लगे। नाद्याने इस विशेष उपलक्षके लिए पहलेसे ही एक विशेष प्रकारका नाच निर्धारित कर रखा था, वह उसे ही दिखाने लगी।

यह उमंग बडी देर तक रही। सब लोग अपने अपने परिवार, इष्ट मित्रोंका चित्र उस धरतीपर देखने लगे। धीरे धीरे बातूम शहर भी दिखाई देने लगा। अपने दोस्तसे किस प्रकार वे थोडी देर बाद लिपट जायँगे यह सोच वे कितने गद्गद होने लगे! कई अपनी उमंग न रोक सकनेके कारण जो पासमें मिला उसीसे कस कर लिपटने लगे!

१०

जहाज किनारे लगनेपर मेरा स्वागत एक दूसरे प्रकारसे हुआ। पुलिसकी वर्दी पहने चमकती हुई राइफल लटकाये एक विशालकाय व्यक्तिने मुझे अपने साथ आनेके लिए कहा।

वह मेरे आगे आगे चला। मुझे सन्देह होने लगा : कहीं मैं गिरफ्तार

तो नहीं कर लिया गया? ऑखोके सामनेका दृश्य बिल्कुल ही पलट गया। संदेह हो जानेके कारण जहाजका सब कुछ,—सारा जीवन ही एक नये रूपमे दीखने लगा।

इटलीमे रूसी खुफियाके विषयमे सुनी हुई बहुतेरी बाते याद आने लगी। उनके विषयमे सबसे पिछली अफ़वाह यह सुनी थी कि जिन लोगोको रूसमे मृत्यु-दण्ड दिया जाता है उन्हे और देशोकी भॉति जल्लाद सीधे तलवारके घाट नही उतारते, अथवा उन्हे सामने खडाकर गोली नही मार देते, बल्कि उनके मरनेके कई दिन पहलेसे उनके पास कुछ सुन्दरियॉ रखी जाती हैं। निश्चित दिन आनेपर ये ही सुन्दरियॉ अपराधीको अनजानेमे गोली मार देती हैं।

मै भयभीत हुआ-सा डेकपर पहुँचा। गे० पे० ऊ० (रूसी खुफिया विभाग) के एक नायक रेलिंगके पास सिगरेट पीते हुए मिले। मुझे देखकर वे खिलखिलाकर हॅसे। उनकी यह हॅसी बनावटी नहीं थी, यह भावना दृढ कर लेनेसे मै अपनेको नहीं रोक सका।

"कहिए, कैसी समुद्र-यात्रा रही?" कसकर शेक-हैंड करते हुए शुद्ध जर्मन भाषामे उन्होने पूछा।

"अच्छी ही।"

"आप इतने सहमे हुए क्यो हैं? अब तो आप सोवियत भूमिमे हैं, स्वतत्र हैं!"

मुझे उनकी बातोपर विश्वास हुआ और कुछ मिनट पहले जिस प्रकारकी शंका हुई थी, उसकी मै मन ही मन मखौल उड़ाने लगा।

हम लोग कप्तानकी केबिनमे जा बैठे। इधर उधरकी बाते हो जानेपर गे० पे० ऊ० कमाडरने कहा—

"मोप्रकी हिदायतोके अनुसार आपको आज शामकी गाड़ीसे रोस्टो-वके लिए रवाना हो जाना चाहिए।"

"यह 'मोप्र' कौन है?"

" यह है सोवियत यूनियन स्थित विदेशी क्रान्तिकारियोकी सहायता करनेवाली सस्था। उसीके प्रयत्नसे आप यहॉ पहुॅच सके हैं। इसीलिए हम भी आपको अपना समझते हैं। यदि विदेशीकी हैसियतसे आते तो फिर हम आपको यो ही यहॉ नही उतरने देते। उस हालतमे आपकी बहुत जॉच-पड़ताल की जाती।"

" जहाजमे इनके साथ हमारा कैसा बर्ताव रहा है, इससे तो ये स्वय ही वाकिफ हैं।" जहाजके कप्तानने कहा।

इसी समय तान्याने भी केबिनमे प्रवेश किया। उसकी ओर इशारा करते हुए कप्तानने कहा, " हम लोग तुम्हारे तवारिशको तुमसे अलग कर रहे हैं तान्या! इसकी तुम्हे नाराज़गी तो नही?"

तान्याके चेहरेपर ललाई छाती जा रही थी। उसने धीमे स्वरमे पूछा—

" इन्हे कहॉ भेज रहे हैं?"

" रोस्टोव।"

" तब तो यह हमारे खारकोवके रास्तेमे ही है। मैं इन्हे रोस्टोव तक पहुँचा दे सकती हूॅ।"

" हम बूढ़ोपर तुम्हारा विश्वास नहीं? खैर, हमे इसमें कोई ऐतराज़ नहीं।" कहकर कमाडर और कप्तान दोनो ही हॅसने लगे।

पहली झलक

१

शृंखला-रहित कतारोमे बनाये गये मकान। अधिकाश बेमरम्मत। चूना धुलता जा रहा था, वर्षाका रग उनपर चढता जा रहा था। रास्तोके पत्थर सर ऊँचा कर झॉक रहे थे। फिटनकी जैसी गाडियॉ उनपर उछलती-कूदती घर्र घर्र करती चली जाती थी, कितने रास्ते ऐसे सकीर्ण थे कि एक ही तरफसे गाडी निकल सकती थी ।

लोगोकी वेश-भूषा शहरके मकानो और सडकोके ही समान। औरत-मर्द दोनोका ही अपना अपना निजका अलग अलग फैशन। कितनी औरतोके स्कर्ट घॉघरे और कितनोके स्पोर्टड्रेसका स्वरूप ले रहे थे। चेहरोपर पाउडर-क्रीमका नामोनिशान नहीं। बाल रूखे-सूखे बिखरे हुए।

मर्दोंकी पोशाक भी विचित्र। चुस्त रगीन पाजामेपर तीन-कलिया ओछा कुर्ता।—बटनके स्थानपर कसीदा, गलेके चारो ओर भी कसीदा और वहॉपर दिखावटी बटन। पॉवोमे ऊँचे ऊँचे बूट-जूते। सरपर चार-छह अंगुलकी कसीदेदार टोपी।

लोगोका रग-रूप सिध प्रदेशके मुसलमानोसे मिलता-जुलता। डील डौल भी बहुत कुछ वैसा ही। फर्क केवल इतना कि इनके चेहरे मुसल-मानोके चेहरेकी अपेक्षा कही कम मुहर्रमी थे ।

यह था बातूम शहर, मेरे लिए सोवियत भूमिकी पहली झलक।

इटलीमे सुन रखा था कि कौम्युनिस्टोके आधिपत्य होनेके बादसे

सोवियत भूमिके लोग हँसना ही भूल गये हैं, पर यहाँ सबके सब अपने रंगमे मस्त,—ठहाके लगाते, जोरोसे बाते करते और झूमते झामते चलनेवालोकी ही बहुतायत दिखाई पडती। उनकी चाल ही ऐसी स्वाभाविक मस्तानी थी कि किसी भी प्रकारकी सरकारके लिए उसे बदल देना असभव था।

बातूम यूरोपके शहरोसे कम पर एशियाके पुराने शहरोंसे अधिक मिलता-जुलता था। कई बार तो मुझे ऐसा भ्रम हो जाता मानो मैं एक ब एक हिन्दुस्तान पहुँचा दिया गया हूँ।

जल-पानके बाद अकेला घूमने निकला। जहाज़मे कई आदमियोने शहर घुमानेका वादा किया था, पर वह तरीक़ा मुझे पसद नहीं आया। सबसे अच्छा तरीक़ा किसी नये स्थानसे परिचय प्राप्त करनेका मुझे यह दिखाई दिया कि जिधर दो ऑखे जाये उधर आदमी घूमने निकल जाय और शहरमे अपने आपको खो जाने दे। यदि वहॉकी भाषा न भी जानता हो तब भी लोगोसे इशारेसे अथवा चाहे जिस प्रकार भी हो कुछ बातचीत करनेका प्रयत्न करे। भोजन भी वहींके लोगोका और उन्हींके साथ बैठ कर करे। ये छोटी बाते भी किसी स्थान-विशेषसे भली भाँति परिचय करा देनेमे बडी ही लाभदायक सिद्ध होती हैं।

२

बड़ी देर तक अपने ही तरीकेसे बातूमकी सडकोपर भटकता रहा। लोगोकी नई जबान मेरे कानोपर एक विशेष प्रकारका आघात किया करती पर उसका कुछ भी साराश नही निकाल पाता। मेरी यूरोपीय ढगकी और ठिकानेसे कटी हुई पोशाक देखकर ही लोग समझ लेते कि मैं विदेशी हूँ। उनका ध्यान खामख्वाह मेरी ओर आकर्षित होता। यह विदेशी होना उनकी अपेक्षा मुझे स्वय कही अधिक खटक रहा था।

कमसे कम उनकी जैसी एक टोपी तो लगा लूँ, यह सोच कर मै एक टोपीकी दुकानमे घुसा। मैने उन्हे वह टोपी दिखलाई, पाकेटसे सोवियतमे

चलनेवाले नोट निकाल कर दिखाये और खरीदनेकी इच्छा प्रकट की; पर वे सिर्फ 'कार्तोच्की कार्तोच्की'—मालूम नहीं क्या विना मतलबकी बात दुहराते रहे। उन्होने मुझे टोपी नहीं दी।

कैसी विचित्र दूकानदारी है! सोचता हुआ बाहर निकल आया। एक खिड़कीमे नये ढगकी रोटी देखी। उसे खरीदने भीतर गया। वहॉ वड़ी भीड़ लगी थी। जो नये लोग आते वे एक कतारमें पीछे खड़े हो जाया करते और अपनी बारी आनेपर एक तरहका टिकट और कुछ रूसी सिक्के देते और रोटी लेकर चले जाते।

आधे घटे तक उसी प्रकार कतारमे खड़े रहनेके बाद मेरी भी बारी आई। मैंने सिर्फ एक तीन रूब्लका नोट दूकानदारके सामने पेश किया। उसने भी दुहराया "कार्तोच्की,—कार्तोच्की"। मैंने झुंझला कर उससे कहा, "यह कौन-सी कनचटकी तुम चाहते हो, मेरी समझमे नहीं आता।"

उसने एक टिकट दिखलाते हुए मुझसे वैसा ही काग़ज़ मॉगा। मेरे पास वह नहीं था। रोटी भी मुझे नहीं मिली। निराश होकर बाहर निकल रहा था कि उसी समय एक नाटे क़दके जॉर्जियनने सामनेसे आ जर्मन भाषामे मुझे समझाकर कहा कि यहॉ आप कोई भी चीज़ विना टिकटके नहीं खरीद सकते। रोटी, मक्खन, कपडे, जूते आदि सभी चीज़ें टिकट दिखानेपर ही मिल सकती हैं।"

"पर ये टिकट मिलते कहॉ हैं?"

"जहॉ मजदूर काम करते हैं वहीं। विना टिकटके भी आप कुछ चीज़े खरीद सकते हैं, पर वैसी दूकाने शहरमें एक या दो ही हैं।"

वे दूकाने वहॉसे दूर थीं। मुझे भूख भी ज़ोरोकी लगती आ रही थी। उस जॉर्जियनने मेरा मतलब समझ लिया और अपने घरपर कमसे कम चाय पी लेनेके लिए कहा।

जिस घरमे हम लोगोने प्रवेश किया उसे घर न कह एक खंडहर कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। उसी खंडहरके एक टूटे-फूटे कमरेमे

सारा परिवार रहा करता था। हम लोग एक बेंचपर बैठे। सामोवार (चाय तैयार करनेकी रूसी लोगोंकी विशेष प्रकारकी मशीन) में पानी खौल रहा था। बहुत जल्दी चाय बन गई पर चीनी नदारद। बिना किसी पशोपेशके घरवालीने कहा—

"महीनेमें हमें केवल आध सेर चीनी मिलती है, उसे बच्चे पहले दिन ही खतम कर देते हैं, अब तो सालोंसे हमारी आदत बिना चीनीके ही चाय पीनेकी हो गई है।"

खानेके लिए हमें जो रोटी मिली वह भी बिलकुल काली, पर भूखके कारण उसमें बहुत स्वाद आ गया था। इस रोटीका जला हुआ हिस्सा भी लोग खाते अथवा अगली बारके लिए सम्हालकर रख दिया करते।

कैसे दरिद्र परिवारके यहाँ पहुँचा,—मैं सोच रहा था। शायद वह किसी निम्न-श्रेणीके मज़दूरका घर रहा होगा। पर बातचीत, शिष्टाचार और आसपासकी किताबोंपर दृष्टि पड़नेपर यह धारणा निर्मूल-सी जान पड़ी।

"अच्छा, अब हमें स्कूल जानेकी इजाज़त दीजिए। मुझे आज पहले घंटेसे ही पढ़ाना है।" घरके मालिकने कहा। अब मुझे पता चला कि वे बातूमके एक बहुत बड़े स्कूलके प्रधान-शिक्षक हैं।

शिक्षकोंके घरमें इतनी दरिद्रता और उसे भी छिपा रखनेकी चेष्टा न की जाय! देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

"आप लोगोंका जीवन तो बड़ा ही कठोर होगा?" मैंने दबी जबानमें पूछा।

"पर यह कठोर क्यों है, हम जानते हैं। इसीलिए वह हमें महसूस ही नहीं होता।"

मास्टर साहब बहुत जल्दीमें थे फिर भी जानेके पहले मुझसे कहते गये—

"इसे आप अपना घर समझिए और रास्ता चलते यदि भूख लग आए तो फिर यहाँ आकर खा लीजिए।"

घरवालीसे पता चला कि आदमी पीछे रोज़ाना केवल तीन पाव रोटी उन्हें मिलती थी! पर उस हालतमें भी इनका आतिथ्य-सत्कार संभव है! यह मेरे लिए नई बात थी। उनके घरसे निकलते समय मन ही मन बार बार दुहराता रहा—

"ये लोग अवश्य ही विचित्र काँटेके आदमी हैं।"

३

शहर घूमते समय जो समस्या मेरे मनमें आने लगी थी उसीको और भी कुछ आदमियोंको हल करते पाया। होटलके भोजनालयमे दो विदेशी बैठे थे। हाव-भाव और ज़बानसे वे अमेरिकन दीखते थे। मैं उनकी बातें भली भाँति सुन पानेके लिए भूख न रहनेपर भी उनके पासकी एक खाली कुरसीपर जा बैठा।

"खाते क्यों नहीं आर्नोल्ड?" एकने अपने साथीसे पूछा।

आर्नोल्डने उत्तर दिया, "सोवियट यूनियनमें जो भोजन मजदूरोंको मिलता है उसे अमेरिकाके सुअर भी खानेसे इन्कार करेंगे। देखते नहीं इस सूप (दालके जैसी चीज़) की शक्ल ही वमन की गई जैसी दीखती है। मछलीकी आँख और सर इसमे तैर रहे हैं, किसी प्रकारकी तरकारीका नामोनिशान नहीं। यह काली रोटी तो मिट्टीसे भी बदतर है।"

"खाओ! खाओ! यह है मज़दूरोंका स्वर्ग!" पहलेने ताना देते हुए कहा।

"अरे, यहाँके काम करनेवाले मज़दूरोंसे तो हमारे यहाँके सालोंसे बेकार बैठे मज़दूर हजार गुना अच्छी तरह रहते हैं। यहाँ जैसा दुर्भिक्ष कहीं भी दुनियामे नहीं!"

हम लोगोंके पास ही फटे कपड़े पहने एक रूसी मजदूर वही सूप जिसे अमेरिकनने अभी सुअरोंके भी अयोग्य साबित किया था बड़े चावसे खा रहा था। समय समयपर काली रोटीका एक बडा-सा टुकड़ा अपने पीले

शृंखलारहित दाँतोसे काट लिया करता। अपने भोजनमें वह ऐसा निमग्न दीखता था कि पुकारनेपर भी वह शायद ही मुँह ऊपर उठाता, पर अमेरिकनकी बातोंसे वह वास्तवमे ही चौंक पड़ा, टूटी फूटी अँग्रेज़ीमे उसने अमेरिकनसे पूछा, "क्या आप सचमुच यह विश्वास करते हैं कि अमेरिकामे लोग भूखो नही मरते ?"

"अमेरिकाके भिखमगे तक जो रोटी कूड़ेखानेमे फेंक देते हैं, वह भी यदि यहाँके मज़दूरोको मयस्सर होने लगे तो वे अपना अहोभाग्य समझेंगे।" सूप देख देख पुनः नाक सिकोड़ते हुए अमेरिकनने कहा।

"आप तो सोवियत यूनियनके बड़े ही विरोधी मालूम पड़ते हैं ?" मजदूरने दुहराया।

"पहले नही था" अमेरिकनने उत्तर दिया—"पर यहाँ आकर हो गया। यहाँ आनेपर तो मुझे विश्वास हो गया है कि जर्मन अखबारोमे जो कुछ भी छपता है वह अक्षरशः सत्य है।"

"कौन-सी बातें ?" मजदूरने रोका।

"यही दुर्भिक्षका ही लीजिए।" अमेरिकनने अपनी जेबसे अखबारका एक काटा हुआ अंश निकालकर पढ़ सुनाया। उसमे लिखा था—

"सोवियत रूसमे दुर्भिक्ष पड़ा है। वहाँकी सरकारने सब बुड्ढोको मरवा डाला और उनका गोश्त करूँ तेलमे भुनकर खानेके लिए लाल सेनाको दे दिया। स्वय स्टालिनने अपने पुराने साथियोको मारकर उनका गोश्त खाया। रूसी अब बर्बरताकी पराकाष्ठा...।"

"आप इस झूठकी पराकाष्ठाको भी सत्य मानते हैं ?" मजदूरने बीचमे ही रोकते हुए पूछा।

"यह तो कुछ भी नहीं !" कहते हुए अमेरिकनने पाकेटसे अखबारका दूसरा कतरा निकाला। मोटे अक्षरोमे उसका शीर्षक था—

"सोवियतमे व्यभिचारकी चरम सीमा! शादीकी प्रथा सदाके लिए उठा दी गई! औरते और वस्तुओंकी ही भाँति सामूहिक सम्पत्ति बना

दी गई। सभ्यताका शत्रु सोवियत......"

मज़दूर शीर्षक पूरा पढे जानेके पहले ही उछल पड़ा—"ये अंधे हमारे यहाँके सुन्दरसे सुन्दर व्यवहारोका भी स्वरूप ऐसे घृणित रूपमे दुनियाके सामने पेश करते हैं? औरते बोर्जुआ लोगोंके देशमे मज़ाककी वस्तु हैं, उनका मूल्य खरीद-बेचकी वस्तुओंके समान है। हमारे यहाँ उन्हे पूरा—पुरुषोंके बराबर ही अधिकार है, वे मनुष्य समझी जाती हैं। इसीलिए अब फैसिस्टोंके पेटमे अन्न नही पच रहा है।"

मजदूरका गुस्सा देख अमेरिकन मुसकराने लगा। उसने कहा—"पहले पूरा सुन भी तो लीजिए!"

"क्या सुनूँ?" मजदूरने आवेशमे आकर कहा—"आप ऊँचे हैं। आप अपनी आँखोसे भी ज्यादा विश्वास इन अख़बारोका करते हैं। कहीं आप लोग आपसमे झूठ बोलनेकी बाज़ी लगाकर तो हमारे यहाँ नहीं आते?"

"आप इन सब बातोंको झूठ मानते हैं?"

"मजदूरकी उत्तेजना और भी अधिक बढ गई। उसने कहा—

"आप जिस अमेरिकन स्वर्गकी बाते कर रहे हैं वह मैं देख चुका हूँ।"

"अगर देखा होगा तो हमारी बाते अवश्य ही सच मानेंगे। पर हमे विश्वास नहीं होता कि आप अमेरिका..."

"जी मैं सोवियत जहाजमे कोयला झोकता हूँ और उसी सिलसिले-मे अमेरिका गया हूँ। मैंने अपनी आँखो देखा है कि आपके स्वर्गके अस्पताल, रास्ते गली कूचे सब गरमी सुजाफ़ जैसी भयकर बीमारियोंसे भरे हैं। इस गंदगीकी ओर आपका ध्यान पहले क्यो नही जाता कि आप हमारे यहाँकी गंदगी देखने निकले हैं?"

दोनोंकी बहस बड़ी देर तक चलती रही। आखिरमे जब घूँसा चलनेकी नौबत आती दिखाई देने लगी तो दोनोंने एक तीसरे व्यक्तिको पच माना। उस पंचने झगड़ा शात करनेके सिलसिलेमे अमेरिकनसे

कहा, " सोवियत रूसका यदि आप वास्तविक स्वरूप देखना चाहते हैं तो आपके लिए सबसे पहले इस बातकी आवश्यकता है कि जितना कुछ भी इस भूमिके बारेमे आपने पढा या सुना है उसे बिलकुल ही भुला डालिए।"

" ऐसा क्यो ? " अमेरिकनने टोका—" आप तो पूरे दार्शनिक दीखते हैं ! "

" खैर ! मेरी यही सलाह है, क्यो कि जब तक आपका हृदय वास्तवमे ही पक्षपातरहित नहीं रहेगा आप वास्तविकता नहीं पा सकते। यदि आपका दृष्टिकोण भिन्न रहा तो यहाँकी केवल स्वाभाविक बाते ही नहीं बल्कि सब चीजे आपको व्यग-चित्रके समान दीखेंगी। और देशोका चश्मा खोलकर पहले हमारी दृष्टिसे हमे देखे और इसके बाद ' अच्छा ' या ' बुरा ' खिताब लगाये। "

" आप इस सूपकी शक्ल देखकर भी यही चाहते हैं कि मै इसे बुरा न कहूँ ? " झुंझला कर अमेरिकनने कहा—" आपको अवश्य ही गे० पे० ऊ० द्वारा पकड़े जानेका भय है, नही तो आप इस प्रकारकी पंचायत न करते। "

" आपको जितना अमेरिकन डालर-पतियोका भय है उतना हमे गे० पे० ऊ० का नहीं। हाथ-कघनको आरसी क्या ? क्यो नही अमेरिकन डालरका चश्मा उतार कर एक बार हमारे देशको देखते ? "

" आपके देशमे तो यही वमन किया हुआ सूप है ! " अमेरिकनने मखौल उडाते हुए कहा।

" खैर ! यहाँकी बाते आपकी समझके बाहर हैं। "

पचायतीका फैसला देनेवाला तथा झगड़नेवाला मजदूर दोनो ही मुझे अभी कुछ घंटे पहले जिस शिक्षकके घर चाय पी आया था उसीके समान विचित्र कॉटेके व्यक्ति दीख रहे थे। इन लोगोकी ऑखोमे वास्तवमे ही कुछ छिपा था जिसे ठीक ठीक समझ पाना मेरे लिए कठिन हो रहा था।

४

"यह तो जौर्जियन नहीं।" मेरे सामने बैठे सज्जनने दरवाजेकी ओर देखकर कहा।

"कोजाक होगी।"

"अभी खून गरम है।" पहलेने टिप्पणी की।

मैंने पीछे फिर कर देखा—तान्या थी। वह मेरे बगलमे आकर बैठ गई।

"तुम क्या वास्तविक रूसिन हो ?" मैंने धीरेसे उससे पूछा।

"क्यो ?"

"यो ही।"

"नही।"

"कोजाक ?"

"हाँ।" उसने मुसकराते हुए कहा, "लेकिन तुमने पहचाना कैसे ? क्या और भी कोजाक तुमने देखे हैं ? एक दिनमे ही सोवियत रूसमे बसनेवाली विभिन्न जातियोको पहचानने लग गये ?"

"नही। औरोकी अपेक्षा तुम्हारे बाल अधिक काले हैं, मुखका आकार भिन्न है और आँखे हमारे देशकी लडकियोके समान हैं।" मैंने बाते बना दीं।

"और कोई विशेषता ?"

"और देखा तो नहीं, पर सुना है कि कोज़ाक-खून बहुत गरम होता है।"

उसने मेरा हाथ कसके दबाया और जोरोसे हँस पडी। थोड़ा सम्हलने-पर कहा—

"मालूम नहीं कितनी शताब्दियोंसे हम कुचले जाते रहे हैं। हम

रूसी सम्राटोके गुलाम थे । अक्टूबरकी क्रान्तिने हमे स्वतंत्र बना दिया। आज हमारी सबके साथ बराबरकी हैसियत है । क्रान्तिने स्वच्छद रूपसे विकास करनेका हमे हक़ दिया ।

"जीवनके प्रति हमारे किस प्रकारके ताजे स्वच्छ निर्मल भाव हैं, आज हम इन्हे सारे ससारको खोल कर दिखला सकते हैं । हममे कितनी छिपी हुई शक्ति थी उसे प्रकाश करनेका हमे मौका मिला है । जारकी तथा दूकानदारोकी औपनिवेशिक नीतिके कारण हमारी गिनती 'आदिम निवासियो'की श्रेणीमे की जाती थी। हमारी सभ्यता तथा संस्कृति कुचली जाती थी । आज हम बंधन-मुक्त हैं । उतने दिनोका बँधा हुआ आवेग, उमग हमारे भीतरसे फटा पडता है । तुम्ही बतलाओ, इस प्रवाहके कारण हमारा खून नही तो और किसका गरम होगा ?"

हमारी बातचीत धीमे शब्दोमे हो रही थी फिर भी पास बैठे अमेरिकनोको सुनाई दे गई । एकने यह समझकर कि हम उनकी जबान नहीं समझ पायँगे तान्याकी बातोपर टीका-टिप्पणी करते हुए कहा—

"ये बाते स्टालिनकी सिखलाई हैं । अगर इस प्रकारकी ये बाते न करे, तो उसी दिन स्टालिन इन्हें सूलीपर चढा दे ।"

तान्याकी कानोमे भी ये बाते पडीं । वह हँसने लगी । अमेरिकन कहता गया—"सच्ची बातें कहनेके लिए हजारो सच्चे निर्दोष आदमी गोलीसे भून दिये गये । इन्हे सिर्फ़ कौम्युनिस्ट प्रचारकी बाते सिखाई जाती हैं । खास कर विदेशियोसे बाते करते समय तो इन्हे खास हिदायत रहती है कि ये केवल प्रचारकी बाते किया करे ।"

"नहीं, नहीं," तान्याने उन्हे सुना कर कहा—"यह आपका भ्रम है । हमे डर किस बातका ? हम तो अब फैसिस्ट भूमिमे नहीं । यह तो है हमारी स्वतत्र सोवियत भूमि !"

"तुम्हारी भूमि ? सरासर झूठ !" अमेरिकनने हाथ मेजपर पटकते

हुए कहा—" बतलाओ तो, स्टालिनने तुम्हारे लिये कौन-सी सुविधा दी है ?"

" यदि और कुछ नहीं तो इतना अवश्य है कि अपने भीतर छिपी हुई शक्तियोंके पूर्ण विकास करनेके लिए जितने प्रकारकी सुविधाये हैं वे सब हमे प्राप्त हैं, इससे बढ कर विकासके लिए और क्या कोई दूसरी बात हो सकती है ?"

" और खानेके लिए यह कीचड़से भी बदतर सूप दिया है!" अमेरिकनने ताना दिया।

" जी नही ! यह विशाल रूस, यहाँकी अगाध सम्पत्ति; छिपे हुए खजाने आदि सबके मालिक मालकिन हम हैं। सोवियत भूमिके मजदूरके नाते हम उस भूमिके कर्ता-धर्ता भाग्य-विधाता हैं। यह तो प्रचार नहीं।"

५

सन्ध्या हो चुकी थी। स्टेशन जानेका समय भी निकट आ गया था।

" आलसी ! तुम अबतक नहीं उठे!" कहते हुए तान्याने मेरी चादर खीचकर आधी स्वयं ओढते हुए कहा—" उठो, अब स्टेशन चलो!"

वह दोनो हाथोंसे मेरा गला पकड मुझे ऊपर उठानेकी कोशिश करने लगी। मैंने बाधा डाली। वह स्वयं अपना मुँह बिलकुल निकट ला मेरे कानमे कहने लगी, " तुम्हे मालूम है, मुझे सीधे खारकोव जाना पडेगा। कल सुबह तुम रोस्टोव पहुँच जाओगे। वहीं तुमसे विदाई..."

" रोस्टोव ही क्यो नहीं उतर जाती ?"

" पार्टीका हुक्म है। वहॉ मुझे आवारोंके स्कूलमे परसोंसे ही काम शुरू कर देना है।"

" आवारोंका कैसा स्कूल ?"

" तुम्हे मालूम नहीं, सोवियत सरकार मनुष्योंकी बडी कदर करती है।

यदि कोई व्यक्तिविशेष समाज-विरोधी भाव रखता है अथवा अपने कार्योंद्वारा समाजको हानि पहुँचाता है तो भी यहॉ उसे जेल भेजकर यंत्रणा नहीं दी जाती। जेलोमे बन्द रखने अथवा यंत्रणा देनेसे वे व्यक्ति खराब हो जाते हैं। हमारी चेष्टा यह होती है कि हम उन्हे शिक्षित करे और उन्हे फिरसे समाजके लिए उपयोगी बनाये।"

"पर क्या वे कभी सुधरते भी हैं?"

"क्यो नहीं, इसीके लिए तो हमारा स्कूल है। हम उन्हे पग पगपर 'तुम कुत्ते हो! तुम बुरे हो!' कहकर ठुकराते नहीं, उनकी आत्म-ग्लानि बढाते नहीं बल्कि उन्हे यह कहते हैं कि 'तुम भी आदमी हो और तुम्हारी शक्तियोकी भी मजदूर-समाजको आवश्यकता है।' एक बार अच्छे रास्तेपर आ जानेपर ये लोग गजबका काम करते हैं। बिना उन्हे एक बार अपनी ऑखो देखे तुम्हे उनके विषयमे पूरी वाकफियत देना असम्भव है।"

"फिर मैं भी तुम्हारे साथ ही खारकोव चला चलूँ।"

"यह अपनी मर्जीसे कैसे? गे० पे० ऊ० से इसके लिए अनुमति लेनी होगी। उन्हीं लोगोके संरक्षणमें वह स्कूल चलता है और उसकी पूरी जिम्मेवारी भी उन्हींपर है।"

"तब तुम्हारे स्कूलमे भर्ती होनेके लिए आवारा बन कर आऊँगा। उस हालतमे तो तुम मुझे नहीं रोक सकोगी!"

"चलो, छत पर जायँ! अभी गाड़ीमे देर है।" उसने हँसते हुए हाथ पकड़कर मुझे खड़ा कर दिया।

६

तारे जगमगाने लगे थे। एक एकमे हजारों हीरोंकी ज्योति थी। होटलके गोल गुम्बजपर हँसिये, हथौड़े और सोवियत तारेसे युक्त लाल

झंडा फहरा रहा था। वह बहुत ऊँचेपर बँधा था फिर भी उसके फरफरानेकी आवाज हमे सुनाई दे रही थी।

"कितनी सुन्दर सध्या है!" मेरे मुँहसे निकल पड़ा।

"बडी रोमाचक, क्यो?" कह कर वह हँसी और मेरे सरके बालोंके साथ खेलने लगी।

"तू हँसी क्यो?"

"जो हमारी मातृ-भूमिसे परिचित नहीं वह इस संध्याके सौन्दर्यको नहीं समझ सकता!"

"ऐसा क्यो? ऐसी संध्या तो संसारके हर देशमे देखनेको मिलती होगी!"

"उससे क्या? बोर्जुआ समाज उसका स्वरूप बहुत ही सकुचित बना देता है।"

"यह क्यो कर?"

"यह तो मैंने बोर्जुआ देशोमे देखा है। ऐसी संध्याके समय वे अपना प्रेम-स्रोत चाहे वह सूखा ही क्यो न हो उडेलनेकी कोशिश करते हैं। उसमे कृत्रिमता रहती है, आडंबर रहता है, वह हास्यास्पद दीखता है। हम सोवियत-वासियोको यह सन्ध्या जाग्रतिका पाठ पढ़ाती है। हरएक मजदूरको उसे इतिहासने जो कर्तव्य पूरा करनेके लिए बनाया है उसका पाठ सिखाती है, क्रान्तिकारी कार्योंकी याद दिलाती है, उसे मजदूर और सच्चा मनुष्य बननेके लिए प्रेरित करती रहती है। हमारा प्रेम अफ़ीमके नशे जैसा अकर्मण्य नहीं बनाता बल्कि कर्तव्यकी ओर आगे बढाता जाता है।

"इसके सिवा यह भी तो खयाल करो—सिर्फ अपने अकेलेकी चिन्ता करते रहना कितना स्वार्थपर, जहरीला, घृणास्पद मालूम होता है। एक प्रेमी प्रेमिकामे खटपट हो गई तो वे अपने साथ ही साथ सारे ससार-को ही जहन्नुममे घसीटते जाना चाहते हैं।

" जरा इसकी तुलना हमारे आनन्दसे तो करो ! हम क्रान्तिद्वारा, अपने कार्योंद्वारा सारे मनुष्य-समाजका दुख दूर करना चाहते हैं। सोवियत यूनियनमे रहते समय तो हम अपनेको कभी अकेला पाते ही नहीं। मनुष्य-समाजका दुख दूर करनेवाले महान यत्रके हम भी एक पुर्जे हैं। मैं रोस्टोवके एक लोहेके कारखानेमे काम करती थी। मुझे काम सिखलानेवाले मास्टर अकसर कहा करते—' जानती हो तान्या ! तुम्हारे हाथका तैयार किया हुआ एक एक यत्र मनुष्य-समाजकी गुलामीकी जंजीर काटनेमे तेजसे तेज हथियारका काम करेगा। दूसरे देशके मजदूरोसे उनके ही पॉवोमे बेडियॉ डालनेके लिए उनसे जजीरे तैयार कराई जाती हैं। हम सोवियतवासी उन्हीं जजीरोके काटनेके अस्त्र बनाते हे। '

" विदेश घूमनेके बाद मास्टर साहबका कथन मैं अक्षर अक्षर सत्य पा रही हूँ। "

७

हम लोग नरम बिस्तरा लगे डब्बेमे सवार हुए। उसमे सिर्फ दोकी ही जगह थी। थोड़ा अँधेरा हो जानेपर गाडी खुली। तान्याने डब्बेकी रोशनी बुझा दी और मुझे सो जानेके लिए कहा।

वह स्वयं खिडकीके पास जा खडी हुई और बाहर झॉकने लगी। उसके चेहरेसे यह स्पष्ट झलक जाता था कि उसके भीतर द्वन्द्व चल रहा है। इस प्रकारका द्वन्द्व उसके भीतर भी आरम्भ हो सकता है शायद इसपर भी उसका विश्वास नही हो रहा था।

मैं चुपचाप जाकर उसकी बगलमे खड़ा हो गया। उसने मेरे कधेपर हाथ रखा। जहाज-घाटकी रोशनी दिखाई दे रही थी। कोई बात अधूरी रह गई हो और वह उसे पूरा करना चाहती हो उस भॉति उसने कहा—

" हमारा परिचय बडे ही रोमाचक ढंगसे हुआ है ! अच्छा था यदि वह इस मौकेपर नही होता। ' रोमाच ' के पीछे मैं बहुत समय नष्ट

कर चुकी हूँ। अब पार्टीका हुक्म है कि मैं अपनी सारी शक्ति उस स्कूलके काममे लगाऊँ।"

वह देरतक अँधेरेमे देखती रही। इंजिनके कोयलेकी चपेट असह्य हो जानेपर रूमालसे अपना चेहरा पोछ कहने लगी—

"लेकिन 'रोमाच' भी तो जीवनका अंग है, उसे छोड़कर कैसे रहा जा सकता है? उससे कभी कभी ताकत भी तो मिलती है?"

मेरी ओरसे कोई उत्तर न पा वह चुप रही।

"छोडो! जाने दो इन बातोको—" कह हम लोगोने सोनेका प्रयत्न किया।

नींद नही आई। बड़ी देर तक करवटें बदलते रहे। आधी रातको उठकर उसने मुझे चादर उढा दी, शायद वह नीचे जा रही थी।

भली भाँति सबेरा न हो पाया था उसी समय मैंने पूछा—

"रोस्टोव अभी दूर है?"

"नही, अब वही आ रहा है।"

मैं झपटकर उठ बैठा। खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा—स्टेशनपरका सिगनल दिखाई दे रहा था। तान्या भी उठी। उसने धीरेसे मेरे दोनो हाथ अपने हाथोमे ले लिये और कसकर दबाते हुए कहा—

"खारकोवसे मैं तुम्हे लिखूँगी।"

उसने मेरे हाथ अपने गालोपर रखे। वे जल रहे थे। मैं काँप उठा।

किसीने डब्बेका दरवाजा खोल दिया था। हवा और भाफके साथ ही साथ स्नो (रूईके फाहेके समान बरफ़) ने भी भीतर रेल दिया।

~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~

डोन कोजाक

१

' इस टर्कको कहाँसे पकड़ लाये ? चेहरेका रग कैसा भद्दा है ! और इसने कपड़े कैसे बेढगे तरीकेसे पहन रखे हैं ! ज़िन्दगीमे मैंने जितने टर्क, तातार, मंगोल देखे—यह तो उनमे किसीके भी समान नहीं ! '

इन शब्दोद्वारा बूढे कोजाक बोरोदातीने मेरा स्वागत किया ।

यह बूढा पन्द्रहवीं शताब्दीका आदमी था । सरके सब बाल सफ़ेद हो चुके थे । रेखाओके धँसे रहनेके कारण चेहरेकी झुर्रियॉ बहुत दूरसे ही नजर आती थीं । निकटकी चीज़े धुँधली दीखती थीं, इसलिए किसीको ठीकसे पहचान पानेके लिए उन्हें दो तीन कदम पीछे हटना पडता था । शायद बुजुर्गीके इन्हीं लक्षणोके कारण डोन इलाकेके सब कोजाक इनकी बहुत खातिर करते थे ।

ये पहले कोजाकोके हेटमैन (सरदार) रह चुके थे । युवावस्थामे जब ये घुडदौड़मे भाग लिया करते तो हमेशा अव्वल आया करते । अपने साथियोके घूँसोकी मारसे इनकी नाक चिपटी हो चुकी थी और ऊपरका होठ सगीनके वारसे कट चुका था, पर दाढ़ी-मूछ खूब बढ़े रहनेके कारण ये विशेषताये दिखाई नही देती थीं । हाव-भाव बहुत ही सरल, आँखे निष्कपट तथा हँसी छोटे बच्चोके समान हुआ करती थी । ठहाका लगाते समय उनकी ऑखे अंतर्ध्यान हो जाया करतीं । मेरे पास आ

उन्होंने मेरे दोनो कंधोको जोरसे झकझोरते हुए कहा—

" यह तो कोजाक हड्डी नहीं ? हमारी हड्डियाँ तुम्हारी ही उम्रमें घोड़ेकी सवारी करते करते लचकदार हो जाया करती हैं। तुम्हारी हड्डियॉ तो देवदार जैसी सख्त और तुनुक बन रही हैं। "

रोस्टोवसे पार्टीके सेक्रेटरी मुझे वहॉ लाये थे। उनकी ओर देख बूढ़ेने कहा, " तुम लोग अपना नाम रखते हो 'बलशोई' (बोल्शेविक) जिसका मतलब होता है विशाल या बडा, पर हो तुम सबके सब लिलिपुटीयन। छिः, तुम्हे शरम नहीं आती ? "

"पढने लिखनेका काम करनेवालोका ऐसा ही शरीर रहता है दादा!" सेक्रेटरीने कहा।

" यही पढना लिखना लेकर तो तुम दुनियाको रसातलकी ओर ले जा रहे हो ! तुम्हारी जितनी किताबे कागज हैं, जितने स्कूल मदरसे हैं सब पर थूः... तुम्हारे शास्त्र दर्शन सब पर मैं थूकता हूॅ। ये सब चीजे आदमीका दिमाग़ खराब कर देती हैं, पागल बना देती हैं! ये सब बिना कामकी चीज़े हैं। कामकी चीज़े हैं खुला मैदान और घोडे! और वह हमारी बंदूक देखते हो—वह है हमारा साथी ! ये चीज़े तुम मुझसे नहीं छीन सकते ! "

बूढेको इस वक्त अपनी छिनती हुई जवानी याद आ रही थी। कुछ सुन्दर संस्मरण एक पलके लिए उसकी ऑखोके सामने बिजलीके समान नाच गये!

उसने अपनी युवावस्थाके कुछ सुन्दर वर्ष कोजाकोके अपने निजी ढंगके प्रजातंत्रवादी कैंपमे बिताये थे। इसी लिए उस कैंपकी शिक्षाके सिवा और किसी भी प्रकारकी शिक्षा उसे पसंद नहीं थी। उस कैंपकी सबसे बड़ी विशेषता वहॉकी आज़ादी हुआ करती थी। सुबहसे आधी रात तक लोग खूब जी भर कर हल्ला मचाया करते, शराब पीते और गप्पे लड़ाया करते। ये गप्पे चंडू-खानेकी गप्पे नही बल्कि बहादुर कोजाकोकी

जीवन-गाथाये रहा करतीं। हल्ला मचाते समय औरतोकी बेइज्जती नहीं हुआ करती—उनके कैंपका यह नियम ही था कि औरते उसके आसपासमे भी नहीं फटक सकती थीं। शराब अधिकतर यहूदी बेचा करते और उनसे जो कोजाक जितना शरीरसे मजबूत रहा करता उतनी आसानीसे छीन लिया करता। मोल तोल कहीं भी नहीं हुआ करता। जबतक कोजाकोके पाकेटमे पैसे रहते उन्हे वे लुटाया करते और न रहनेपर जिधर दो ऑखे गई धावा बोल दिया करते।

कोजाकोको सबसे ज्यादा पसंद आनेवाली बात कई हजार घोड़ोकी दौड़ रहा करती। इसमे आगे आनेके लिए अकसर ही घूँसा-घूँसी तक हो जाया करती। हमेशा लड़ते रहना उनके लिए एक खास सिफत थी। कितने ऐसे कोजाक थे जिन्हें बिना लडे एक दिन बितानेमे भी अपनी बेइज्जती मालूम हुआ करती।

इसी प्रकारकी लडाई, मुठभेड आदिमे कोजाकोका शरीर मजबूत हुआ करता और उनकी युद्ध-कलाका विकास होता। बडे बडे युद्धोमें भी ये कोजाक बहुत प्रवीण साबित हुआ करते, पर यह शिक्षा उन्हे मिलिटरी कैंपोमे नहीं मिला करती। शातिके दिनोमे मिलिटरी ढगपर मार्च सीखना, युद्ध-कलाका अभ्यास करना आदि बाते उन्हे बहुत ही नापसद रहा करतीं। वे वास्तविक युद्ध-क्षेत्रमे ही इनका अभ्यास किया करते।

कोजाक कैंपमे हमेशा जागृत जीवन उमडा करता। उसी जीवनकी ओर इस समय उस बूढेका मन उडता जा रहा था। कोजाक हमेशा केवल एक ही बातपर रो पडते हैं—"जवानी हमेशा ही क्यो नहीं आबाद रहती।"

अपना बूढा होना स्वीकार कर लेना उनके लिए कठिन होता है। बोरोदातीने अपने दोनो हाथोके आस्तीन चढा लिये और दो कदम आगे आकर कहा, "बहुत दिनोपर आज लडनेकी इच्छा हो रही है। आओ थोडा लडें।"

उसने पार्टी-सेक्रेटरीके कपार, छाती, पीठ, बगल, जिधर सुविधा

मिली उधर निशाना करते हुए प्रवीण ' बौक्सर'की भाँति घूँसे चलाना आरम्भ किया। सेक्रेटरी शरीरसे दुर्बल था और घूँसे चलानेकी कलामें भी निरा अनाडी साबित हुआ। अपनेको बचानेकी कोशिश करनेपर भी कई घूँसे खा गया और उसके दाँतोंसे खून निकलने लगा। बूढ़ेने हुक्म दिया, " खून घोट जाओ और थूक फेंक दो...नहीं, तुम्हें लड़ना भी नहीं आता। तुम सात जन्ममे भी कोजाकोंकी बराबरी नहीं कर सकते।"

हाँफते हुए वह फिर अपने स्थानपर जा बैठा। परिश्रम होनेके कारण पसीना निकलने लगा था। सरपर लगाई फरकी टोपी उतार उसने सामने मेजपर पटका और हुक्म दिया, " वोदका! (रूसी शराब जो बहुत ही तेज होती है) वोदका लाओ ! " तुरत ही हँस पडा और कहने लगा,—" अब वोदकाकी वह बहार कहाँ ? अब तो तुम लोगोंका जमाना है। तुम लोग मैदा, केक, गुड और मालूम नहीं क्या क्या बेतुकी चीजें खाया करते हो। यह कोजाकोंकी खुराक नहीं। हमारे सामने आना चाहिए एक उसनी हुई पूरी भेड, भुना हुआ पूरा बकरा और पागलोंकी भाँति फेनसे उबलता हुआ वोदका।"

बूढेको याद आया कि कैंपमे वैसे भी कोजाक थे जो रोज एक पूरा बकरा खा जाया करते और कठौता-भर शराब पीते थे। उसने मन ही मन कहा, " वे कितने अच्छे कोजाक थे!"

२

मेरे रहनेकी व्यवस्था बूढ़े बोरोदातीके ही घरमें हुई। उन्होंने विधिपूर्वक अपने यहाँ मेरा गृह-प्रवेश कराया।

" तुम्हें डोन-भूमि प्यारी है ? " उन्होंने मुझसे प्रश्न किया।

" हाँ। "

" सोवियत-राज्यमे विश्वास है ? "

" हाँ। "

"डोन और सोवियत राज्यके लिए खून दोगे ?"

"हमेशा !"

"बहुत अच्छा । अब मेरे घरमे जो कोई भी कमरा तुम्हे पसद आये उसमे तुम रह सकते हो ।"

विधि समाप्त हुई । अपने घरका सबसे सुन्दर कमरा मुझे दिखानेके लिए वे मेरे साथ आये । उस कमरेमे कोई औरत झाड़ू लगा रही थी । वह हम लोगोकी आहट पा बाहर भाग निकली । उसकी चालसे मालूम हुआ शायद वह बूढ़ेसे डरती थी । नहीं तो परदा रखनेका उसे अभ्यास नहीं था।

कमरा झोपडेसे मिलता जुलता था । दीवाले रगीन मिट्टीसे चुपडी थीं। उनपर तरह तरहके हथियार और खेतीके औजार टॅगे थे । हथियार मध्य-कालीन युग जैसे दीखते थे और कितने ही संथालोकी कुल्हाडीसे मिलते जुलते थे । दूसरी दीवालपर मछली पकडनेका जाल टॅगा था । बैठनेके लिए दो तीन बेंचे इधर उधर रखी थीं जिनमे केवल एकपर कुछ कम धूल थी । शायद अकेला वही व्यवहारमे लाया जाता था । ठीक उसी बेंचके ऊपर दीवालमे एक तलवार और बहुत पुराने ढॅगकी एक बदूक लटक रही थी ।

एक छोटी तिपाईपर दूसरे देशोसे लाई गई याददाश्तकी चीजे रखी थी । उनमें टूटे हुए कॉचके टुकडे, नकशा किये हुए निकलके गिलास और तंबाकू पीनेका लबा-सा पाइप प्रधान स्थान ले रहा था । उन चीजो पर बूढ़ेका खास ध्यान नहीं था । उनकी दृष्टि कोनेमे रखे हुए एक गिलास और नीले रंगकी बोतलपर गई । उन्हे दिखाते हुए उन्होंने कहा, "तुर्कोंके साथकी लडाईमें मेरे पिता इस्ताम्बूल तक गये थे, वहीसे ये चीजें लाई गई हैं । सुनता हूँ कि इस बोतलकी शराब हमारे वोदकासे भी तेज थी । शैतानके घर जायें ये टर्क ! भला कोजाकोसे भी तेज वोदका ?"

मैंने बोतल हाथमें लेकर देखा । मामूली स्पिरिटकी बोतल थी ।

"और अब तुम्हे एक अजीब-सी चीज दिखाता हूँ" कहते हुए उन्होंने हाथमें एक पुरानी दूरबीन ली—"यह देखो, नहीं, अभी नहीं, तीसरे पहर! तीसरे पहरसे बेला अपनी खिड़कीसे अपने प्रेमियोंको बुलाना शुरू करती है। कभी कभी उसके प्रेमी उसके पास भी आते हैं। उन लोगोंको भली भाँति देख पानेके लिए मैंने एक बूढ़े तातारसे यह दूरबीन खरीद रखी है।"

जो लड़की कमरेसे बाहर गई थी उसके गुस्सेमें पाँव पटकते हुए टल जानेकी आहट सुनाई दी।

"मैं जानता हूँ, वह जरूर बाहर खड़ी सुनती होगी।" दरवाजेकी ओर निहारते हुए बूढ़ेने कहा, "इसी लिए तो कहता हूँ कि सचाई तो तुम पढे लिखे लोगोंमे है ही नहीं। हृदय न हो सच्चा रहता होगा पर उसे भी तो माथा ही घोड़ेकी लगामकी तरह घुमाता है। माथेको नचाती हैं किताबे और वे ही सारी खुराफातकी जड हैं। उनके मारे तो सादगी और सचाईका नाम ही उठता जाता है। हर आदमीके दिमाग़मे कीड़े पड़ते जा रहे हैं...थू...! ये कीडे बचपनसे ही डाले जाते हैं। देखो न! बेलाका काम ही है बच्चोको पढ़ाना—वह है मास्टरनी, फिर वह ऐसी न हुई तो दूसरा और कौन होगा?"

"दादा, आपको बेलासे इतनी चिढ़ क्यो है?" पार्टी-सेक्रेटरीने पूछा।

"चिढ न हो तो क्या हो? हमारी कोजाक लड़कियाँ कहीं अधिक ख़ूबसूरत होती हैं—वह है खोखोल (उक्रैनवासियोका चिढ़ानेवाला नाम), फिर भी मैंने उससे कहा—तू अब सयानी हुई, कोई कोजाक तुझे अब ढूँढ लेना चाहिए। बस इतना कहनेके कारण ही उसने मुझसे बोलना तक बंद कर दिया। और रोज शामको नया नया ढूँढने निकलती है। थू ..! वह शैतानके घर जाय! अब इतनी बदनामी होजाने पर उसे पूछेगा ही कौन?"

"बहुतसे मिलेंगे!" पार्टी-सेक्रेटरीने साहस कर टोका।

"उसमे पूछने लायक बात ही क्या है कि मिलेंगे ? दो बड़ी बड़ी काली काली शैतान-सी ऑखें, न छाती है न मोटे मोटे पॉव ! और चेहरा ? पीला। ऑखे ? उनका क्या पूछना है—हमेशा डबडबाई हुई ! उसे शैतान ले जाय ! और तो और, मुझे शक होता है, वह कभी कभी मर्दोका पाजामा पहन कर बाहर निकलती है !"

"आपको देखनेमे गलती हुई होगी।"

"कभी नहीं। मै शर्तिया कह सकता हूँ वह निकीता गुरुकाका नीली धारियोवाला होटल-खानसामावाला पाजामा था। उस वेशमें उसे देखकर मेरा खून गरम हो जाता है। चाहता हूँ कि जितनी जल्दी इसकी सादी हो जाय अच्छा। पर यह उसके लिए तैयार ही कहॉ है ! तुम किताबी लोगोका तो यह ढंग ही है कि जब तक लडकियोके बच्चे पैदा न हो जायॅ तुम लोग शादी ही नहीं करते ! थूः ..." उन्होने इस बार वास्तवमें ही गुस्सेमे आकर थूक दिया, पर उसका बहुत बडा हिस्सा उनकी दाढीमे अटक गया। उन्हे उसे पोछनेकी परवा नहीं थी।

हम लोग हँसने लगे। बूढ़ेको यह हँसी बुरी लगी। अब वे बेला द्वारा जो कुछ भी कोजाकोंका अनिष्ट हुआ था एक एक कर गिनाने लगे—

"देखो, सबसे पहले हमारी ही बात लो। हमारी एक बहुत पुरानी सुन्दर गाय थी। बेलाने जिस दिन उसे दुहा उसके दूसरे दिनसे ही गाय बीमार। वह अब तक बीमार है। बलवानोवके घोडेको वह एक दिन डोनमे पानी पिलाने गई, उसी दिन शामको उस घोडेकी टॉग टूट गई। अब तो गॉवमें यह भी शिकायत सुना करता हूँ कि बेला डायन है और उसका जादू मर्दों तकको तबाह कर सकता है।"

"ये सब पुरानी बाते हैं दादा !" सेक्रेटरीने कहा—"इन पर तो तुम्हे कतई विश्वास नहीं करना चाहिए !"

"यह तो खूब कहा ! ऑखसे देखकर भी विश्वास न करूँ ? वह रोज रातको डोन किनारे अँधेरेमे घंटों घूमा करती है। जिस अँधेरी

रातमें हम बूढ़े बहादुर कोजाकों तकको नदी किनारे जानेमे भय लग सकता है, उसी समय यह किनारे किनारे मालूम नहीं कहाँ जाया करती है। कभी कभी तो सबेरा होनेपर घर लौटती है। मैं तो सोचता हूँ कि बूढा तातार फिर आया तो उससे अँधेरेमे भी दिखाई पड़नेवाला दूरबीन खरीदूँगा! मुझे शैतानके घर जाना पड़े यदि मैंने वैसी दूरबीन न खरीदी। फिर यहाँसे ही बैठ कर उसकी सारी करामात देखा करूँगा। उसकी करामात देखनेके लिए तुम्हें भी बुलाऊँगा।"

बूढ़ेने आखिरी बात बहुत ही चुपके चुपके कही। वहाँसे चलते चलते उन्होंने मुझे भी आधी धमकी और आधा सावधान करानेके रूपमें कहा—

"खबरदार! बेलासे खूब सावधान रहना!"

३

डोन कोजाक विदेशियोंको अपनानेके मामलेमें उदार दिल नहीं होते—यही सोचता हुआ मैं अपनी कोठरीमें लेटा था। दीवाल बहुत पतली थी। मेरी पड़ोसिनकी छोटीसे भी छोटी हलचल मुझे ज्ञात हो जाया करती। उसके करवट बदलनेकी सूचना उसकी खाट ही दे दिया करती; जिस समय वह जमीनपर सोती, उसका निःस्वास सुनाई देता। जब वह चलती फिरती तो दीवाल हिलने लगती और जिस बेंचपर मैं होता उसके साथ ही साथ मैं भी हिल जाया करता।

इतने निकट रहनेपर भी मालूम होता था मानो मैं उससे उतना ही दूर हूँ जितना मेरी खिड़कीसे आसमानके तारे। लुक छिप कर उसका चेहरा एकाध बार देख लिया था। चार आँखें होनेपर लज्जा छिपानेके लिए उसने एक बार मुझे ज्द्रास्त्व्युते (नमस्कार) भी दबी जबानसे किया था। पर अबतक हम दोनो परिचित नहीं हो पाये थे।

एक दिन सन्ध्या होनेके पहले मैंने खिड़कीसे झाँककर देखा वह एक झाड़ीके पास खड़ी बनबेरी तोड़कर खा रही थी। मैं झपटकर उसके

पासके रास्तेपरसे जाने लगा। निकट पहुँचनेपर उसे नमस्कार करना चाहा पर गला सूखने लगा। उसने मेरी हिचक समझ ली और धीरेसे कहा, "रुकिये नहीं, बूढ़ेके पास दूरबीन है। नदी किनारे मै अभी आती हूँ।"

नदी किनारे उसका चेहरा भलीभाँति देखा। नवयुवती थी। और सब अठारह सालकी नवयुवतियोंके समान। चेहरे और काटके ऐश्वर्यकी तुलनामें दरिद्री कपड़े, पर ऐश्वर्य और दरिद्रता दोनोंके ही प्रति उदासीन।

दिलचस्पी हाथकी बनबेरियोंको एक एक कर मुँहमे डालते जानेमे। मुसकराते हुए उसने दो चार बेर मेरी ओर भी बढाये। साथ ही उसके चेहरेकी लाली भी घनी होती जाती थी। हाथ आगे बढाये रख उस लालीको छिपानेका उसका प्रयत्न विफल था।

सचमुच बडी बड़ी काली आँखे। चमडेका रग नये पडे हुए तुषार पर उगते सूर्यकी किरणोंके समान। मर्दोंके जैसी आधी बाँहवाली खुले हुए कालरकी कमीजके भीतरसे विद्रोहीके रूपमे जवानी उमडी पड़ती थी।

पाकेटसे एक मुट्ठी बनबेरी निकाल मेरी ओर बढाते हुए उसने कहा—

"और भी लो।"

कुछ भी बोलना मेरे लिए जरूरी हो गया था।

"आप.. ..." बात अटक गई।

"बेला।" निःसंकोच भावसे हँसते हुए उसने उत्तर दिया।

"कोजाक कन्या?"

"नहीं।"

"फिर?"

"उक्रैनकी।"

और कोई प्रश्न मेरे मुँहसे नहीं निकलता देख उसने कहा—

"अब मैं परीक्षा लूँगी। आप..."

मैं सोचने लगा।

"पहले सवालमें आप फेल। अब दूसरा। तुर्की ?"

"नहीं।"

"फारसी ?"

"वह भी नहीं।"

"उजबेक ?"

मैं मुसकराने लगा।

"इस बार मैं स्वयं फेल। अब आपसे कोई प्रश्न नहीं करूँगी। हम लोग परिचित हो गये। आप चाहे जो हो मैं 'साश्का' कह कर पुकारूँगी।

उसने हाथ बढाया। हाथ मिलाये ही हम लोग आगे बढे।

"तुम्हें मछली पकड़ने आता है ?" उसने पूछा।

"हाँ।"

"फिर पकड़ते क्यो नहीं ?"

"कैसे ?"

"हुक लगाकर।"

"हुक कहाँ है ?"

"मेरे पास।"

"बेला !" थोड़ी दूरीसे बूढेकी आवाज़ आई। बेलाने झट अपना हाथ छुड़ा लिया और बूढेकी ओर देखकर कहा, "कल मछली पकड़नेकी हम सोच रहे थे दद्दू ! तुम भी बन-बेरी खाओगे ? यह लो...।"

४

कोजाकोंके बीच रहते कई महीने बीत गये। बेला मुझे रूसी भाषामें प्रवीण बनाने लगी। सुबहको तो वह गाँवमें छोटे बच्चोंको पढ़ाया करती और तीसरे पहरका समय मेरे लिए खाली रखती। बूढेने भी इसके लिए इजाजत दे रखी थी। यह भी बड़े आश्चर्यकी बात थी क्योंकि वे

खेला और किताब पढ़ना दोनोके ही खिलाफ़ थे, किन्तु मुझसे पहले ही वादा भी ले लिया था कि आगे चलकर मैं सच्चा कोजाक बन जाऊँगा।

मेरी कोठरीमे पश्चिम ओरकी खिडकीसे जिस समय थोडी थोडी धूप आने लगती उस समय मैं बेलाके कमरेमे पढनेके लिए जाया करता। हमारी पढाई भी कुछ निराले ही ढगसे आरम्भ हुई। पुस्तक खुली हुई हमारे सामने रहती पर हम दोनोका एक साथ उस ओर ध्यान बहुत ही कम जाया करता। जब कभी मै अक्षरोकी ओर देखता वह हमारी ओर चुपके चुपके देखा करती और जब उसका ध्यान किताबकी ओर जाता मैं उसकी ओर एकटक लगाये देखता। यदि यह चोरी कभी पकड जाया करती तो हम दोनो जी खोल कर हँसने लगते।

दूसरे ही दिन उसने खुलकर कहा—

"अब यह छुकाना चुराना कैसा? तुम्हारा चेहरा कुछ भयानक थोडे ही है कि मैं उस ओर न देखूँ। जरूर देखूँगी। चलो पहले हम लोग एक दूसरेको अच्छी तरह देख ले, उसके बाद पढना शुरू करे।"

उसका सकोच तो बहुत ही जल्दी टूट गया पर मैं काठकी मूर्तिकी तरह बैठा रहा। उसने बहुत तरहके खेल खेलना शुरू किया। कभी अपने गलेमे पहनी हुई गुरियोकी माला मुझे पहनाती, कभी अपने कानका गहना खोल मेरे कानमे बॉधनेकी कोशिश करती और कभी मस्लिन चादरसे ढक कर बैठाती। ये खेल बच्चो जैसे खेले जाते।

पढनेका समय हम लोग बडी आजादीके साथ बिताते। बूढेको ताश और वोदका देकर वह पहले ही पडोसियोके घर लडाईकी कथाये कहनेके लिए भेज दिया करती। यदि कभी सध्याके पहले लौट भी आते तो केवल इतना कहते "अब बस करो। ज्यादा पढ़नेसे पागल हो जाओगे।"

तब तक हम लोगोके टहलने जानेका समय हो गया होता।

बेलाके पास मुँहसे बजाई जानेवाली एक छोटी हारमोनिका थी।

वह उसे बजा कर मुझे कोजाकोंका नाच दिखाया करती। नाच-गानेका शौक उसे बचपनसे ही था और किसी भी जातिके भीतरी भावोंको नाच-द्वारा प्रकट करने अथवा किसीकी नकल उतारनेमें वह बड़ी ही प्रवीण थी। उसने अपनी कल्पना-शक्तिसे 'बरोदाती-नृत्य' 'घुड़दौड़-नृत्य' 'कोजाक-प्रेम-नृत्य' 'कोजाक विवाह-नृत्य' 'कोजाक ताडव-नृत्य' आदि कितने ही प्रकारके नृत्य निकाले थे जो वास्तवमें ही कोजाकोंका आन्तरिक जीवन प्रकट करते थे। इन नृत्योंका तॉता कभी टूटता दिखाई नहीं देता। रोज ही वह नये नये प्रकारके नृत्य निकाला करती। मेरे कोजाकोंके बीच पहुॅचनेके बारेमें भी उसने एक नाच दिखाया जिसका नाम उसने 'सारुका' रखा था। दूसरा नृत्य 'सारुकाकी पढाई' वह तैयार करने जा रही थी। 'कोजाक सारुका' में वह मेरे चाल ढाल स्वभाव आदिकी पूरी पूरी नकल उतारनेकी चेष्टा कर रही थी।

यदि कुछ प्रकट नहीं होने देना चाहती थी तो वह था उसका अपना स्वभाव। अपने विषयमें वह कभी किसी प्रकारकी चर्चा चलने ही नहीं देती। फिर भी एक दिन मैंने उसे टोका, "और बेला-नृत्य कब दिखाओगी?"

"वह एक खास मौकेके लिए रख छोड़ा है।"

"कौन-सा मौका?"

"यह अभी नही बताऊॅगी। तुम पहले बताओ—तुम्हारी शादी हो चुकी है?"

"पूछनेका मतलब?"

"यों ही, मुझे जाननेकी उत्सुकता है।"

"नहीं।"

"फिर यहॉ कर लो। यहॉकी बहुत-सी लड़कियॉ तुम्हे पसंद करती हैं।"

"चुप!..."

"सच कहती हूँ। कोजाक लड़कीसे शादी करनेमे तुम फायदेमे रहोगे।"

"यह कैसे ?"

"देखो, कपड़ोके चिल्लर मारनेमे वे बड़ी प्रवीण होती हैं। कोजाक तो खास कर उसीके मारे शादी करते हैं। ससारकी कोई भी दूसरी औरत यह काम कर सकती है ? इनकी इसी कलापर मैंने एक खास नाच निकाला है जिसे किसी बड़े शहरमे दिखाया जाय तो एक दिनमे आना पावलोवा (नृत्य-कलामे सबसे प्रवीण और प्रख्यात रूसिन) की जैसी ख्याति मिल जाय।"

"ख्याति तो तुम्हे मिले और मैं बनूँ बेवकूफ ?"

"नहीं जी, तुम बेवकूफ कैसे बनोगे ? बहुत सस्ते रहोगे। दो चार तकिये, एक आध खाट, दो एक लहँगेमे ही तो तुम्हे खूबसूरत कोजाक लड़की मिल जायगी। वह भी इस प्रकारकी कि तुम उसे चाहे जितना ही क्यों न पीटो वह तुम्हे छोड़कर नही जा सकती। भला इतनी सस्ती लड़की संसारमे और कहाँ तुम्हे मिलेगी ?"

"हमे सस्ती नही चाहिए।"

"अच्छा ! मँहगी ही तुम्हारे लिए..." मेरी आँखोमे देखते हुए उसने कहा, "ठीक करूँ ?"

बाहरसे बूढ़ेके खाँसनेकी आवाज आई। बेलाने उनके पास जाकर कहा, "दद्दू ! सास्काके लिए एक शादी ठीक करो।"

५

कोजाक समाजकी कई विशेषताये हैं। उनका स्वभाव, रहन-सहन, चाल-ढाल समझ पानेके लिए अकसर ही पन्द्रहवीं शताब्दी तक पीछे जाना पड़ता है। उस वक्त उनके स्वभावमे जो फर्क आया वे आज तक उसे भुला नहीं सके हैं और इसकी भी कम उमीद है कि अगली कई पीढियो तक वे अपनी उस विशेषताको पूर्णतया भुला डालनेमे समर्थ हो सकेंगे।

पद्रहवीं शताब्दीके समय आघातद्वारा पक्की की हुई विशेषता आज भी कोजाकोमे ज्योकी त्यो वर्तमान है। उस वक्त मगोल लुटेरोकी सेनाओंने दक्षिणी रूस उजाड़ दिया था। वे जहाँ भी गये गॉवके गॉव जलाते गये, कत्लेआमका हुक्म देते गये, जितनोको पाया गुलाम बना लिया और देश वीरान कर छोड़ने लगे।

दक्षिणी रूसवालोको इनका सामना करना पड़ा। सदा आफतकी परिस्थितिने उन्हे ऐसा निर्भय बना दिया कि उनके कोषसे 'भय' शब्द ही उठा जाने लगा। दबावके कारण उनके भीतर एक नई शक्ति जाग्रत होने लगी। अपनी रक्षाके लिए वे बिखर कर बसने लगे, खासकर वैसे स्थानोपर वे जा बसे जहॉ उस समयकी दृष्टिसे शत्रुओके हमलेसे अपनेको बचानेमे सुगमता थी। उनकी सारी शक्ति अपनेको खतरेके जीवनसे बचाते चलनेमे खर्च होती थी।

पुराने शहर, गॉव, मुहल्ले-टोले टूटने लगे और उनके स्थानपर कोजाकोके उपनिवेश बसने लगे। इन उपनिवेशोको उन्होने सैनिक दृष्टिसे संगठित किया और इनका नाम कुरेन (कोजाक गॉव) पड़ा। ये कुरेन हर वक्त लडाईका सामना करनेके लिए तैयार रहते थे। इनकी कोई स्थायी सेना नही होती थी। फिर भी लड़ाई या विद्रोहके समय एक हफ्तेके ही भीतर अपने बीचके सब लड़ाके जवानोको घोडेकी पीठपर चढा लड़ाईके मैदानमे खड़ा कर दे सकते थे। इनका संगठन वर्तमान 'रिक्रूटिग' अफ़सरोके संगठनसे कहीं अधिक पुख्ता था।

इस प्रकारके सगठनमे खर्चकी कोई विशेष आवश्यकता नही पड़ती थी। प्रत्येक कोजाक अपने खर्चका आप बदोबस्त कर लेता था। लडाईसे लौटनेके बाद वे फिर अपने रोजमर्रेकी खेती या व्यवसायमे लग जाते थे। परिस्थितिने ही उन्हे अपने आपके ऊपर निर्भर करनेके लिए बाध्य किया था और इसीलिए शायद ही कोई वैसा आवश्यक शिल्प होगा जिसे कोजाक न जानते हो। वे स्वयं अपनी शराब बनाते,

घोडा गाडी तैयार करते, बारूद बनाते और बंदूकें तक तैयार कर लिया करते।

वैसे शान्तिके दिनोमे वे खूब शराब पीकर मस्त रहा करते पर ज्यो ही उनके सरदारकी डुगडुगी पिटती—"अब पीना बद करो, कोजाकपर मुसीबत आई है, अपनी रक्षाके लिए लडाईके मैदानमे आ जुटो—" शायद ही लडने योग्य कोई व्यक्ति अपने घरमे टिक पाता।

सबसे पहले पोलैंडके राजाओने कोजाकोकी शक्ति परखी और उसका अपने लाभके लिए उपयोग करनेका रास्ता सोचा। उन्होने कोजाक सरदारोको अपनी ओर मिलाया और उनके ही जरियेसे, उनको ही अपना हेटमैन (सैनिक अफसर, कोजाक सरदार) मुकर्रर कर कोजाकोपर अपना कब्ज़ा रखा।

आगे चलकर रूसके जारने कोजाकोकी बहादुरी और उनके खतरेसे न घबरानेवाले स्वभावका अपने लिए उपयोग किया। जारकी सेनामे सबसे अच्छे, हमेशा फर्मावरदार, विश्वासी सैनिक कोजाक ही हुआ करते थे। उन्हे जारशाहीका अस्त्र बनाये रखनेके लिए शिक्षित होनेसे रोका गया। जल्लादीका भी काम उनसे ही लिया जा सके इसलिए आदमी-यतसे जितना सभव हो सका उतना दूर उन्हे रखा गया।

कुछ दिनोबाद कोजाक किसानोपर जारका आर्थिक अकुश भी फिरने लगा। दो तीन बार कोजाकोने विद्रोह कर अपनेको जारकी हुकूमतसे स्वतत्र बनानेकी कोशिश की, पर असफल रहे। उनके स्तेका राजिन और पुगाचोव जैसे बहादुर नायकोने वीरतामे कोई कसर उठा नही रखी पर फिर भी वे जारके सामने नहीं टिक सके। उनका सर आम चौकपर जारके सामने कुल्हाडेसे काटकर धडसे अलग किया गया।

रूसी क्रान्तिके पहले तक ये कोजाक जारके द्वारा बहुत अधिक सताये जाते रहे। उन्हे भी स्वतंत्र करनेवाली रूसी क्रान्ति ही हुई। आरभमे क्रान्तिके मकसदको न समझ सकनेके कारण कोजाक उसके खिलाफ़

लड़े। बादमें भी मजदूर सरकारके विरोधियोंने कई बार भड़काकर उन्हें विद्रोही बनाया। पर अंतमें जब वे स्वयं इस बातका अनुभव करने लगे कि क्रान्ति उनके लिए आज़ादी दिलानेकी पक्षपाती है और आर्थिक अवस्था भी सुधारनेवाली है तो वे अब मजदूर सरकारके समर्थक हो गये हैं।

पर फिर भी पुरानी पीढीवाले अपने सामाजिक मामलोंमें सोवियत सरकारका किसी प्रकारका भी दखल माननेके लिए तैयार नहीं। ऐसे ही लोगोंमें हमारे बूढे दादा भी थे। उन्हें अभी भी कोजाकोंका साधारण अनपढ जीवन सबसे अधिक पसंद आता था। दैनिक जीवनमें मास्को फैशनके माननेवालोंके ये सख्त विरोधी थे।

इसी लिए जब बेलाने मज़ाकमें शादीकी बात उनके सामने छेड़ी तो उन्होंने उत्तर दिया, "यह तो बड़ी ही शरमकी बात है। इस छोकरेने तो अबतक लड़ाईका मैदान देखा नहीं और अभीसे औरतोंके बारेमें सोचने लगा—छिः छिः। भला इससे अधिक शरमकी बात और क्या होगी? यदि कोई कोजाक छोकरा हमारी पीढीका होता तो यह खयाल आनेके पहले ही वह चुल्लू-भर पानीमें डूब मरता, और नहीं तो मैं ही उसका सर खीरेकी तरह काट डालता।"

वह देर तक बिगड़ते रहे। उसी दिनसे मेरा पढना लिखना बंद कर दिया गया।

६

अब बेलासे मेरी मुलाकात सिर्फ मछली मारनेके समय हुआ करती। गाँवसे थोड़ा हट कर डोन किनारे एक छोटा-सा टीला था। वही हम लोगोंके मिलनेका स्थान रहा करता। वह स्थान कई दृष्टिसे हमारे लिए बड़ा ही उपयुक्त था। उधर गाँवके लोग बहुत ही कम जाया करते। उसी ओर शायद क़ब्रगाह भी था इस लिए उस ओर निगाह पड़नेपर भी लोग और खासकर बूढे क्रासका निशान बनाया करते।

जिस टीलेपर मैं बेलाकी प्रतीक्षा करता उसके विषयमें भी बहुत तरहकी बातें लोग किया करते। कोई कहता कि बहादुर स्तेका राजिनके साथी कोजाक जिन्होंने रूसी ज़ारके खिलाफ हथियार उठाया था वहाँ गाड़े गये हैं। कोई कहता कि किसान-विद्रोहके नेता पुगाचोवके साथी कोजाकोंकी वह क़ब्र है, और किसीका कथन था कि पीटरके साथ युद्ध करनेवाले एक महान कोजाक हेटमैनकी वह समाधि है। जो भी हो, वह एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान था, जिसके नामसे लोग भय खाया करते थे। कितने अंध-विश्वासी लोगोंने तो यह भी फैला रखा था कि सब मरे हुए क्रान्तिकारी कोजाक अब भी आधी रातके समय वहाँ अपनी सभा किया करते हैं। इसी लिए वह स्थान बिलकुल ही एकान्त रख छोडा गया था।

वहाँसे डोनका सौन्दर्य भी बड़ा ही अद्भुत था। चाँदनी रातमें किनारेकी हरियाली बड़ी ही मधुर मालूम देती। बालू दूधके रास्ते-सी दिखाई देती। जो घोडे पानी पिलानेके लिए ले जाये जाते उनका हिन-हिनाना कभी कभी सुनाई देता। किनारेकी मछलियाँ अकसर ही छपछप कर छोटी मछलियोंको पकडनेकी चेष्टा किया करतीं। गाँवके सामनेके किनारेसे बडा ही करुण विरही कोजाक-राग सुनाई पडता।

बेलासे जिस समय मिलनेका वादा होता उसके बहुत पहले ही मैं उस टीलेपर जा बैठता। बेला अपने स्कूलकी एक छोटी-सी नौका ले कर आया करती। हम लोग खेते हुए 'शैतानोंके टापू'की ओर चले जाते। घर लौटते लौटते प्रायः ही आधी रात हो जाया करती।

बूढे दादा बहुत पहले ही ताश और वोदका खतम कर घर आ गये होते। एक दिन उन्होंने मेरे कमरेमें आ कर कहा, "देख साश्का!" उनके चेहरेकी झुर्रियाँ बहुत गहरी हो चली थीं—"मैंने सुना है कि तुझे भी बेलाने..."

"कुछ भी नहीं बूढे दादा, हम मछली पकड़ने जाते हैं।"

" खबरदार ! " अब उन्होंने थोड़े कर्कश और गुस्सा-भरे शब्दोंमे कहा—" लोग यह भी कहते हैं कि तुम गाँवकी लड़कियोंको भी बिगाड़ा करते हो। यह मैं वर्दाश्त नहीं कर सकता। बहुत-से हमारे पड़ोसी हैं। मैं तुम्हें लेकर किसीसे मार-काट नहीं करना चाहता—।"

" सरासर झूठ है दादा। "

" चुप रहो। पहले मेरी सुनो। अगर फिरसे शिकायत सुननेमे आई तो शामका तुम्हारा घरसे निकलना बंद कर दूँगा। "

बेलाको भी इसी प्रकारकी डाँट दी गई। वह इसकी अभ्यस्त हो चुकी थी। उसने मुझे सोचमें पड़ा देख अलग ले जाकर कहा, " बूढेको बकने दो न! उसके बकनेसे हमारा घूमना थोड़े ही बंद होगा। "

लीजा

१

मुर्गेने पहली बॉग दी थी। खिड़कीसे किसीने छडीद्वारा खोचते हुए मुझे जगाया—" सारका ! सारका ! ऐ सारका ! "

बेलाकी आवाज़ थी। मैं झपटकर उठ बैठा।

" मछली पकड़ने नहीं चलते ? "

" अभी..."

मैं उसी खिडकीसे कूद कर बाहर आया। आसमानमें अब भी तारे जगमगा रहे थे। उनका रंग फीका हो चला था, मालूम पड़ता था मानो किसी खलिहानमे अन्न बिखेर दिया गया हो। डोनका सारा दृश्य चॉदनीमें धुल रहा था। किसीने वैसे धुले रास्तेको पार किया होगा इसमे सन्देह था।

हम लोग अपनी आहट बचाते हुए चले जिसमे गाँवके कुत्ते न जाग पडे। चारो तरफ बिलकुल सन्नाटा था। कभी कभी केवल किसी बूढ़े कोजाकके जोरोसे खर्राटे लेनेकी आवाज आ जाती थी। एक खिड़कीसे भी कानाफूसी जैसी आवाज़ आई—" बेला दीदी ! मैं भी आऊँ ? "

" कौन ? लीजा ? "

" हॉ। "

" आ न ! इसमे लगा क्या है !"

" तुम्हारे साथ यदि पकडी गई तो आफत आयगी। चलो मैं पीछे

पीछे आती हूँ। नाव बिना मेरे आये न खोल देना!

बेला नावमें बैठ चुकी थी। लीजा किनारेपर खडी अनाडी जैसी कहने लगी—“ कैसे आऊँ ? कपड़े गीले हो जायँगे।”

पानी बहुत कम रहनेके कारण नाव किनारे नहीं सटाई जा सकती थी। बेलाने कहा—“ ठहरो, तुम्हें साश्का उठाकर रख देगा।”

“ नहीं—” कहते हुए उसने मेरा गला दोनों हाथोंसे पकड़ लिया। मैंने उसे हल्केसे उठाया। वह धीरेसे चीख उठी—

“ वहाँ नहीं! थोड़ा और नीचे हाथ रखो।”

मैं कुछ समझ नहीं सका। वह नावके एक सिरेपर जा बैठी। कोजाकोंके बीच भी ऐसा सौन्दर्य पाया जा सकता है इसपर हठात् विश्वास नहीं हो रहा था। जीवनमे बनावटी पुतलियाँ बहुत देख चुका था और शायद पहली झलकमें उन्हे सौन्दर्यकी रानी भी कह उठा था, पर यह सौन्दर्य उससे कहीं बढ़ा-चढा था। बनावटी निकटसे देखनेमें अच्छी नहीं लगतीं इसी लिए उनका माप मैंने गजके हिसाबसे रखा था—जैसे सौ गज, पचीस, दस, पाँच गजपरका सौन्दर्य। उतने फासलेसे निकट आ जाने पर उनका वह सौन्दर्य रह नहीं जाता था, शायद कुछ अंशमे वे भद्दी भी हो चलती थीं।

पर लीजामे यह सिफत नहीं थी। कृत्रिमता तो उसमें छूतक नहीं गई थी। उलटे उसने कपड़े बेढंगे और अनाड़ी तरीक़ेसे पहन रखे थे—मालूम पड़ता था जैसे हीरा सूखी घासमें लपेट कर रखा गया हो।

स्वभाव भी वैसा ही सरल। बैठते न बैठते ही उसने कहा—

“ कल रातको भी मुझे बडी मार लगी है। आज तडके उन्हें गेहूँ बेचने शहर जाना था। इस लिए रात-भर न खुद सोये और न मुझे सोने दिया। जब जब झपकी टूटती मुझे घूँसोसे मारा करते। जाते जाते भी छातीमे दो धौल ऐसी दी हैं कि मुझे मूर्छा-सी आ गई थी।”

उसने बिना किसी सकोचके छातीका कपडा हटाके दिखला दिया। जिस

जगह घूँसा लगा था उसके चारो तरफ दूर तक काला निशान हो गया था।

वह रेलवेस्टेशनसे बहुत दूर एक कोजाक गॉवकी रहनेवाली थी। अभी तीन ही महीने हुए वलोद्या कत्ल्यारोव नामके एक ढलती जवानीके धनी कोजाकके साथ माता पिताने दो गाय और एक बंदूक पचीस कारतूसोंके साथ लेकर उसकी शादी कर दी थी।

जिस दिनसे वह कत्ल्यारोवके घर आई वह इसे पीटा करता। पीटते वक्त पेट, पीठ, छाती आदिका कुछ भी खयाल नहीं रखता। खयाल उसे सिर्फ यह रहता कि दाग बाहरसे न दिखाई दे, नहीं तो सोवियत राज्य है उसे सजा अवश्य हो जायगी।

लीजाका कसूर सिर्फ़ इतना था कि उसके एक बड़े भाईने गृह-युद्धके समय विरोधी कोजाकोका साथ न दे सोवियत सरकारका साथ दिया था और राजीन्स्की गॉवके दो कोजाकोको लड़ाईमें मार डाला था। कत्ल्यारोव उस समय भी सोवियतके खिलाफ लडा था पर अंतमे माफ़ी मॉग लेनेके कारण छोड दिया गया था। अब भी यदि उसका बस चलता तो वह सोवियतको नुकसान पहुँचाता, पर उतनी शक्ति उसमें नहीं थी। इसी लिए अपना सारा गुस्सा लीजाके ऊपर उतारा करता। कभी कभी वह पीटते पीटते कहता भी—"यह ले, यह है तुम्हारे भाईके लिए! यह है दो कोजाकोके मारनेका प्रतिशोध! और यह है सोवियत सरकारके तरफसे लड़नेका प्रतिशोध!"

लीजा जिस प्रकारके समाजमे बड़ी हुई थी उससे भिन्न कुछ सोच भी नहीं सकती थी। कत्ल्यारोव कहता—"कोजाक औरते बिना मारे ठीक नहीं रह सकतीं, औरतोको पीटना कोजाक-परंपरा है, भला मैं यह भंग कैसे करूँ?"

लीजा पहले इन बातोको स्वाभाविक मानती। केवल बेलाकी संगतिमें आनेपर वह सोचने लगी थी कि वे बाते भी अस्वाभाविक हो सकती हैं। अब वह थोड़ा बहुत यह भी समझने लगी थी कि औरतोकी भी मनुष्यकी

श्रेणीमे गिनती की जा सकती है, फिर भी पतिका पत्नीके ऊपर सब तरहका अधिकार होता है यह बात वह अपने मनसे नहीं हटा पाती थी।

बेलाने उसे यह भी सिखलाया था कि औरतोंका साधारण स्त्रीकी हैसियत रखनेके सिवा भी कुछ धर्म है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। यह 'कुछ' लीजा अभी पूरा पूरा नहीं समझ पा रही थी पर इतना अवश्य अनुभव करती थी कि उसमें स्वतंत्रता और सुखका समावेश अवश्य है। अब कभी कभी वह अपने आपसे प्रश्न भी किया करती—"हमारे इस तनिक सुखसे ससारको इतनी जलन क्यों? क्या यह अपराध है?"

"हॉ है।" उसका कोजाक हृदय उत्तर देता और वह कॉप जाती।

उस दिन नावपर भी उसके चेहरेसे झलक रहा था कि वह आजादीका पूरा पूरा सुख भोग पानेमे समर्थ नहीं हो रही है। अपना ही दिल उसे सहमा रहा है। वह नावपर बैठी थी। डूबनेका भय नहीं था, फिर भी वह रह रह कर कॉप जाती थी। साथ ही दूसरे क्षण एक विचित्र मुसकराहट भी उसके चेहरेपर दिखाई दे जाती। यह आनन्द और भयका मिलन उसके चेहरेको और भी सरल, मधुर और सुन्दर बना दिया करता था। उसका हृदय वास्तवमे कितना सच्चा और निष्कलंक है यह शीशेकी तरह झलक रहा था।

बेला उसे पहले कई बार सलाह दे चुकी थी कि वह वैसे पतिको छोड़ दे। लीजा जिसे एक बार पति मान चुकी थी उसे छोड़नेके खयाल मात्रसे ही कॉप जाती। बेला उसे समझाया करती—

"तुम्हारी शादी तुम्हारे पिताने दो गाये और एक बंदूक लेकर कर दी है, तुम खुद कमा कर आसानीसे ये चीजें कतूल्यारोवको लौटा दे सकती हो। रहा सवाल आगेका, सो क्रान्तिने सारे रूसके औरत-मर्द दोनोंको ही समान अधिकार दे रखा है। और तू भी अपनी योग्यतानुसार कमा कर स्वतंत्रतापूर्वक—बिना पतिपर निर्भर किये जी सकती है।"

उसने लीजाको कई बार घरसे भाग निकलनेकी भी सलाह दी थी पर उसे बहुत डर लग रहा था। डर वास्तवमे किस प्रकारका था वह स्वयं नहीं समझ पा रही थी। बेलाने उसे समझाया था, "यदि तुम्हे यह डर है कि भागनेमे सफल न हुई और पकड़ी गई तो तुम कहींकी नहीं रहोगी, तुमपर खूब मार पड़ेगी तो यह भय छोड़ दो। सबसे निकट जो सोवियत सिपाही या पार्टीका सदस्य मिले उसे सूचित करो, वह तुम्हारी रक्षा करेगा। कोई तुम्हारा बाल भी बॉका नहीं कर सकेगा।"

बेला इस प्रकारकी सहायता करनेके लिए स्वय कष्ट उठानेको तैयार थी, पर लीजाका डर इस प्रकारका नहीं था। उसका कोजाक-हृदय ही उसे रोकता था जिसके खिलाफ़ उसकी एक भी दलील नहीं चल पाती थी।

यही कोजाक-हृदय उसे नावपर भी सता रहा था। वह सहम कर बैठी थी। मानो अपना मुँह छिपा लेना चाहती हो। बरफ-जमी नदीको मार्च महीनेमे अकेले चलकर पार करते समय जैसा डर लगता है वैसा लीजाको इस समय नावपर बैठे बैठे लग रहा था।

वह बड़ी देरतक चुपचाप बैठी रही। हममेसे किसीने उसे नही टोका। नौकाको प्रवाहमे बढते जानेके लिए छोड दिया था। हवा कभी कभी लीजाकी गफलतमे कपडे हटा दिया करती और उसी क्षण उसकी छातीका घाव झलक जाया करता।

बहुत दूर निकल जानेपर वह हॅसी। उस हॅसीका कारण शायद उसे भी अज्ञात था।

"आज कितना सुन्दर प्रभात है—" उसने उगते सूर्यकी ओर देखकर कहा—"लेकिन क्यो......आः...बेला!..."

२

हम लोगोके घर लौटते लौटते सूरज बहुत ऊपर उठ चुका था। डोन किनारे गॉवके अनेको आदमी दिखाई देने लगे थे। कोई गाये चर

रहा था, कोई घोड़ोको पानी पिला रहा था—कितनी ही औरते कपड़ा धो रही थीं। इन सबकी दृष्टि बचाना असंभव था।

लीजाको उसके घरके सामने उतार दिया। नावसे ही हम लोगोंने देखा वह पिछवाड़ेके रास्ते भीतर चली गई।

घर जाकर देखा—बूढ़े दादा अपनी ही उम्रके एक दूसरे बूढ़े कोजाकके साथ बैठे वोदका पी रहे थे। इस दूसरे कोजाककी भी उम्र पचासके ऊपर रही होगी। शरीर पतला और चेहरा क्राइस्टके चेलोंके इटालियन चित्रकारो द्वारा ऑके गये चित्रोंसे मिलता जुलता था। सफेद दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। कानके पास घुँघराले बाल भी सफेद रेशम-से चमक रहे थे। ललाटके ऊपरका भाग दूरतक चिकना था। ऑखोंमे बुद्धिमानी भरी थी; हाव-भाव नरम और दयालु।

हमारे पहुँचते पहुँचते दादा उनसे प्रश्न कर रहे थे—

"अच्छा, ईवान निकोलायविच! यह तो बतलाओ, १९०५ सालमें तुम कहाँ थे?"

"उस साल पिटर्सबुर्गमे था।"

"किसके रेजिमेंटमे?"

"बगदानोवके।"

"बगदानोवके?"

"वही तो कहा।"

"तब तो ९ जनवरीको जो क़त्लेआम राजप्रासादके सामने हुआ था उसमे तुम भी रहे होगे?"

"था तो! उस दिनकी कई घटनायें मुझे आजतक याद हैं। मै उस दिन सबेरे......"

"और मैं था उस वक्त तुन्नानबायविचके रेजिमेंटमे—" दादाने टोकते हुए कहा—"था तो सिपाही लेकिन धाक रखता था कप्तान-की..."

" सबेरे हम लोग परेड करके नाश्ता करने जा रहे थे। उसी समय पगली घंटी हुई। "

" कप्तानसे कम मेरी धाक हर्गिज नहीं थी—" दादाने झुँझला कर कहा। उन्हे पहले अपनी बात कहनी थी और ईवान निकोलायविच पहले अपनी कहना चाहते थे। पगली घंटीका नाम सुन कर दादा रुक गये और गंभीर होकर पूछा, " पगली घंटी! पगली घंटी किस लिए?"

" जो लोग महलकी ओर ज़ारके पास दरखास्त पेश करने आ रहे थे उनपर गोली चलाने और संगीनसे उनका मास नोच लेनेके लिए..."

" उसके ठीक दो दिन पहले मैं जापानके साथके युद्धमे घायल हो जानेके कारण ईर्कुट्स्कके अस्पतालमे भर्ती किया गया था। "

" जिस वक्त संगीन ताने हुए हम लोग भीडकी ओर जा रहे थे एक जवान लडका—शायद वह विद्यार्थी रहा होगा—दौडता हुआ हमारी ओर आया और बोला—' मत मारो! मै भी कोजाक हूँ। मेरा घर नेवो चेरकास है। तुम रुपयेके लोभमे नौकरी करते हो, हमारी जान लेते हो—लो ये रुपये...जितने मेरे पास हैं लुटाये देता हूँ!' एक हजार रुब्लका नया कडकड़ाता हुआ नोट वह हाथमे लिये था। उसपर जारकी छपी हुई तसवीर हमे दूरसे ही दिखाई पड़ी। हमारे सेनानायकने वह नोट ले लिया और अपने ऐडजूटाटको कहा—' यह जवान ज़ारका सबसे बडा बागी है—उसका सर काट कर ले चलो!' दूसरे क्षण उस विद्यार्थीका सर धड़से अलग था। "

" कोजाक जवानको इस तरह मार डाला?" दादाने ऑख लाल कर कहा।

" हॉ, हॉ, कोजाकको मार डाला। मैंने उसका खून देखा था। वह औरोंके बनिस्बत ज्यादा गाढ़ा और ठीक हमारे तुम्हारे जैसा था। "

" शैतान...पाजी...हराम..."

" उसी दिनसे मैं ज़ारके खिलाफ हो गया। बहुत दिन तक ज़ार

निकोलाईकी जानका प्यासा रहा पर वहाँ मुझे ड्यूटी और नहीं मिली । मैं भेज दिया गया पागलखानेमे । सात वर्ष पागलोके बीच रह कर यहाँ आया । यहाँसे भी मै यही बाट जोहता रहा कि ज़ारका तख्त उलटनेवाला दिन आये और मै अपने साथियोको हुक्म दूँ—"आगे... चलो...मारो...काटो..."

ये बाते सुन कर नीदमे ही दादा दॉत पीसने लगे और वे ही बाते अस्पष्ट शब्दोमे दुहराने लगे ।

३

दोनो बूढोकी नीद गॉवके नारद—कोश्काने तोडी । सारे गॉवमे यह हल्ला हो चुका था कि लीजा कतूल्यारोवा भ्रष्ट हो चुकी है । कितनी औरतोने इसे ऑखो देखा था । इसकी वे शपथ खा सकती थीं । कितनी दावेके साथ यह कहनेको तैयार थीं कि वह जबसे शादी कर लाई गई है किसी भी रात घरपर नहीं रही । उसे दंड देनेके लिए गॉव-भरके लोगोकी पॅचायत होनेवाली थी ।

"ईवान निकोलायविच ! ईवान निकोलायविच ! " कोश्काने जगाते हुए कहा—'अपनी पतोहूका हाल सुना है ?"

"उसे किसने काट डाला ? किसने ? उसे मारो ! काटो ! मत छोडो !" दॉत पीसते हुए बूढे दादा भी जग पडे ।

"काटा नहीं, वह भगा ली गई ।"

"भगा ली गई ?" ईवानने आश्चर्यमे आकर पूछा—"कौन ले गया ?"

"कोजाक औरतको भगानेवाला कहॉ जन्मा है ?" दादाने दॉंत पीसते हुए कहा—"हम कोजाकोने तुर्की, उक्रैनियन, फारसी सब तरहकी औरतोकी लूट की है, पर हमारी औरतोको कोई लूट ले जाय यह तो कभी नही सुना । बेहूदे कहींके ! तू झूठ बोलता है—तुझे शैतान ले जाय—थू...!" उन्होने दॉत पीस कोश्काकी पीठपर एक धौल जमा दी ।

कोश्का अलग हटकर जल्दी जल्दी कहने लगा—"उसे किसीने लूटा नहीं—वह खुद लुट गई! खुद भाग गई!"

"तू फिर झूठ बोलता है!" इस बार ईवान निकोलायविचने कहा—"जब वह भाग गई तो उसे तूने देखा कहाँ?"

"भाग गई माने अपने पतिको छोडकर उसने दूसरी शादी कर ली।"

"चुप रह लुच्चे! यह भी आज तक कोजाकोमे कहीं हुआ है?" इस बार दोनो बूढ़ोने वास्तवमे नाराज होकर कहा।

दादा फिर मारने दौडे। कोश्का भाग गया।

४

राजीन्सकी गॉव डोनके ठीक किनारे बसा था। इसी लिए जमीनमे बालूका अंग अधिक रहनेके कारण मकानोकी नीवे मजबूत नहीं थीं। थोड़ी तेज हवा चलनेपर ही मकान हिलने लगते थे।

उस दिन संध्यासे कुछ पहले जोरोकी ऑधी आई। घने बादलोके कारण सबेरे ही गॉव अंधकारमे छिपने लगा। फेनसे भरी डोनकी लहरे किनारेपर जोरोसे आघात करती और साथ ही हमारे मकानको भी हिला देतीं। बूढे घरोमे जा बैठने लगे। बच्चे और जवान बाहर निकल नाचने और उत्सव मनाने लगे।

डोन किनारेके चौराहेपर बहुत देरसे युवा-युवती इकट्ठे हुए थे। लीजा भी उनके चारो ओर खड़े लोगोके बीच मुँह छिपाये चुपकेसे जा खडी हुई। उसीके क़दके एक युवकने उसे देख लिया और उसका हाथ पकड बीचमे खीच लाते हुए कहा—"कोजाक नृत्यके लिए मेरी तुम्हारी जो जोडी बनेगी—वह सारे गॉवके लिए देखने योग्य होगी।"

लीजाके बाँये हाथमे किसीने एक रूमाल पकडा दिया। युवक टिहुनियॉ रोप नाचने लगा। तुरत दो कदम पीछे हट पावोको नाचके तालमे फेकते हुए बड़ी कलापूर्ण आकृति बना लीजाको आगे आगे नचाता स्वय उसके

पीछे पीछे चलने लगा। लीजा नाचद्वारा शायद नदीका पार करना दिखाना चाहती थी। पानीमें प्रवेश करनेके पहले जैमी कनकनी मालूम होती है वह उसने दिखाई, फिर अपने नीचेके कपड़े गीले होनेसे बचानेके लिए ऊपर उठाये और तुरन्त ही भय छोड़ एक छलाँग दे तैरने लगनेके समान हाथ और पाँव दोनोंके चलनेकी रफ्तार खूब बढ़ा दी। बाजेवालेने भी अपनी रफ्तार उसी हिसाबसे बढ़ाई।

चारों ओरसे 'वाह वाह' होने लगी और तालियाँ पिटने लगीं। लीजा बहुत देर तक नाचती रही। उसका चेहरा लाल हो आया, वह पसीने पसीने हो चली फिर भी उसने नाचना नहीं छोड़ा। उसके चेहरेपर आनन्द और मुसकराहट थी। वह उस दिन दिल खोलकर नाच रही थी।

हठात् उसकी दृष्टि भीड़को चीरते हुए आगे आनेकी चेष्टा करते हुए एक व्यक्तिपर पड़ी और वह पत्थरकी तरह खड़ी हो गई। कतूल्यारोवने उसके बाल जोरोंसे पकड़ खींचते हुए कहा—"पापिन! डायन कहींकी! मेरे मुँहमें कालिख लगा कर यहाँ नाच रही है!"

उसे पंचायतके सामने ले जाकर खड़ा किया गया। बहुतसे बूढ़े कोजाक न्याय करनेके लिए वहाँ आ बैठे थे। बाहर जोरोंका पानी बरस रहा था और कभी कभी बिजली भी चमक जाया करती थी। एक बार ठनका बहुत जोरोंका हुआ। मालूम पड़ा जैसे सरपर ही आकर गिरेगा, लेकिन नहीं, केवल मकानको हिलाकर चला गया। लोगोंने अपने होठ दाँतोंसे दबा रखे थे।

पंचायतके लिए बैठे लोग दो विभागोंमे बँट चुके थे। पुरानी पुश्त लीजाको पूर्णतया अपराधी करार दे रही थी और उसके लिए सजाकी व्यवस्था करना चाहती थी। दूसरी ओर नई पुश्त लीजाके पति कतूल्यारोवको ही अपराधी ठहराती और उसे सज़ा दिए जानेके लिए जोर दे रही थी।

बहुत देरतक झगाड़ते रहनेके बाद बूढ़ोंने अपने बीचके एक बुजुर्गको संबोधन करते हुए कहा—" सिरगे एरमिलाई! तुम ही क्यों नहीं इस

मामलेका फैसला कर देते ? तुम बूढे भी हो, साथ ही हमारे डाक्टर भी हो—घोड़ोका इलाज सारे डोन इलाकेमे तुम्हारे जैसा कोई भी नही कर पाता। तुम बाइबिल भी पढ सकते हो। तुमसे बढकर चतुर और दुनिया-भरमे कौन हो सकता है!"

"हमारी राय चाहते हो तो सुनो!" घोड़ोंके डाक्टरने सबको शान्त करते हुए कहा—"हमारे कोजाक उपनिवेशका दंड-विधान इस प्रकार हुआ करता था—यदि कोई औरत अपने पतिको उसके तन्दुरुस्त और ज़िन्दा रहते छोड़ दूसरी शादी करती तो यह सारे कोजाक वंशके ऊपर कलककी बात समझी जाती।"

"ठीक है, हम अपने वंशपर कभी कलक नहीं लगा सकते!" बूढेने डाक्टरको प्रोत्साहित करते हुए कहा।

"और सज़ा इस कलकके लिए बहुत सख्त थी—" डाक्टरने कहा—"औरतको एक * खंभेसे बॉधा जाता और उसके पास ही एक चाबुक नमकमे भिगोकर रख दिया जाता। जो आदमी उस रास्तेसे निकलता उस औरतको एक चाबुक लगा दिया करता। यह तब तक जारी रखा जाता जब तक उस औरतकी मृत्यु नही हो जाती।"

"बहुत ठीक।"—सब बूढे एक साथ ही बोल उठे—"लीजाको यही सजा दी जानी चाहिए।"

"हमारे पितामहोके जमानेमे और एक प्रकारकी सजा थी" डाक्टरने कहना शुरू किया "पति अपनी औरतको भगा ले जानेवालेका गला अपने हाथोसे काटता और इसके बाद एक गढा खोदा जाता। उस गढेमे ज़िन्दी औरत रखी जाती और उसके ऊपर कटे हुएकी लाश। फिर उन दोनोको मिट्टीसे ढक दिया जाता।"

---

* कोजाक लोग इस खम्भेको लज्जाका खम्भा Pillar of Shame कहते हैं।

इन दो तरहकी सज़ाओंमेंसे कौन-सी काममें लाई जाय बूढ़े इसी पशो-पेशमें पड़े थे। नवजवान उनके खिलाफ़ थे। उनका कहना था कि सोवियत सरकारके रहते स्वयं इस प्रकारकी सजा देनेका हक कोजाकोंको नहीं है। बूढ़ोंकी यह दलील थी कि सोवियत सरकारको कोजाकोंके सामाजिक मामलोंमे दखल देनेका कोई हक़ नहीं। नवजवान कहते—यह हक़ जरूर है और न्यायाधीशके आसनपर रोस्टोवमें बैठनेवाले कोजाकके पास मामला जाना चाहिए।

डाक्टरने देखा कि नवजवानोंकी आवाज़ बुलंद होती जा रही है। मार-पीट हो जानेकी भी तैयारी हो रही थी। यदि हाथ छूटने लगते तो बूढ़े बुरी तरह पिट जाते। उनमें भी सबसे अधिक मार डाक्टरपर पड़ती। उन्होंने इसका ख़याल कर अपनेको सम्हालते हुए कहा—

"लेकिन एक बात और। यह सज़ा ज़ारके ज़मानेमें दी जाती थी। जारकी सल्तनत इसे प्रोत्साहित करती थी। इसका एक भारी कारण था। हम कोजाकोंको दबाये रखनेके लिए हमारे इलाकेमें रूसी सेना रखी जाती थी और उस सेनाके लिए ज़ारको औरतें जुटाना पड़ता था। खराबी किस समाजमें थोड़ी बहुत नहीं रहा करती? पर कोजाकोंमें भयंकर दंड-विधानके डरसे औरतें पहले ही घरसे भाग जाया करतीं और ज़ार उन्हें अपने सैनिकोंके लिए वेश्या बनाकर रख लिया करता।

"भाइयो! उस समय हम गुलाम थे। हमारी गिनती असभ्य लोगोंमें हुआ करती थी। आज हम स्वतंत्र हैं, हमारी गिनती सभ्य लोगोंके बीच होती है। आज हमें औरतोंको उस प्रकार सजा देनेकी ज़रूरत ही नहीं।"

"बहुत ठीक कहा—" इस बार सब नौजवान एक स्वरसे बोल उठे। एकसे जोश नहीं रोका गया। वह कहने लगा—

"भाइयो! ज़ारशाहीके ज़मानेमें हम अपनी ग़रीबी, गुलामी और अपने ऊपर होनेवाले सब तरहके जुल्मोंका सारा गुस्सा अपनी औरतोंपर उतारा

करते थ। अब हम खुद राजा हैं। सिर्फ डोन इलाका नहीं, सारा रूस हमारा है। हमारे ही गाँवके मार्शल बुदयोनी—लाल सेनाके उतने ऊँचे ओहदेपर मास्कोमे बैठे हैं। उनके डरसे सब बोर्जुई डरते हैं। हमारी ग़रीबी दिनो दिन दूर होती जा रही है, हमपर जुल्म करनेवालोका खात्मा हो चला है। फिर अब हम अपना गुस्सा औरतोपर क्यो उतारे ?"

"यदि बूढोको गुस्सा है तो वे अपनी बुढियोपर उतारा करें—।" एक दूसरा नवजवान बोल उठा।

सब लोग हँस पड़े। जीत नवजवानोकी रही।

पर बूढे इसे उतनी आसानीसे माननेवाले नहीं थे। हमारे बूढे दादा भी उन्हींके दलमे थे। उन्हे जब घर चलनेके लिए कहा तो उन्होंने डाँटते हुए कहा—"तुम यहाँसे भाग जाओ। हम लोगोने तुम्हे कोजाक प्रथाके अनुसार कल सज़ा देना तय किया है।"

मुझे विश्वास हो गया कि इस बार यह निरी धमकी नहीं है।

५

टपटपकर बूँदाबाँदी हो रही थी। बेलाने उस दिन मेरा बिछावन घास रखे जानेवाले घरमे किया था। डोनके तरफकी खिडकी खुली थी। अधकार धीरे धीरे कम होता जा रहा था। डोनका किनारा धुँधला पर दूर तक दिखाई देता था। मेरा परिचित टीला भी दूरपर मस्तक ऊँचा किये समूचे डोन प्रदेशकी निगरानी कर रहा था। इस वक्त मालूम नहीं क्यो, वह मुझे जीवित मालूम पडा।

गाँवकी ओरसे किसीके चीखनेकी आवाज़ आई। उस ओर एकटक देखने लगा। कुछ भी दिखाई नहीं दिया। धीरे धीरे आकाश बिलकुल साफ हो गया। चाँदनी खिलखिलाकर हँसने लगी। मैं अब भी जंगलेके पास खड़ा सामने देख रहा था।

कतल्यारोवके घरकी खिडकीके पास कुछ हलचल दिखाई दी। उसका

खिड़कीसे बाहर निकलनेका ढंग परिचित था। पिछले दिनकी अपेक्षा भी अधिक सावधानीसे वह बाहर निकली, सीधे डोनकी ओर चली।

मुझे संदेह हो रहा था, उसके पीछे पीछे तो कोई नहीं जा रहा है। कोई भी नहीं। डोन तरफ़वाली खिड़कीसे झाँककर देखा—वह मेरे परिचित टीलेकी ओर जा रही थी। अब उसने अपनी रफ़्तार भी तेज कर ली।

मुझे बिजली-सी लगी। खिड़कीके बाहर कूद आया। एक बार और चारों ओर देख लिया। कोई भी नहीं। चारो तरफ़ स्तब्ध। शायद झाड़ी, वृक्ष, नदी सब स्तब्ध एकटकसे यही देखना चाहते थे कि वह क्या करती है। वह स्वयं भी किसी झाड़ीकी आड़मे छिप गई थी। मैं भी रुक गया।

"मैंने तो कुछ नहीं किया—" दूर पर धीमे, करुण कॉपते हुए स्वरमें सुनाई दिया—"भगवान! सबसे अन्यायी तुम्हारा कानून है। क्यों नहीं ऑख खोलकर देखते? नहीं, तुम देखोगे कैसे? तुम तो स्वय अन्यायका साथ देनेवाले हो। अन्यायी तुम खुद, तुम्हारा सारा दल, तुम्हारी सारी दुनिया! जो तुममें विश्वास नहीं रखते उनका जीवन जरूर तुमपर निर्भर रहनेवालेंसे ज्यादा सुखी है। मैंने न्यायका भरोसा तुम्हार ऊपर छोड़ दिया था। तुमपर विश्वास किया—उसीका यह सब नतीजा है। ऐसे अन्यायीपर मेरा विश्वास नहीं।"

आवाज़ सिसकके रूपमें परिणत हो गई। थोड़ी देरमें वह भी बंद। मुझे भ्रम होने लगा, क्या वास्तवमें ही कोई ईश्वरसे बातें कर रहा था!

वह टीलेकी चोटीपर खड़ी दिखाई पड़ी। भयके मारे मेरे पॉव जमीनमें गॅथ गये।

"अन्यायी समाज...क्रूर संसार..."

और छलॉग। छप! डोनमें जोरोंकी आवाज़। किनारेपर जोरोंकी खलबली। हठात सब शान्त। जाकर देखा। वर्षाके कारण पानी बहुत बढ़

आया था। प्रवाह भी बहुत तेज था। एक क्षणमे वह किसीको कहाँसे कहाँ बहा ले जा सकता था।

टीलेके नीचे प्रकाड भँवर-सा बन रहा था। प्रवाहकी ओर लपका। दौडने लगा। दूर तक गया। कुछ भी नहीं। किनारेके पास काली-सी चीज। औरतोके लम्बे बालो जैसी। पकड़कर खींचा। घास। धीरे धीरे फिर टीलेकी ओर लौटा। वहाँ कोई खड़ी नीचे झॉक रही थी। मेरे पास पहुँचते ही मेरी छातीसे लिपट गई। अपना सर मेरी कमीजमे छिपा लिया। कमीज गीला हो चला तब उसने कहा—

"सास्का! आ...सास्का..."

६

हम लोग फिर बूढे दादाके यहाँ नहीं लौटे। हम नही चाहते थे कि उनका कथन सत्य निकले।

पैदल उत्तरकी ओर चले। जगल ही जगल। जहाँ मैदान थे और जो कभी जोते नहीं गये थे। वहाँ सिर्फ घोडोकी टापोके कुछ चिह्न विद्यमान थे। जहाँ तक दृष्टि जाती सोनेसे रगा हुआ हरा समुद्र-सा दिखाई देता। उसी समुद्रमे बहुत तरहके फूल बिखेर रखे गये थे।

एक बार और पीछे फिर कर देखा। डोन दृष्टिसे ओझल हो गया था।

द्वितीय खंड

बेला

१

मनुष्यके मन और हृदय दोनोकी एक ही हालत रहती है। ये कभी चुप नहीं बैठ सकते। यदि उनसे कोई चीज़ जबर्दस्ती छीन ली जाती है तो वे तुरत ही उसी प्रकारका या उससे मिलता जुलता ढूँढ़ लेते हैं। जीवित रहनेके लिए तथा हृदयको मजबूत बनाये रखनेके लिए पुरानी खोई वस्तुके ही समान नईका ढूँढ लेना शायद अनिवार्य हो जाता है।

मनुष्य बड़े परिश्रमसे ऊँची पहाड़ीपर चढता है। दृश्य सुन्दर मालूम होने लगता है, वह स्थान छोड़नेकी उसे इच्छा नहीं होती। वह वही बड़े परिश्रमसे एक झोपड़ी तैयार करने लगता है। खर, लकड़ी, बाँस औजार जुटानेके लिए मालूम नहीं उसे कितना कष्ट उठाना पड़ता है। वह तैयार हो जाती है। मनुष्यके हृदयमे उसके लिए एक विशेष प्रकारका खिंचाव हो जाता है। एक शब्दमे—उसे वह अपने आनन्दका भंडार मानने लगता है।

तेज बवडर आया। झोपड़ी उड़ गई। उस स्थानपर थोडेसे टूटे फूटे बाँस खूँटे स्मृति-चिह्नके स्वरूप शेष रह जाते हैं। वियोगमे हृदय रो उठता है। स्मृति-चिह्न उसे और भी अधिक रुलाते हैं। विरक्ति आ जाती है। सब अंत हुआ समझ पडने लगता है।

थोड़ा समय बीतता है। मनुष्य फिरसे साहस करता है। धैर्यसे काम

लेता है। उसी स्थानपर पहलेसे भी सुन्दर झोपडी खड़ी हो जाती है। जीवनमे फिरसे रस मिलने लगता है।

यह चक्र सदा चलता रहता है।

२

हम लोगोके दोनों कमरे द्वीपर नदीकी ओर थे। अपनी खिडकीसे हम दरियाका पूरा पाट देख सकते थे। उस पार अर्धचंद्राकार घना जंगल और कहीं कही मैदान दिखाई देता था।

बेला अक्सर मेरी खिड़कीपर आकर बैठ जाती। राजीन्स्की छोड़नेके बाद उसका चेहरा मुझे कुछ परिवर्तित हुआ दिखाई देता। यदि और कुछ नहीं तो चेहरा कुछ अधिक गभीर अवश्य ही दीखता जो बेलाकी प्रकृतिके विरुद्ध था। जब उसे यह पता चल जाता कि मैं उसके इस परिवर्तनके विषयमे कुछ पूछने जा रहा हूँ वह तुरत कोई दूसरी चर्चा छेड़ देती—"तुम्हे मालूम है, मैं इस मकानमे पहले भी रह चुकी हूँ। उस समय मॉ जिन्दा थी। हमारा जीवन भिक्षुणियोके जैसा था।"

"भिक्षुणियो जैसा? यह तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।"

"हॉ, असलमे ही। कमरेकी सजावट आज जैसी ही थी। किसी भी चीजमे चक-दक नही। पाउडर, क्रीम, सेटकी तो बात ही छोड़ो, आई-ना भी कहीं नही था जिसे देख कर तुम अंदाजा लगा सकते कि यहाँ कोई युवती रहा करती है।"

"तुम्हारा खर्च कैसे चलता था?"

"क्यो उसकी क्या चिन्ता? मैं स्कूलमे पढती थी, वहॉसे ही मुझे वजीफा मिलता और मॉ उस सामनेके कारखानेमे काम किया करती थी। हमारा खर्च ही बहुत सामान्य था।"

वह अपने सादे जीवनकी कथा विस्तारपूर्वक कहा करती।

३

कभी कभी वह बड़ी रात तक मेरे कमरेमे बैठी रहती। कोई भी बात छिपा सकना उसके स्वभावके विपरीत था। इसी लिए बात-चीतकी सामग्रीकी कमी नहीं रहा करती। दूसरे हमारे बारेमे क्या कहते हैं कभी कभी वह इसकी भी चर्चा किया करती। एक दिन उसने कहा—"तुम्हे मालूम है—हमारे पड़ोसी हम लोगोका सबध स्वामी-स्त्रीका समझा करते हैं। मैं उन्हे कितना भी इसके विपरीत समझा आती हूँ, कितनी ही दलील देती हूँ वे और कुछ माननेके लिए तैयार नहीं। मानेंगे कैसे? सबके सब खोखोल (उक्रैन प्रदेशके लोगोको रूसी लोग इसी नामसे चिढाया करते थे) ही तो ठहरे।"

उसने दोष खोखोलपनेपर लाद दिया पर मैं विचारमे पड गया। सामाजिक बधनोको थोडा ढीला करने पर उक्रैनिया ही क्यो, ससारके किसी भी हिस्सेके लोग यही समझते। फिर उक्रैनियावालोके लिए तो वैसा समझ सकना एक प्रकारसे और भी आसान था। उन दिनो सोवियत निवासियोको विवाहादि रस्मोको ही संसारमे सबसे अधिक महत्त्व देनेकी फुर्सत नहीं रह गई थी। उन्हे वे बडे ही स्वाभाविक रूपमे लिया करते। इसीलिए उसके उपलक्षमे कोई बड़ी धूमधामकी क्रिया नही होती। युवा-युवती नई विचार-धाराके अनुसार रहा करते और इसी लिए गिरजाघरमे पादरीके सामने जाकर विवाह करनेकी भी उन्हे आवश्यकता नहीं होती। वे जाया करते रजिस्ट्री आफिसमे और वहीं नाम लिखा लेने पर शादीशुदा समझे जाते। बिना इस रस्मके अदा किये भी कुछ लोगोकी 'शादी' हुई रहती यदि वे स्वयं केवल उसे स्वीकार करनेको तैयार होते। पर इस प्रकारके उदाहरण बहुत ही कम पाये जाते थे।

"उक्रैनियन दिमाग अब भी सकुचित है—" बेला कहती गई—"यदि उन लोगोने यह चर्चा न छेडी होती तो शायद हमारे दिमागमे

ये बातें कभी उठती ही नहीं।"

उसने मेरी ठोढी पकड़ ठीक अपनी आँखोंमें देखनेके लिए वाध्य करते हुए कहा—"क्यो सास्का !"

"हूँ।"

'हूँ क्या ?" वह जोरोसे हँस पडी—"तुम्हे देख कर तो मालूम पडता है अभी तुम्हारे दूधके ही दॉत नहीं टूटे। अभीसे शादी—वाह, वाह ! और मैं दुलहिन...खूब !"

हँसते हँसते उसकी ऑखोसे पानी टपकने लगा। मैंने बातचीतका रुख बदल दिया था। रात भी बहुत अधिक हो चली थी। वह कई बार अपने कमरेमे जानेके लिए उठी पर तुरत कुछ याद आ जानेके कारण रुक गई।

थोड़ी देर वह खिड़कीसे द्वीपरकी ओर देखती रही। फिर मेरी ओर देख बोली—"दैनिक जीवनके संकुचित बंधनोको पार कर जानेपर जीवन कैसा सुखी बन जाता है ! लोग इसे क्यो नहीं समझते ? क्यो उस सुखसे जान-बूझकर अपनेको दूर रखनेकी चेष्टा करते हैं ? मुझे तो उनकी ये बातें समझमें नही आतीं।

"पिता-माता अपने बच्चोको प्यार करते हैं, बच्चे अपने पिता-माताको प्यार करते हैं—भला इसमे आश्चर्य ही क्या ? जानवर भी इतना समझते हैं और इस नियमपर चलना उनके लिए भी स्वाभाविक है। आदमियोकी कुछ विशेपता होनी चाहिए। इनका परस्परका संबंध खूनके रिश्ते नातेसे नहीं बल्कि विचारके नाते होना चाहिए।"

वह मेरी चारपाईपर आकर बैठ गई। वहींसे उसने एक बार खिडकीके बाहर देखनेका प्रयत्न किया। द्वीपरमे दूरपर कोई जहाज जा रहा था। उसकी रोशनी दिखाई पडी। चक्कोंके पानी काटनेकी आवाज़ मनुष्य-हृदयकी गतिके तालमे सुनाई पड़ी।

पड़ोसियोंने घरकी रोशनी बुझा ली थी। मेरी रोशनी भी उसने बुझा

दी। मुझे भली भाँति चादरसे लपेट दिया और 'अब सोओ' कहकर चली गई।

४

जब वह अपने बचपनकी बाते याद किया करती तब सबसे पहले उसके सामने चित्र आया करता—छोटी-सी अँधेरी कोठरी। बीचमे किसी दुकानदारके यहाँसे उठा लाया गया देवदारका बाक्स जो मेजका काम देता था। उसीके दोनो ओर लकडीके दो कुदे जिनपर उसके माता-पिता बैठा करते। कभी कभी उस मेजपर एक टूटा हुआ चिनी मिट्टीका बड़ा-सा कठौता रहा करता जिससे भाफ निकलती।

बेला अपनी माँकी छातीसे चिपटी रहती। माँके शरीरपरका छोटा-सा कोट बहुत-से छेदोसे भरा था फिर भी उसीसे बेलाको ढक रखनेका माँ प्रयत्न किया करती। जब वह सर्दीके कारण चीख उठती तो माँ उसके मुँहमे काठके चम्मचसे मेजपर रखे भाफ उठते कठौतेसे माँड जैसी चीज डाल दिया करती। स्वाद कड़ुआ मालूम होता। पर गरम रहनेके कारण उसे निगलना ही अच्छा लगता।

"नीमेच! नीमेच! (जर्मन! जर्मन आये!") दूर पर कहींसे आवाज आई।

माँ बेलाको छातीसे चिपकाये दरवाजेपर आ खड़ी हुई। कोटके छेदोसे सर्दी भीतर घुस हड्डियोको हिलाने लगी। रूईके फाहेके समान बरफ पर सूरजकी किरणोके पडनेके कारण दृष्टि नहीं टिकाई जा सकती थी। आसपासके कृसमस झाड सफेद, मोटा, ठंढा, नरम दुशाला ओढे कान लगाये मालूम नही किसकी प्रतीक्षामे दम साधे खड़े थे।

कहीं दूर पर सैनिक सगीत बज रहा था। उधरसे ही सैनिकोके मार्च करनेकी आवाज आ रही थी। पिता उस ओर दूर आगे बढ उन्हे देखने चले गये थे। माँकी छाती जोरोसे धडक रही थी।

थोडी देरमे खाकी वर्दी पहने जर्मन सिपाही आये। उन्हे हुक्म देने-वाला एक विशाल-काय लाल मुँहवाला खूँखार अफसर था। उसका चेहरा देख बेलाको डर लगा। उसने अपना मुँह माँके जाकेटमे छिपा लिया।

बडी हो जानेपर उसने उस दिनका यह वृत्तान्त सुना।

खूँखार अफ़सरने गाँवके बहुत-से नौजवान और १९०५ सालकी क्रान्तिमे भाग लेनेवाले लोगोको पकड मँगवाया। यदि उनके घरकी औरतोने बाधा दी तो उन्हे ढकेल कर अलग कर दिया। वे खड़ी हो सिसक सिसक रोने लगी।

जर्मन अफ़सरने पकडे गये लोगोको गाँवके बाहर खड़ा किया। उन्हीं लोगोमे बेलाके पिता भी थे। जारके वक्तके एक रूसी जासूसने जो इस समय जर्मन अफसरका मत्री बन रहा था बेलाके पिताकी ओर उँगली दिखाते हुए कहा—"इस शहरका सबसे बड़ा बागी। १९०५ की क्रान्तिमे भाग लेनेवाला। साइबेरिया भेजा जानेवाला। मजदूर। बोलशेविक।"

"तुम्हारा नाम ?" जर्मन अफसरने डाँटते हुए बूढेसे पूछा।

"मिखाइल कुकुबेको।"

रूसी जासूसकी बताई सिफ़्त प्राण-दडके लिए पर्याप्त थी। पकड़े गये लोगोसे कब्रके समान गढे खुदवाये गये। एक एक आदमी प्रत्येक गढेके किनारे खडा किया गया। आठ जर्मन सैनिक उनकी ओर बंदूक तानकर खड़े हुए।

"फ़ायर!" अफ़सरने हुक्म दिया।

चार लाशे खड्डेमे गिर गई। बाकी पन्द्रह अब भी अपने स्थानपर खडे थे।

"और गोलियाँ इन बेहूदोके लिए नहीं खर्च की जायँगी—" अफसरने अपने सिपाहियोको सकेत कर कहा—"बंदूकके कुंदो और संगीनोसे काम लो।"

कुदे और सगीन चार्ज हुए। मरे अधमरे सब एक साथ गढेमे ढकेल

दिये गये। औरते जिन्हे कुछ सिपाहियोने अलग ढकेल रखा था—चिल्लाती हुई विपरीत दिशाकी ओर भाग चली।

खड्डेमे ढकेले गये लोगोपर मिट्टी डाली जाने लगी। उनका छटपटाना कुछ दूरसे ही दिखाई पड रहा था। मिखाइलका सर ऊँचा होनेके कारण पहचाना भी जा सकता था। उसने हाथ टेक ऊपर निकलनेकी कोशिश की। अफसरने स्वय उसके गढेमे मिट्टी डालते हुए कहा—

" मिट्टी वही तुम्हारे पास पहुँचा दी जाती है। और तकलीफ करनेकी जरूरत नहीं। "

" प्यारी उक्रैन! साथी लेनिन! कात्या...बेला..."

मिट्टीसे गढे भरे जाने लगे। अपना नाम सुन बेला उधर देखने लगी। दाढीवाला शात चेहरा उधरसे नहीं निकला। बेलाने उसे उस दिनके बाद और कभी देखा ही नहीं।

५

उन दिनो कीवमें रहनेका अर्थ था—रूसी आस्ट्रियन फ्रंटपर रहना। भय, आतक, लूट-खसोट, जोर-जुल्म, निर्दयता आदि जितनी चीजे युद्धके साथ साथ आया करती हैं वे सब उन दिनो कीवमे हमेशा ही वर्तमान रहा करतीं। रूसी क्रान्तिने उनका अंत किया तो उसके थोडे ही दिनो बाद गृह-युद्ध आया। जर्मन लोगोका कब्जा उक्रैनपर होने लगा। साधारण जनताकी अवस्था महायुद्धके समयसे भी बदतर होने लगी।

पहली स्मृतिके इतने कठोर रहने पर भी बेलाके मनमे कीवके प्रति बडा आकर्षण था। उसे वह मन ही मन दुनियाका सर्वश्रेष्ठ शहर मानने लगी थी। इसका कारण शायद यह था कि यहींपर उसने जनताको अपने ऊपर किये गये अत्याचारोका प्रतिशोध लेते भी देखा था।

कीवसे जर्मनोका आधिपत्य मिटानेके वक्त उसने देखा था कि वहाँकी जनता—सारी जनता इन्साफ और अपनी रक्षाके लिए एक सूत्रमे बँध

कर लड़ रही थी। साथ ही जनता यह भी समझती थी कि वह लड़ाई उनकी मातृ-भूमि उक्रैनको शत्रुओंद्वारा रौंदी जानेसे बचानेके लिए चल रही है। लोग सोवियत शक्ति और तवारिश लेनिनके लिए लड़ रहे थे जिसका अर्थ था अपने निजके लिए लड़ना। इसी शहरमें बेलाने पुत्रको पिताका, भाईको भाईके खूनका बदला लेते देखा था। अन्यायपूर्वक बहाये गये रूसी रक्तका पूरा पूरा प्रतिशोध इसी शहरमें लिया गया था।

बड़ी हो जाने पर बेलाको अभिमान था कि उसका जन्म वैसे मौके पर हुआ और वह वैसे बहादुरोंकी औलाद है। कीवमें जिस किसी व्यक्तिपर उसकी दृष्टि जाती उसका उज्ज्वल इतिहास उसे तुरत याद आ जाया करता। जिस प्रकार वह उस शहरकी ईंट ईंटसे परिचित थी उसी प्रकार वह वहाँके व्यक्ति व्यक्तिसे अपनेको परिचित—उनके साथ एक समझा करती।

६

काम हम दोनोंको ही मिल गया था। उसे सूती कारखानेके बुनाई विभागमें और मुझे एक प्रेसमें अनुवाद करनेका। उसका कारखाना चौबीस घंटे चालू रहता इसलिए वह प्रत्येक सप्ताह पारी पारी सुबह, दोपहर और रातको कामपर जाया करती। मेरा काम बहुत ही हलका था। आफ़िससे प्रायः ही कागज घर लाकर अनुवाद किया करता।

उसका सख्त काम मुझे बहुत खटका करता। खासकर उस दिन जब उसकी रातमें काम करनेकी बारी होती। नौ बजे रातको जब मैं सोनेकी तैयारी करता वह कामपर जाती। जब सुबहको मेरे उठनेका समय होता वह कारखानेसे सारी रात जगनेकी थकावट साथ लिये आती। उस दिन भी वह मुझे घरका कोई काम नहीं करने देती। औरतोंका मर्दोंके बराबर स्थान रखनेके सिद्धांतकी कट्टर पोषक होनेपर भी जिन कामोंको साधारणतया लोग औरतोंका काम कहते हैं, वह स्वयं ही किया

करती। झाड़ू लगाना, कपडे धोना, रसोई बनाना आदि सारा भार उसपर ही रहा करता। पर इन सब कामोंसे सख्त काम था रोटी लाना।

रोटीकी दुकानोंपर सौ सौ, डेढ डेढ सौ आदमियोंकी लबी कतारें खडी रहतीं। कभी कभी घटों खड़ा रहनेपर रोटी मिला करती। पानी बरसने अथवा स्नो पडते रहनेके दिन और भी अधिक तकलीफ होती। पर यह काम भी बेलाने अपने लिए ही रख छोडा था।

जिस दिन वह रातकी बारी समाप्त कर आती उसका चेहरा मुर्झाया रहता, होठोंपर पपडी पडी रहती, ऑखे कान्तिहीन दीखती—फिर भी बिना आराम लिये तुरत ही जब वह रोटी लाने निकलती, मै उसे टोकता। पर हमेशा वह उत्तर देती—" निचीवो ! " (परवा नहीं, सब ठीक है।)

वह अपनी जिदपर अडी रह जाती और मुझे रोटी नही लाने देती।

इतना अधिक सख्त जीवन और परिश्रम होते हुए भी मैंने उसके चेहरेपर झुँझलाहट नहीं देखी। थोडा आराम कर लेनेके बाद फिरसे उसकी स्वाभाविक चपलता और चेहरेकी लाली कान्ति लिये लौट आती।

रूखा सूखा भोजन और सख्त कामपर ध्यान देते हुए उसके चेहरेकी प्रसन्नता, उसके भीतरका उल्लास, उसकी बिजलीकी भॉति शक्ति बड़ी ही अद्भुत दिखाई देती। पर सबसे अद्भुत होता उसका मौके मौके-परका कहना—" निचीवो ! "

यह उच्चारण करते समय उसके चेहरेपर बडी ही सुन्दर मुस्कराहटकी रेखायें रहतीं।

मैं पहचान जाता, यही वास्तविक बेला है।

७

उस दिन हम दोनोकी छुट्टी थी। शामको 'लेनिनकी पहाडी' पर टहलने गये। आज सुन्दर मौसिम और छुट्टीका दिन एक साथ ही पड़

जानेके कारण वहाँ काफी भीड़ थी। कीव आनेके बाद जितने लोगोंकी शक्ल सूरतसे वाकिफ़ हो चुका था वे उस दिन सबके सब वहाँ इकट्ठे हुए दीखते थे।

आज उन लोगोंने टहलनेका एक अच्छा ढंग निकाल रखा था। पहाड़ीकी चोटीपर एक सुन्दर पार्क था। उसका आकार अडेकी शक्लका था। उसके चारों तरफ़के रास्ते चौड़े और दोनो किनारे फूलकी क्यारियोंसे सजे थे। झुंडके झुंड आदमी कतार बाँध उस पार्कके फेरे लगा रहे थे। पुरुषोंकी अपेक्षा औरतोंकी सख्या कुछ अधिक रही होगी। न जाने कितने आदमी इस प्रकारका पाँच सात चक्कर लगाते और दूसरी ओर चले जाते। उनका स्थान नये दूसरे आदमियोंसे भर जाता।

पहली दृष्टिमें मालूम होता शायद कोई सैनिक अफ़सर इस प्रकार सामूहिक रूपसे टहलनेका अभ्यास करा रहा है, अथवा लोग कोई रस्म अदा करते जा रहे हैं। पर नहीं, यह तरीक़ा पार्कमे जगह कम होने और एक दूसरेसे परिचय प्राप्त करनेकी इच्छासे आपसे आप निकल आया था।

पार्कके दूसरे किनारेसे लाल सेनाके किसी जत्थेके बाजा बजानेकी आवाज़ आई। बहुतसे लोग उधर जाने लगे। कुछ लोग पासके मैदानमें उसी बाजेके तालपर नाचने लगे। बेलाके पाँवोंमें भी बिजली दौड़ने लगी।

दस बजा। बाजेवाले घर चले। भीड़ भी खिसकने लगी। पहाड़ीपर बहुत थोड़ेसे आदमी बच गये।

बेला मुझे द्वीपरकी ओर जानेवाले ढलुए रास्तेपर खींच ले चली।

"मेरा मन आज घूमनेसे नहीं भरा" उसने कहा—"अब नाच भी पुराना होता जाता है, उससे संतोष नहीं होता। मालूम है तुम्हें कोल्याने मुझे नाचके समय क्या कहा? उसने कहा—'बेला बुड्ढी हो चली।' कोजाकोंके बीच रहते रहते मैं बूढ़ी होनेसे बहुत घबराने लगी हूँ।

"अभी ही बूढी हो चलीं? अभी तो दिलमे जवानीके बहुतसे अरमान बाकी हैं। इस टहलनेसे ही मन नहीं भरता। इच्छा होती है

दिल खोलकर मौज करूँ, हँसूँ, खेलूँ। यह देखो पार्कमे बच्चोके झूलनेके लिए जो झूला लगा है उसपर बैठकर झूलनेकी इच्छा होती है।"

"फिर झूलती क्यो नही?"

"वह तो बच्चोके लिए बना है, मुझे उसपर झूलती देख दुनिया क्या कहेगी! और केवल वही तो नहीं, जिस प्रकारसे मौज करना चाहती हूँ अगर दिल खोल कर वैसा करने लगूँ तो समाज तो मुझे पागलकी पदवी देने लगेगा।"

"पागल कहने दो न! उनके कहनेसे बिगडा ही क्या जाता है?"

"तुम्हारी भी यही राय है? ठीक कहते हो, वैसा ही करूँगी। लेकिन...लेकिन तब तो अपनेको पूरा पूरा बदल लेना पडेगा!"

"बदल लो न!"

"नही, यही अधिकार तो मुझसे छिन गया है। बल्कि ऐसा कहो कि मैंने जान बूझकर छोड दिया है। मैं हूँ आज कल अपने कारखानेके कौमसोमोल (युवा कौम्यूनिस्ट दल) की सेक्रेटेरिन। यह बहुत जिम्मेवारीका काम है। मैं क्या करती हूँ क्या नहीं, इसपर बहुतसे लोगोकी निगाह लगी रहती है। नहीं, पागल कहे जानेका, जी खोलकर मौज करनेका मेरा अधिकार नही।"

"चलो अब घर लौट चले। जैसा जीवन कट रहा है वैसा ही कटने दो।"

हम लोग घरकी ओर लौट चले। आज उसके भीतरके चलते हुए सघर्षकी थोडी बहुत आभा मुझे दिखाई पड़ी। जिस विचारको वह बराबर दबाये रखना चाहती थी वह विद्रोहीकी भाँति फट कर निकलना चाहता था।

८

"तुम्हे स्वप्न देखना अच्छा लगता है, साञ्का?" उसने मेरे सरपर हाथ फेरते हुए पूछा।

" कैसा स्वप्न ? "

" खूब सुन्दर । "

" भला किसे पसंद नहीं होगा ? "

" नहीं, मेरा मतलब साधारण लोगोंके स्वप्नसे नहीं है । उस प्रकारका स्वप्न जिसका एकमात्र आदर्श रहता है प्रेमी प्रेमिकाका एकात रमणीय स्थानमे मिलना और एक दूसरेको आलिंगन करते हुए कहना—' यदि सारा जीवन ही ऐसा होता ? '—मेरा मतलब ऐसे स्वप्नसे नहीं है । "

" ऐसे स्वप्नमे खराबी ही क्या है ? "

" मै खराबीकी बात नहीं कह रही हूॅ । संभव है मैं स्वयं ही कभी कभी ऐसा स्वप्न देखनेकी तीव्र इच्छा रखती होऊॅ, पर यही स्वप्न ऐसा नहीं जिसके लिए अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया जाय । "

" क्या ऐसा भी स्वप्न हो सकता है—" मैंने आश्चर्यमे आ पूछा—" जिसके लिए वास्तविक जीवनका सारा आनन्द भी न्योछावर कर दिया जाता हो ? "

" यह है मेरा भविष्यका संगीतमय स्वप्न । जागते हुए भी कभी कभी मैं इस प्रकारका स्वप्न देखा करती हूॅ; उस समयसे बढकर और कोई दूसरे आनन्दकी मैं कल्पना ही नहीं कर सकती । ओः—वह आनन्दका जादूभरा संगीत-स्रोत है ।

" सौन्दर्य कौन नही पसंद करता ? पर उसे पूरा पूरा उपभोग करनेका हमे मौका ही कहॉ मिलता है—और उसके भलीभॉति समझ पानेकी ही शक्ति कितने लोगोमे है ! यदि मैं साफ खोल कर कहूँ तो हम अपना ही उदाहरण क्यो न ले ! मैं हूॅ उक्रैनियन, तुम हो भारतीय। हम दोनोका मिलन बड़े ही रोमाचक तरीक़ेसे और बड़े ही अद्भुत समयमे हुआ । अब स्वाभाविक ही यदि हम दोनो एक दूसरेके प्रेम-सूत्रमे बॅध जायॅ तो क्या वह कोई गुनाह होगा ? "

उसने मेरा सर अपनी गोदमे लेकर दबाया और तुरत ही जैसे उसे

बिजली लग गई हो उस प्रकार अपनेको अलग करते हुए कहा—

"लेकिन नहीं। समाज हमे वह अधिकार नहीं देता। क्रान्तिने अभी हमारे देशका बन्धन इन मामलोमे थोडा ढीला अवश्य किया है, पर वह पर्याप्त नही। लोग इसे स्वाभाविक नहीं मानेगे। क्योकि तुम्हारा रग-रूप दूसरा है इसलिए कोई भी नही चाहेगा कि मै तुम्हारे साथ किसी सूत्रमे बँधूँ—शायद तुम स्वय इसे अच्छा नहीं मानोगे। मेरा जन्म यदि उक्रैनमे हुआ तो क्या उसी कारण मेरे सरपर उतने अपराधका पहाड लद गया है कि मैं किसी मनुष्यको मनुष्यकी दृष्टिसे नहीं देख सकूँ?

"क्या ही सुन्दर होता यदि लोग मनुष्यको उसके रग, देश और वेषके आधार पर नहीं बल्कि उसे मनुष्य होनेके नाते देखते! क्या वह समय आयगा जब मनुष्योंका हृदय वैसा विशाल बन सकेगा? मैं उसी समयका मधुर स्वप्न, सगीतमय स्वप्न देखा करती हूँ।

"उस समय लडाई नहीं, गदी राजनीति नहीं, कोई दास नही, देश, रग, जातिका चोगा नही—वह दुनिया रहनेलायक होगी।"

हम दोनो देरतक चुप रहे। उसकी दृष्टि द्वीपरके उसपारके क्षितिजको भी पार कर रही थी।

"भविष्यका वह सगीतमय स्वप्न पूरा करनेके लिए ही मै जीना चाहती हूँ सास्का!"

उसकी छातीकी धड्कन मैं स्पष्ट सुन रहा था। उसमे सगीत भी था पर मै उसे समझ नही रहा था।

~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~

खोखोल प्रोफेसर

१

" हुइस्या, हुइस्या, ती निये बईस्या,
या निये त्रोनू, ती नी वेस्पक्रिस्या ॥
* [हुइस्या, हुइस्या, मत डर पा तू,
मैं ना छेड़ूँ, मत घबरा तू,]

यह गाते जाते । ताल मिलाकर ताली पीटते । चारों तरफ घेर कर खड़े रहते, बीचमें कोई अकेला अथवा जोड़ी बाँधकर नाचता होता । नाचनेवाले जब थकने लगते तो कतारमें चले आते और किसी दूसरेको नाचनेके लिए बीचमें ढकेल दिया जाता ।

यह समारोह प्रत्येक दिन संध्या समय हुआ करता। इस समयके लिए लड़के, युवा, युवती, बूढ़े, बूढ़ी सब बच्चे बन जाया करते ।

रूसके विभिन्न भागोमे जितने तरहका नाच ख्याति-प्राप्त है प्रायः सब कीवकी सड़कोंपर हुआ करता । नाचनेवाले बहुधा अपने निजी वेशमें रहते । वहाँ पूरे यूरोपीयसे लेकर ठेठ भारतीय पोशाकसे मिलती जुलती सब तरहकी पोशाकें मिलतीं । तुर्किस्तानकी पोशाक

---

* रूसी भाषामे 'हुइस्या' शब्द उत्साहित करनेके अर्थमे प्रयुक्त होता है—कुछ कुछ 'उछलो, कूदो, मौज करो' के समान ।

याब्ल्चकी

हुड़स्या, हुड़स्या, मत डर पा तू। मै ना छेड़ूँ, मत घबरा तू॥ पृ. ८२

तो भारतके ग्रामीण जुलाहों जैसी रहा करती। वे भी अपनी जबानमें कुछ गाते और साथ ही साथ अपने विचित्र तालमें ताली पीटते जाते। मुझे उनकी भाषाका कोई शब्द समझमें नहीं आता पर जान पड़ता था मानो वे गा रहे हों।

" सानी सप सैया,
    हैं या यार, हैं या यार,
शाइस्ताना सॉइ दैदा,
    है या यार, है या यार ॥

नाचके क़िस्मोंकी कभी भी कमी नहीं रहा करती। यह तातारी, उजबेकी, कोजाकी, उक्रैनी, बेलारूसी सब ढंगकी होती।

लोगोंको सड़क और विशेषकर बुलवार (खूब चौड़ी सड़क जिसके बीचमें वृक्षोंकी कतारें रहती हैं और विश्राम करनेके लिए स्थान बने होते हैं) में जुटानेका भी बड़ा निराला ढंग था। कोई एक युवा खींच कर बजाया जानेवाला हारमोनियम गलेमें लटकाकर बजाता चलता, उसके बगलमें चार छः लड़कियाँ आ जुटतीं और गाने लगतीं, फिर वे अपनी टोली बनाकर निकलते। वे जहाँ जहाँसे होकर गुजरते लोग उनके साथ हो लिया करते और चौराहेपर पहुँचते पहुँचते खासा बड़ा मजमा जुट जाया करता। यह जुलूस जब पाससे निकलता तो बहुत कुछ अपने देशकी होलीकी टोली-सा दिखलाई देता।

इस टोलीमें किसीके पाँवमें स्लीपर, किसीके पाँवमें बूट हुआ करता, कोई पंपशू पहने रहता और कोई बिलकुल ही नंगे पाँव रहा करता।

सारी मंडलीको देख कर तथा उनके नाच-गानोंके क़िस्मोंकी तायदाद देखकर यही प्रतीत होता कि संसारके किसी भी सभ्यसे सभ्य अथवा वीरानसे वीरान देशका व्यक्ति वहाँ पहुँच जाय तो वह थोड़ा बहुत अपने मन मुताबिक मन-बहलावका मसाला अवश्य ही पा लेगा।

२

कीववासियोंके आमोदका यह ढग हमारे साधारण जीवनकी सख्ती बहुत दूर तक भुला दिया करता। हम लोगोंने अपना डेरा शहरके पूर्वी हिस्सेमे लिया था। यहॉके मकान छोटे छोटे और नीची छतवाले थे किन्तु विशेष प्रकारकी बेरियोकी लताओंसे ढके रहनेके कारण वे सुन्दर दीखते थे। उन्हीं लताओके बीचसे सडकपर चलते हुए लोगोका भी हम निरीक्षण किया करते।

पुरुष भारतीय मिरजईकी काटका कुर्ता पहने रहते, फर्क यह रहता कि गलेके चारो ओर तथा छाती तक वह कसीदा किया हुआ अथवा छपा रहता। यह सफेद मिरजई ओछे पैंटोंपर पहनी गई होती और बेल्टके स्थानपर सुनहली, रुपहली या और किसी रंगकी चमकती हुई डोरी बॅधी होती। सरकी टोपी कोजाक और पाडिताऊ ढँगका मिश्रण रहता।

औरतोंके पहनावेका निचला भाग घॉघरेसे बहुत कुछ मिलता जुलता रहता और ऊपर चादर जैसी कोई चीज वे ओढे रहती। चेहरेपर यूरोपीय औरतोंके समान पुरुषत्व भावके स्थानपर एशियाई लोगोसे मिलता जुलता लज्जा, शरम, सकोचका ही भाव अधिक झलका करता।

पहली झलकमे कोई भी यह कह उठता कि कीव अवश्यही यूरोपीय और एशियाकी दो महान आर्य तथा मंगोल संस्कृतिकी वास्तविक त्रिवेणी है। एशियाई तथा यूरोपीय दोनो सभ्यताओके वास्तविक मिलन-स्थानका सुन्दर अजायबघर कीवकी अपेक्षा शायद ही और कोई दूसरा शहर बन सकनेका दावा कर सकता है।

इसके सिवा शहरकी बनावट और सजावटमें भी यूरोप तथा एशिया दोनो ही महाद्वीपोकी सुन्दर कलाका मिश्रण दिखाई देता था। शहर द्नीपर नदीके किनारे बसा है; ये किनारे कही यूरोपीय ‘ के ’ और कही भारतीय घाटके समान दीखते थे। शहरके भीतर भी पैरिसीयन ढँगके बुलवारके

साथ साथ लखनऊके चौक हाथ मिला रहे थे।

नगरके एक किनारे ऊँची-सी 'लेनिनकी पहाडी' थी। उस पहाड़ीसे सारा शहर दिखाई देता और वहाँ सर उठाए पुराने रूसी गिर्जाघरोके साथ साथ आधुनिक कारखानोकी चिमनियॉ गर्दन ऊँचा किए खडी मिलतीं। शहरके जिस हिस्सेमे हम रहते चिमनियॉ भी उधर ही थीं। उन्हे देख कर कारखानेके जीवनकी सख्ती और बेलाका सूखा चेहरा याद आ जाता और हमे अपना घर बदल डालनेकी इच्छा होने लगती।

हम लोगोका ध्यान अक्सर ही शहरके पश्चिमी हिस्सेकी ओर विशेष-रूपसे खिचा करता। क्रान्तिके पहले यह धनी लोगोका मुहल्ला था। यहॉ उक्रैन और पोलेडके बडे बड़े जमीन्दारोकी इमारते थीं। ये इमारते बड़े ही सुन्दर तरीकेसे बनाई गई थी और उनमेसे कई राजप्रासाद जैसी दिखाई देतीं। इस भागकी सड़के भी काफी चौडी थी। ससारके किसी भी सुन्दर शहरके सुसज्जित मुहल्लेसे कीवके इस टुकडेकी तुलना की जा सकती थी। बेलाके साथ साथ मैं भी शहरके इस हिस्सेमे आकर रहनेकी तैयारी बहुत बार कर चुका था, पर यह बात अब तक कल्पनामे ही सीमित थी।

३

हम लोगोकी यह कल्पना हठात् एक दिन वास्तविकतामे परिणत हो गई। हम दोनो एक मकानके फाटकसे गुजर रहे थे। उसी फाटकसे एक मोटर निकल रही थी। हमारा ध्यान उस ओर नहीं था। उस मकानका हाता पार करनेके पहले ही मोटर हमारी बगलमे आकर खड़ी हो गई। एक सफेद बालो और खिचडी दाढीवाले 'सज्जन' उसे चला रहे थे। उन्हें कोई भी आदमी 'सज्जन' की उपाधि दे सकता था। सोवियत रूसमें यह उपाधि किसीका मजाक उडानेके लिए ही दी जाती है, पर उनका पहनावा और चेहरेका हाव-भाव इस ढंगका था कि कोई भी उनका मजाक उड़ानेका साहस नहीं कर सकता था।

उन्होने बेलाका बाल पकड़ उसका मुँह अपनी ओर फिराते हुए कहा—
" तूने शादी की और उसकी खबर तक मुझे नहीं दी ? "

शरमसे बेलाका मुँह लाल हो आया । उसने मुझे उनकी ओर दिखाते हुए कहा—" हमारे प्रोफेसर ! और यह है सास्का ! "

" आपसे परिचय प्राप्त कर बडी खुशी हुई । मेरा नाम है प्रोफेसर सिदारेको । " उन्होने हँसते हुए कहा और खूब कस कर मुझसे हाथ मिलाया । वे कुछ देरतक अपनी हँसी नहीं रोक सके ।

" हाँ सास्का ! सास्का ! बडा ही सुन्दर नाम है । निश्चय ही तेरा दिया हुआ है बेला ! तुम्हारी उम्रके और तुम्हारे स्वभावसे मिलते जुलते जितने नवजवान हो सबका नाम सास्का ही होना चाहिए । इस साश्काको कहाँसे बझा लाई ? "

"हिन्दुस्तानके जंगलसे—" बेलाने हँसते हुए उत्तर दिया । प्रोफेसर जी खोल कर हँसते रहे । वास्तवमे ही उन्हे इस प्रकार हँसना आता था ।

उन्होने हमे हमारे घरतक पहुँचानेके लिए मोटरमे बैठा लिया । हम लोगोकी कोठरियाँ देखीं । उन्हे पसन्द नहीं आई । कामके बारेमे पूछा । बेलाने उन्हे सारा किस्सा कह सुनाया । वह भी उन्हे पसन्द नहीं आया ।

"यह सब तुम्हारे लिए नही ।" उन्होने कहा—"तुम मजदूर-समाजके लिए और भी उपयोगी साबित हो सकते हो । तुम्हारी शक्तिका समुचित उपयोग न होना देश और तुम्हारे निज दोनोंहीके प्रति अन्याय है । यह काम और यह घर तुम दोनोको इसी क्षण छोड देना होगा । "

उन्होने हम लोगोका सामान मोटरमे लादना शुरू किया । बहुत-सी चीज़ोके बारेमे कहा—" ये तो हमारे घरमे भी तुम्हे मिलेगी—इन्हे और किसीके इस्तेमालके लिए यही छोड दो । "

जितना कुछ सामान मोटरमे आ सका साथ ले हम लोग प्रोफेसरके घर रहने आ गये ।

४

प्रोफेसर सिदारेको वैज्ञानिक दुनियाके जीव थे। साधारण लोग जिस दृष्टिसे इस संसारको देखा करते हैं उससे उनकी दृष्टि बिलकुल ही भिन्न थी। यदि यह कहा जाय कि उनमे साधारण ससारकी समझ बूढे हो जाने पर भी सात वर्षके बच्चेसे कम थी तो कोई अत्युक्ति न होगी।

उनके दिमागमे गैसका फौर्मूला भरा रहता। उसीके सुलझानेमे उनके मनकी सारी शक्ति खर्च हुआ करती। अपनी जवानीमे ही उन्होने एक प्रतिज्ञा की थी—ऐसी किसी चीजका आविष्कार करना जिसके लिए यदि अपने जीवन तकको भी दे डालना पड़े तो उसे सफल कहा जा सके। उनका कालेजका जीवन समाप्त ही हुआ था और वे अपनी ज्ञान-वृद्धिके लिए एक अच्छी प्रयोगशाला बनवानेके बन्दोबस्तमे ही थे कि महासमर छिड गया। ये पकडकर आस्ट्रियन फ्रंटपर भेज दिये गये। वहॉ इन्होने मस्टर्ड गैस जैसे विषैले गैससे निरपराध आदमियोंको दोजखकी आगसे भी भयकर पीडा सह छटपटा कर मरते देखा। इन्होने उस गैसका काट कोई विरोधी गैस निकालना चाहा। दिमागमे फौर्मूला ढूॅढते रहे। उसीके पीछे इतने पागल हो गये कि स्वप्नमे भी कभी कभी फौर्मूला ही बका करते। यही था उनकी खिलती जवानीका वह समय जब साधारण संसारके युवकोंके स्वप्नमे औरते अपना विशेष स्थान बनाने लगती हैं। इस उम्रमे ताजा खिला हुआ चेहरा, काली बड़ी बडी ऑखे, नरम चमडा, विशेष प्रकारकी वास्तविक तथा खयाली शक्ले युवकोको हैरान किये रहती हैं और उनका मन पढने लिखनेसे खींच कर दूसरी ही ओर लगाया करती हैं। प्रोफेसर व्याख्यान देते होते हैं पर विद्यार्थियोंके सामने कुछ दूसरा ही नाचता होता है। सिदारेको जवानीकी इस लहरसे बिलकुल अपरिचित रह गये।

रूसी क्रान्तिने उनको वैज्ञानिक फौर्मूलाओके प्रयोग करनेका मौका दिया। सोवियत सरकारको आक्रमणकारियोके गैससे अपने देशके मजदूर

किसानोकी जान बचानेकी आवश्यकता थी। इसी विचारसे किसान मजदूरोकी सरकारने सिदारेकोके लिए जैसी वे चाहते थे उस प्रकारकी प्रयोगशाला बनवा दी। ये कई प्रकारके गैसके क्षेत्रमे सफल हुए। सोवियत सरकारने इन्हे पहले प्रोफेसर और आगे चलकर ऐकेडेमिसीयनकी (विद्वानोके लिए सोवियत सरकारकी सबसे बड़ी पदवी) पदवी दी। इनकी प्रयोग-शालामे दूरदूरके विद्यार्थी और प्रोफेसर आकर काम करने लगे।

पर अब तक प्रोफेसर सिदारेको (अपनेको वे ऐकेडेमिसीयनकी अपेक्षा प्रोफेसर कहलाना ही अधिक पसद करते थे) अपने वास्तविक लक्ष्यपर नही पहुॅच पाये थे। मस्टर्ड गैसका विरोधी गैस अब तक आविष्कार करनेमे वे समर्थ नहीं हुए थे। जिन नये गैसोका उन्होने आविष्कार किया था वे मस्टर्ड गैससे भी भयानक थे और लोगोका प्राण उसकी अपेक्षा कहीं शीघ्रतासे ले सकते थे। अपने आप लिया हुआ दायित्व और भी अधिक बढ गया था। अब उन्हे अपनी इच्छा न रहते हुए भी आविष्कृत गैसोका विरोध ढूॅढ निकालना था।

अकसर ही ऐसा होता कि उन्हे अपनी प्रयोगशालामें ही हफ्तो बंद रहना पड़ता। यदि नीद बहुत ज्यादा तग करती तो वहीं मेजपर सर रख फौर्मूला सोचते सोचते थोडा आराम कर लिया करते। कपड़े भी कभी कभी इन्हे पंद्रह दिन बाद बदलनेकी फुर्सत मिलती।

मस्टर्ड गैसकी समस्याने उनके जीवनको ही बदल डाला था। बेला प्रायः ही कहा करती—"इन्हे संसारके रसातल जानेकी परवा नहीं, परवा सिर्फ गैसकी है। हम, तुम कोई भी आदमी इनके लिए जीवित नहीं, जीवित है सिर्फ उनका गैस। इनकी दुनिया सिर्फ गैससे भरी है। ये आदमियोका प्राण बचाने चले थे पर मारनेके लिए उससे भी ज़हरीले गैस बना दिये। तारीफ़ तो यह है!"

प्रोफेसर सुनकर हॅसने लगते और कहते—"ठीक कहती हो! बहुत भारी जिम्मेवारी है। अब आराम करनेका वक्त नहीं।"

वे प्रयोगशाला चले जाते।

बेलासे अब वे अपनी प्रयोगशालामे ही काम लिया करते। दोनो एक दूसरेके स्वभावसे बहुत पहलेसे ही परिचित थे, इस लिए उन्हे कोई दिक्कत नहीं होती। पर मुझे कभी कभी यह अवश्य ही मालूम होता कि बेला जितनी अच्छी तरह उन्हे समझ पाती है वे उसे नहीं समझते। वे कभी कभी स्वयं ही कहा करते—"तुम्हारे बारेमे कौन-सा फौर्मूला काम करता है यह जाननेमे मेरा दिमाग़ ही काम नहीं करता।"

बेला कभी कभी उनपर नाराज हो जाती। खास कर वैसे मौकेपर जब वे उससे पूछते—"अच्छा। यह तो बताओ, तुम्हे तो मैं यहाँ पढा लिखा रहा था, तुम्हे मैंने कोई तकलीफ़ नहीं दी, फिर भी तुम अनजाने लोगोके बीच भटकने क्यो चली गई?"

बेलाकी त्योरी चढ जाती—"अगर इस तरहका आप प्रश्न करेंगे तो मैं फिर चली जाऊँगी।"

"अच्छा, जाने दो, नहीं पूछूँगा। तुम्हारा विज्ञान ही मेरी समझके बाहर है।"

फिर दार्शनिकोकी भाँति थोड़ा सोच कर कहते—"ठीक कहती हो। तुम लोगोकी दुनिया ही अलग है, उसे मैं नहीं समझता। इसलिए उसमे दख़ल देना भी ठीक नहीं।"

इसके बाद वे मौन हो जाते।

५

प्रोफेसरके घर आ जानेपर हम लोगोके रहने खाने आदिका सिलसिला बिल्कुल ही बदल गया। उनका घर बहुत बड़ा था। हम लोगोके वहाँ जानेके पहले केवल एक ही कोठरी शायद काममे लाई जाती थी, नहीं तो पूरा घर ही एक प्रकारसे वीरान पडा रहता। अब वह धीरे धीरे फिरसे राजप्रासादका स्वरूप लेता जा रहा था। हम लोगोमे प्रत्येकके खाने सोने

और काम करनेके कमरे अलग अलग थे।

भोजनके मामलेमे भी बड़ा परिवर्तन हो गया था। अब रोटीके लिए लंबी कतारके पीछे जाकर नही खड़ा होना पडता। वह हम लोगोके घरपर ही पहुँचा दी जाती। दूसरे खाद्य पदार्थोंके लिए भी हमे बाहर जानेकी जरूरत नही पड़ती थी। घरमे टेलिफोन लगा था, वहाँसे ही इन्सटिट्यूटकी दुकानको कह देनेपर सब चीजे, (आवश्यकता पड़नेपर तैयार भोजन भी) घरमे पहुँचा दी जाती थीं। ये सुविधाये स्वय मजदूर सरकारने समाजके अधिक उपयोगी व्यक्तियोके लिए कर रखी थीं।

विदेशी और कभी कभी सोवियत अखबारोमे भी मजदूर राज्यके ही भीतर रहने-खानेके इस विभेदको लेकर काफी चर्चा चला करती। कुछ लोग 'समानता'के सिद्धान्तकी आड लेकर कहा करते कि यह विभेद उचित नही। सोवियत-विरोधी दल इसे 'पूँजीवाद' की सिफत मानते और यह प्रचार करने लग गये थे कि मजदूर-राज्यमे भी अब एक उच्च-वर्ग, धनीवर्ग, 'पूँजीवादी वर्ग' बनता जा रहा है जो और देशोके उसी प्रकारके वर्गसे भिन्न नहीं है।

पर फिर भी जहाँ तक मै देख पाता और देशो और सोवियत-राज्यमे जमीन आसमानका अतर था। सबसे बडा विभेद तो यही था कि सोवियत-राज्यमे जिन लोगोका रहने खानेकी विशेष सुविधाये प्राप्त थी वे उन सुविधाओको अर्थशास्त्रकी परिभाषाके भावमे 'पूँजी'के रूपमे न तो परिणत कर सकते थे और न उसके आधारपर समाजके किसी वर्गका शोषण कर सकते थे। उन्हे वे सुविधाये उनकी कार्य-क्षमता बढानेके लिए दी गई थीं जिस क्षमताकी समाजकी भलाईके लिए नितान्त आवश्यकता थी। सोवियत सरकारकी नीति निर्धारित करनेवालोके लिए समानताका अर्थ 'शोषणका न होना'के सिवा और कुछ नहीं था।

व्यावहारिक दृष्टिसे भी देखनेपर यही पता चलता था कि उस

अर्थके सिवा समानताका और दूसरा अर्थ हो भी नहीं सकता था। यदि कुछ देरके लिए इसका अर्थ बिलकुल एक-सा भोजन और एक प्रकारसे रहनेकी व्यवस्था लिया जाए तो यह तो इस हास्यास्पद सीमा तक पहुँच जायगा कि यदि उस सिद्धातका वास्तवमे पालन हो तब तो निरोग लोगोको भी रोगियोके ही समान बार्ली और साबूदानेपर रहना पड़ता और सब किसीको बिना उनकी खट्टे, तीते, नमकीनकी रुचिका खयाल रखे एक प्रकारका ही भोजन करना पड़ता। यह प्राकृतिक नियमोके विरुद्ध साबित होता।

इसके सिवा सारा समाज ही आलसी बन जाता। चाहे उनका काम कैसा भी क्यो न हो भोजन और रहना एक-सा ही मिल जाया करता तब तो साधारण मनुष्यके भीतर अपनेको काममे अधिक दक्ष, कार्य-कुशल बनानेकी प्रवृत्ति ही नहीं रह जाती और इसका नतीजा यही होता कि समाज अवश्य ही पतनकी ओर जाता।

वैसी हालतमे कमसे कम प्रोफेसर सिदरिको जैसे विद्वान् कुशल वैज्ञानिकोके लिए तो कुछ भी कर सकना असभव हो जाता। उनका वह बहुमूल्य समय जिसमे वे गैसका निरीक्षण किया करते थे रोटीकी दुकान-पर समानताका नियम पालन करनेमे नष्ट होता। शायद क्रान्तिके बाद कुछ दिनो तक यह मौका उनके सामने वास्तवमे ही आ गया था। ऐसा क्यो, उस समय ऐसे मौके उनके ही जैसे रूसके सब कुशल वैज्ञानिक, इजीनियर और विद्वानोके सामने आये थे। नतीजा यह हुआ था कि देशके सब कल कारखाने और शिल्प-विज्ञान चौपट हो चला था। इतना ही नहीं, इसका असर इतना खराब हुआ था कि कितने विद्वानोने आत्म-हत्या तक कर ली थी। ये आत्महत्याये दैनिक जीवनके कष्टसे नहीं बल्कि इस कारणसे की गई थी कि वे विद्वान् सोवियत-प्रणालीकी उस सिफतको क्षणिक न मान स्थायी मान रहे थे और अपनी शक्तिके समुचित उपयोग करनेका मौका पानेकी उम्मीदसे हाथ धो चुके थे।

प्रोफेसर सिदारेंको उस सीमातक हताश नहीं हुए अवश्य किन्तु उनके मनपर भी उसका कुछ कम असर नहीं हुआ था। वे उस मानसिक धक्केको बड़ी मुश्किलसे बर्दाश्त कर पाये थे और उसका खयाल शायद उन्हे उस समय भी सता रहा था। नही तो वे हम लोगोको अपने घरमे बुला लानेमे वैसी जल्दबाज़ी नही करते।

हम लोगोके वहाँ आ जानेपर उन्होने अपने घरका सारा इंतजाम हम लोगोपर छोड़ दिया। इंस्टिटयूटसे जो रकम उन्हे मिलती थी उसका हिसाब भी उन्हे स्वयं नहीं देखना पडेगा, यह सोचकर उन्हे निहायत खुशी हो रही थी। अपनी मोटर भी मेरे ज़िम्मे लगाते हुए उन्होने मुझसे पूछा—"चलाना तो जानते हो?"

"हॉ।"

"लेकर कीवके एक दो चक्कर रोज लगा आना। उक्रैन तुमने देखा नही है, वह भी तुम्हे भली भॉति देख लेना चाहिए। मुझे अब मोटर-की जरूरत नहीं पडेगी, मैं इन्स्टिटयूटसे बाहर नहीं जाना चाहता।"

६

एक बार प्रोफेसर सिदारेंकोके आफिससे उनके कई आवश्यक कागज गायब हो गये। डॉट बेलापर पडी। बेला मेरा मुॅह देखती। मैं अवाक् था।

सयोगसे दूसरे दिन मेजपर दैनिक अखबारके नीचे प्रोफेसरको उनके आवश्यक कागज़ मिल गये। बेलाका कान पकड़ उन्होने कहा—"तू तो अच्छी सेक्रेटेरिन है। अखबारके नीचे कागज़ रखती है और आलमा-रीमे ढूॅढने जाती है।"

बेला सोचमे पड़ गई। इसमे सन्देह नहीं था कि कागज़ चोरी हुआ था और फिर मेजपर ला रखा गया था। मैं भी कई आदमियोपर सन्देह करने लगा।

खोखोल प्रोफ़ेसर पृ० ९३

प्रोफेसर सिदारेंकोके कई आविष्कार ऐसे थे जो सिवा उनके और लाल सेनाके एक विशेषज्ञके और किसीको भी मालूम नही। पर उन्हे आश्चर्य होता जब वे कुछ दिनोके बाद किसी फैसिस्ट वैज्ञानिक पत्रिकामे उससे मिलती जुलती बाते छपी हुई पाते। ऐसे मौकोपर वे कहते—"अजीब शैतानी है! हमारी प्रयोगशालाकी वे सारी बाते जान लेनेमे समर्थ होते हैं। मालूम पडता है ठीक हमारे ही ढंगका गुप्त प्रयोग वे भी कर रहे हैं। पर आश्चर्यकी तो बात यह है कि हम अपने निराले प्रयोगोंकी कुछ बाह्य रेखाएँ सोवियत वज्ञानिक पत्रिकाओमे भेजनेका विचार ही करते रहते हैं तबतक इन फैसिस्ट पत्रिकाओमे वे निकल जाती हैं।"

अपनी इस शकाका समाधान करते समय उन्होने हम लोगोंके सामने एक पूरा व्याख्यान ही दे डाला—"वैज्ञानिक और विशेष कर रूसी वैज्ञानिकोका भाग्य ही ऐसा रहा है। जीनीन विचारेको देखो—वह सबसे पहला आदमी था जिसने ऐनेलाइन रंगका आविष्कार किया, लेकिन उसे कौन जानता है? बेचारेको सारी ज़िन्दगी काजानमे वितानी पडी और आखिर आखिरतक पैसे पैसेके लिए मुहताज रहा। आज जर्मन पूँजीपति उसके आविष्कारका फायदा उठा रहे हैं। दिमीत्री इवानोविच मेडेलेयेफको देखो जिन्होने एलिमेंट्सकी समय-परिवर्तन-प्रणाली निकाली, लेकिन उनका सारा जीवन बीता एक महाजनके लिए शराब बनाते रहनेमे। हमारे पोपोवको जारकी सरकारने तीन सौ रूब्ल दिये और उनके आविष्कारको और किसीके नामसे अमर कर दिया।

"विदेशमे देखो—बेचारे अँग्रेज़ बेस्मरको भिखारीकी हालतमे मरना पडा और उनके आविष्कारसे कुछ दूसरे ही शीसे और लोहेके कारबार-द्वारा राजा बन रहे हैं। फैरेडेको जिसने ससारका रोशनी और बिजलीसे संबंध कराया बुढापेमे पेंशन देनेसे इन्कार किया गया।"

वे कुछ और कहना चाहते थे किन्तु वेलाने उन्हे रोका।—

"लेकिन अब तो कमसे कम हमारे यहाँ हालत बदल गई है। सोवियत रूसमे वैज्ञानिकोकी वह अवस्था नहीं। यहाँ न तो उन्हे भूखो मरना पड़ता है, न उनका यश ही छीन या खरीद कर और किसीको दिया जाता और न उनके प्रयोगमे किसी प्रकारका खर्च देनेमे आना-कानी की जाती है। यह तो वैज्ञानिकोका स्वर्ग होना चाहिए।"

प्रोफेसर बड़े गौरसे बेलाकी बाते सुनते रहे। फिर हकार-सूचक सर हिलाते हुए बोले—"ठीक कहती हो बेला। लेकिन मै तो पुरानी दुनियाका आदमी ठहरा। अपने भाग्यके हठात् इस प्रकार चमक जानेकी बातपर मुझे विश्वास नहीं होता। आखिर ठहरा तो खोखोल प्रोफेसर ही न!"

सोवियत-विरोधी

१

धीरे धीरे प्रयोगशालाके प्रायः सब आदमियोंसे मैं परिचित हो गया। उनमेसे कितने प्रोफेसरके घर आया करते और कितनोके घर मैं स्वय जाया करता। उन लोगोंमे मुझे सबसे अधिक आकर्षित किया करती एक जर्मन विवाहिता स्त्री—फ्राउग्राफ।

इसके पति हेरग्राफ विख्यात इन्जीनियर थे और उन दिनों द्रेप्रोस्त्रोयमें संसारका सबसे बड़ा पानीके जोरसे चलनेवाला बिजली-घर तैयार करवा रहे थे। द्रेप्रोस्त्रोय एक गाँवके जैसा था इसीलिए फ्राउग्राफके लिए वहाँ रहना कठिन था। वे बचपनसे ही बर्लिनमे पाली पोसी गई थीं और संसारके आधुनिकसे आधुनिक ऐश आरामोंसे सिर्फ परिचित ही नहीं बल्कि उनकी अभ्यस्त हो गई थीं।

कीवमें उनकी जरूरते थोडी बहुत पूरी हो जाया करती थीं, इसी लिए वे वहीं रहा करतीं। यहीं उनका प्रोफेसर सिदारेकोसे भी परिचय हो गया था। प्रोफेसरको तो इनसे बाते करनेका कम ही अवकाश मिला करता पर प्रयोगशालाके और लोगोसे उनकी मित्रता हो गई थी। जो लोग प्रोफेसरके निकटवर्ती होते उनसे ये निकटका सम्बन्ध रखनेकी चेष्टा किया करतीं। मुझे जबसे प्रोफेसरकी मोटर मिली मेरे साथ इनकी सबसे अधिक घनिष्ठता हो गई थी।

उनकी अवस्था अब भी वैसी थी कि युवतियोंमे उनकी गिनती की जा सकती थी। जिस दिन वे अपना भली भाँति शृंगार करतीं उस दिन तो एक बच्चेको भी उनके युवती होनेमे सन्देह करनेका कारण नहीं रह जाता। उनके बाल स्वाभाविक ही सुनहले थे पर रँगे रहनेके कारण रंग और भी गाढा और चमकता रहता। शहरके अच्छेसे अच्छे नाई और बाल-विशारदोंकी कलाका प्रदर्शन उनके बालोंको घुँघराले बनानेमे हुआ करता। मुखकी आकृति लम्बी पर क़दके अनुपातमे थी और देखते ही कहा जा सकता था कि वे उत्तरी जर्मनीकी रहनेवाली हैं। शरीरके काट और गठनका आकर्षण जितना किसी सुन्दर स्त्रीमे होना सभव है वैसा ही था। कपड़ोंके काट और सिलाईके त्रुटिहीन रहनेके कारण उनकी शोभा और भी अधिक बढ जाती थी।

स्वभावकी खास सिफत यह थी कि उनका अति स्वतंत्र स्वभाव अक्सर निर्लज्जताकी सीमापर पहुँच जाया करता। इसके लिए बादमे उन्हे अपने आपपर झिझक होती हो ऐसी बात भी नहीं थी। वे अपने आचरणका वास्तविक वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कहतीं—

"सौन्दर्यको समाज-भयके कारण ढक रखना पाप है। उसका ढका रहना ही भारी अनर्थ है। वह देखने और उपभोगके लिए बनाया गया है।"

"फिर पशुता क्या है?" यदि कोई पूछ बैठता तो वे उत्तर देतीं—

"मनुष्यमे पशुता है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। समाजका आडंबर इसे ढकनेका व्यर्थ ही प्रयत्न किया करता है।"

सिनेमा-अभिनेत्रियोंके रहने और पहनावेका पैमाना उनके लिए आदर्श था। उस पैमानेके साथ ही साथ इनका अपना पैमाना बदला करता। यदि उनके पति कभी दखल देनेकी चेष्टा करते तो दोनोंमे भयानक झगड़ा हो जाया करता। कभी कभी ये झगड़े इतने बढ जाते कि मालूम पड़ता उनका अंत ट्रैजेडीमे (दुःखान्त) ही होकर रहेगा।

पति जब हार मान लेता तो ये उसे समझातीं—“वाल्टर ! तुम जानते नहीं । छाती ढक रखनेका फैशन बहुत पुराना पड़ गया है।”

एक दिन उन्होंने यह भी कह दिया था,—“अपने पतिके साथ घूमने निकलना तो अठारहवीं सदीकी प्रथा थी । आजकलका फैशन ही कुछ दूसरा है।”

थिएटर, सगीत, साहित्य, सिनेमा आदिको ये अपने लिये बनाया गया समझतीं । इधर रूस आनेके बाद उसका दायरा उन्होंने राजनीति तक बढा लिया था ।

रूसी लोगोको ये ‘दुम’ (=मूर्ख) कहा करतीं। वजह यह थी कि ये बर्लिनके फैशनको अपने पीछे पीछे चलता हुआ देखा करतीं, पर रूसवाले इन्हे देखकर अपना फैशन नहीं बदलते थे। उक्रैनियाके फ़ैशन बदलनेकी इन्होंने लाख चेष्टा की पर एक भी युवतीका फ़ैशन अपनी इच्छानुसार बदल पानेमे समर्थ न हुई। इसीको ये ससारका अत आ गया कहा करती ।

साधारण जन-समाजसे जहाँ तक सभव होता ये दूर रहा करतीं । उनके बारेमे कहतीं—“उनके शरीरसे बहुत अधिक दुर्गन्ध निकला करती है।”

धीरे धीरे इनके हिलने-मिलनेका दायरा सिर्फ़ विदेशी लोगोमे सीमित हो गया था, पर उनसे भी इनकी पटरी नहीं बैठा करती थी क्यो कि इनके मौसिमके अनुसार वे अपना फ़ैशन बदलनेको तैयार नहीं रहते थे।

चुपचाप अकेले बैठ नहीं सकती थीं, इसीलिए इधर आकर राजनीतिमें दिलचस्पी लेने लगी थीं और उसी कारणसे एक सीमित रूसी लोगोके दायरेसे उन्हे संपर्क रखना ही पड़ता था।

पति सिर्फ़ रुपया देने और अगले महीनेका फ़ैशन सीख जानेके बहाने इनके पास महीनेमें एक बार आया करता। वह इन्हें कई दृष्टिसे नापसद था। वह सबसे प्रसिद्ध ऐक्टर नहीं जिसकी बीबी होनेका ये गर्व कर

सकतीं। वह संसारका ख्यातनामा धनी भी नही कि ये उसका अगाध धन दोनो हाथोसे लुटाया करतीं। और सबसे बड़ी बात यह थी कि वह इनके जैसी आधुनिक स्त्रीके निकटतम ससर्गमे रहनेका गर्व हर तरहके समाजके सामने और हर मौकेपर प्रकाश करनेमे हमेशा चूक जाता था।

२

पहली दृष्टिमे वे मुझे बिलकुल ही पसंद नहीं आई। उनके पाउडर पुते चेहरेकी अपेक्षा बेलाका स्वाभाविक चेहरा हजार गुना सुन्दर जान पड़ा। शायद यह बात फ्राउ ग्राफकी परखमे आ गई थी क्योकि और लोगोकी अपेक्षा मेरे प्रति उनका व्यवहार कुछ भिन्न और अत्यन्त ही नरम रहा करता।

अपने घर वे मुझे कई बहानेसे बुलाया करती। उन्हे जर्मन लोगोसे भी सुन्दर जर्मन बोलनेवाला मैं ही मिला था। मेरे मोटर चलानेकी कुशलता उन्हे सबसे अधिक पसंद आई थी और वे मेरे बातचीतके ढंगको सबसे उत्तम करार दिया करतीं। उन्हे ठीक ठीक समझ सकनेवाला, उनकी कलाकी बारीकीका पारखी पहला आदमी उन्हे मैं ही मिला था। इसके सबूतमे वे कहा करती—"तुमने पहले दिन कहा था, मेरी भौह ठीक तलवारकी शक्ल और उसकी लचकके समान नही। यह बारीकी कितने आदमियोको सूझ सकती है? मैं फ़ैशनमे अपना सानी नहीं रखती, फिर भी तुम मेरी भी कमी निकाल सकनेमे समर्थ हुए!"

मेरी तारीफ़की झडी लग जाती। कभी कभी तो वह इस हदपर पहुँच जातीं कि उन्हे, यह सोचकर कि अपने झूठपर उन्हे खुद ही विश्वास नही, जीभ दॉतोसे काटना पड़ता। मैं अपने व्यवहारसे दिखाया करता कि उनके तारीफके प्रति बिलकुल ही अन्यमनस्क हूँ पर प्रत्यक्ष कहा करता—"आपके इस सर्टिफिकेटके लिए मै बहुत ही कृतज्ञ हूँ, और आपकी यह सराहना मेरे लिए गर्वकी बात है।"

वे स्पष्ट समझ जातीं कि मैं व्यग कर रहा हूँ और उनके प्रति बिलकुल ही आकर्षित नहीं, उनकी परवा करनेकी बात दूर रही, शायद उन्हे कुछ नफरतकी दृष्टिसे भी देखता हूँ। ऐसे मौकोपर उनका मेरे प्रति व्यवहार और भी अधिक नरम हो जाया करता। जब उनके घर जाता तो वे दरवाजा खोलनेके साथ 'प्यारे' कह कर मुझे संबोधन किया करतीं और मुझसे गलेसे गले मिलतीं। इसका नाम उन्होने 'इटालियन प्रणाली' दे रखा था। बैठकमे मुझे गद्देदार दीवानपर बैठातीं और स्वयं मेरी बगलमे बैठ मेरे हाथोको अपने हाथोमे ले खेला करतीं।

कमरेमें और किसीके न रहने और कितनी बातोके बिलकुल साधारण रहनेपर भी वे मेरे कानोमे कहा करतीं। कभी कभी कानाफूसीके समय जान-बूझकर अपने बाल आगेकी ओर फेकती और उनसे मेरी ऑखोको ढक देनेका प्रयत्न किया करतीं।

मेरे यहॉ जब कभी पहुँच जानेकी उन्होने स्वतंत्रता ले रखी थी, पर शामको रोज अपने यहॉका ही निमत्रण रखती। जिस दिन शामको उनके यहॉ नही जाता, मेरे कमरेके टेलिफोनकी घंटीका बजना बंद नहीं होता। फिर मुलाकात होनेपर कहतीं—"मै जानती हूँ, तुमने दूसरा घर ढूँढ लिया है। क्या वह मुझसे अच्छी है? इस सारी दुनियामे मेरे जितना तुम्हे कोई भी नहीं चाहता!"

ये शब्द उनके मुँहसे अभिनेत्रियो जैसे कॉपते हुए बनावटी स्वरमे निकलते। मुझे कोई संदेह नहीं रह जाता कि वे बातें पहले पहल मुझे ही नही कही गई हैं। मेरे स्थानपर जो कोई भी दूसरा उनका दिल बहलाने-वाला वहॉ जाता वे ठीक वैसे ही स्वरमे उससे कहती और संभव है उन्होने उसे पहले पहले बहुत बार कहा भी हो क्यो कि इन बातोंको नाटकके पार्टके समान कहनेका उन्हे अभ्यास हो गया था।

"तुम मुझे ॲगूठी कब देने जा रहे हो?" यह बात भी अभ्यासके ही अनुसार उनके मुँहसे निकली, लेकिन मैं थोड़ा कॉप उठा।

"तुम्हे बुखार तो नहीं? थोड़ी ब्रैंडी दूँ,—नहीं लिकर ठीक होगा।" इसी बहाने वे मेरी नब्ज़ देखने लगतीं और कभी कपार अपनी गोदमे रख दबाने लगतीं।

"अपने पतिको आप हमेशा ऐसे ही धोखा दिया करती हैं?" मैं पूछता।

"धोखा! मेरी जवानी देख पानेसे अधिक उसे क्या चाहिए? क्या वह इस योग्य है कि मै उसे धोखा दे सकूँ? बेवकूफ़ और कायर तो अव्वल दर्जेका है, पर रुपये कमानेमे चालाक है। बुद्धिमानी सिर्फ एक मामलेमे दिखलाता है, वह यह कि अपने कमाये हुए सब रुपये मुझे खर्च करनेके लिए दे देता है। इसके लिए मेरे मुँहपर हँसीकी रेखा देख लेना उसके लिए पर्याप्त है,—ज़्यादासे ज़्यादा तो 'डॉके शोन' (अनेक धन्यवाद) क्यो प्यारे..."

शुरू शुरूमे मैं उसे पगली विलासी औरत समझता पर आगे चलकर पता लग गया कि बोर्जुआवर्गकी विशेष श्रेणीकी औरतोकी एक खास किस्म हुआ करती है और उस किस्मकी सब विशेषताये फ्राउ ग्राफ़मे पूर्णतया विद्यमान थीं।

मैं मन-बहलावके लिए उनके यहाँ अकसर जाया करता। मेरे लिए वे एक सामान्य निर्दोष मनोरंजनकी सामग्रीके सिवा और कुछ नहीं थीं।

उनके घरसे लौटनेमे कभी कभी देर हो जाया करती। बेला उस समय तक जागती मेरी प्रतीक्षा किया करती। मोटर खड़ी होनेकी आवाज़ पाते ही वह दरवाज़ेपर आ जाती और मुसकराते हुए आधा खोलकर पूछती— "फ्राउ ग्राफके यहाँसे?"

मैं हिचकते हुए 'हाँ' कहता।

वह मेरी हिचकपर हँसने लगती और बाल पकड़कर खींच देती।

प्रोफेसर सिदारेको भी मेरे देरसे लौटनेकी परवा नहीं करते। बेला दूसरे दिन सुबह चायके समय जब आधा उलहना और आधे हँसी-भरे शब्दोमे

फ्राउ ग्राफकी मेरे साथकी दोस्तीके बारेमे चर्चा करती तो वे खिलखिला कर हॅस पड़ते और कहते—"वह भी अजीब ढंगकी औरत है। उसका फौर्मूला और भी विचित्र है।"

३

फ्राउ ग्राफ प्रोफेसर सिदारेकोके अविष्कारोके विषयमें बहुत ज़्यादा दिलचस्पी लिया करतीं। उनकी श्रेणीकी औरते बहुधा भोग-विलास, आमोद-प्रमोद, हॅसी-खेलकी बाते छोड़ और सब मामलेके प्रति उदासीन रहती हैं, विज्ञान तो उनके लिए सूखा विषय होनेके कारण एक प्रकारसे घृणाका विषय रहता है। फ्राउ ग्राफकी प्रकृति इससे थोडा भिन्न होनेके कारण मुझे अस्वाभाविक दीखती और आश्चर्य होता। शुरू शुरूमे उनके और खब्तोके समान इसे भी मैं एक 'खब्त' समझा करता और उस ओर विशेष ध्यान नहीं देता।

पर यह मैं जानता था कि उनके घरपर महीनेमे एक बडी दावत हुआ करती है। वैसे मौकोपर पचवर्षीय योजना पूरी करनेके लिए बाहरसे आये विदेशी विशेषकर इकट्ठे हुआ करते हैं। सोवियत यूनियनके लोगोंसे वे भिन्न प्रकृति और विचारके लोग थे, इससे अधिक और कुछ उन्हे देख कर मेरे मनमे विचार नहीं आया करता। मेरे एशियाई होनेके कारण उनमेसे कई लोगोको मेरा वहॉ उपस्थित रहना अखरा करता पर सोवियत भूमि होनेके कारण वे इसे प्रकाश नहीं करते। कभी कभी उस भावकी झलक प्रकट हो जानेपर उसे ढकनेका प्रयत्न अति शिष्टाचारके जरिये करते। इस कलामे वे सबके सब निपुण थे।

ऐसे दावतके मौकोपर खूब नाच-रग मचता और शराब पी जाती। लोग इसे कामकी थकावट दूर करना कहा करते। प्रोफेसर सिदारेकोको पहले कई बार निमत्रण दिया गया था पर एक तो स्वय ही उन्हे फुर्सत नहीं और दूसरे कभी आये भी तो औरतोकी दृष्टिमे वे बड़े ही 'मनहूस'

साबित हुए, इसलिए अब उनका भी वहाँ जाना बंद हो गया था।

ईस्टरकी छुट्टियोंके मौकेपर खूब धूमधामसे दावतकी तैयारी की गई। फ्राउ ग्राफने उसके विषयमें कहा—"इस बार शैंपेन पेरिससे, बिअर म्यूनिचसे और वाइन सीधे इटलीसे आवेगी। खास खास आदमी उसे लेकर आवेंगे।"

गभीर हो कानके बिलकुल निकट अपना मुँह ला उन्होंने मुझसे कहा—

"लेकिन तुम्हे एक बातका खयाल रखना होगा। बहुत लोगोंकी राय थी कि तुम्हे इस मौकेपर निमन्त्रण न दिया जाए लेकिन मैं अड़ गई। मैंने कहा—यदि मेरा 'प्यारा' नहीं तो मैं भी नहीं। लेकिन उन्होंने एक शर्त करा ली है। उस मजलिसकी बातें तुम भूलकर भी और कहीं न कहना। यह मेरे लिए,—मेरा खयाल रख कर,—तुम मुझे चाहते हो,—मैं जानती हूँ,—इसका खयाल रखना।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। अपना पाउडर मेरे गालोंपर पोतते हुए उन्होंने कहा—"सोवियत सरकार बहुत अत्याचार कर रही है। देखो न, निर्दोष खेलकी भी मनाही है। अगर कोई रूसी यूरोपका नाच नाचता हुआ पाया जाय तो तुरत उसके पीछे गे० पे० ऊ० लग जाती है। तुम्ही बताओ,—इतने शुष्क जीवनसे कोई यदि पागल हो जाय तो क्या उसमें तुम्हे आश्चर्य होगा?"

उस दिन उनकी कानाफूसी देरतक बंद नहीं हुई—

"मैं तो कभी कभी 'रोमैंस' सोचा करती हूँ। हम तुम दोनो यहाँसे भाग चले। रुपयोंकी कमी नही। और कितने दिनो तक जवानी यहाँ बरबाद करोगे और मेरी जवानी बरबाद होते देखोगे? हम लोग वियेना,—नही सीधे पेरिसमें जाकर घर बसायेंगे। रहनेके लिए बढियासे बढिया विला,—चढनेके लिए रोल्स रौयज़ कार, प्रमोदके लिए 'लग्रॉद थियात्र,' खर्च करनेके लिए दोनो ओरकी पाकटोंमें भरी हुई थैली! बताओ, क्या और भी कोई दूसरा स्वर्ग हो सकता है?"

उनकी दलीलसे मैं प्रभावित तो न हुआ पर उस ओर विचार अवश्य ही जाने लगे। घर लौटने पर जब बेलाने मेरे गालोंमें पाउडर लगा देखा तो कहा—"साश्का, तुम बदलते जा रहे हो!"

उसकी ऑखे सजल हो आई थी।

४

फ्राउ-ग्राफके यहॉकी दावत नवाबशाहीके जमाने जैसी हुई। पहलेसे अगर उनके यहॉके हाव-भावसे कोई परिचित न होता और अचानक उस दावतके हालमे जा खडा किया जाता तो वह उसे दावतकी अपेक्षा 'स्टेजपरका नाटक' नाम देना अधिक उपयुक्त समझता। सजावटका ठाठ, मिलनेका तरीका, बातचीतका ढँग,—सभी बाते फ्रासके चौदहवे लूईके जमाने जैसी थीं।

घरकी मालकिन स्वय दरवाजेपर मिलीं। हाथ मिलाते ही उन्होने अलग ले जाकर मुझे विवाहित स्त्रियोसे 'शेकहैंड' का तरीक़ा सिखाया। उस तरीक़ेमे झुककर हाथ चूमनेकी प्रणाली थी। मैंने उससे साफ इनकार किया। उन्होने धमकी दी—फिर मैं तुम्हे 'प्यारे' न कह 'विद्रोही' कहा करूँगी। मुझे यह ज्यादा पसंद था।

सब अजनबी इकट्ठे हुए थे, लेकिन सादगीमे अकेले पड जानेके कारण मैं ही उनकी जमातमें अजनबी बन रहा था। सारा घर तबाकूके धूँएँसे भरा था। लोग एक दूसरेके हाथमे हाथ डाले शराब पीते हुए उस दिनसे 'बंधुत्व' कायम कर रहे थे।

मैं अपना परिचय आप अभिनेताओकी भॉति देनेमे असमर्थ था। यह काम हेर ग्राफने किया। वे ही आजके भोजके प्रधान नायक बन रहे थे। उन्होने शीशेके ग्लासमे बुलबुलाता हुआ शैंपेन लाकर दिया। उनके पॉव लडखड़ा रहे थे। मेरे सामने जो हाथ बढाया वह भी कॉप रहा था। मैंने उनसे कहा—"आप तो जानते ही हैं, मैं कभी पीता नहीं।"

" आजका दिन उस 'कभी'से अलग है । " उन्होने लडखडाती जबानमे उत्तर दिया । मुझे भय होने लगा कि मेरे कपडे कहीं शैंपेनसे खराब न हो जायॅ । मैंने उसे ले लिया । अब वे बोतल ले आये और कहने लगे—"आपका खाली गिलास देखूॅ ?"

मै उठ कर दूसरी जमातके बीच जा बैठा । उधर भी हेर ग्राफ जाने लगे किन्तु इस बार उनकी स्त्रीने उन्हे डॉटा । नशेमे भी वे अपनी स्त्रीका हुक्म नहीं टाल सकते थे ।

" लेकिन उमर खय्यामके वंशजोको भी शराबसे परहेज हो सकता है, यह बात मेरी समझमे नहीं आती । " एक नये आगन्तुकने हेर ग्राफ़के तरफसे वकालत की ।

किसीने उनकी बातोकी ओर ध्यान नहीं दिया । जिस नई जमातके बीच आ बैठा था उसकी बाते ध्यानपूर्वक सुनने लगा । वे लोग जर्मन भाषामे बाते कर रहे थे और एक दूसरेको ' महाशय ' कह कर सबोधन करते थे । सोवियत भूमिपर भाई या साथीके स्थानपर यह सबोधन बडा अजीब-सा कानोमे खटका करता । पर प्रोफेसर सिदारेंकोका नाम बार बार आनेके कारण मै सावधानीपूर्वक उसे सुनने लगा ।

द्रेप्रोस्त्रोयमे काम करनेवाला बर्लिनका एक इंजीनियर कह रहा था " तुम उसकी चिन्ता न करो । मेरे ऊपर आगेके लिए भी वह भार छोड दो । उनका कोई भी ऐसा कागज़ नही जिसे मैं उनके घरसे उडवा नही ला सकता । "

" लेकिन हेर रिटर ! " जर्मनीसे ताजे आये एक चतुर ऑखोवाले व्यक्तिने कहा—" 'यदि इस प्रोफेसरका प्रयोग सफल हुआ तो हमे बहुत बड़ी कठिनाइयोका सामना करना पड़ेगा । इतने दिनोसे इकट्ठा किया हुआ मस्टर्ड गैस, जिसपर हमे बहुत बडा भरोसा है, नष्ट हो जायगा । और कोई वैसा ज़बर्दस्त हथियार दूसरा हमारे हाथमे है नहीं । समस्या..."

" माफ़ कीजिएगा फ़ौन क्रूगर ! " बीचमे टोकते हुए रिटरने कहा—

" प्रोफेसर सिदारेकोका प्रयोग सफल होना ही तो कोई बडा ख़तरा नहीं। उस प्रयोगके अनुसार उन्हें बड़े बडे कारखानोमें बडी मात्रामे गैस तैयार कराना होगा। उन कारखानोका निरीक्षण तो हमारे हाथमे ही है। ऊपरसे हुक्म आता है सलफरिक एसिड तैयार करवानेका तो मैं अमोनियाको पानीमे घोलकर स्टॉकमे रखवाने लगता हूँ। यह पता उन्हे ऐन जरूरतके मौकेपर लगेगा। पचवर्षीय योजनाके अनुसार तैयार किए गये कारखानोमे भी हम लोगोका सगठन बहुत मज़बूत है। बिजली-घरोपर तो हमारी ऐसी छाप है कि जिस घडी सिगनल मिले,—पॉच मिनटके अंदर अदर सब चौपट! द्रेप्रोस्त्रोय, जहॉ रूसी सरकारने करोडोकी पूँजी लगा रखी है, चद घटोके बीच मिट्टीमें मिला दी जा सकती है। इतना ही क्यो, सोवियत सरकारके खाद्य पदार्थोंके स्टोरोको भी जलानेका समुचित प्रबध किया गया है। जबतक उन्हे पता लगे कि कहॉसे लुत्ती लगाई जा रही है तबतक तो भूखके मारे लाखो आदमी सडकोपर लोट जायँगे। वे ही लोग विद्रोह खडा कर देगे। सोवियत सेना उन लोगोको दबानेमे मशगूल रहेगी, हम लोगोका दखल जमानेका काम आसान हो जायगा। मैंने तो आपसे कह दिया,—हमारी फैसिस्ट सेना रूसपर आक्रमण करनेके लिए तैयार हुई नही कि डोनके कोज़ाक, साइबेरियाके किसान, उक्रैन और दूसरे सब प्रान्तोकी भूखी जनता स्वय ही सोवियत-सत्ता नष्ट कर देगी।"

"मान लीजिए, उसमे आप सफल न हुए,"—गुप्तचर विभागके नायकने कहा—"रूसी जनतापर मुझे स्वय ही कम विश्वास है। वह किस समय क्या करेगी कुछ कहा नहीं जा सकता। आप यह बतलाइए कि सेना और कल कारखानोके कितने नायक आपका साथ देगे? उनमें कितने हमारे वर्गीय भाई हम लोगोकी ओर हैं?—मेरा मतलब जमींदार और पूँजीपतियोके वशजोसे है।"

"इसका ठीक ठीक ब्यौरा एक सप्ताहके ही भीतर आपके पास मास्को

पहुँचा दिया जायगा। मैं केवल उक्रैनके बारेमे आपको इतना इतमीनान दिला सकता हूँ कि यहाँके पुराने सब रईस और उनके वंशज यहाँ तक तय कर चुके हैं कि हमारी विजय होनेपर उनमेंसे कौन किस जगहकी जमींदारी खरीदेंगे। वे स्वयं ही इसके लिए बहुत अधिक उत्सुक हैं। यदि और कोई मदद न मिली तो भी केवल उनकी ही मददके आधारपर आप यह निश्चय रखिए कि जिस दिन हमारी जर्मन फैसिस्ट सेना सोवियत-सीमापर पहुँचेगी उसी दिन शामको उसका कब्जा कीवपर हो जायगा और रातको हम लोग बॉल-डास नाचते होगे।"

मै अब तक वास्तवमे उन दोनो सज्जनोकी बाते सुन रहा था। पर प्रत्यक्षमे उधरसे अन्यमनस्क हूँ ऐसा दिखाता हुआ फ्राउ ग्राफकी एक दोस्तिनसे रूसी बैलेट और इटालियन ऑपेराकी चर्चा कर रहा था और वे उन्हींमेंसे प्रख्यात लोगोकी जीवन-गाथाये मुझे सुना रही थीं।

दावत सरकारी तरीकेपर ख़त्म करनेके पहले हेर ग्राफ़ने खड़े होकर उस दिनकी दावतकी सफलताके बारेमे एक छोटा-सा व्याख्यान दिया और सब लोगोंको शराबसे भरा गिलास ले 'सोवियतको फिरसे पूँजीवादी राष्ट्र बनाने, उक्रैनपर जर्मन आधिपत्य जमाने और वहाँ इकट्ठे हुए लोगोके लखपती, करोड़पति बननेकी उम्मीदकी सफलकामनाके हेतु' पीनेको कहा।

मैंने तुरत वहाँसे विदा ली। मेरा माथा भारी हो चला था। दरवाजेपर फ्राउ ग्राफ़ने कहा—"कहो, आजका दिन कैसा सुन्दर रहा!" उन्होने मेरे कंधेपर हाथ रखा और वे 'प्यारे' कहकर अपने गालका पाउडर लगाने आ रही थीं कि "चुडैल! राक्षसी!" कहकर मैंने उन्हे ढकेल दिया। उतने ज़ोरोका सर-दर्द जीवनमें पहले ही पहल मैं महसूस कर रहा था।

५

वाईके झोकेमे मोटर चलाता घरकी ओर चला। रात आधीसे अधिक बीत चुकी थी। रास्तेपर एक भी आदमी नहीं। यदि होता भी तो

शायद उस धुनमे मुझे नही सूझता। कोई मोटरके चक्केके नीचे नहीं आया, इसीलिए अदाजा लगा पा रहा हूँ कि चारो तरफ अवश्य ही बिलकुल सन्नाटा रहा होगा।

शायद उस मौसिमके हिसाबसे सर्दी भी अधिक थी, पर मुझे सारे शरीरमे जलन-सी मालूम हो रही थी। वह पूरा पूरा जल-भुनकर जल्दी खाकमे नहीं मिल रहा था इसीलिए शायद गुस्सा भी आ रहा था। घर पहुँचकर देखा—मोटरमे आग लग उठनेकी तैयारी थी। वायरिंगके दो-एक तारोसे धुआँ भी निकलने लगा था। उसे बुझा दिया।

सीढीपर बडी देर तक खड़ा मालूम नहीं क्या क्या सोचता रहा। फ्राउ ग्राफको प्रोफेसरके घरमे प्रवेश करानेका सारा दोष मेरा था। मेरी संगतिका ही नाजायज फायदा उठा वह प्रोफेसरके आवश्यक कागज चुरा शत्रुओके हवाले किया करती थी।

ऑखोके सामने लडाईका दृश्य नाच रहा था: सोवियत यूनियनपर शत्रुओने हमला किया है, लड़के और स्त्रियॉ जहरीले गैसकी शिकार बन रही हैं, तोपोके गोलोसे हजारोकी सख्यामे वीर जवान भुने जा रहे हैं, शहरोकी सड़कोपर पिघला हुआ लोहा बह रहा है,—उसकी बाढ़ शायद मेरे नजदीक तक आने लगी।

मैं अपने आपको कोसने लगा था। अवस्था बर्दाश्तके बाहर होती जा रही थी। दूसरेकी तो बात ही दूर रही, अपना चेहरा प्रकाशमे नहीं आने देना चाहता था। मनमे एक बार आया—"क्या रास्ता बद हो गया है?"

उत्तर मिला—"अब भी उम्मीद है! पर जल्दी......"

आज बेला दरवाजेके पास नहीं मिली। 'उसका तो मैंने ही खून किया, अब वह मिलेगी कैसे?'—कहता हुआ मैं घरमे दाखिल हुआ। बेलाके कमरेसे उसके नीदमे सॉस लेनेकी आहट आ रही थी। 'शायद वह अभी भी बचाई जा सके' सोचकर सीधे टेलिफोनके पास आया।

सारा शरीर काँप रहा था। इच्छा हुई—'सीधे गे० पे० ऊ० को सारी बाते बतला दूँ, वे अपना सम्हाल लेंगे, अभी भी मौका है!' पर याद आया—'वे क्या इतनी जल्दी विश्वास कर लेंगे? मामला क्या इतनी जल्दी शान्त हो जायगा? प्रोफेसर क्या फिर पहलेकी तरह मेरे ऊपर विश्वास करेंगे? और बेलाके लिए क्या उसका 'साश्का' बना रहूँगा?'

"अभी तो शायद वे मुझे भी जेल ले जाये। एक खास अफसर इस मुकद्दमेकी जाँच करेगा। जिरह महीनो चलती रहेगी। मैं भी विश्वास-घाती,—फिर जनता,—मज़दूर जनता किस तरह मेरी बातें सुनेगी?"

मेशिनगनका 'त...त...त...त...' शब्द मनमे गूँज रहा था और उसीकी तरतराहटसे कपार ठनक रहा था। कौन लोग भूने जायँगे? मैं यदि चुप रह जाता हूँ तो क्या नतीजा होगा? प्रोफेसर, बेला, मैं... नहीं सिर्फ हम तीनो ही क्यो, बहुतसे,—सोवियत भूमिमे जितनोंको जानता हूँ, सब उस बर्बरताके शिकार बन जायँगे,—उन्हीं लोगोमे,—बेलाको तो मार ही डाला—तान्या...तान्या......यह तान्या कौन? हाँ वही...जहाज़मे मिली थी, वह भी ख़त्म हो जायगी!"

आज बहुत दिनोंके बाद उसका चेहरा आँखोंके सामने आया। मैंने टेलिफोन हाथमे ले लिया। उधरसे लड़कीकी आवाज़ आई! बेला... नही तान्या होगी। मैंने काँपते हुए स्वरमे कहा—"गे० पे० ऊ०!"

कुछ ही देर बात सादी पोशाकमे एक व्यक्ति हमारे दरवाजेपर आ खड़ हुआ। उसे मैंने सारी बाते कह सुनाई। उसने कहा—"तुम अच्छे 'तवारिश' हो।"

यह व्यंग नहीं; खुफियाके मुँहसे निकले शब्द नहीं, मज़दूरके मुँहसे निकले शब्द थे।

पहले पहले 'तवारिश' जिस दिन सुना था उसकी याद करने लगा। काँप उठा। सारी रात नींद नहीं आई।

६

"तवारिश" के यहाँ जाऊँगा। उसीने तो कहा था कि प्रोलेटारियाटको मनुष्य प्यारा है। यहाँ यदि कोई मनुष्य कुछ समयके लिए हानिकारक प्रवृत्ति रखता है, समाजके लिए खतरनाक साबित होता है, तो भी उसका जीवन जेलोके सींकचोके भीतर बद रख यंत्रणा दे बरबाद नहीं किया जाता बल्कि उसे फिरसे शिक्षित बनाकर समाजोपयोगी बनाया जाता है। भला 'अपराधियो' के प्रति ऐसा सुन्दर व्यवहार ? अवश्य ही मजदूर-राजमे वैसे सेनाटोरियम (स्वास्थ्य-सुधारके स्थान) होंगे जहाँ 'अपराधों' को धोया जाता होगा।

"मेरे लिए यही रास्ता है। प्रोफेसर मुझे अपने यहाँसे चले जानेके लिए कहे, उसके पहले ही मुझे यहाँसे चल देना चाहिए। उतने सुन्दर महान हृदयको मैने तकलीफ पहुँचाई है, अब और अधिक यहाँ रहना ठीक नहीं।

"लेकिन यह सब तो मुझसे अनजानमे हो गया। मैं तो अपने लिये धन नहीं चाहता था। मैंने किसी ज़मीन्दारीका बंदोबस्त नहीं किया, अकेलेके लिए सुखी जीवन नहीं चाहा,—इस प्रकारकी इच्छा रखनेवालेसे मैं अनजानमे कुछ कह रहा था,—यही हमारा अपराध है। इसकी वास्तविक प्रायश्चित्त 'तवारिश' के ही पास हो सकेगा।"

ये ही बाते सोचता देर तक बिस्तरेपर लेटा रहा। बेलाने आकर कई बार जगाया। मैं उठा नहीं। उसने कधा पकड जोरोसे झकझोरते हुए जगानेकी चेष्टा की। हाथ पकड़ खींचने लगी। मैं उसके लिए बहुत भारी साबित हुआ। झुंझला कर मैंने कहा—"जाओ यहाँसे!"

"यह डॉट तो खोखोल अपनी स्त्रियोंको दिया करते थे,—लेकिन जारके जमानेमे।" वह मुसकराने लगी—"अब तो वह ज़माना बीत गया।"

उसने गुदगुदी दी। मैंने करवट वदल ली।

" प्रोफेसर साहबको चाय दे आऊँ । " कह कर वह चली गई लेकिन दो मिनट बाद फिर लौट कर कहा—" उठो ! "

इस बार मै उठ बैठा । उसने पूछा—"आखिर तुम्हे हुआ क्या है ?"

मैंने कोई उत्तर नही दिया । वह अपने आपपर झुंझला कर कहने लगी—" मै क्या करूँ ? "

मुझे दातोंसे कंधेपर काटा, फिर भी मै न बोला ।

" तुमने तो वास्तवमे ही मुझे बूढी बना दिया "—वह धीमे शब्दोमे कहने लगी—" मैं सिगरेट पी पी कर फेफडा खराब कर रही हूँ । कहो तो अब झुर्रियॉ छिपानेके लिए पाउडर लगाना शुरू करूँ । ..हॉ, मै असलमे निकल जाऊँगी । घरसे भी चली जाऊँगी अगर तुम चायके लिए नहीं आए—देखना..." थोड़ी देरमे लौटकर कहा—" चलो, तुम्हारी बुलाहट है ! "

८

" अई ! अई ! सारका......! " प्रोफेसर साहबने कहा—" यह क्या ? तुम्हारे चेहरेपर तो जर्मन लोगोका कत्चेनयामर है ?" (रात-भर खूब अधिक मौज करने पर दूसरे दिन जो विशेष प्रकारकी थकावट और आलस आता है उसे जर्मनमे कत्चेनयामर कहते हैं, इसका शाब्दिक अर्थ है—बिल्लियोकी पीडा ।)

" नहीं ! " कहते हुए मैंने जम्हाई ली ।

" नहीं क्या ? यह तो तुम्हारा चेहरा ही कह रहा है । कहीं जाकर थोडी देर क्यो नहीं फिर आते ! उक्रैन तो अभी तुमने पूरा देखा नही । इस प्रकार मन मारे रहनेसे कैसे काम चलेगा ? "

" मैं भी यही सोच रहा हूँ कि कही घूमने निकलूँ । "

" हॉ ! हॉ ! क्यो नहीं । " उन्होने मुसकराते हुए कहा—" जरूर ! लेकिन बेलाकी तो यहॉ आवश्यकता पडेगी । "

" मैं अकेला ही जाऊँगा । "

" बहुत अच्छा, जाओ ! घूमो ! मौज करो ! इसमे सोचना क्या है ? मेरे नामपर जितने रुपये चाहिए ले लेना ! "

उन्हे जल्दी थी । मेरी पीठपर थपकी दे वे चले गये ।

मैं अपना थोडा-सा सामान पीठपर बाँध बाहर निकला । दरवाजेपर बेलासे टकरा गया ।

" यह क्या ? " उसने पूछा

" घूमने निकला हूँ । "

" लेकिन मुझसे तो तुमने छुट्टी ली नहीं । "

" अब लेता हूँ । नमस्कार... "

" नहीं, मैं तुम्हे नहीं जाने दूँगी । " वह मुझे एक कमरेमे खींच ले चली ।

" मैं स्वार्थी नहीं ! " उसका गला रुँधा था । स्वर काँप रहा था— " कोई भी आदमी लोहेका नही । हम-तुम एक ही धातुके बने हैं सारका ! "

~~~~~~~~~
~~~~~~~~~

वान्का

१

कीवका रेलवे-स्टेशन वास्तवमे तरह तरहके आदमियोका एक अच्छा खासा अजायबघर बन रहा था। सिर्फ रूस ही क्यो, सारे एशिया और यूरोपमे ढूँढ आनेसे शायद 'ही कोई वैसी जाति बची होगी जिसका प्रतिनिधि वहाँके मुसाफिरखानेमे उपस्थित न रहा हो। जितने प्रकारकी वेश-भूषा उतने ही प्रकारकी भाषाएँ और भाव व्यक्त करनेके ढग दिखाई दे रहे थे।

एक जगहपर पूर्वी यूरोपके ऊँची नाक और पतली ठोढियोवाले यहूदी येवरेई भाषामे चेंचे चीची मचा रहे थे। बाते उनके मुँहसे लच्छेदार वाक्योमे और इस इतमीनानके साथ निकला करतीं कि किसीको भी यह संदेह करनेकी गुंजायश नहीं रह जाती कि वे मछलीका मोल-भाव तय नहीं कर रहे हैं।

उनके पास ही डोन, द्निपर, द्निस्तर दरेके कोज़ाकोके प्रतिनिधि थे। चेहरा जितना भव्य, बाते उतनी ही कम और मैले दाँतोसे घुल-मिलकर पिसती हुई निकला करतीं। मुसाफिरखानेके गरम होते हुए भी न तो उन्होंने अपने सरपरकी खालोवाली टोपी उतारी थी और न अपना मोटा ओवरकोट ही उतार कर हाथमे लेनेका कष्ट किया था। उलटे टोपियोकी बुंडी खोल उनने ठोढी बाँध ली थी और ओवरकोटके चारो तरफ़ बेल्टके

स्थानपर रस्सी बाँध रक्खी थी ।

मुसलमानी दुनियाके प्रतिनिधि चुस्त पाजामा पहने थे । शेरवानीके ढगका लबा कुरता भी उनके शरीरपर वर्तमान था। पर '.खुदा हाफिज' के स्थानपर रूसी 'दस्विदानियाँ' (विदा) मुँहसे निकलनेके कारण स्पष्ट हो जाता था कि वे रूसमे रहनेवाले मुसलमान हैं ।

उक्रैनकी लडकियोने अपने पहनावेके रगनेमे ससारका कोई भी रग छोड नहीं रक्खा था। बेल-बूटोमे भी इजिप्शियनसे लेकर जापान तकके चलन लगा रक्खे थे। बाते उनकी पूरा मुँह खोलकर हुआ करतीं और आवाज टनटनाती रहती ।

सजे हुए यूरोपीय लिबासमे भी दो-चार सज्जन वहाँ आ इकट्ठे हुए थे जिनकी जबान फ्रेंच, जर्मन या अँगरेजी थी; शायद सोवियट भ्रमणके लिए आया हुआ पश्चिमी यूरोपियन लोगोका यह छोटा-सा काफला था। इनकी पोशाक यूरोपके लिए साधारण रहनेपर भी यहाँ बड़े ढंग और तरतीबवाली दीखती थी। औरोकी तुलनामे ये अधिक साफ सुथरे और धनी भी दिखाई देते थे, इसी कारण इनके विदेशी होनेमे किसीको सदेह नहीं हो सकता था।

और भी अनगिनत तरहके लोग उस अजायबघरमे वर्तमान थे पर न तो उनकी ओर देखनेकी मुझे फुरसत थी और न हल्ला-गुल्लाके कारण उनका बहस-मुबाहिसा ही स्पष्ट सुन सकता था। मेरा ध्यान सामने टँगी हुए बडी-सी घड़ीके काँटेपर था। उसके पाँचपर पहुँचनेमे आधे घंटेकी देर थी। यह समय मुझे किसी प्रकार उस मुसाफिरखानेमें बिताना था। प्लेटफार्म पर जानेवाला फाटक अभी भी खुला नहीं था पर लोग धीरे धीरे उस ओर खिसकते जा रहे थे। मैं भी उसी ओर बढा ।

उस लम्बे हॉलके ठीक बीचमे लेनिनकी वक्तृता देनेकी मुद्रामे ताँबे की एक विशाल मूर्ति थी। पहले मेरा ध्यान इस ओर नहीं गया था, पर इस समय उधरसे एक गानेकी आवाज़ आनेके कारण देखने लगा। चीथडोमे लिपटा बारह-चौदह वर्षका एक लडका गा रहा था। उसी

वेशमे पर उम्रमे कुछ छोटी एक लड़की उसे सुर देती जा रही थी—

" उमरु, उमरु, उमरु या...

आनिक्तोनिय उज्नायेत गंदे मगिलका मया। "

उनके गानेका भावार्थ था—मैं यहाँपर ही मर रहा हूँ, मर जाऊँगा; मर रहा हूँ, मर जाऊँगा; पर कोई भी नहीं जानेगा कि मैं यहीं दफनाया गया हूँ। सिर्फ वसन्तके वक़्त कठफोरवा पक्षी (खंजन) जब उत्तरी देशोसे लौटेंगे तो मेरी कब्रपर बैठकर विश्राम लेंगे !

ठीक यही गाना इसी स्वरमे पहले और कभी मैं सुन चुका था। कब सुना था इसीकी याद करने लगा।

२

पिछली सर्दीके मौसिममे कीवके एक रास्तेके फूटपाथपर उसे देखा था। सर्दी कड़ाकेकी पड़ रही थी। वह वर्षों पुराने चिथडोमे लिपटा दॉत कटकटा रहा था। हिमसे और हवासे बचनेके लिए घुकैया मारकर बैठा था। दॉत कटकटानेकी आवाज़ शायद रास्ता चलनेवाले आसानीसे नहीं सुन पाते इसीलिए वह ऊपरके गानेका सुर गुनगुना रहा था।

मैं उसे अपने घर ले जाना चाहता था पर वह तैयार नहीं हुआ। उसे शायद यह सन्देह हो गया था कि मैं गे० पे० ऊ० का आदमी हूँ और उसे ठगकर जेल भिजवा दूँगा। सोनेका बन्दोबस्त कर लेनेके लिए मैंने उसे कुछ पैसे दिये थे पर दूसरे दिन भी वह ठीक उसी जगह मिला। पूछनेपर उसने उत्तर दिया—" हम लोगोका अपना बन्दोबस्त हमेशा ही बना रहता है। "

मैंने उन लोगोके 'अपने बन्दोबस्त'का भी दृश्य एक दिन देखा था। जो सड़के मरम्मत की जाती होतीं उनपर ही उन लोगोका डेरा रहा करता। लकडीका कोयला गरम करनेवाले टबके चारों तरफ ये लेटे रहते और उसे ही आगकी तरह तापा करते। वही स्थान उन लोगोके 'क्लब'का

भी काम किया करता, क्योकि वैसे स्थानोंपर ही वे एक दूसरेसे मिला करते, उनका आपसमे परिचय होता और वे अपने आगेके भ्रमणका प्रोग्राम तय किया करते। उनके दलमे कुछ लडकियॉ भी रहतीं।

ऐसे लड़के-लडकियोको रूसी लोग 'बेजप्रिजोर्नी' (मातृ-पितृ-हीन, टूअर) कहा करते थे। उन दिनों रूसका शायद ही कोई ऐसा बड़ा शहर होगा जहॉ ये अभागे 'बेजप्रिजोर्नी' देखनेको न मिलते हो। देशके दक्षिणी हिस्सोंमें उनकी संख्या अधिक होती थी। इसका कारण यह था कि उन स्थानोकी सर्दी उतनी भयानक नहीं रहती।

उन टूअरोसे मिलिशिया (रूसमे पुलिसका काम करनेवालेको 'मिलिशिया' कहते हैं) को भी बहुत तग होना पड़ता। रास्तोपर चुरा-छिपाकर लूट-पाट द्वारा ये टूअर अपनी गुजर करते और यदि उससे काम नहीं चलता तो करुण रसके गीत गागाकर भीख मॉगा करते। रेल, ट्राम, मोटरलारियोमे छिपकर सफर किया करते और मौका मिलते ही मुसाफिरोका सामान लेकर चलते बनते। पाकेट काटनेमे भी ये काफ़ी होशियार होते। ये उम्रमे तो छोटे होते पर प्रायः बड़े ही खतरनाक हुआ करते। किसीकी जान तक ले लेनेमे इन्हे हिचक नहीं हुआ करती। रूसी मिलिशियाको इन्हीं कारणोसे अपनी बहुतेरी शक्ति इनके पीछे खर्च करनी पड़ती, फिर भी इन्हे काबूमे रख सकना आसान नहीं था।

चेहरा देखनेपर ये निरपराधिताकी मूर्ति और दयाके पात्र दीखते पर हुआ करते सब घुटे हुए। उनसे और बाते तो दूर रहीं साधारणसे साधारण बात स्वीकार कराना असम्भव दीखता। आवश्यकता न रहनेपर भी स्वभाववश प्रत्येक पगपर ही वे झूठ बोला करते।

उन लोगोकी अवस्था, प्रकृति आदि देखकर यह जान लेना कठिन नहीं था कि वे सोवियत संस्कृतिसे कुछ बाहरके लोग हैं। सोवियत जनताके आचार-विचार, रहन-सहन आदिको देखते हुए यह आश्चर्य हुआ करता कि आखिर इस प्रकारके अभागोंका उस भूमिपर होना क्यो कर

सम्भव हो सका। वे तो पूँजीवादी राष्ट्रोमे पाए जानेवालो जैसे थे।

पर थोडा ही विचार करनेपर और रूसके महासमरके बादके इतिहास पर एक दृष्टि डालनेपर यह स्पष्ट हो जाया करता कि ये टूअर चार सालके महासमर और उसके बाद तीन साल तक लगातार चलनेवाले गृह-युद्धके अवशिष्ट जीवित स्मारक थे।

टूअरोके आविर्भावमे सबसे बडा हाथ सोवियत सरकारके शत्रु जार-शाही ज़मानेके बड़े बड़े ओहदेधारी सफेद सेना (ह्वाइट गार्ड) के अफसरोका था। उन्होने गॉवके गॉव उजाड़ दिए थे, हजारो निर्दोष आदमियोका कत्लेआम करा दिया था। देशका कृषि-शिल्प तो नष्ट ही कर दिया था, समाज-व्यवस्थाको भी इतना बड़ा धक्का पहुँचाया था कि उसे सँभाल पाना आसान काम नहीं था।

वान्काके चेहरेपर एक दृष्टि जाते ही ये बाते मेरी ऑखोके सामने एक साथ ही नाच गई।

३

"पैसे चाहिए?" मैने उससे पूछा। पाकेटमे हाथ डालकर मनी-बेग भी ढूँढने लगा।

मेरे पास खडा एक युवा खोखोल (उक्रैनियन) हँसने लगा। उसने कहा—"इससे क्या लाभ? आज यहॉ बहुतसे विदेशी आये हैं। यह उन्हींके पीछे हैं। अभी पिछले हफ्ते मैं ऐसे ही लड़कोको टूअरोके उप-निवेशमे रख आया था। वे भाग गये। वहॉ इन्हे किसी बातकी तकलीफ नहीं,—कपडे, खाट, भोजन सब कुछ दिये जाते हैं फिर भी ये नहीं टिकते। पहचानमे आ जायँगे इसलिए वे नये कपड़े कहीं बेच देते हैं और अपने पुराने चीथड़े धारण कर लेते हैं। इनके चेहरेसे ही आप क्यो नहीं पहचान लेते कि ये खूँखार टूअर जातिके हैं?"

वह व्यक्ति यह कहकर चला गया। प्लेटफार्मपर जानेका फाटक खोल

दिया गया था। एकाएक बहुतसे आदमी भीतर जानेके लिए टूट पडे। युवा खोखोल उन्हीं लोगोंके सिलसिलेसे भीतर जानेकी व्यवस्था करनेमे लग गया।

मैंने अपना मनी-बेग निकाल लिया था। रेल-टिकट गेटपर दिखानेके लिए हाथमे ले लिया। मनी-बेगसे दो-तीन छोटे छोटे सिक्के निकालकर वान्काके हाथमे दिये। उस समय भी दो-चार सौ रुब्लके नोटोंके कारण मनीबेग मोटा था। टिकट दिखलाकर गाडीमे सवार हुआ। उस छोटेसे कम्पार्टमेण्टमे चार आदमियोकी जगह थी। रूसी रेलोमे यह सुविधा है कि दूर सफर करनेवाले एक पूरी बेञ्च दखल कर सकते हैं और छोटी-सी रकम और खर्च की जाय तो रेल-कम्पनीसे बिछौने, तकिया, ओढना आदि भी मिल जाता है। इसी बन्दोबस्तके लिए मै फिर नीचे उतरा। खोखोल युवक चाय पी रहा था, एक गिलास पी लेनेके लिए उसने मुझे भी निमन्त्रित किया। चायके पैसे चुकता करनेके लिए मैंने मनी-बेग निकालना चाहा तो पाकेट खाली!

मैं आश्चर्यमे आ गया। लौटकर तुरत जिस कम्पार्टमेन्टमे चढा था वहाँ गया, प्लेटफार्मपर ढूँढा, जहाँ बडी देर तक मुसाफिरखानेमे खडा रहा था वहाँ ढूँढा। नहीं मिला। मामला क्या है? अपने सब पाकेट ढूँढ डाले।

"मैंने आपको उसी समय सावधान कर दिया था।" युवा खोखोल कहने लगा—"जो गया वह फिर मिल नहीं सकता। आप इतनी असावधानी क्यो दिखलाते हैं? खैर, जाकर गे० पे० ऊ० के दफ्तरमे खबर दे दीजिए, वह प्लेटफार्मपर ही है।—नहीं, मैं भी आपके साथ चलूँ।"

कुछ दूर साथ जानेपर उसने कहा—"आप देखते रहिए, जरूर उसीने चुराया है, मैं अभी एक गे० पे० ऊ० को बुलाता हूँ।" वह हाथ झटकारता हुआ आगे चला गया।

मैं नरम गद्दोंवाले कम्पार्टमेण्टके सामने खड़ा था। प्लेटफार्मपर घेरे गये लोहेके सींकचोके बाहरसे वान्का उस समय भी भीतर झॉक रहा था।

मेरी दृष्टि उसीकी ओर थी। कम्पार्टमेण्टकी ओरसे आवाज़ आई—
"हलो..."

वह आवाज़ मेरे लिए दी गई थी। मैंने उधर सर घुमाया। फ्राउ ग्राफके परिचित एक जर्मन इञ्जीनियर मुँहमे लम्बी सिगार लगाये खडे थे। उन्होने पूछा—"कहिए, आप इतने व्यस्त क्यो?"

मैंने अपना किस्सा कहा, उन्होने सहानुभूति दिखलाते हुए कहा—

"इसमे तो आश्चर्यकी कोई बात नहीं। जिनके हाथमे चोरोको पकड़नेका काम है, वे ही लोग तो ऐसा कराया करते हैं। गे०पे०ऊ०को विदेशियोपर हमेशा ही शक रहता है। उनके जानते खून करनेके लिए विदेशी हमेशा ही पाकेटोमे बम भरकर चला करते हैं। मुकाबिलेमे पूछनेसे तो उनका काम खराब हो जायगा इसीलिए वे दूसरोसे विदेशियोके पाकेटकी चीज़े चुरवा लेते हैं। क्या मनी-ब्रेगमे बहुत-सी चीज़े थीं?"

"जी नहीं, सिर्फ़ चार सौ रुब्लके नोट और कुछ खुदरे कोपेक थे।"

"तब कोई हर्ज नही, वे आपको मिल भी सकते हैं। पर यदि उसके साथ कोई खत या कोई काग़ज़ हो तो हरगिज़ नहीं मिलनेका।"

वर्दी पहने हुए गे० पे० ऊ० के साथ खोखोल आ पहुँचा। वान्काकी ओर दृष्टि पड़ते ही वर्दीधारी हँसा। दोनों शायद पहलेसे परिचित थे। वान्का पीछे फिरकर भागा।

"इधर गार्ड साहबने भी अपनी सीटी बजाई। मैं पशोपेशमे पड गया। चढ़ूँ या गाड़ी छोड दूँ। अन्तमे गाड़ीपर सवार हो लेना ही तय किया। गाड़ी धीरे धीरे सरकने लगी कि वान्काको लिये वर्दीधारी भी पहुँच गया। वे भी हमारे ही डब्बेमे सवार हो गये।

वान्काने कहा—"लेकिन मैंने तो नही चुराया, तवारिश स्लाविन्स्की!"

वर्दी पहने गे० पे० ऊ० का सदस्य जी खोलकर हँसने लगा—"तुम्हे तो मेरा नाम भी याद है! देखता हूँ, दिमाग़ तो तुम्हारा कम तेज़ नहीं।"

"फिर मुझे आप पकड़कर क्यो लिये जा रहे हैं?"

"क्या तुम्हे कोई तकलीफ है? भूख लगी है? चलो अगले स्टेशनपर भर-पेट खाना खिलाऊँगा।"

"मैं तो जेलमे नहीं रहूँगा।"

"यही तुम्हे कैसे मालूम कि तुम्हे जेलमे रक्खूँगा?"

"और आपका काम ही क्या है?"

"तुमने बहुत अच्छा कहा!" वे फिर हँसने लगे। मुझे बडा आश्चर्य हुआ कि अपराधीके साथ अफ़सर इस प्रकार हिल-मिलकर बातें कर रहा है! वान्काके हाथमे हथकड़ी नहीं, कमरमें रस्सी नहीं, चुरानेके लिए उसे धमकी नहीं।—आख़िर वह काबूमे ही कैसे रहेगा?

सचमुच स्लाविन्स्कीने अगले स्टेशनपर भोजन मँगवाया। उन्होने मुझे भी भोजन करनेके लिए बाध्य किया। वान्का बिना किसी हिचकके तीन आदमियोका खाना खा गया। फिर कम्पार्टमेण्टके बरामदेमे खिडकीसे बाहर झाँकने लगा। इस वक्त सर्दी भी लगने लगी थी। वान्काने अपना चीथडा बेंचपर ही छोड दिया था।

"क्या सर्दी उसे बिलकुल लगती ही नहीं?" मैने पूछा।

"नहीं," स्लाविन्स्कीने हँसते हुए उत्तर दिया—"इसे अभ्यास हो गया है।"

"ऐसे लोगोंका सँभालना तो बडा मुश्किल होता होगा?" मैंने उनकी चुप्पी भग करनेके लिए पूछा।

"हाँ, ज़िन्दे बाघको पकड़नेकी अपेक्षा यह कम कठिन नहीं। समाजके प्रति क्रोध इनके भीतरसे हटाए नहीं हटता। जिस समाजसे इन्हें बदला लेना था वह तो यहाँ नष्ट कर दिया गया, पर इन्हें यह समझाना कठिन है। इन्हे जारके अफसर अथवा विदेशी सेनाका शिकार बनना पडा है। उसीने इनके मनपर इतना बड़ा आघात पहुँचाया है कि वह घाव अच्छा करना इतने दिनोके बाद भी बहुत कठिन हो रहा है। इन लोगोका किसी समाजके ऊपर विश्वास नहीं, हरएक आदमीको राक्षसके रूपमे देखते हैं,

कैसी भी व्यवस्था माननेके लिए ये तैयार नहीं। ”

“ लेकिन इसमे तो नुकसान इनका अपना ही है ? ये तो अपना ही जीवन इस प्रकार नष्ट करते हैं। ”

“ इसमे भी कोई सन्देह है ? लेकिन आपको मालूम है, मध्य एशियामे ताआजी नामकी एक बहुत ही दलित और सताई गई जाति रहती थी। उनमे शत्रुओंके प्रति इतना अधिक क्रोध और घृणाका भाव था कि वे युद्धमे जानेके पहले अपने दोनों कान स्वयं काट लिया करते थे जिससे वे भयावने दीखें और उनकी प्रकृति अधिक खूँखार और खूनकी प्यासी हो जाए। हमारे यहाँके इन वेजप्रिजोर्नियोकी भी यही हालत है। ये जानते हैं कि इनके इस प्रकारसे जीवन यापन करनेके कारण इनकी अपेक्षा अधिक शर्म और कष्ट सोवियत सरकारको है। मजदूर सरकार ऐसे ना-समझ अभागोंको अपनी समाज-व्यवस्थाके ऊपर सबसे बडा धब्बा समझती है, इसीलिए ये लोग और भी अधिक उच्छृखलता दिखलाते हैं। दूसरे देशोंमे ऐसे हजारों मिलेंगे, पर उनकी कोई परवाह नहीं करता, इसीलिए वे इनके जैसे आततायी भी नहीं। ”

उन्हे वास्तवमे दुःख हो रहा था, यह उनके चेहरेसे स्पष्ट हो जाता था।

हम लोग देर तक बातें करते रहे। थोडी रात बीतनेपर उन्होने स्वय ही कहा—“ अब हम लोग सोये। ”

उस डब्बेमे हम तीनोके लिए बिस्तरे लग गये थे। मैंने ऊपरका बर्थ लिया। नीचे वान्का और स्लाविन्स्की सोये।

खारकोव पहुँचनेके पहले ही मेरी नींद टूटी। स्लाविन्स्की भी उठे। उन्होने वान्काको जगाया। उसका पता नहीं। उसने बिस्तरा मोडकर इस प्रकार चादर डाल दिया था कि वह नहीं है, यह सदेह करनेकी गुंजायश तक न रहे। हम लोग चारो तरफ़ टट्टीघर तकमे ढूँढ आये पर कहीं भी उसका पता न चला।

“ अब सबसे पहले मुझे यह पता लगाना है कि किसीका सामान तो

चोरी नहीं गया ! वान्काकी दृष्टि बगलके डब्बेमे सवार विदेशी लोगोके सामानपर थी।" स्लाविन्स्कीने कहा।

डब्बोकी बनावट इस प्रकार थी कि चलती गाड़ीमे भी आदमी इञ्जिनके पाससे गार्डके डब्बे तक घूम आ सकता था। स्लाविन्स्कीने एक चक्कर लगाकर कहा—"नहीं, आज रात चोरी तो नहीं हुई।"

"और वान्काका कुछ पता चला?"

"नहीं, पर चोरी नहीं हुई इससे संदेह होता है कि वह अभी इसी गाडीमे है।"

वे सावधानीपूर्वक एक बार फिर शुरूसे आखिर तक देख आये पर वान्काका पता न लगा।

खारकोवमे उतरनेके पहले मैंने अपना सामान फाटकके पास ला रक्खा। वहाँ उस समय तक काफी अँधेरा था। हठात् मेरी दृष्टि ऊपरकी ओर गई। कोई चीज़ हिल रही थी। मैंने उस ओर स्लाविन्स्कीको दिखलाया। वह स्थान थैलीके जैसा और बहुत ही संकीर्ण था। गाडियोके मरम्मत करनेके कुछ औज़ार उस स्थानपर रखे जाते थे पर उस दिन वह खाली था। पहचानमे आ जानेपर वान्काको उस थैलेसे बाहर निकलना पडा। स्लाविन्स्कीने कहा—"यहाँ शायद तुम्हारे लिए बिस्तरसे ज्यादा आराम था! खैर।"

४

गाडीसे उतर कर ज्यो ज्यो बेजप्रिजोर्नी गारदके नजदीक पहुँचता गया मेरी छाती अधिकाधिक धड़कने लगी। बहुतसे भाव एक साथ ही बाहर निकलना चाहते थे जिनमे कुछ पसन्द थे और कुछसे चिढ थी। बार बार जो भाव मनमे आता था वह यह था कि क्या तान्यासे मुलाकात होगी?

तान्याके नामके साथ ही साथ इटली छोडनेके बादका अपना सारा इतिहास आँखोके सामने आ गया। समुद्रमे जहाजके एक छोरपर रेलिंगका

सहारा लिये उसे खड़ा देखा था। ध्यानपूर्वक उसका चेहरा पहले पहल उसी दिन देखा था। उसकी शक्लकी वह झलक अभी भी उदास नहीं हो पाई थी। उसे मैंने जान-बूझकर और दूसरे मजबूत भावोके निकलनेका मौका देनेके लिए एक कोनेमे डाल रखा था।

कीवमे रहते समय उसका एक पत्र भी मिला था, वह उसके चेहरेकी अपेक्षा कहीं शुष्क था। रोस्टोवसे विदा लेनेके बाद फिर साक्षात उसे आज देखूँगा, यही विचार न मालूम क्यो मुझे कॅपा रहे थे।

आफिसकी सीढियोपर था, उसी समय कमरेके भीतरसे उसकी हॅसी सुनाई दी। बिना इत्तला दिये ही भीतर चला गया। वह मेजपर बैठ अपने चारो तरफ़ बैठाये गये नये पकडे आये वेजप्रिजोनियोंकी कोई दिलचस्प कहानी सुन रही थी। हॅसीकी रेखाये अब भी उसके चेहरेपर थी।

"तान्या!" मैंने ही पुकारा।

"अरे! तुम यहाँ कैसे?"

वह उछलकर मेरे पास आ गई और मेरे दोनो हाथ कसकर दबाये।

"देखिए डाक्टर, यही मेरे दोस्त हैं जिनकी चर्चा मैं आपसे किया करती थी। लेकिन मैं तो समझती थी कोजाकोने तुम्हारा हाड़ हाड़ सुखा दिया होगा, पर तुम तो दूरसे ही चमक रहे हो। और इतनी अच्छी रूसी कहॉसे सीखी? कोज़ाकोसे? तुम्हारी बेला कैसी है? बेला,—हाँ, यही नाम तो तुमने लिखा था और खोखोल कैसे पसन्द आये? आज ही तो अखबारमे देख रही थी, कई विदेशी इंजीनियर कीवमे पकड़े गये हैं। यह तो बतलाओ, तुम इतनी जल्दी सरसे पॉव तक रूसी कैसे बन गये? अब विदेशियोकी याद आनेपर तुम्हारी याद पहले पहल नहीं आयगी। और साथमे डोनकी मछलियॉ नहीं लाये?"

मेरे उत्तरकी बिना प्रतीक्षा किये ही वह स्वयं बोलती जाती थी। एक आध बार तोतलाने भी लगी। अपने भावोको निकालनेका दरवाज़ा

उसे नहीं मिल रहा था। वह कमरेके चारो तरफ़ देख आती पर एक सेकडसे ज्यादा उसकी दृष्टि कहीं भी नहीं टिकती।

"चलो, हम अपने डेरेपर चले!" वह मेरा हाथ पकड़ खींच ले चली। रास्तेमे उसने कहा—"तुम्हे यहाँ देखकर विश्वास नहीं होता कि तुम आये हो। और मै भी......। खैर, जाने दो। डाक्टरके पूछनेपर मैंने कई बार उत्तर दिया था कि तुमसे मेरा साधारण परिचय है, अब तो उन्हे इसपर विश्वास नहीं होगा। खैर, इसे भी जाने दो। कैसे रहे, कहाँ रहे,—सब कह सुनाओ। नहीं, अभी उसकी ज़रूरत नहीं। उसमे देर लगेगी। अभी मैं तुम्हारे रहनेकी कोठरी दिखला दूँ। मैं रहती हूँ उसकी बगलवाली...।"

५

डाक्टर बैठे हुए 'बेजप्रिजोर्नियो' (टूअरो) की परीक्षा लेने लगे। एकसे उन्होने छाती खोलनेके लिए कहा। उनके कानमे आला लगा था। वह लड़का हिचक रहा था। वान्का उसीके बगलमे आकर बैठ गया था। उसने अपना चीथड़ा तुरत ज़मीनपर फेंक दिया और सीना तान कर डाक्टरके सामने खडा हुआ। बिना पूछे ही उसने अपने जीभ और दाँत दिखाये, आँखोकी पपनियाँ भी उलट लीं।

"देखता हूँ, कई बार तुम परीक्षा करा चुके हो क्यों!" डाक्टरने हँसते हुए कहा—"अब तो तुम्हे ही डाक्टर बनना चाहिए!"

"नहीं, मैं डाक्टर नहीं बनना चाहता...थू.." वान्काने वहींपर थूकते हुए उत्तर दिया।

"ऐसा क्यो?"

"वे हम लोगोको नाहक तग किया करते हैं। कुछ रोग नहीं, फिर भी बार बार छातीकी हड्डी खटखटाते हैं,—आँख दिखाओ, तो दाँत,—फिर जीभ! अब हम अँगूठा दिखाया करेगे।'

इस बार सब बेजप्रिजोर्नी हँसने लगे।

६

"मैं मूर्ख नहीं—" वान्काने पहले दिनसे ही कहना शुरू किया—"गदहा नहीं कि काम करूँगा!"

"फिर करोगे क्या?" तान्याने पूछा।

"तुम्हे आँखे नहीं! देखती हो, जैसे बैठे बैठे सिगरेट पी रहा हूँ वैसा ही पीता रहूँगा।

वान्काको नये आये और भी चार बेजप्रिजोर्नियोके साथ एक अलग कमरा दिया गया। सबको लोहेकी स्प्रिंगवाली खाट, नयी चादर, तकिया, बिछौना, कंबल दिया गया। पढ़ने-लिखनेकी सुविधाके लिए एक बड़ा-सा मेज और पॉच कुरसिया भी दी गई। कमरेमे बिजलीकी रोशनी लगी थी।

ये लोग वलोद्या नामक एक पुराने बेजप्रिजोर्नीके निरीक्षणमे रखे गये। उसे वहाँ रहते चार वर्ष हो चुके थे। पहले साल वह तीन बार भागा था और उसने एक खून भी उसी उम्रमे किया था पर इधर दो सालसे उसके जीवनने भारी पलटा खाया था। अब उसका रुख कुछ दूसरा ही हो गया था।

पर पहले दिन ही यह स्पष्ट होने लगा कि वलोद्याकी अपेक्षा वान्कामे संगठन करनेकी शक्ति अधिक है। नये चार साथियोको उसने अपने काबूमे कर लिया और उनका सरदार भी बन गया। वह उन साथियोके साथ सिर्फ वलोद्या ही नहीं बल्कि समूचे स्कूलके आधिपत्यसे निकल बाहर 'स्वच्छंद' जीवन बिताने जाना चाहता था। उसने अपने चार साथियोको इस बातमे पक्की तरहसे सहमत कर लिया कि बाहरका जीवन कैसा भी क्यो न हो, स्कूलके जीवनसे कहीं 'सुखकर' होगा।

उसी रात वहॉसे निकल भागनेका उन्होने निश्चय कर रखा था। जानेके पहले कमरेकी प्रत्येक चीज़ नष्ट कर देना चाहते थे। सध्याके

पहले ही उन्होने अपने कमरेमे लगे बिजलीके तार दॉतोसे काट डाले, बल्ब फोड दिया, स्विच उखाड कर कमरेके बाहर फेक दिया।

दूसरे कमरेके लडके ताश, शतरज, डोमिनो,—तरह तरहका खेल खेलने लगे। वान्काके साथियोने ताश चुरानेकी समूचे तीसरे पहर कोशिश की पर सफल न हुए। वलोद्या पहरेपर था। अन्तमे वान्काने इसकी स्वय कोशिश की। लौटते समय वलोद्याने उसे बरामदेमे देख लिया और कहा—"यहॉ तो ताश मुफ्तमें मिलते हैं, दिनको सिर्फ आफिसमे कहने-भरकी जरूरत है।"

वान्का अपने कमरेमे लौट आया। रोशनी वहॉ थी नहीं। अपने साथियोको ले बरामदेमे ताश खेलना चाहा। पर रास्तेपर बैठनेसे दूसरे कमरेवालोने ऐतराज किया। यदि किसी दूसरे वर्गके आदमीने मना किया होता तो वान्का उन लोगोंकी बात कदापि नहीं मानता, पर यहॉपर मना करनेवाले उसीके साथी थे जिनके लिए उसके भीतर 'इज्जत' और भय दोनो ही था। वान्काने अपनी ॲधेरी कोठरीमे लौटकर अपने साथियोसे कहा—"इसीलिए तो कहता हूॅ, इन सडी दुर्गंधपूर्ण बंद कोठरियोकी अपेक्षा सड़कपर रात बिताना कहीं अच्छा है। वहॉ रात-भर रोशनी जलती है और ताश क्या, जो भी खेल चाहो खेलनेसे तुम्हे कोई नहीं रोकता।"

वे लोग अपने निश्चयपर दृढ रहे। जब आसपासके कमरेवाले सो गये तो वान्काने अपने कमरेका दरवाजा बदकर अधकारमे कमरेकी चीजे नष्ट करना शुरू किया। उन्होंने चादर फाड डाली, कुरसियॉ तोड़ डालीं मेजके पटरे अलग कर डाले,—लोहेकी चारपाई तोड़ नहीं सके पर बड़े परिश्रमसे उन्होने उसके एक एक स्प्रिंग अलग कर दिये। कई घटोतक वे अथक परिश्रम करते रहे। स्प्रिंग जब ढीले नहीं होते तो दॉतोसे होठ दबाकर खूब जोर लगाया करते जिससे वे खुद सबके सब पसीने पसीने हो जाते।

और कुछ तोड़ना-फोड़ना बाकी न रहा तो वे एक एक कर खिड़कीके रास्ते बाहर कूदे। वान्काके पॉवमे शीशा गड़ गया। बेजप्रिजोर्नी ऐसे

मौकोपर ' उह-आह ' तो किया नहीं करते। लंगड़ाता हुआ वह उठ खड़ा हुआ। पर पॉव बहुत कट गया था, धूल छिड़कनेसे भी जब खून बंद नहीं हुआ तो अपने चीथड़ेका एक टुकड़ा फाड़ उससे बॉधने लगा।

वलोद्या इस समय तक जग पड़ा था। उसने अपनी खिड़कीसे वान्काकी ओर संकेत कर कहा—" तुम लोगोंने गलती की। पक्के बेजप्रिजोर्नी तुम नहीं। खिड़कीसे कूदनेकी तुम्हें क्या आवश्यकता थी ? तुम्हारा दरवाजा तो किसीने बन्द किया नहीं, खुद तुमने ही उसे भले बंद कर रखा हो। "

वान्का और उसके चारो साथी खिड़कीके ही रास्ते अपने कमरेमे चले गये और सूर्योदयके बाद भी बहुत देर तक सोये रहे।

दूसरे दिन सुबहको अगल-बगलके कमरेवालोंने जब फिर उन्हें चीथड़ोमे लिपटा पाया तो वे जी खोल कर हॅसे। उनके लिए ऐसे अनुभव प्रायः ही हुआ करते थे; आज वे भले ही बदल गये हो पर एक दिन उन्होने स्वयं भी वैसा ही किया था।

जीवनमे पहले पहल वान्काने अपने साथियोके बीच अपनेको ' नीचा' पाया। अब वे पहले पहल यह बर्दास्त नहीं कर पाये कि उनके साथी साफ सुथरे सजे सजाये कमरोमे रहे, सुन्दर नये कपड़े पहने और वे स्वयं चीथड़ेमे ही रह जाये और उनके ' अपने ' कमरेकी चीजे उस प्रकार टूटी और अव्यवस्थित अवस्थामे रहे।

तुलनाकी भावना जाग्रत होते ही वे अपने कमरेकी टूटी हुई चीजे फिरसे बनाने लगे। बिजलीका तार दो सप्ताह तक दुरुस्त करते रहे पर ठीक बना नहीं। दूसरे लड़कोमे एकने, जिसने बिजलीका काम सीखा था, मदद की और बटन दबाते ही कमरा उजेला हो गया। वान्काको यह बात बहुत खराब लगी कि उसके हजार बटन दबानेपर भी रोशनी नहीं जली और वही काम उसके साथीने एक मिनटमे पूरा कर लिया। अपनी यह कमी वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

७

हम लोगोंके स्कूलके लडकोंके छोटे छोटे झुड शहर घूमने जाया करते। पहले भय रहा करता था कि शहर देखकर कहीं उन्हे अपना पुराना जीवन न याद आ जाये और फिर वे कहीं गायब न हो जाये, पर इधर कुछ दिनोंसे वे बिजलीका काम सीखने लगे थे और उसीमे वे उतने तन्मय रहते कि उनके भागनेकी सभावना कम दीखती। शुरू शुरूमे ऐसा भी हुआ था कि अपनी पुरानी आदतके अनुसार लडके किसी किसी दुकानसे कोई चीज शिक्षकसे छिपा कर चुरा लिया करते, पर अब यह भी बंद हो चला था।

लडकोंको कभी कभी ट्राममे बैठा कर टहलानेके लिए ले जाया जाता था। एक दिन पॉच लडकोंको घुमाने ले जानेकी मेरी बारी थी। इन लड़कोंमे वान्का और उसके चार साथी थे। पिछले महिनोंमे उनका स्वभाव अवश्य ही बहुत कुछ बदल गया था। फिर भी वे मुझे अबतक खतरेसे बिलकुल बाहर नहीं दीखते थे।

बीच शहर आनेपर वान्का हम सबके पीछे पीछे चलने लगा। एक स्थानपर वह रुक भी गया—शायद किसीसे बाते करने लगा था। बार बार उसकी ओर देखते रहना भी ठीक नहीं था क्योकि वह अपने ऊपर मेरा अविश्वास समझ जान-बूझकर कुछ उपद्रव खडा करनेकी चेष्टा करता जिससे मैं और भी अधिक चिढूँ। हम लोग ट्राममे सवार हुए। वान्का पिछली खिडकीके पास खडा रहा। ट्राम खुली। थोड़ी दूर आगे बढनेपर देखा—कोई दस-बारह वर्षकी गदे कपड़े पहने बेज-प्रिजोर्नी लड़की ट्रामके पीछेके 'ज्वायट' पर बैठ गई। वान्का उसे देख हँसा करता और उस लडकीके चढने-उतरनेकी कुशलतापर ताली लगाया करता। लड़की ट्रामके पीछे इस प्रकार छिपकर बैठा करती कि ट्राम कंडक्टर या कोई मुसाफ़िर उसे देख नहीं पाता। ट्राम खडी होनेपर

लडकी दरवाजेके पास आ जाया करती और अच्छे कपड़े पहनने-वालेकी ओर देखा करती। वान्का उसे 'नहीं नहीं' का इशारा किया करता। मै यह खेल बडी देर तक देखता रहा।

चौकपर ट्राम कुछ देरतक रुकी। ट्रामके फाटकसे दो कदम पर टौर्गसीन (रूसकी वैसी दुकानें जहॉ सोना-चॉदी या विदेशी सिक्का देकर ही चीज़े खरीदी जा सकती थी) दूकान थी। ट्रामके पीछे बैठकर सफर करनेवाली लड़की उसके दरवाजेपर जा खडी हुई। वान्काने इस बार भी 'नहीं, नहीं' का इशारा किया। लडकीको ध्यानसे देखनेपर याद आया मैंने उसे आखिरी बार कीवके स्टेशनपर देखा था। कभी कभी वान्काके साथ फुटपाथपर भी वह गाया करती थी। वान्काके नज़दीक आकर मैंने पूछा—"क्या है वान्का?"

"कुछ भी नही।" उसने सर नीचा कर लिया। वह समझ गया कि उसकी चाल मैं देरसे देखता आ रहा हूॅ। टौर्गसीन दुकानसे एक अर्ध-वयस्क विदेशी जोडा हाथमे बहुत-सा सामान लिये सड़कपर खडी अपनी मोटरकी ओर बढता चला आ रहा था। चाल ढालसे वे अमेरिकन मालूम पड़ते थे। कमसे कम रूसमे उन दिनो उतने अच्छे कपडे पहननेवाले सबके सब अमेरिकन ही कहे जाते थे। उस स्त्रीके कपडे इतने सजे धजे थे कि उसे वास्तवमे ही 'एलिगैंट' कहना पड़ता। उसके साथका पुरुष स्मोकिंग सूट (विशेष उत्सवोंके मौके पर पहनी जानेवाली पोशाक) पहने हुआ था।

उस स्त्रीके हाथमे दो बोतले दीखती थीं। एक काली,—शायद उसमे स्याही रही होगी और दूसरी कीमती शराबकी। वह बिजलीके खंभेके पास पहुॅच पाई थी कि उसी समय हमारी ट्राम खुली। दुकानके दरवाजे पर खडी बेजप्रिजोर्नी लड़की ट्रामकी ओर दौड़ी। उससे टक्कर लगनेकी संभावना न रहते हुए भी अमेरिकन स्त्रीकी बोतले खंभेसे टकरा कर चूर चूर हो गई। उनके कपड़े बड़े बेहूदे स्थानोपर गीले हो गये,

साथ ही पाउडर-पुते चेहरेपर भी स्याहीकी बूँदे जा पड़ीं जो बड़ी ही स्याह दीख रही थीं। लाल किये हुए होठोंपर भी स्याही फिर गई थी। उनके पतिने तुरत ही बेजप्रिजोर्नी लड़कीको लपककर पकड़ लिया। वह ट्रामके पीछे अभी बैठ भी नहीं पाई थी कि उसी समय हठात् पीछे खींच लिये जानेके कारण वह मुँहके बल सड़कपर गिर गई। होठ कट गये, नाक छिल गई, चेहरा खूनसे भरने लगा। अमेरिकनने बिना उसके मुँहकी ओर देखे उसके बाल पकड़कर खींचे और एक छड़ी जोरोंसे जमा दी। उनकी स्त्रीने गुस्सेमें आ अपने बगलमे दबाया बैग गिर जाने दिया, हाथसे एक बार चेहरा पोंछ उसे चारों तरफसे समान रूपसे काला बना बेजप्रिजोर्नीके बाल अपने मुट्ठीमे पकड लिये और ताकत-भर खींचना शुरू किया। लडकी चिल्लाने लगी थी। वान्काने ट्रामसे कूदकर अमेरिकन औरतके बाल पकड लिये, उसके चारो साथी पहुँचकर घटना-स्थल घेर चुके थे।

इस वक्त तक चौकपर खडी मिलिशिया भी वहाँ पहुँच गई थी। उसे देखकर अमेरिकन औरतको उच्च कठस्वरमे सब रूसकी चीजोको अपनी भाषामे गाली देना याद आ गया। मिलिशियाने पहले बेजप्रिजोर्नी लडकीको छुडाकर अलग किया और फिर अमेरिकन स्त्रीके चेहरेकी ओर देखा। अपनी ड्यूटी भली भाँति याद रखनेपर भी उनका स्याही-पुता चेहरा और बेढगे तरीकेसे गीला हुआ कपडा देख वह अपनी हँसी रोक नही सका। अमेरिकन सज्जनको और भी अधिक चिढ़ हुई। मिलिशियाने उन्हे डाँटते हुए कहा—"नागरिक, आपको कानून अपने हाथमें ले लेनेका हक नहीं था। आप स्वयं इस लड़कीको सजा नहीं दे सकते थे। यहाँ सोवियत सरकार है जिसके यहाँ नालिश की जा सकती है।"

आसपास काफी भीड इकट्ठी हो गई थी। दो-तीन आदमी स्वय ही पंच बन गये और उन्होंने मामला शान्त कर दिया। अमेरिकन अपनी

मोटरमें बैठ स्त्रीके साथ रवाना हो गये। जाते जाते उन्होंने चिल्लाकर कहा—

"यहाँ शैतानोका राज्य है।"

"कोई हर्ज नहीं नीना!" वान्का बेजप्रिजोर्नी लड़कीको समझा रहा था—"ऐसा तो तू कितने ही बार भुगत चुकी है। रोती क्यो है? कीवमे तो तुझे इससे भी अधिक चोट लगी थी, उस वक्त तो बहादुरकी तरह तूने सम्हाला था, तेरे मुँहसे एक बार भी 'उह' नहीं निकली। चल हमारे साथ चल। नीना अपनेको निरपराध समझ रही थी। उसने तो उस दिन कुछ चुराया नही फिर उसके ऊपर मार क्यो पडी? हाँ, वह ट्रामके पीछे पीछे छिपकर चली आ रही थी,—पर ऐसा तो उसने बहुत बार किया है, किसी अमेरिकनने उसे उसके लिए टोका तक नहीं; रूसी तो खैर उस ओर ध्यान देते ही नहीं।

पार्कमे टहलते टहलते उसने कहा—"वान्का, आज तूने मार खिलाई है।"

"यह कैसे?"

"ये अच्छे कपड़े पहननेवाले जेब काटे जानेपर ही ठीक रहते हैं। तूने आज उन्हे बझाए नहीं रखा, नहीं तो मैंने उन्हे..."

वह दॉत पीसने लगी। फिर कहा—"अब तो वान्का, तू भी बदल गया। अच्छे कपडे पहननेमे तुझे शरम नहीं आती?"

मुँह-हाथ धोकर थोडा शान्त होनेपर उसने कहा—"लेकिन ट्रामके पीछे वैसे बैठना क्या सचमुच ही उतना बड़ा अन्याय है जिसके लिए मैं इतनी पीटी गई?"

"जानती है नीना!" वान्काने थोडा सोचकर कहा—"हम क्या करेगे? हम अपनी ट्राम बनाएँगे और उसपर मजेसे चढ़ेगे। ट्राम हमारी होगी। मै उसके भीतर बैठूँगा। तू उसे हॉकेगी, क्यो?"

अपराधियोंकी शिक्षा

१

बेजप्रिजोर्नियोका स्कूल बहुत ही निराले ढंगका था। शिक्षक और विद्यार्थी दोनोंके ही दृष्टिकोण और प्रकारके स्कूलोंमे पाये जानेवालोंसे बिलकुल ही भिन्न थे। चोरी, डकैती, बदमाशी, शैतानी, झूठ, मार-काट आदि जितने सामाजिक दृष्टिसे दुर्गुण हुआ करते हैं उनका यहाँ एक विशेष ढंगसे अध्ययन किया जाता और इन दुर्गुणोंके दूर करनेका रास्ता निकाला जाता था।

इस प्रकारके स्कूलोंको यदि हम सोवियत सरकारकी 'हैवानसे आदमी बनानेवाली प्रयोग-शालाएँ' कहे तो अधिक उपयुक्त होगा। उस प्रयोगशालाके संचालकोंकी दृष्टिमे मनुष्य जितने भी प्रकारके सामाजिक अपराध करता है, वे वास्तवमे मानवी स्वभावके लिए अस्वाभाविक हैं और यदि किसी किसी मनुष्यका दुष्ट स्वभाव बन जाता है तो इसमे उस मनुष्यकी अपेक्षा ज्यादा अपराध उस समाज-विशेषका होता है जिसके बीच वह रहता है। उसी समाज-विशेषका दबाव,—उसका दंड-विधान मनुष्यको पक्का अपराधी,—मनुष्यसे हैवान बना देता है। उसकी सुन्दरसे सुन्दर मानवी भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं।

इसमे भी मज़ा तो यह है कि वे मानवी भावनाएँ—अपनी वह मनुष्यता, 'अपराधी' स्वय ही नष्ट करने लगता है।—ऐसा क्यो? जिस

समाजमे वह सताया गया होता है उसके ऊपर क्रोध रहनेके कारण। यह क्रोध कितना भयानक होता है, इसका अन्दाज़ लगाना भी बातोकी तहमे गये बिना कठिन ही है। पर क्रोध किस सीमा तक पहुॅच जाता है; इसका अन्दाज़ पहली ही दृष्टिमे लगाया जा सकता है। साधारणतया यह उस सीमा तक पहुॅच गया होता है जब मनुष्य अपने आपको नष्ट कर देनेका निश्चय ही नही बल्कि प्रण-सा कर लेता है। मनुष्य जिस आघातसे अपने आपको नष्ट कर लेनेका प्रण कर ले वह आघात कितना बडा होता होगा?

बेजप्रिजोर्नी स्कूलोंका सबसे पहला काम होता था, अपराधियोंकी यह गलत प्रतिज्ञा भंग करना। यह काम आसान नहीं होता। उस प्रतिज्ञाके पीछे 'अपराधी' अपनी सारी शक्ति लगा दिया करता है। सिर्फ दुष्ट भाव ही नही बल्कि उस व्यक्तिकी रही सही मानवी भावना भी उस प्रतिज्ञाको भंग होनेसे रोकती है। 'समाजने हमे नीचा गिरा दिया है,' यह वास्तविकता होते हुए भी मन जल्दी स्वीकार नहीं करता। उसका उत्तर हुआ करता है—'लेकिन मैं तो नीच नहीं—'। समाज-बुद्धि कहती है—'तुम नीच जरूर हो।' इसी बुद्धिकी जिस समय विजय होती है—'मैं नीच नही' यह भाव दब कर नष्टप्राय हो जाता है और उसके स्थानपर आता है—'अगर मैं नीच हूॅ तो मुझे नष्ट हो जाना चाहिए'। एक बार—'हम अपनेको नष्ट करेंगे' की भावना आ जानेपर मनुष्यके बाह्य कार्य समाजके लिए बहुत ही अधिक हानिकारक होने लगते हैं। धीरे धीरे अपनेको नष्ट करनेकी क्रियामे,—समाजको अधिक हानि पहुॅचानेमे समर्थ हो रहा हूॅ यह सोचकर अपराधीके मनमे आनन्द होता है। इस आनन्दके कारण उसके भीतर वह शक्ति आती है जिसके बल बर्फ़पर बिना यथेष्ट कपड़ोके सो रहनेपर भी वह जिन्दा रह सकता है। इस प्रकारके कार्य उसके लिए 'साधना' बन जाते हैं।

शिक्षककी सत्शिक्षा—‘ तुमने झूठी प्रतिज्ञा की ’—जैसी बातोंपर अपराधीका विश्वास नहीं जमता। वह समाज-विरोधी कार्यको ही सत्यके अधिक निकट समझता है और उसे ही जायज करार देता है। ‘अपराधी’ समाजको हानि पहुँचानेको बहुत बड़ा और ऊँचा सिद्धान्त मानने लग गया होता है, इसीलिए उसकी प्रतिज्ञा तोडनेमे काफी समय और परिश्रम लगता है।

‘ अपराधियो ’ की वह विशेष प्रकारकी प्रतिज्ञा ज़ोर कर नही तोड़ी जा सकती और न उसे दुत्कार या धिक्कार कर उसका ज़ोर कम किया जा सकता है। इस ‘ ज़ोर ’ ‘ दुत्कार ’ ‘हुक्म’मे ‘ अपराधी ’ आधिपत्य देखता है। मन ही मन वह बहुत पहलेसे ही सब प्रकारके आधिपत्यको,—चाहे वह अपनेपनके भावके कारण ही क्यो न हो, ठुकरा चुका होता है। इसीलिए, जोर दुत्कार आदिका असर उसपर और भी अधिक खराब होनेकी सभावना रहती है।

इन्ही विचारोके कारण खारकोवके उस बेजप्रिजोर्नी स्कूलके सब संचालक एक बातमे पूरी तरह सहमत थे कि बेजप्रिजोर्नियोको सुधारना सिर्फ़ सोवियत सरकारसे ही नहीं बल्कि सारे मानव-समाजसे लिया गया सबसे बडा जवाबदेहीका काम है।

२

बिजलीकी करामात देखकर बेजप्रिजोर्नी स्कूलके सब विद्यार्थी आकर्षित होते थे। धीरे धीरे वे यह भी देखने लगे थे कि उन सबके स्विच दबानेपर रोशनी हो जाया करती है। अब वे क्रमशः सोचने लगे थे—“ ऐसा क्यो होता है ? ” वे बिजलीके भीतर छिपी हुई शक्ति देखना चाहते थे। दूसरे शब्दोमे, वे उसका विज्ञान जानना चाहते थे।

उनकी जाननेकी इस उत्सुकताने उनका ध्यान और सब बातोसे खींचकर इस ओर लगा दिया था। इसी उत्सुकताके मारे उन्होने अपने

यहाँकी बिजली तैयार करनेवाली मशीनके पुरजे पुरजे अलग कर डाले। उन पुर्जोंको फिरसे ठीक उनके अपने स्थानपर बैठा देना आसान काम नही था, पर विद्यार्थी उसपर भिड़ गये थे। बाहरके मिस्त्रीको उसे ठीक करनेके लिए बुलानेके पक्षमे वे नहीं थे। पर साथ ही उसे जल्दी ठीक कर लेनेकी उन्हे उत्सुकता भी थी क्योंकि उसके बिना उनका शामका खेल तथा विनोदका कार्य-क्रम लगभग एक सप्ताहसे चौपट हो रहा था।

अन्तमे हार कर उन्हे एक मिस्त्रीको बुलाना पडा। मिस्त्रीने मशीन ठीक कर दी। लडकोंने उसे चारो तरफसे घेर लिया। मिस्त्रीने लड़कोंसे ही उस मशीनको कई बार सिलसिलेसे खुलवाया और तैयार करवाया। जाते जाते उसने लड़कोंसे कहा—"भाई टेक्निक (शिल्प-कला) ही सब कुछ है। उसके सामने आदमियोंकी गिनती कुछ नही।"

"हम यह टेक्निक सीखेंगे।" लडकोंने एक स्वरसे कहा।

"बडी अच्छी बात है।" उन्हे उत्तर मिला।

उन दिनो खारकोवमे ट्रैक्टरका विशाल सोवियत कारखाना तैयार हो चुका था। उसीके एक विभागमे बिजलीके काम सीखनेकी भी सुविधा थी। बेजप्रिजेर्नी स्कूलके संचालकोंने कारखानेके सचालकोसे बात करके इन लड़कोकी उस कारखानेमे काम सीखनेकी व्यवस्था कर दी।

पर वह कारखाना स्कूलसे कुछ दूर था। विद्यार्थियोंको रोज पाँच मील जाना आना पडता था। साथ ही वे यह भी देखते थे कि मोटरसे जाना-आना बड़ा आसान था पर उनके स्कूलके पास मोटर नही थी। स्कूल-संचालकोंके सामने जब उन्होंने मोटरकी माँग पेश की तो उन्हे उत्तर मिला—'पहले मोटर बनाना तो सीखो। खुद बनाकर उसपर चढनेमे ज्यादा आनन्द है।'

स्कूलके पास ही कई गाँव थे। उन गाँवोमे कुछ मज़दूर भी रहा करते थे। उन्हे ले जाने और लौटा लानेके लिए कारखानेसे रोज़ाना लाल रंगकी

'बस' आया करता था। विद्यार्थी अपने जीवनकी उन मज़दूरोंके जीवनसे तुलना करते और अपने जीवनमें बहुत-सी कमी पाते। रोजाना मजदूरोंकी संगतिमें काम करते करते उनके न जानते हुए सिर्फ़ उनका बाहरी लिवास ही नहीं बल्कि आन्तरिक प्रकृति भी बदलती जा रही थी। वे अपने जीवनसे मजदूरोंका जीवन अधिक सुखी मानने लगे थे और इसीलिए अपना जीवन भी उन्हींके ढंगपर बदल लेना चाहते थे।

विद्यार्थियोंकी मोटरपर चढ़नेकी बहुत अधिक इच्छा देखकर मजदूरोंने अपनी इच्छासे उन्हें एक दिनके लिए अपनी मोटर दे दी। मजा एक बार चख चुकनेपर पैदल कारखाने जाना विद्यार्थियोंको और भी खलने लगा। उन्होंने आपसमें तय किया—ये मज़दूर मोटर बनाते हैं और इसीलिए उसपर चढ़ते हैं, हम लोग भी मोटर बनाएँगे और उसपर चढ़ेंगे।

कुछ जो उनमें होशियार गिने जाते थे उन्होंने कहा—"हम उससे भी अच्छी और सुविधाकी चीजें बनाएँगे। क्या बिजलीके उपयोगसे वह चीज नहीं बन सकती?"

"जरूर बन सकती है।" सारी जमातने उत्तर दिया।

"तो फिर बनाएँ।"

उन्हें अपने ढंगकी न छोड़े जा सकनेवाली धुनने आ घेरा।

३

खारकोवकी नगर-सोवियत इधर कुछ दिनोंसे स्वयं ही शहरके पूर्वी छोरसे आसपासके गाँवोंको मिलाते हुए ट्रैक्टर-फैक्टरी तक ट्राम-लाइन बनानेका विचार कर रही थी। यह लाइन लगभग दस मील लंबी होती। पर दूरीकी उतनी बड़ी समस्या नहीं थी जितनी रास्तेमें पड़नेवाले नालोंकी। उनके कारण बहुतसे पुल तैयार करनेकी आवश्यकता थी और मिट्टी सख्त थी।

पर ट्रैक्टर-फैक्टरीमें काम करनेवाले मजदूरोंकी संख्या दिनपर दिन बढ़ती जा रही थी। कारखाना आरम्भ होनेके चंद महीनोंके ही बीच यह संख्या पैंतीस हज़ार तक पहुँच गई थी और अभी उसके और भी बढ़नेकी संभावना थी। इतने मजदूरोंके रहनेका बंदोबस्त उतनी जल्दी कारखानेके पास ही कर लेना बड़ा कठिन था। जितने मकानोंकी आवश्यकता थी उनके बनानेमें अभी कुछ वर्ष लग जाते। फिलहाल आसपासके गाँवोंके मजदूरोंको कारखाने तक पहुँचानेकी समस्या बड़ी बिकट होती जाती थी। कितने ही गाँवोतक मामूली सड़क भी नहीं थी और जहाँ थी वहाँके लिए भी मोटर-बसोंकी संख्या बहुत कम थी।

मज़दूर शहरसे अपने गाँवोंको मिलाते हुए कारखाने तक ट्राम-लाइन निकालनेके लिए बहुत जोर लगा रहे थे। ऐसे मौकेपर बेजप्रिजोर्नी स्कूलसे ट्राम लाइन बनानेका प्रस्ताव आया तो मज़दूर और नगर-सोवियत दोनोंने ही उसका स्वागत किया। स्कूलके लड़कोंने सिर्फ़ सड़क और पुल बनानेका ही भार अपने ऊपर नहीं लिया था बल्कि नगर-सोवियतको यह भी आश्वासन दिया था कि उन लड़कोंमें बहुत-से बिजलीका काम सीख चुके हैं जो फिटिंगका काम आसान कर देगा। इतना ही नहीं, वे अपनेमेंसे कुछ आदमियोंको भावी ट्राम-लाइनमें काम करनेके लिए भी देनेवाले थे। लड़कोंका यह प्रस्ताव कामको बहुत आसान कर देता था, क्योंकि उन दिनों सारे रूसमें काम करनेवालोंकी बड़ी कमी थी। जितने मज़दूर मिल सकते थे उनकी शक्तिका उपयोग राष्ट्रके लिए सबसे आवश्यक मेशीनें तैयार करनेवाले कारखानोंमें किया जाता था। ऐसे मौकेपर स्कूलके पाँच-छः सौ लड़कोंकी मदद नगर-सोवियतके लिए कम नहीं थी।

हिचक सिर्फ़ स्कूल-संचालकोंको थी। भीतर ही भीतर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनके छात्र इतनी बड़ी जिम्मेदारीका काम पूरा कर सकेंगे। पर नगर-सोवियत, कारखानेके मज़दूर और अपने छात्रोंके

निर्णयके सामने उन्हे झुकना पडा। स्कूलके लडकोके प्रतिनिधि मजदूरोके साथ शर्त कर आये थे। उसके अनुसार कामका बँटवारा कर लिया गया था।

साथ ही मजदूर और विद्यार्थियोंमे समाजवादी प्रतिद्वद्विताकी शर्तें हुई थीं। समाजवादी मातृ-भूमिके लिए अधिक उपयोगी साबित होनेके लिए पढने-लिखने, कला-कौशल, सामाजिक व्यवहार आदिके मामलेमे परस्पर सहायता पहुँचाते हुए आगे आनेकी प्रतिद्वद्विता करेगे। मज़दूरोने अपनी शर्तोंके नीचे लिखा था—" अपने पिछले जीवनसे छुटकारा ले अब सोवियत नागरिकोमे आगे आनेकी चेष्टा करनेवाले, समाजवादी मातृ-भूमिको शक्तिशाली बनानेमे मदद करनेवाले, मजदूर समाजका सर सभ्यताके क्षेत्रमे और भी ऊँचा करनेवाले बेजप्रिजोर्नी स्कूलके छात्र जिन्दाबाद ! "

विद्यार्थियोने उसके नीचे और भी जोड दिया था—" हमे नये जीवनका रास्ता सुझानेवाले, बिजलीकी कलाके साथ चारकोलके पासके अन्धकारमय अभागे जीवनसे निकाल कर मनुष्यके प्रकाशमय जीवनमे आनेकी कला बतानेवाले ट्रैक्टर-कारखानेके मजदूर ज़िन्दाबाद ! "

यह गुरु और शिष्यके बीचकी शर्तें थीं जिनपर दोनो ओरके प्रतिनिधियोने हस्ताक्षर किये। सबसे नीचे नये सीखे हुए बच्चेके दस्तख़तोमे लिखा था—" नीना '

वह स्कूलके लडकियोके दलकी प्रतिनिधि थी।

४

नीनाका इतिहास जान लेना आसान काम नहीं। उसका चेहरा देख कर मुझे राजीन्सकी गॉवके कोजाकोके बीचकी लीजाकी याद आती। मैं दोनोमे समानता ढूँढने लगता। सिवा ऑखोके और कोई समानता दोनोमे नहीं दीखती। शब्दोका उच्चारण कभी कभी कोजाक ढगका

दाँतोंके बीचसे निकलता हुआ रहता। हाव-भावमें उक्रैनकी अपेक्षा किसी कोजाक गाँवमें वह अधिक शोभा देगी, इससे अधिक मैं कुछ पहचान नही पाता था।

उसने जीवन व्यतीत किया था बेजप्रिजोर्नीका। उसका इतिहास सोवियत यूनियनके शहरोंकी नई सडकोंपर गरम चारकोलसे लिखा गया होगा। नए पड़े हुए बरफ़को जब वह अपना गद्दा बना कर सोती होगी तब उसपर उसके दाग़ अवश्य ही उखड जाते होंगे पर वे दाग भी तो वसतकी उष्णता पाकर कभीके स्रोतके साथ ही विलीन हो गये होंगे।

यदि वह जारके ज़मानेके किसी ज़मीदार अथवा ओहदाधारीकी कन्या रही होती तो अवश्य ही गिरजाघरोंके पादरियों द्वारा लिखे मोटे रजिस्टरोंमे उसका नाम होता। कही न कहीं बचपनकी ली हुई दीवारोंपर टँगी और अब कीडोंके द्वारा खाई जाती हुई तसवीर होती। ख्यातनाम व्यक्तियोंके बहुत-से परिचित होते हैं, वे खोज खबर लिया करते।

ऐसी कोई भी बात नही हुई, इसीलिए नीनाका इतिहास भी अज्ञात था। उसे उसके जाननेकी भी आवश्यकता नही थी। प्रकृतिने उसे जितना आघात पहुँचाया था, मनुष्य-समाजने उसके प्रति जितनी कठोरता दिखाई थी और इन दोनोका सामना करनेके लिए उसे अपनी जितनी शक्ति खर्च करनी पडी थी उसके कारण भावुकताका नामोनिशान भी उसके भीतरसे जाता रहा था। पिता-माता कौन-सा सुख-दुख पहुँचाया करते हैं, यह अज्ञात था और इसीलिए अनुसधान करनेकी बात भी कभी उसके मनमें नहीं उठी थी।

किसी बोर्जुआ उपन्यासकारसे भी वह परिचित नहीं जो अवश्य ही किसी न किसी प्रकारका पिता-माता उसके लिए ढूँढ देनेमे समर्थ होता। पर ये पिता-माता भी उसके लिए कौनसे उपयोगमें आते? यदि उपन्यास-कार उन्हें राजसिंहासनपर बैठा हुआ बतला देते तो भी नीना अभी राजसिंहासनकी उत्तराधिकारी नहीं बनने जा रही थी।

इतना होनेपर भी गे० पे० ऊ०की दृष्टिसे किसी बातका छिपे रह जाना बहुत कम ही संभव हुआ करता है। जबसे वह उस स्कूलमे भर्ती कर ली गई थी तबसे विशेषरूपसे गे० पे० ऊ०को उसका इतिहास जाननेकी उत्सुकता हुई थी। कीवका जो गे० पे० ऊ० वान्काको स्कूलमे भर्ती कराने आया था उसीने नीनाको भी पहचाना। उसके उस लडकीको पुकारनेका ढंग भी अलग था। उसने सिर्फ़ नीना न कह बडे अदबके साथ पुकारा —" नीना पेत्रोवना ! "

बिजली लगनेकी भॉति नीना चौक पडी। बचपनकी विस्मृत बाते एक क्षणके लिए झलक गई। उस गे० पे० ऊ० के कथनानुसार नीना पेतर पोक्रून्का नामक एक कोजाककी कन्या थी। पेतर सोवियत सेनाके पक्षमे गृह-युद्धके समय क्रीमियामे लड़ रहा था। उन्ही दिनो डेनीकीनके सैनिकोद्वारा वह गिरफ्तार किया गया था। उसे कौम्यूनिस्ट सेनाका भेद बतलानेके लिए तरह तरहकी यत्रणाये दी गई और अन्तमे उसका सर धडसे अलग कर काले सागरमे फेक दिया गया था। पेतरके गॉव-वालेका कहना था कि मृत्युके कुछ पहले ही उसकी स्त्रीका देहान्त हो चुका था। हॉ, एक छोटी-सी बच्ची बच रही थी जिसे अपने भाग्यके ही भरोसे आगे जीवित रहना था। उस मारकाट, भगदड और दुर्भिक्षके ज़मानेमें अपने निजी बच्चोकी ही खबर रखनेकी लोगोको फ़ुर्सत और सहूलियत नहीं रहा करती थी, बिना मा-बापके बच्चोकी तो बात ही जुदी है।

नीनाको बचपनकी इतनी घटनाये याद नहीं। याद सिर्फ़ इतनी रह गई थी कि दक्षिणी रूसके किसी हिस्सेमे खरबूज खूब होते हैं, खानेमे वे मीठे लगते हैं, पर तोड़कर खानेवालेको किसान बुरी तरह पीटा करते हैं। रेलमे चढ जानेपर आगे ले जानेकी सारी जिम्मेवारी इजिनपर रहती है और भूख लगनेपर भीडवाले स्थानोमे वह जा खडी होती है। लोग जल्दबाजीमे रहते हैं और वहॉपर यदि खानेकी कुछ सामग्री चुरा ली जाती है तो खरबूजके खेतोकी अपेक्षा पकडे जानेकी कम सभावना रहती है।

आगे चलकर उसने यह भी सीख लिया था कि यदि मुसाफिरका ध्यान दूसरा बटाये रखता है तो उसका पाकेट मार लेना आसान होता है।

स्कूलमे भर्ती होनेके बाद उसके जीवनने भारी पलटा खाया था। पहले वह धूलमे पड़ी रहती थी और अकसर होटलोकी खिडकियोसे मॉगनेपर फेके गये सूखी रोटीके जले हुए किनारोसे उसे पेट भरना पड़ता था। अब वह महसूस करती थी कि धूलमे पड़े रहनेकी अपेक्षा चारपाई-पर लेटना अधिक सुखकर है, और रोटीके जले किनारोकी अपेक्षा सूप और तश्तरी-भरा खाना अधिक सुखकर और स्वादिष्ट होता है। इतना ही नही, कमरेमे कुरसीपर बैठकर उतनी स्वादिष्ट चीजोके खानेपर मारकी तो बात ही दूर रही, कोई ऑखे भी लाल नही करता। लोग उलटे पूछते हैं—"और भी कुछ चाहिए?"

५

तान्या उसे स्वय पढाया करती है। शुरू शुरूमे उसे गुडियोका बहुत अधिक शौक था, तान्याने उसकी इच्छानुसार उसे खरीद दी थीं। अब उधरसे भी उसका जी ऊब गया है। अब फूलोका उसे खूब शौक हुआ है। सुबह उठ कर खिले फूलोसे अपने बाल सजाती है और तब तान्याके पास किताब कापियॉ ले पढने आती है।

नीना जिस समय तान्याके पास पढने बैठती है, उसका सौन्दर्य देखने योग्य होता है। गाल उगते सूर्यकी लालीसे प्रतिद्वन्द्विता करते होते हैं। चमकती हुई बडी बडी ऑखोके ऊपर काले धागोकी भॉति सजी हुई भौंहे उत्सुकतापूर्वक कभी किताब और कभी तान्याकी ओर अपना पासा खोलकर फेकती हे। उसके मुँहकी आवाज़ प्रभातके पक्षियोसे भी अधिक मीठी निकलती है। स्वाभाविक घुँघराले बाल कंधोको दूर तक ढकते हुए झूलते होते हें। सडक परकी नीनाको देख कर इस नीनाको पहचान लेना कठिन था।

औरते और विशेषकर सुन्दर औरते किसी दूसरी औरतको बिना किसी ऐबके सुन्दर कहना स्वाभाविक ही पाप समझती हैं, पर तान्या बार बार मुझसे पूछा करती—" नीनाके समान स्वाभाविक सौन्दर्य और कहीं देखा है ? ऐसी ऑखे ! यह है वास्तविक कोज़ाक सौन्दर्य ! "

इधर स्कूलके लडके जबसे ट्राम-लाइन निकालनेकी सोच रहे थे, नीनाको ट्राम चलाना सीखनेकी चिन्ता लगी थी। उसने अपनेको ड्राइवर और समान उम्रकी सगिनीको ट्राम-कण्डक्टर बनाना तय किया था। स्कूलके संचालकोने शहरमे इसकी व्यवस्था भी कर दी थी।

नीना पहले पहल जिस दिन ट्राम चलानेका सबक लेकर आई थी आनन्द भीतर थामे नहीं थमता था। अपने संगियोको सुनानेके बाद उसने तान्याको सुनाया। मैं वहाँ पहुँचा तो फिर मेरे सामने दुहराया—" घंटी .. टुन . टुन.. टुन . । बायॉ हाथ अपनी ओर दायॉ हाथ सामने ..। बिजलीका घोडा दौड चला। हमे इच्छा होती है कि उसको हमेशा ही दौडाते चले। उसकी चाल घोडेसे कहीं अच्छी और आवाज़ घोडेकी टापसे भी मधुर...। मुझे मालूम होता है जैसे आज पहले पहल ट्राम देखी है। "

थोडी देर रुक कर उसने कहा—" ये स्कूलवाले जल्दी लाइन क्यो नहीं तैयार करते ? मै एक सॉसमे शहरसे यहाँ तक ट्राम दौडाती चली आऊँगी और आवाज कैसी सुन्दर होगी...टुन...टुन...टुन...। सब कोई सामनेसे हट जाओ। "

वह चारो तरफ खडे लोगोकी भीड़ चीरने लगी।

६

ट्राम लाइनका काम बडे जोर-शोरसे आरंभ हुआ। स्कूलके लडकोकी उम्र और शक्तिका खयाल रखते हुए जिस कामके लिए इंजीनियर लोगोने दो सप्ताहका कार्य-क्रम बना रखा था, उसे लडके दो दिनमे पूरा किया करते।

लड़कोंके काम करनेकी धुनकी उपमा केवल पागलोंकी धुनसे दी जा सकती थी। सब समय उनके मनमें ट्राम ही चला करती थी। काम उन्हें सिर्फ चार घंटे करना पड़ता था, इसके लिए उन्होंने अपनी पारी बाँध ली थी। यदि स्कूलके नियममें भोजन, विश्राम, पढ़ने और सोनेका समय निकालना अनिवार्य नहीं रखा जाता तो लड़के शायद उसकी चिन्ता भी भूल जाते।

इस धुनके सामने किसी प्रकारकी भी कठिनाई टिक नहीं सकती थी। शुरू शुरूमें बड़े बड़े मिस्त्री लोगोंकी सहायता लेनी पड़ी लेकिन आगे चलकर उनका काम लड़के खुद ही कर लिया करते थे। लड़कोंने काम शुरू करनेके पहले ही निश्चित कर रखा था—" हम टेक्निकके मास्टर बनेंगे।"

इस बातको उन्होंने स्वाभाविक तरीकेसे अपना लिया था। उसीको यदि यों कहा जाता कि भाई स्टालिनका कथन है कि अभी सोवियतको बचानेके लिए सबसे आवश्यक है कि यहाँके युवक टेक्निकके मास्टर बनें तो लड़के उतने प्रभावित नहीं होते। किसीके कथनपर शिक्षा ग्रहण करनेकी अपेक्षा जीवनसे ही शिक्षा ग्रहण करना उन्होंने बचपनसे सीखा था और वही उनका वास्तविक स्कूल भी था।

कामके ही साथ साथ लड़कोंका जीवन भी आपसे आप बिना किसीकी चेष्टाके ही बदलता जा रहा था। उनके रहनेका तौर-तरीका अधिक सुन्दर बनता जाता था। वे अब उसकी कमी भी महसूस करने लगे थे और साथ ही उसे दूर करनेके साधन भी उनके सामने मौजूद थे। हालमें कारखानेके मज़दूरोंने उन्हें एक ग्रामोफोन भेंट किया था। पहले सप्ताह उन्होंने उसे चौबीस घंटे चालू रखा। खानेके समय तो सुना ही करते, सोनेके समय भी 'दूरका संगीत' सुननेके लिए खेतमें रख दिया करते और पहरेवाला उसे बजाया करता।

बेजप्रिजोर्नी लोगोंके गाने भी मँगाये गये थे, पर वे उनके सुरसे

अपना सुर अच्छा समझते थे। रेकर्ड बनानेवालोंको बुलाकर उन्होंने अपने गाने उतरवाये। जब गाते गाते उनका गला थक जाता तो अपने गानोंके रेकर्ड ग्रामोफोनपर लगा उसीके तालपर कुदाल और फावड़ा चलाया करते।

ट्राम-लाइन बनानेकी काममें नहीं बल्कि वे खेलमें गिनती किया करते थे। उन्हें देखकर यही प्रतीत होता कि केवल वे अपने मनके आनन्दको प्रकट करनेके लिए उतना परिश्रम कर रहे हैं। फावड़ा चलाना भी मनके आनन्दको व्यक्त करनेका एक रास्ता है, यह वे स्पष्ट कर दिखला रहे थे।

और ये वे ही लोग थे जो स्कूलमें भर्ती किये जानेके समय कहा करते—"हम इतने मूर्ख नहीं कि काम करेंगे!"

७

स्कूलके लड़कोंके कामसे यदि असंतोष था तो वह कुलक (जारशाहीके जमानेके जमींदार और महाजन) लोगोंको था। सोवियत सरकारका विरोध करनेमें वे बेजप्रिजोर्नी लोगोंको अपना साथी समझते थे। उन लोगोंने यह भी आशा लगा रखी थी कि बड़े होनेपर अगली पुश्तमें सोवियत-विरोधी कार्योंका नेतृत्व कुलकोंके स्थानपर बेजप्रिजोर्नियोंके ही हाथमें रहेगा। उनकी इस आशापर पानी फिरता जा रहा था।

साथ ही उन्हें थोड़ा आर्थिक घाटा भी था। उन कुलकोंमें कुछने ताँगे बनवा रखे थे। ट्राम होनेपर उनकी उपयोगिता जाती रहती। दूसरी बात थी—कुलक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे चुराये हुए अन्नकी रोटियाँ छिपकर शहरमें मनमाने-दामपर बेचा करते थे। शहरसे गाँवमें आना उतना आसान हो जानेपर यह व्यवसाय भी नहीं चल सकता था।

अपने इसी सैद्धान्तिक और आर्थिक विरोधके कारण कुलक रुकावटें लाने लगे। जब उनके कामका ढंग देख उन्हें स्पष्ट हो गया कि वे किसी

भी प्रकार ट्राम-लाइनका निकाला जाना नही रोक सकते, तो फिर वे ऐसे अडगे लगाने लगे जिनसे काममे देर लगे।

वे जब आसपास किसी शिक्षकको नही देखते तो झाडियोके बीचसे कहा करते—"थोड़ा विश्राम भी करो! काम करते करते थक गये होगे!"

"थकावट किसे कहते है? अभी तो काम शुरू ही किया है।" उन्हे उत्तर मिलता।

"अच्छा, देखो तो, तुम्हारे लिए कैसा सुन्दर उपहार लाया हूँ!" वे वोदकाकी बोतले दिखाते—"इसकी तेजी ठीक तुम्हारी जवानीके समान है। इसके उपभोग करनेकी यही तो तुम्हारी उम्र है!"

उनके इस प्रलोभनमे कई लड़के आ गये। जब ये लडके निकट पहुँचते तो कुलक कहते—"तुम्हे पत्थर तोडते देख हमे बडा दुःख होता है!"

लड़के प्रभावित न होते तो आगे कहते—"तुम्हारे जैसे छोटे छोटे बच्चोको इस प्रकार पत्थर तोड़ते देख हमारी छाती फटी जाती है। मालूम पड़ता है जैसे सोवियत सरकार रूसको रसातल पहुँचा कर ही दम लेगी।"

लड़कोके चेहरोपर अविश्वासकी झलक आने लगती। इसका कारण था कि उन्हे बेजप्रिजोर्नी जीवनमे सबसे अधिक दुत्कार और घृणा करने वाले कुलक ही मिले थे। लड़कोका रुख पहचान कुलक भावुक बन जाया करते। बनावटी आँसू आँखोमे ला कहते—"मुझसे तो और बोला नहीं जाता। तुम जैसे हमारे निजी लडके......" उनका गला रुँध आता।

पर लडके भावुकताको सबसे अधिक अविश्वास करनेके आदी हो चुके थे। तब कुलक उनकी जवानीकी कई तरहकी कमजोरियोके साथ खेला करते—"भला तुम्हीं बताओ, पत्थर तोड़नेकी अपेक्षा सुन्दर लडकियोके साथ नाचना तुम्हे अधिक पसन्द नहीं आयगा? हमारे गाँवमे

ऐसी सुन्दर लड़कियाँ हैं जैसी तुमने जीवन-भरमें न देखी होगी। उनके इतना निकट रहते हुए भी तुम लोग पादरियोंका-सा जीवन व्यतीत किया करते हो! इतने शुष्क वायु-मंडलमे तुम लोग क्यो कर जीवित रह पाते हो, यही देखकर हमे आश्चर्य होता है!"

८

कुछ लड़कोको इस चक्करमे आता देख कुलक लोगोंने उन्हे एक दिन अपने यहाँ निमंत्रित किया। अध्यापकोसे बिना पूछे निमंत्रण नहीं स्वीकार करना चाहिए, यह लड़के जानते थे, फिर भी किसीका आधिपत्य न माननेका उनका पुराना सस्कार उन्हे बाध्य किया करता था। एक दिन चार-पॉच लड़कोने छिपकर एक कुलकके यहाँ जाना तय किया। संयोगसे नीना उसी रास्ते कामसे लौटी आ रही थी; लड़कोंने उसे भी अपने साथ ले लिया।

निमत्रणका स्थान वास्तवमें क्रान्ति-विरोधी, सोवियत-विरोधी विचार-वालोके इकट्ठे होनेका अड्डा था। शहरमे ऐसे अड्डोका पता लगा लेना गे० पे० ऊ० के लिए आसान था। इसलिए ये केन्द्र गॉवोमे बनाये गये थे।

इसी केन्द्रसे एक बार ट्रैक्टर-कारखानेके बिजली-घरको ध्वस करनेका प्रस्ताव पास किया गया था, पर कई कारणोसे वह कार्यान्वित न हो सका। इस केन्द्रका सबध सोवियत-विरोधी विदेशियोसे भी था। कुलकोके लिए बाह्य सपर्कका वही एक-मात्र जरिया रह गया था और उन्हींके जरिये वे 'दुर्भिक्ष' के जमानेमे मददकी भी आशा रखते थे।

जिस दिन वेजप्रिजोर्नी निमन्त्रित किये गये थे, उस दिन दो अँग्रेज भी वहाँ आ जुटे थे। उनके साथ एककी स्त्री भी थी। अँग्रेजोके प्रति रूसी जनताकी स्वाभाविक चिढके कारण ये अपनेको 'अमेरिकन' कहा करते थे। कुलकोंने उनका परिचय देते हुए कहा—

"ये ही वे दयालु सज्जन हैं जिन्होने रूसी लोगोको दुर्भिक्षके समय

भूखे मर जानेसे बचाया है। इन्होंने ही हम लोगोंकी सहायताके लिए अमेरिकासे जहाजके जहाज अन्न भर कर मँगाया था। इन्हे ही वर्तमान रूसका त्राता, हमारा त्राता, तुम लोग अपना उद्धारकर्त्ता..."

नीना और उसके साथके एक और लड़केने कुलकको आगे नहीं बोलने दिया। इन दोनोंने उस 'अमेरिकन जोडे'को पहचान लिया था। नीनाको अब तक पूरा विश्वास हो गया था कि ये वे ही लोग थे जिन्होंने बिना किसी ज़रूरतके ट्रामके पीछेसे खीचकर उसे पीटा था। उसका खून गुस्सेके मारे गरम होता आ रहा था। उसने कहा—"ये आपके त्राता भले ही हो सकते हैं, पर हमारे जैसे उद्धारकर्ता हैं उसपर थू..."

"तुमने इन्हे नहीं समझा, बेटी!" कुलकने टोका।

"मै तुम्हारी बेटी नहीं, ख़बरदार!"

"फिर क्या हम दुश्मन है?" अमेरिकन औरतने टूटी फूटी रूसीमे कहा। "हॉ चुड़ैल!" नीना क्रोधमे आ कहती गई—"तू दुश्मन है। मै तेरे चेहरेपर थूकना चाहती थी पर अब देखती हूँ तू इसके भी योग्य नही।"

वह एक लडकेके साथ उठकर चली गई। कुलकने उसे पागल करार दिया। विदेशियोंने इसका समर्थन किया। वोदकाके जोशमे कई बेजप्रिजोर्नियोंने भी हुंकार भरी।

दूसरे लड़कोंने उस सभाकी खबर मिलनेपर कुलकोंका व्यंग-चित्र बनाकर अपने काम करनेके स्थानपर टॉग दिया। इसमे कुलकोंको गधेके रूपमे दिखाया गया था। एक तरफसे ट्राम आ रही थी और कुलक—"हेको, हेको..." कर उसे डराना चाहते थे और कह रहे थे—"इधर नहीं, इधर नहीं!" ट्राम उधर ही बढती जा रही थी।

९

ट्राम-लाइन तीन महीनेके भीतर ही बनकर तैयार हो गई। बिजलीके

खभोपरकी फॅटिंगका काम अधिकतर विद्यार्थियोने ही किया था । इस कलामे वे इसी अर्सेमे मिस्त्रियोसे भी अधिक दक्ष बन गये थे। जिन खंभोपर कारीगरोको सीढीद्वारा चढ़नेकी आवश्यकता होती, लडके यो ही चढ जाया करते । अपनेको खतरेमे डाल कर किया जानेवाला सार काम विद्यार्थियोने ही हॅसते खेलते पूरा किया था ।

लाइनके उद्घाटनका एक दिन निश्चित किया गया । उसके उपलक्षमे स्कूल खूब सजाया गया । बिजलीद्वारा सजावटकी बहार खूब बढाई गई। छोटे छोटे कमरोमे भी बीस बीस बल्ब लगाये गये। मेज-कुरसीकी तो बात ही अलग रही, चारपाई तकमे उन्होने बल्ब लगाये, यहॉ तक कि स्कूलकी एक बिल्ली तकके गलेमे उन्होने बिजलीकी बत्ती लटका दी ।

उद्घाटनके एक दिन पहले सब आवश्यक बातोकी जॉच भी कर ली गई । बिजलीका करट गभीर स्वरमे—'भन्—न्—न्—न्—न्—' करता हुआ पास करने लगा। सबसे पहली ट्राम शहरकी ओरसे स्कूल तक लानेका भार नीनाने अपने ऊपर लिया था। उस दिन सारी रात स्कूलका कोई भी लडका खुशीके मारे नहीं सो सका। नीनाको तो अक्षरशः झपकी तक नहीं लगी । वह बार बार अपने सिरहानेकी बत्ती जला घडी देखा करती और प्रत्येक बार उसे आश्चर्य होता कि रात उतनी लम्बी क्यो हो रही है। एक बार उसने जान-बूझकर घडीके कॉटे तेज कर दिये, उसके मनकी गतिके अनुसार वे बहुत सुस्त चल रहे थे ।

सुबह हुई । रातमें स्नो नही गिरी थी, इसलिए ट्राम-लाइन साफ करनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी । एक दिन पहलेका स्नो जम कर सख्त हो गया था। नीना अपनी संगिनीके साथ उसीपर शहरकी ओर दौड चली । वह यह भूल गई कि शहर ले जानेके लिए उस दिन एक मोटरकी व्यवस्था की गई थी। रास्तेमे वह कहती जा रही थी—
"बस, आज ही यह अन्तिम बार शहर पैदल जाना है । वहॉ एक बार

बिजलीके घोड़ेपर सवार हुई कि फिर उसपरसे कभी नहीं उतरूँगी। देखना तुम, मैं ट्राम कितनी तेज चला सकती हूँ।"

उसी तेज़ीकी धुनमें वह दौड़ती दौड़ती शहर पहुँची। ट्राम खूब सजाई गई थी। पीछे एक रेडिओ और सामने लाऊड-स्पीकर भी फिट कर दिया गया था। ट्रामकी घरघराहटमें नीनाका मधुर कंठ-स्वर नहीं सुना जा सकता था, इसलिए उसके गाने ग्रामोफोन रेकर्डपर उतार लिये गये थे और उसके ट्राम चलाते समय रेडियोसे उसी गानेके सुनाये जानेकी व्यवस्था की गई थी।

उस ट्रामको घेरकर उतने सबेरे भी शहरके बहुतसे आदमी इकट्ठे हो गये थे। नीना ज्यों ही ड्राइवरकी जगह आ कर खडी हुई उसके साथी कंडक्टरके साथ उसका फोटो ले लिया गया। फिल्मवाले भी उसकी तसवीर लेते जा रहे थे। लाल पलटनका एक जत्था उसके पास ही बैंड बजा रहा था। उन्हींके संचालकने एक बार जोरोंसे चिल्लाकर कहा—"...हुर्रा...तवारिशी..."

लोगोंने इसे दुहराया। टेक्निक विजयके संबंधमें नारे लगाये जाने लगे। अभी वे हवामें गूँज ही रहे थे कि कंडक्टरने सीटी बजाई। बड़ी देरसे नीना उसकी प्रतीक्षामें थी। उसके मनमें पहलेसे ही ट्रामकी घंटी टुन...टुन.. कर रही थी। अब उसने वास्तवमें टुनटुनाया। सब लोगोंका ध्यान उसके छोटे हाथोंकी ओर था। उन्हीं हाथोंसे थोडी खड़खड़ाहट हुई और ट्राम चल पड़ी। भीड़ पीछे—'हुर्रा...' चिल्लाती रही।

रेडियोमें नीनाका प्रिय गान सुनाया जा रहा था। वह स्वयं भी गाती जा रही थी। ट्रामकी रफ्तार उसने तेज की...पन्द्रह...बीस.. पच्चीस... तीस...पैंतीस किलोमीटरकी रफ्तार की। अब भी उसे संतोष नहीं था। कंडक्टर भी साथ ही झूमती चिल्लाकर कह रही थी—"और भी तेज! और भी तेज..."

ट्राम अपनी रफ्तारकी आखिरी सीमापर पहुँचा दी गई। नीना अपनी

संगिनीकी ओर देखती और हँसती। अपने भीतरके आनन्दकी गुदगुदी उनके सम्हाले नहीं सम्हल रही थी।

रास्ता एक स्थानपर अँग्रेजी अक्षर S के आकारमे घूमकर जाता था। वहाँ पहुँचनेपर ट्रामने थोड़ा झटका दिया। दोनो लड़कियाँ तलमलाने लगीं।

"नशेमे भी ऐसी मस्ती किसीने न देखी होगी!" नीनाने कहा।

टेढा रास्ता पार होनेको ही था कि लाइनपर बहुतसे लकडीके सिलपट दिखाई दिये। नजदीक पहुँचनेपर नीनाने भी देखा। भयसे उसके रोंगटे खड़े हो आये। ब्रेक लगाना असम्भव था। जोरोका टक्कर लगा। गाडीके सब काँच टूट गये। नीना रास्तेके किनारे फिंक गई। अचेत। कंडक्टर भी बेहोश। ट्रामकी घिरनी अलग हो गई थी। रेडियो चूर चूर।

झाडीके भीतरसे दो-तीन आदमी खिलखिलाकर हँसे और वहाँसे चलते बने। निस्तब्ध।

१०

सौभाग्यवश दुर्घटना-स्थल स्कूलसे अधिक दूर नहीं था। विद्यार्थी बड़ी ही उत्सुकतापूर्वक नीनाके ट्राम लानेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नियत समयके बहुत पहलेसे ही वे रास्तेकी ओर टकटकी लगाये थे। जब निश्चित समय पर भी ट्राम न पहुँची तो वे अधीर होने लगे। उन्हे अक्षरशः छटपटी मालूम पडने लगी।

एक शिक्षककी अनुमति मिलते ही उनमेंसे कई दौड़ पड़े। घटना-स्थलपर पहुँचने पर पहले तो वे अवाक् हो रहे पर लाइनके आसपास सिल-पटोको देख कर सब समझ गये। जो लड़के कुलकोके यहाँ निमन्त्रित किये गये थे उनमेंसे कई सुबहसे ही लापता हो गये थे। सब लोग खुशीमे मस्त थे। इसलिए किसीने उनकी खोज नहीं की थी।

नीना और उसकी संगिनीको टॉग कर लड़के स्कूल ले आये। थोड़ी देरमे वे दोनो ही होशमे आई—उन्हे चोट अधिक नही लगी थी। नीनाने होशमे आते ही पहला प्रश्न किया—"और ट्राम ?"

"वह आ रही है।" उसे उत्तर मिला।

लाइन साफ करके और जल्दीमे जो कुछ मरम्मत की जा सकती थी करके ट्रामको लडके ले आये। उसीको मञ्च बना वहॉपर एक सभा की गई। कारखाने और नगर-सोवियतके भी प्रतिनिधि स्कूलके लड़कोको बधाई देने आये थे। नगर-पार्टी कमिटीके मन्त्री और इलाकेके सेना-नायक भी उपस्थित थे। एक एक कर सबके व्याख्यान हुए। पार्टीके मन्त्रीने अपने व्याख्यानमे कहा—"सब प्रकारकी पूॅजियोमे आदमी ही सबसे अधिक क़ीमती है। सोवियत सरकार और बोल्शेविक पार्टीने हमे आदमीकी कदर करना सिखाया है। हमने यह सीखा है, इसका प्रमाण आपका स्कूल है। पर हम लोगोका सीखना अभी पर्याप्त नहीं हुआ है। अभी हमारे यहॉ पुराने पूॅजीवादी समाजके अवशेष बचे हैं जिनसे बहुतेरे आदमियोको छुटकारा पाना मुश्किल हो रहा है। हमे उन्हे भी आदमी बनाना होगा।

"बोर्जुआ समाजमे मनुष्यकी कीमतकी अपेक्षा कोयले जैसी साधारण वस्तुओकी भी अधिक कीमत समझी जाती है। वहॉके बडेसे बड़े समाज-हितैषी लोक-सेवक अधिकसे अधिक करते हैं तो अभागे दूसरोके लिए सूखी रोटीका एक टुकड़ा फेंक देते हैं, देशोद्धारके इच्छुक लेखक दो ऑसू बहा दिया करते हैं और यही बहुत हुआ मान अपना कर्तव्य पूरा हुआ समझने लगते हैं, अपनेको बधाईका पात्र मानने लगते हैं।

"हमारे यहॉ यह परिपाटी नहीं। समाज-विरोधी हानिकारक प्रवृत्ति, जिसे आप गुंडापन ही क्यो न कहे,—इसके खिलाफ इस प्रकारकी संगठित दृढ लड़ाई, विरोधी और हानिकारक प्रवृत्तिको जड-मूलसे उखाड़ फेकनेकी चेष्टा आप सिवा अपने यहॉके और कहीं नही पायेंगे।

"हमारा ट्राम-लाइन निकालनेका काम कितना भी सामान्य क्यो न हो, उसके द्वारा हमारा बहुत बडा प्रयोग सफल हुआ है। इसके द्वारा आपने टेक्निक सीखा, आपकी कार्य-क्षमता बढी,—यह तो हुआ ही, साथ ही इस थोडेसे समयमे समाज-विरोधी दुष्ट प्रवृत्तिसे हटाकर जिन लोगोको समाजोपयोगी काममे लगा दिया गया है, जिन्हे सोवियत् नागरिक बना दिया गया है, जो आज किसी भी सभ्य समाजमे सर ऊँचाकर चल सकते हैं—क्या उन लोगोके इस सुधार-कार्यकी महत्ता नापी जा सकती है?

"हमारा प्रयोग सफल हुआ। लेकिन ट्राम उलट गई। तवारिश नीनाको चोट आई। किसके कसूरसे? टेक्निकके? कदापि नहीं। बहकाये गये, अपना हित नहीं समझनेवाले, अपनेको नष्ट करनेकी इच्छा रखनेवाले आदमियोके कारण यह बाधा आई। हमारा आगेका काम है कि हम उन्हे भी आदमी बनायें जिससे हमारा प्रयोग पूर्णतया सफल हुआ कहा जा सके। साथियो, आजके सारे रूसकी ऑखे आपके इन्ही कार्योंकी ओर है,—आपका यह प्रयोग मनुष्य-इतिहासमे अद्वितीय है।"

विद्यार्थियोके भी व्याख्यान हुए। उसमे उन्होने उन्नतिका सारा श्रेय स्कूलके शिक्षको, ट्रैक्टर-कारखानेके मजदूरो और सोवियत नेताओको दिया। इलाकेके सेनापतिने उसे गलत बतलाया और श्रेय विद्यार्थियोको देते हुए कहा—"भूतपूर्व अभागे बेजप्रिजोर्नी और अब सोवियतके 'रईस' जिन्दाबाद।"

यह नारा बहुत देर तक गूँजता रहा।

नये जीवनकी ओर

१

बेजप्रिजोर्नी (टूअर) अब वास्तवमे ही रईसोका जीवन व्यतीत करने लग गये थे। ट्राम-लाइनके सिलसिलेमे ही उनमेसे बहुतेरे इजी-नियर बन गये थे और उनके कामोकी उपयोगिताके अनुसार उन्हे पारिश्रमिक भी बहुत अधिक मिलता था। जमा करके रखना उनकी प्रकृतिके विरुद्ध था। खर्च करना भी उन्होने बडे ही सभ्य ढंगसे सीखा था।

अपने लिए उन्होने सिनेमा और नाटक-घर बनवाये थे और अक्सर वे ख्यातिप्राप्त गान-वाद्य-नृत्य-विशारदोको निमन्त्रित किया करते। खाने-पीने, पहनने-ओढने, रहने-सहनेके सिलसिलेमे उन्होने कोई कमी नहीं रख छोडी थी। उनकी शानका अन्दाज़ा केवल इस बातसे लगाया जा सकता है कि उनके भोजनकी तो बात ही दूर रही जलपानके समय भी नौबत बजा करती अथवा कंसर्ट (अनेक वाद्य यन्त्रोका साथ साथ बजाया जाना) हुआ करता था।

पर ये थे सोवियतके रईस। रहन-सहनका दर्जा बहुत ऊँचा चढा लेने-पर भी वे आराम-तलब नहीं बने थे। आराम उनके लिए प्रकृति-विरुद्ध बात थी। काम करनेका उत्साह अब भी भीतर उमडा करता था। ट्राम-लाइनके सिलसिलेमे उसके बाहर निकलनेका एक मौका मिला था,

उन्हें अपने भीतर छिपी शक्तियोको प्रकाशमें लाने और उनका विकास कर पानेका एक सुयोग मिला था। पर इतनेसे ही उन लोगोको सन्तोष नहीं था ; ट्राम लाइन 'ऐडवेन्चर'को वे बहुत ही मामूली गिनने लगे थे और उसे बडे पैमानेमे सामूहिक रूपसे लिए जानेवाले सामाजिक 'ऐडवेन्चर' की भूमिका-मात्र मानते थे।

इतिहासका अध्ययन मुश्किलसे मुश्किल काम सरपर लेनेके लिए उन्हे उत्सुक बनाता जाता था। उसीसे उन्हे यह भी पता चला था कि कई शताब्दियोसे लोग ह्वाइट-सी और बाल्टिक सागरको नहरद्वारा मिलानेकी बात सोच रहे थे पर वह किसीसे भी संभव नही हो सकी। उन दिनोंके जारने इसके लिए हजार प्रयत्न किये पर नहर तैयार करनेमे वे सफल नहीं हो सके थे। काम करनेकी परिस्थिति इतनी भयकर थी कि लोग उस कामको असभव समझ छोड़ बैठे थे। बेजप्रिजोर्नी रईसोको यह काम अपने उपयुक्त जँचा।

इतिहासके ही अध्ययनने उन्हें यह भी सिखलाया था कि यदि रूसके पश्चिमोत्तर कोनेपर यह नहर तैयार हो जाय तो इससे उसके आसपासके प्रान्तोंकी आर्थिक परिस्थितिमे बहुत अधिक सुधार हो जायगा, वहाँकी जनता बहुत बडी संख्यामें सुखी बन जायगी, साथ ही बडी बात यह होगी कि समाजवादी मातृभूमिकी रक्षाके समय वह इतनी उपयोगी साबित होगी कि उसकी महत्ताका अदाज लगाना आसान काम नहीं। सोवियत मातृ-भूमिको आर्थिक और सैनिक दोनो ही दृष्टिसे मजबूत बनानेमे इस नहरके तैयार करनेके समान उस समय दूसरा कोई बडा महत्त्वका काम नहीं था।

उन्होने इस सबधमे पहले आपसमे चर्चा की, फिर शिक्षकोकी राय ली। उन्हे उस नहरका 'ऐडवेंचर' पसद आया। इसमें सोवियत-निवासियोंकी अपनी मातृभूमिके प्रति सबसे बड़ी सेवा तो थी ही, साथ ही इसके बनानेमें बहादुरी, साहस और तत्परताकी परीक्षा थी। यह काम ऐतिहासिक महत्त्व रखता था।

विचार धीरे धीरे धुनमे परिणत हुआ। विद्यार्थी अपने एक-से 'रईसी' जीवनसे ऊबते जा रहे थे। उन्होंने सोवियत सरकारके सामने अपना प्रस्ताव रखा, उसने उसे पास किया, उन्हे बधाई दी और सब प्रकारकी सहूलियते कर देनेका वादा किया।

अब स्कूलमे सिर्फ एक ही चर्चा चलती—हम ऐतिहासिक नहर तैयार करेंगे। इतिहासमे जहाँ आज तक मनुष्य सफल न हुआ उसी ह्वाइट-सी और बाल्टिक सागरको मिलानेवाली नहर तैयार कर दिखला देंगे। अवश्य।

कितने ही लड़के तो अपने स्वप्नमे अभीसे ही उस नहरमे गोते लगाने लग गये थे।

२

विद्यार्थियोके स्कूलसे विदा होनेके एक दिन पहले बहुत बडा सह-भोज दिया गया। शहर और ट्रैक्टर-फैक्टरीके भी बहुत-से आमंत्रित अतिथि इकट्ठे हुए थे। स्कूल और रास्तोकी सजावट बहुत कुछ उन दिनोकी याद दिलाती थी जब वीरोको युद्ध-क्षेत्रमे भेजनेके पहले विदाईके उपलक्षमे उत्सव मनाया जाता था। इसका महत्त्व युद्ध-क्षेत्रके लिए प्रस्थान करनेसे कम नहीं था। इसे वे वास्तवमे ही श्रमकी दुनियाका सबसे बडा मोर्चा गिनते थे।

सह-भोजके ही समय तुमुल करतल-ध्वनिके बीच खारकोव नगर-सोवियतके प्रधानने ऐलान किया कि नई ट्राम-लाइनका नाम 'नये जीवनकी ओर' रहेगा।

स्कूलके प्रधान शिक्षकने अपने व्याख्यानके सिलसिलेमे कहा—

".. ये विद्यार्थी आज हमारे स्कूलके स्नातक बन रहे हैं, इस उपलक्षमे हमे इजाज़त दीजिए कि हम इनकी सफलताके लिए आप सबकी ओरसे इन्हे बधाई दे।"

उन्होंने विद्यार्थियोको अन्तिम उपदेशके रूपमे कहा—" अब आप हमारे स्कूलके स्नातक हुए। यहाँ आपने जीवनका नया पथ अपनाया है, फिर भी वास्तविक जीवन आरंभ करनेकी यह पहली ही सीढ़ी है। वास्तविक कार्य-क्षेत्रमें ही आदमियोकी असल शिक्षा होती है। बाधाओका सामना तथा उन्हे विजय करनेके ही सिलसिलेमें आदमी सीखता है। आप यह भी याद रखे कि वही वास्तविक मनुष्य है जो बाधाओसे डरता नहीं, देह नहीं चुराता बल्कि बहादुरीके साथ उनका सामना करता है, उन्हे दूर भगाता है।

" आपका बहादुर जीवन बाधाओसे ही आरंभ हुआ है, इसीलिए आपकी सेनाके सामने 'अजेय' कुछ भी नहीं। शायद यह शब्द ही आपके कोषमें नहीं। आपकी जो शक्ति व्यर्थ और हानिकारक रूपमें नष्ट हो रही थी उसका रुख स्कूलने फेरकर उपयोगी और लाभदायक कामोंकी ओर लगा दिया है। यहींपर आपके स्कूलकी शिक्षा समाप्त होती है। इसमे आप उत्तीर्ण हुए।

" अब नये जीवनकी ओर आगे, और भी आगे, फिरसे आगे, हमेशा आगे बढ़ते जाइए।"

" जीवनका नया पथ चिरजीवी हो।"

इकट्ठे लोग एक-स्वरसे चिल्ला उठे।

३

हम लोग उन्हे स्टेशन पहुँचाने गये। मास्को-एक्सप्रेसके खुलनेका समय हो आया था। विदा होनेवाले विद्यार्थी स्कूलमे रह जानेवालोसे गले गले मिल विदाई ले रहे थे।

हठात् एक गद्देदार डब्बेपर मेरी नज़र पड़ी। वान्का अपने नये नीले सूटमें खिड़कीसे मुँह निकाल अपने बहुत दिनोसे परिचित तवारिश स्लाविन्स्कीसे हाथ मिलाकर विदा ले रहा था। वान्का इस समय एलेक्ट्रिकल

इंजीनिअरकी हैसियत रखता था। मुझे उसका कीवसे आते समयका औज़ार रखनेके संकीर्ण थैलेमे छिप कर आना याद आ गया।

यह क्या वही वान्का था?

"कौन-सा जीवन अच्छा है?" मैंने उससे पूछना चाहा पर याद आया, वे तो उसके पूर्व जन्मकी बाते हैं, अब उसे याद थोड़े ही होंगी।

उसीके बगलमे नीना बैठी थी। अपनी आडम्बररहित साधारण सुन्दर पोशाकमे ही वह किसी भी पैरिसीयन सौन्दर्यको मात कर सकती थी। कई दिन पहले ही उसने तान्या और मुझसे वादा ले लिया था कि अन्तिम विदाई हम उसीसे लेगे।

गार्डकी सीटी बजने जा रही थी। हम दोनो उसके सामने जा खड़े हुए। मेरी ओर देख हठात् वह मेरे गलेसे लिपट गई। अपना सर मेरे कोटके कालरोमे छिपाती हुई उसने एक हाथसे मुझे मनी-बेग देना चाहा।

वह कीव स्टेशनपर गायब हुआ मेरा पुराना बेग था।

"स्मृतिस्वरूप वह तुम्हारे ही पास रहे।" कहते हुए मैंने उसके दोनो गालोपर थपकियाँ दीं।

वह तान्याकी छातीमे अपना मुँह छिपा लेनेकी चेष्टा करती हुई सिसकने लग गई थी। गाड़ी खुली।

तान्या अपना रूमाल कभी नीनाको दिखलाकर विदा देती और कभी उससे अपनी आँखे पोछने लगती।

तृतीय खंड

वोल्गा

१

प्रभात! वोल्गाका मुस्कराता हुआ प्रभात! उस पारकी रेती सुनहरी बनती जा रही थी, इधरकी जेटी भी उसी रगमे रगती जा रही थी। नदीके दूरपरका बडा घुमाव सुन्दरियोकी भौंहोकी काटका था। नदीके बीचकी रेती ऑखोंकी पुतलीका आकार बना रही थी। किनारेके वृक्षोकी साया उन्हे बरोनियोकी तरह ढॅक रखनेका प्रयत्न कर रही थी। जल-पक्षियोका एक भारी जत्था हम लोगोके सरपर उड़ता हुआ वहीं उसी रेतपर जा उतरा।

जेटीपर इकट्ठे युवा-युवती अपनेको अब अधिक न रोक सके। नावके मस्तूलसे उन्होने गुन बॉधा। पायोनियर (सोवियत यूनियनमे सातसे बारह वर्षके बच्चोंकी एक संस्था है जिनके सदस्योको 'पायोनियर' कहा जाता है) का एक झुंड नावमे जा बैठा। कौमसोमौल (युवा कम्युनिस्ट) गुन खींचकर ले जाने लगे। थोडी दूर जाकर उन्होने वोल्गाके ही सुरमे शुरू किया......

"प ऊख नियम............
एशियो राजिक
एशियो रास............"
"है" हुमचा। हैं यो। लगा दे जोर। हैं...यो।
और एक वार। हैं...यो। वाह भय्या। हैं...यो।"

वे धाराके प्रतिकूल नाव खीचकर ले चले। नदीके घुमावके पास अनुकूल हवा मिलनेपर सबके सब नावपर चढ गये। पालपर नौका आगे बढने लगी। रेतीके पास जहाजसे उनका मेल हुआ। नाव पीछे बॉध दी गई। उसपरके आदमी जहाजपर चढ आये।

२

कादिबोवका गॉव वोल्गाके ठीक किनारे बसा है। नदीमे चलनेवाले बडे बडे स्टीमर यहॉ ठहरा करते हैं। जहाज-घाट पुरानी पनचक्कीके पास बनाया गया है। जहाज जिस दिन वहॉ आकर लगता है उस दिन उस स्थानपर एक छोटा-सा बाजार लग जाता है, सारे गॉवमे हलचल मची रहती है, नहीं तो और दिनो वहॉ हमेशा ही सन्नाटा छाया रहता है।

लोग सदियोसे उस सन्नाटेके अभ्यस्त हो चुके थे। शायद बूढे उसे ही पसद किया करते थे। जाडा गर्मी कोई भी मौसम हो लोग सूर्यास्त होते न होते अपने घरोमे घुस जाते। गॉवके कुत्ते भी वर्षोंसे किसी अपरिचितको घरसे ॲधेरेमे न निकलता देख अपने भूँकनेका अभ्यास भूल जाते थे।

हठात् कलखोज (सामूहिक रूपसे खेती) स्थापित होने लगे। कादिबोवकामे उसका आफिस पनचक्कीवाले मकानमे खोला गया। वहॉ सुबह शाम युवा युवतियोकी भीड़ लगने लगी। पहले दो-चार किताबे वहॉकी आफिसवाली मेज़पर रखी रहती। स्तालिनग्रादका रहनेवाला कोई युवक उसे गॉव वालोको पढकर सुनाया करता। बड़ी रात तक हा हा ही ही मची रहती। बूढे रोज ही उन किताबोके खत्म होनेके दिनका इन्तजार किया करते। वे खत्म भी न होने पाये कि अखबार आने लगे। धीरे धीरे सारा आफिस लाल कपडोसे सज गया, आलमारियॉ आ लगीं सबकी सब किताबोसे भरी हुई।

बूढोको भय होने लगा—दुनिया अवश्य ही पगली हो जायगी!

आदमीका इतना छोटा-सा तो माथा, भला वह इतनी किताबोंका बोझ सह सकता है ! युवक जब किसी विषयपर बहस-मुबाहिसा करते, बूढे ऊबने लगते और प्रत्येक मुहूर्त ही हाथापाई,—यहॉ तककी लाठी सोटा चलनेकी प्रतीक्षा करने लग जाते और कहते—"आदमियोंके बीच इतना अधिक झगड़ा करानेवाली चीज किताबे ही हैं।"

पर वे लाचार होते जा रहे थे। लड़के तो पहलेसे ही उनके कहनेमे नहीं थे, इधर लड़कियॉ भी कुछ नहीं सुनतीं और सयानी औरतें तक बिल्कुल आजाद हो गई थी। अब मारनेकी कौन कहे, उनपर उॅगली उठाना तक पुरुषोके लिए मुश्किल था। यह पुरानी पीढीवालोके लिए सबसे बड़े दुखकी बात थी।

सतोष उन्हे केवल खेतीके हाल-चालसे रहता, वह भी इधर हालमे आकर। पहले वह भी उनके असतोषका बहुत बडा कारण था। कितने लोगोने जिस दिनसे 'ट्रैक्टर' देखा था उन्हे तरह तरहके दुःस्वप्न आने लगे थे। सुबह उठकर वे एक दूसरेसे पूछते—"कहो, कल रातको क्या स्वप्न देखा ?"

"गॉवमे फूॅ फूॅ करता हुआ कोई दैत्य आया है। हम बूढे तो घरोंमे जा छिपे, लेकिन हमारे लडके-बच्चे उस दैत्यके कधेपर चढ़ बैठे। एकने उसकी नाक पकड़ ली। हॉ, सच कहता हूॅ, चटसे नाक ही तो पकड ली!—और फिर मजा तो यह कि जिधर वह दैत्यको घुमाता दैत्य फूॅ–फूॅ–हीं–हीं–चीं–चीं करता हुआ दौडता! फिर वह दैत्य मिट्टी हाथमे ले लेता, इवानवासिलीवीच, सच कहता हूॅ, दस दस मनका चक्का हाथमे उठाता और मलने लगता,—नीचे अनाज गिरने लगता! मेरी इच्छा होती कि जाकर बटोर लाऊॅ लेकिन डर, डर.."

"चुप चुप! मैंने भी ऐसा ही कुछ सपनेमे देखा है, पर यदि उसे दैत्य कहूॅ तो आज रातको फिर सपनेमे आयेगा। देखो, अब गॉवपर क्या बीतती है ?"

जब खेत काटनेके दिन आये तब उन लोगोने भी देखा कि गाँवपर बुरी नहीं बीती। अपने सपनेके दैत्यको भी वे भाग्यका दैत्य कहने लगे। बूढ़ेसे बूढे लोगोंने भी उस प्रकारकी उपज कभी न देखी थी। अब बनिये महाजनका भी कुछ चुकता नहीं करना था। सारा गाँव ही सालों खाने-पीने, पहरने-ओढ़नेसे खुशहाल रहता, इसीलिए नई पुश्तवालोकी 'उच्छृंखलता' तक बडी नरमीसे बूढे बर्दाश्त करने लगे थे।

हालमें लड़कोंने गाँवमे एक सिनेमा-घर भी कलखोजके तरफ़से खोल रखा था। बूढे भी वहाँ अकसर पहुँचते। एक फिल्ममें पुरानी-नई पुश्तका अन्तर दिखलाया गया था। पुरानी पुश्तकी कथा 'गोर्की' की 'शेषाश' शीर्षक कहानीसे ली गई थी। बूढेसे बच्चे तक ज़ार-शाहीके जमानेकी हालत,—दरिद्रता, अत्याचार, नृशंसताका नृत्य देखकर सिहर उठते थे। एक बूढ़ेने घर लौटते समय कहा—"उस औरतके उस प्रकार पीटे जानेकी घटना तो हमारे अपने गाँवकी है। उस समय कोई राहगीर उस औरतको बचानेके लिए बीचमें कूद पडा और उसे भी गाँववालेने अधमरा कर छोड़ा।"

उस राहगीरको गाँववालोने फिर कभी देखा नहीं, फिर भी उसकी स्मृति वे भूल नहीं पाये थे। कितने बूढोको उसका चेहरा भी थोडा-बहुत याद था, इसलिए फिल्ममे राहगीरका पार्ट करनेवालेको देखकर कहते —"नहीं, यह वह राहगीर नहीं पर घटना ठीक हमारे ही गाँवकी है।"

नई पुश्तके थोड़े भी पढे लिखे युवा-युवती उस राहगीरका पता लगा चुके थे। बड़ी उत्सुकतासे वे उसके अपने गाँवमे आनेकी बाट जोह रहे थे।

३

जहाज जेटीपर आ लगा। एक लम्बे क़द, ओछे पैंट, ऊँचे बूट-लापरवाह लिबासवाले वोल्गाके माँझियोकी शक्लके व्यक्तिकी ओर इशारा

करते हुए मेरे पास खड़े युवकने कहा—" हमारे देदुश्का गोर्की ! " (गोर्की दादा)

देदुश्काका हाथ पकड़ कर एक छोटी पायोनियर लड़की उन्हें खींचे लिए आ रही थी। दोनों ही खिलखिला कर हँस रहे थे। जहाजसे जेटीपर आनेके लिए तख्ता डाला गया था। वह बहुत ही पतला था। लड़की स्वयं निधड़क उसपर आने लगी और पीछे देदुश्काका आना देखने लगी। वह समझती थी कि आर बूढ़ोंकी तरह वे भी इतने सकीर्ण तख्तेपर पाँव रखनेमें डरेंगे। पर उसकी धारणा निर्मूल निकली। तख्ता पार करनेपर दोनो फिरसे हँसने लगे।

" यह हम लोगोंका कलखोज आफिस है " पुरानी पनचक्कीकी ओर उँगली दिखलाते हुए उसने कहा। " लेकिन यह आप पीछे देखिएगा, पहले चलिए आपको सारा गाँव घुमा लाऊँ। "

थोड़ी दूर जाने पर उसने एक पक्के मकानकी ओर दिखलाते हुए कहा—" यह है हम लोगोंका ग्राम सोवियत। "

" यह जमींदार बरानिकोवका घर...। " एक बूढ़ेने लड़कीको टोकते हुए कहा।

" नहीं, यह हमेशासे ग्राम-सोवियत है "—लड़कीने झुँझलाकर कहा—" ये बूढ़े मालूम नहीं क्या क्या बरानिकोव फरानिकोव फजूल फजूल बका करते हैं। "

" हाँ, यह पहले गाँवके जमींदारका मकान था "—बूढ़ेने फिर टोका।

" कहती हूँ, कि नहीं ! " लड़कीने तीव्र शब्दोंमे कहा—" मैं हमेशासे ही देख रही हूँ, यह घर ग्राम-सोवियतका है। "

" तेरी उम्र क्या है ? " देदुश्काने पूछा।

" आठ वर्ष। "

" तेरा कहना ठीक है, तूने इसे हमेशासे ग्राम-सोवियत देखा है। " देदुश्काने मुस्कराते हुए उसे डिग्री दी।

लड़की विजयीकी भाँति अकड़ कर चलने लगी । वही देदुश्काका हाथ पकड़े आगे आगे चल रही थी। उन दोनोंके पीछे सारा गाँव जुलूसके रूपमें चला आ रहा था । गाँव दिखानेका सारा भार उस लड़कीने अपने ऊपर लिया था। कुछ दूर आगे जाकर उसने अपना स्कूल, स्कूलका पुस्तकालय, भोजनालय आदि दिखलाते हुए सर्दीके दिनोंमें कसरत करनेका घर दिखाकर कहा—"यह हम लोगोंने खुद अपने हाथों बनाया है।"

"बड़ी बहादुर हो!" देदुश्काने उसकी पीठ ठोंकते हुए कहा—"तेरा नाम?"

"नोरा।"

वह अपना नाम बतलाते बतलाते बच्चोंके लिए लगे खंभेपर जिमनास्टिक करने लगी। दूसरे बच्चोंने भी अपनी कसरतें दिखलाईं। उन्होंने अपने देदुश्कासे भी कसरत कराई। वहाँसे चलते चलते नोराने कहा—"आप तो देदुश्का बड़े अच्छे हैं, हमारे साथ खेलते हैं, पर गाँवके बूढ़े तो हम लोगोंके खेलनेपर बड़े नाराज होते हैं। अच्छी बात तो यह है, कि उनकी कोई सुनता नहीं। वे गुस्सेमें आकर अपने सर और दाढ़ीके बाल भले ही नोच डालें, हमें उसकी परवा नहीं।"

सारी जमात हँसने लगी। नोराको पहले आश्चर्य हुआ। फिर उसने सोचा, बूढ़ोंका अपनी दाढ़ी नोचनेका दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है! शायद इसीकी कल्पना कर लोग हँस रहे हैं। वह भी हँसने लगी।

स्कूलके हातेके बाहर होते समय वह कुछ सोचमें पड़ गई। देदुश्काका हाथ खींचते हुए उसने कहा—"लेकिन एक चीज तो आपको दिखलाना भूल ही गई।"

"वह कौन-सी?"

"हलो! हलो! यह हमारे यहाँ दो तरहकी है। एकसे हम लोग कीव, मास्को, खारकोव आदिका गाना सुना करते हैं और दूसरेसे उन

लोगोंसे बातचीत करते हैं।"

"तूने भी कभी इसपर बात की है?"

"यहाँ गाँवमे तो बात कर लेती हूँ लेकिन कीव, मास्को जितनी दूर पर तो मेरा कोई परिचित ही नहीं, बात किससे करूँगी? अब आपको पहचान गई, घर लौट कर आप मुझे 'हलो, हलो नोरा!' पुकारिएगा, फिर देखिएगा मैं कैसी बात करती हूँ।"

सब लोग सिनेमा-घरके पास आ पहुँचे। उसे दिखलानेमे नोराको कुछ सकोच हो रहा था। उसने देदुश्कासे शिकायत की।

"अभी हालमे हम लोगोने एक फिल्ममे एक स्त्रीको मार खाते देखा था। एक किसान उसे पीट रहा था। उस दिनसे गाँवके बूढे कहने लगे हैं कि वह तुम्हारी दादी थी। ये बूढ़े बहुत झूठ बोलते हैं। हमारे बाबूजी ही जब उतने बूढ़े हैं तब मेरी दादी तो और बूढी रही होगी। पिटने-वाली स्त्री तो मेरी माँकी उम्रकी थी। हमारे गाँवके बूढे हमे चिढानेके लिए उसे मेरी दादी कहते हैं। मुझे उनपर इतना गुस्सा आता है कि क्या कहूँ। और जो मुजीक * उस स्त्रीको पीट रहा था उसपर भी ऐसा गुस्सा आ रहा था कि मेरी दादी हो या न हो, चाहे जिसे भी वह वैसे पीटता हो उस मुज़ीकका मैं सर तोड दूँ।"

वह दाँत पीसने लगी। वैसे ही गुस्सेमें उसने कहा—"जो राहगीर उस स्त्रीको बचाने आया था उसे उस पाजी मुजीकने पीटा। ऐसे तो ये मुजीक पाजी होते हैं। वे हमारे गाँवके बूढोसे कम पाजी नहीं। सब बूढे पाजी.. .." गोर्कीके चेहरेपर दृष्टि जानेके कारण वह एकाएक रुक गई। गभीर होकर उसने पूछा—"लेकिन, तुम तो देदुश्का तनिक भी पाजी नहीं!"

---

* किसानोको चिढ़ानेके लिए मूर्ख जाहिलके अर्थमे रूसी भाषामें 'मुज़ीक' शब्द प्रयुक्त होता है।

देदुश्का खिलखिला कर हँस पड़े ।

" और इधरकी सड़कका नाम गोर्कीकी सड़क है । यही सामनेका घर मेरा घर है । "

४

कलखोजके मकानमे सहभोजकी व्यवस्था की गई थी । पनचक्की-वाले हॉल और बरामदेमें मेजें सजा कर रखी गई थीं । खानेके लिए सबको काठके चम्मच दिये गये थे । भोजन उस गाँवकी विशेषताओंका ख्याल रखते हुए तैयार किया गया था ।

किसी विख्यात 'बड़े आदमी' का आगमन हुआ है, यह बात किसीके भी मनमें नहीं थी । लोग स्वच्छन्दतापूर्वक खूब हल्ला मचाते हुए भोजन कर रहे थे । गोर्की भी लड़कोंसे घिरे हुए एक कुरसीपर बैठे थे । व्याख्यानके बदले लोग उनकी कहानियाँ सुन रहे थे । कितने लोगोंने अपने हाथमे रोटी ले ली थी और उनके चारो तरफ जा खडे हुए थे । वे रोटी खाते और उनकी कथा सुनते ।

जिन्हें अपना परिचय देना आवश्यक प्रतीत हो रहा था वे बिना किसी आडम्बरके सीधे देदुश्काके पास पहुँचते और अपना नाम कहते । देदुश्का हँसते हुए उनके साथ हाथ मिलाते । मैं कुछ हिचक रहा था, शायद नोरा इसे समझ रही थी । उसने हमे दिखलाते हुए कहा—" और ये हैं साश्का, देदुश्का । " मेरे बारेमे उसे जो कुछ मालूम था वह कह गई । रूसी ज़बानकी दो-एक भूलें बतलाना भी न भूली ।

दूसरी ओर बहुत जल्दी मेजें हटाई जा रही थी । तुरन्त ही हारमोनिका लिए एक युवक वहाँ बीचमे आ 'याब्लच्की' (एक विशेष प्रकारके रूसी नृत्यका संगीत) बजाने लगा । गाँवके प्रवीण नाचनेवाले एक एक कर अपना कौशल दिखलाने लगे । चारो तरफ घेर कर खड़े हुए लोग नाचकी ही तालमे तालियाँ पीटते पर विश्रामके समय हारमोनिका

बजानेवाला बारबार कहता—" अभी ठीक जम नहीं रहा है। "

कीव, यारोस्लाव, काजान, स्तालिनग्रादके ढगके नाच दिखाये गये, फिर भी, बजानेवाला असंतुष्ट ही रहा। गोर्की उसके चेहरेका असन्तोष बहुत देरसे परखते आ रहे थे। नाच ख़त्म होनेके पहले बड़े उत्साहसे वे एकाएक खड़े हो गये। झट अपना लम्बा ओवरकोट फेंक दिया और बाजेवालेसे बोले—" बजाओ तो अब ' निझनी ' के ढंगका!"

बजानेवाला हँसता हुआ उठ खड़ा हुआ।

उसके मेलोडी (स्वर) आरम्भ करते न करते गोर्कीके पाँव ठीक तालमे पड़ने लगे थे। चारो तरफ खड़े लोग ज़ोरोंसे खिलखिला कर तालियाँ पीट रहे थे।

बाजेवालेने स्वय हार मानी—" निझनीके सामने सब मात ! "

उस मंडलीमे गोर्की जिस प्रकार कूद रहे थे उससे वे पकी मूँछोके रहते भी लोगोंको छः वर्षके बच्चेसे जान पड़ते थे।

५

क्रान्तिके बादके कादिब्रोवकासे गोर्की जितनी आशा रखते थे उससे कहीं अधिक उन्होने देखा।

उनकी ऑखे बड़ी तेज़ थीं। वोल्गा प्रदेशकी कोई भी बारीकी उनसे छिपी नहीं रह सकी थी। यहॉके निवासियोंकी ओर एक बार यदि ध्यानसे निहारते तो मालूम पडता, उन लोगोके हृदयकी तह तक पहुॅच गये हो। कहा करते—" ये ही हमारी मातृभूमिके नये आदमी,—रूसको हरी भरी क्यारियोंमे परिणत करनेवाले वास्तविक नये ससारकी सृष्टि करनेवाले हैं। इनका ही जीवन सार्थक है। ये ही संसारके लिए सबसे अधिक उपयोगी हैं। "

दूसरी बार कहते—" यह हम लोगोका वोल्गा प्रदेश कितना बदल गया है! जिन लोगोके चेहरेपर जवानीमे ही झुर्रियॉ आ जाया करतीं थीं

वे अब अधखिले फूलसे दीखते हैं। दरिद्रताके कारण दुर्भिक्षकी तबाहीसे जिनके पेट और पीठ एक हुए दीखते, जो झुककर चला करते, वे ही आज हृष्ट-पुष्ट और सीना तानकर चल रहे हैं। जिनके भीतर क्रोध-ईर्षाकी आग जला करती, भयसे जिनकी आँखें फूल गई-सी दीखतीं, जो हर घड़ी ध्वंस करनेकी सोचा करते, आज वे ही एक साथ हँसते, खेलते, नाचते, गाते हैं।

"प्यार करना इन्होंने सीखा है। जानते हो, किसान धरतीको अपनी सुन्दरी स्त्रीके समान प्यार करता है, बशर्ते कि वह ज़मीन उसकी अपनी हो। आज वे धरतीको सजाते हैं, और भी अधिक सुन्दर उसे देखना चाहते हैं! क्यो? वह उनकी अपनी स्त्री है, वे उसे प्यार करते हैं।

"मेरी भी आज इस वोल्गा प्रदेशमे गानेकी इच्छा होती है जिसमे इसका हृदय खिल उठे, यह और भी अधिक अपना धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य हमारे सामने खोलकर रख दे।"

देदुश्का गोर्कीकी बडी बड़ी मूँछोके नीचे छिपे हुए होठ फडकने लगे।

६

"तुम्हारी उम्रमे हम लोग दूसरे ही प्रकारकी यात्रा किया करते थे। आजकल तो उसका रिवाज ही उठता जा रहा है"। उनका मतलब आवारोंकी तरह यात्रा करनेसे था। थोड़ा ठहर कर उन्होंने स्वयं ही आगे कहना शुरू किया।—"शायद अब उसकी आवश्यकता भी नहीं। वे यात्राये कडुए अनुभवोके लिए हुआ करती थीं। उनमे मानवी सहृदयतासे तो बहुत ही कम,—दुत्कारसे ही अधिकतर पाला पड़ता था। कडवे अनुभवोकी तहकी सचाई जानना भी अच्छा था, किन्तु उसमे बहुत अधिक शक्ति खर्च हो जाती है,—शायद खर्चके अनुपातमे लाभ नहीं होता।

कभी कभी ऐसे कड़वे अनुभव भी होते हैं जो सिर्फ निर्दयतापूर्वक कलेजेपर आघात पहुँचाते हैं और सिखलाते कुछ भी नहीं। ऐसे अनुभव मनुष्यको ह्रासकी ओर ले जाते हैं। उनसे बाज आना ही अच्छा होता है।"

"कितने अनुभव ऐसे होते हैं जिन्हें भूल जानेकी आवश्यकता पडती है। यदि उन्हे न भूला जाय तो मनको वे इतना जहरीला बनाते जाते हैं कि आदमी सारे मनुष्य-समाजको भीतरसे घृणा करने लग जाता है। आदमियोंके समाजके समान गदी चीज उसे और कुछ दिखलाई ही नहीं पडती। उसकी मानवता और भी अधिक अंधकारमे छिपने लगती है। मनुष्य-जीवनके उस बीभत्स अध्यायका ज्ञान भी सबके लिए आवश्यक नहीं।"

मुझसे वे कभी कभी मेरा भ्रमण वृत्तात सुना करते। एक बार बीचमे ही उन्होने टोका—"तुमने अपना नाम क्या बतलाया था?"

"साश्का।"

"ठीक कहा, साश्का! मुझे तुम्हारे नामके साथ साथ कभी कभी चाश्काकी याद आ जाती है। बहुत दिन पहले आवारागर्दीके जमानेमे उससे मुलाकात हुई थी। उससे मैंने बहुत कुछ सीखा था। शायद उसीने पहले पहल सिखलाया था कि कलाका ज्ञान समाजमे पिसे जानेवाले लोगोका हृदय चीरकर देखनेपर होता है। लेकिन, इस अनुभवके लिए मुझे बहुत कुछ झेलना पड़ा था।"

"आज हमारे यहाँकी हालत बदल गई है। मुझे भी इस तबादलेको ठीक ठीक पहचान पानेमे कभी कभी कठिनाई होती है। समाजको बदलनेकी चेष्टामे मनुष्य भी उसके साथ बदलते जा रहे हैं। यह परिवर्तन अच्छेकी ओर ले जायगा। इसने अभीसे ही मनुष्य-समाजके पूँजीवादी शोषण और आमानुषिक अत्याचारके हलसे कुरेदे हृदयपर मलहम लगाना शुरू किया है। उसका घाव बहुत कुछ अच्छा हो चला है।

"लेकिन इस नई दुनियाको अमेरिकन यात्रियोकी तरह चद दिनोमे

हवाई जहाज या डाक-गाड़ीसे अध्ययन नहीं किया जा सकता। इसके भली भाँति अध्ययनके लिए मैं अपनी जवानीवाली पैदल यात्राको ही अधिक उपयोगी मानूँगा। तुम्हें मालूम है—मेरी यात्राओंकी चालपर ही रूसमे माल और पैसेंजर मिली पार्सल-गाड़ियोको लोग माक्सिम कहा करते हैं। मैंने जहाज भी ठीक उसी माल-गाड़ीकी तरहका चुना है। रेलसे दूसरे दिन ही हम लोग 'निझनी' पहुँच जा सकते हैं, पर इस जहाज-द्वारा सफर करनेपर हमे वहाँ पहुँचनेमे दो सप्ताह लगेंगे।"

७

स्तालिनग्राद पहुँचते पहुँचते वोल्गाका दृश्य बदलता जा रहा था। संध्या हो रही थी। दूरके मकान सूर्यकी अंतिम किरणोमे स्नान कर रहे थे। नदी-किनारेके पेड घनी छायामे मुँह छिपाते जाते थे। उनके बीचसे कहीं कहींपर ठडी गीली झाड़ियोकी गध आ रही थी। वहाँ मछलियाँ उचकती हुई दिखलाई देतीं थीं।

हमारे नीचे वोल्गाका रंग आकाशके लाल बादलोंके कारण बहते हुए ख़ूनके समान दीख रहा था। अभी अभी लाल सेनाके एक अफ़सर जिस प्रकारकी घटनाओका ज़िक्र कर रहे थे उनके अनुसार वोल्गाका रंग लाल होना ही अधिक मुनासिब था। उन्होने स्तालिनग्रादके जर्मन आक्रमणकारियोंसे रक्षा किये जानेकी बात बतलाई थी। उसी लडाईमें उनके अपने तीन सगे भाई मारे गये थे पर इसका उन्हे जरा दुःख नहीं था। वे कह रहे थे—"मुझे उनका दुःख नहीं, क्यों कि मैं जानता हूँ कि उन्होंने अपनी जान क्यों दी। वे स्वयं भी इससे वाकिफ़ थे। यह जीवनके नामपर मृत्यु है। उस मृत्युका मतलब जीवनको प्यार करना है।"

जिस भावसे प्रेरित हो उनके मुँहसे ये बाते निकल रही थी उसके द्वारा वोल्गा किनारेके लोगोका एक विशेष प्रकारका स्वभाव प्रदर्शित होता था। ठेठ भाषामे इस स्वभावको 'चिमड़ा' कहना अधिक उपयुक्त

होगा। उनके चेहरेका हाव-भाव गभीर था। नसे तनीं थीं। पहली झलकमे ही चेहरा यह प्रदर्शित किया करता कि एक बार जो भला या बुरा यह व्यक्ति ठान लेगा उसे बिना पूरा किये दम नहीं लेगा। बाधाये उसके भीतर हिचकके बदले उत्साह लाया करेंगीं।

उनके जहाजसे चले जानेपर देदुश्काने कहा—"पिजारेकोको तुम्हे खूब ध्यानसे देखना चाहिए था। उनके चेहरेपर वोल्गा किनारेके बहादुरोकी सिफते हैं। अपने विषयमें ऐसे व्यक्ति कुछ नहीं कहा करते। इन्होने खुद स्तालिनग्रादकी रक्षामे किस प्रकारका भाग लिया यह अपने मुँह तुम्हे नहीं बतलाया। जर्मन लोगोकी मशीनगनके मुँहका आग उगलना रोकनेके लिए ये ही सबसे पहले कूदे थे। कितनी ही गोलियाँ अगल-बगलसे सनसनाती निकल गईं, कई अगर हाथ-पॉवमें लगी भी तो उसकी परवा नहीं। पर इस प्रकारकी बहादुरी कर दिखलानेके बाद अपने मुँहसे उसकी चर्चा तक नहीं!

"ये मॉ वोल्गाकी मूक आराधना करनेवाले हैं। क्रान्तिने इन्हे जाग्रत किया है। उन्होने तुम्हे ठीक ही कहा है। और मनुष्योकी भाँति इनके भीतर भी जीवनका मोह मृत्युसे प्रबल है। लेकिन उनका 'मरना' भी सोवियत भूमिके नये जीवनके मोहका द्योतक है। ऐसे लोग अपने प्राण देनेको 'त्याग' नही कहा करते, समाजके लिए अपनेको मिटा देनेका अहंकार नहीं किया करते, बल्कि समाजके जीवनमे ही अपना जीवन देखा करते है। यही है इनके भीतरकी छिपी हुई शक्ति जिसके आधारपर वोल्गा,—हमारे विशाल वोल्गा प्रदेशकी रक्षाके लिए ये तैयार रहा करते हैं।

"क्या इन्हे भी कोई मार सकता है? ये ईस्पातसे भी सख्त धातुके बने होते हैं। इन्हे ही अमर कहा जाता है।"

जर्मन वोल्गा

१

हम लोग वोल्गा जर्मन प्रजातन्त्रसे गुजर रहे थे। नदीके दोनो किनारो-पर जितनी दूर तक देख पाते केवल अंगूरकी झाडियॉ दिखलाई देतीं। चारो तरफ सरपट मैदान। पहाडोकी चहारदीवारी क्षितिजसे मिली रहनेके कारण दिखलाई नहीं देती। कितनीहि अगूरकी झाडियॉ नदीके इतने किनारे रहतीं कि उन्हे जहाजपरसे ही मामूली डडेसे छुआ जा सकता था। उन झाड़ियोंमे रसीले अंगूरके गुच्छे लदे थे।

प्राकृतिक दृश्य इस प्रदेशका चाहे उतना सुन्दर भले ही न हो पर इतना अवश्य ही स्पष्ट हो जाता था कि वह प्रान्त समृद्धिशाली अवश्य होगा। जमीनका रंग हॅसता हुआ काले रगका था। अंगूरोकी क्यारियॉ बड़े कायदे और सिलसिलेसे लगी थीं। झाडियोको ऊपर उठानेके लिए टट्टियॉ लगाई गई थी।

इस प्रदेशके लोगोकी चाल-ढाल बोल-चाल रूसके और प्रदेशोसे कुछ भिन्न है। पहली झलकमे ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जर्मन संस्कृतिकी छाप उनपर बहुत गहरी है। कितने लोगोकी घरेलू भाषा जर्मन थी और कितने रूसी भाषा ही जर्मन ढंग पर बोलते थे। गोर्की दादाको उनकी भाषा समझनेमे अकसर दिक्कत हुआ करती थी।

इस प्रदेशमे भी कलखोज स्थापित हो चुके थे, पर इनसे असन्तोष

प्रकट करनेवाले भी हमे यहींपर मिले। ऐसे लोगोमे एक केलर परिवार था। रहन-सहन उनकी रूसी लोगोसे बिलकुल ही मिलती-जुलती थी, फिर भी चाल-ढालमे उस प्रकारका अभिमान भरा रहता जो रूसी लोगोके लिए स्वाभाविक नही होता। उनकी घरेलू भाषा जर्मन थी जिसे वे बडे अभिमानके साथ बोला करते थे। रूसी जानते थे किन्तु उसे जान-बूझ कर तोड़ मरोड कर बोला करते और प्रत्येक बार यह प्रदर्शित करते कि उन्हे इस जबानके बोलनेमे थोडी शरम आ रही है।

उस गॉवमे हम लोगोका जहाज दो दिनो तक टिका रहा। गोर्की दादाको कुछ ज़रूरी कागजोका उत्तर देना था, इसलिए वे तो जहाजही-मे रहे लेकिन मैंने सारा समय गॉवमे बिताया और रातको केलर-परिवारके यहॉ ठहरा।

मैं सोने जा रहा था कि बूढे केलर स्वयं लालटेन हाथमे लिये मेरे सोनेकी व्यवस्था जॉच करनेके बहाने कमरेमे आए और मेरी चार-पाई पर बैठ गए। उनके बाल सफेद हो चले थे। आगेके दॉत भी दो-तीन टूट गए थे जिस वजहसे बोलते समय हवा उनके बीचसे निकल जाया करती और शब्दोका उच्चारण कुछ अजीब ढगका सुनाई पडता। ऑखोसे चालाकी प्रकट हुआ करती और सारा चेहरा प्रदर्शित किया करता कि उन्हे लोगोपर आधिपत्य रखनेकी आदत है।

मेरे विदेशी होने और रूसी राजनीतिसे कोई सम्पर्क न रहनेके कारण वे मेरी ओरसे निर्भीक हो गए थे, मेरे ऊपर विश्वास भी करने लग गए थे और इसीलिए खुलकर बातें भी करना चाहते थे। उन्होने अपना जिक्र करते करते रूसकी तत्कालीन परिस्थितिपर एक अच्छा खासा व्याख्यान ही दे डाला—"रूसकी बाते बाहरी दुनिया नही जानती। यहॉकी हालत छिपा कर रक्खी जाती है। जिस दिन उसका असली परदा खुलेगा सारी दुनिया यहॉ वालोको थू-थू करने लगेगी। (यह बात उन्होने रूसी ढगसे कही, इससे पता लगता है कि वे कई पुश्तसे रूसमे आकर

बस गये हैं।) जिन लोगोंको यहाँ स्वच्छन्द रूपसे घूमनेकी इजाज़त मिलती है वे पहलेसे ही समाजवादका चश्मा पहने रहते हैं और दूसरे धनी लोग यदि सैर करने आते हैं तो उनके पीछे गे० पे० ऊ० लगी रहती है। आप विदेशी हैं और यहाँकी अवस्था अध्ययन करनेके ख़्यालसे आये हैं, मैं आशा करता हूँ कि आप अभी सोवियत सरकारके चकमेमें न आये होंगे। आये भी क्यों ? आपकी शिक्षा जर्मनीमें जो हुई है।

"अब यही देखिए, जहाँतक साधारण जनताका सवाल है उनके बारेमें हमें कोई भी शिकायत नहीं। रूसी लोग बहुत पहलेसे दरिद्र रहते आये हैं। यहाँपर दुर्भिक्ष अकसर ही हुआ करते थे; इसलिए ये लोग उसके इतने अधिक अभ्यस्त हो गये हैं कि वह खराब हालत इन्हें नहीं खटक सकती। इनके मुँहमें सड़े हुए गुड़का मामूली-सा टुकड़ा डालकर इन्हें मुग्ध किया जा सकता है। सोवियत सरकारने वही किया भी है, इसीलिए इन लोगोंमें तो कोई असन्तोष नहीं है।

" पर अब लीजिए मध्यम वर्गकी बात। उन्हें तो सोवियत सरकारने उजाड़ दिया।—बिलकुल ही उजाड़ दिया। ये लोग किरानीका काम करते हैं, इनका ओहदा मजदूरोंकी अपेक्षा नीचा है, इन्हें मज़दूरोंकी अपेक्षा आधी रोटी और दूसरे उपभोगकी चीज़ें दी जाती हैं और अधिकार भी इन्हें बहुत कम प्राप्त हैं। मजदूर ही उनके आदर्श बनाकर रख दिये गये हैं। सारे मध्यमवर्गको मजदूर वर्गमें परिणत कर देना सोवियत सरकारने अपना ध्येय बना लिया है। इस वर्गहीको वे मिटा देना चाहते हैं। पर यह है रूसका मध्यम वर्ग। इसे आप हमारे जर्मन लोगोंकी दृष्टिसे निम्न श्रेणी ही गिनिए और इनकी भी बात छोड़िए।

" अब लीजिए हम लोगोंकी बातें। हमारे दादाके जमानेसे हमारे खेतमें पाँच सौ मजदूर काम करते आये हैं। हम लोगोंके रहन-सहन, पहनावे ओढ़ावेका दर्जा बहुत ऊँचा रहता चला आया है। हम ही लोग समाजके अगुआ, उसके गौरवस्वरूप, रहते चले आये हैं। हम ही

लोगोंके मानसिक विकासपर सारे मनुष्य-समाजका मानसिक विकास निर्भर करता है। पर सोवियत सरकार तो हम लोगोंका नामोनिशान तक मिटा देना चाहती है। यह सारे मनुष्य-समाज,—सारी मानवी सभ्यताके लिए कितना बड़ा आघात होगा, क्या आपने इसका कुछ अनुमान किया है?

"सोवियत सरकारके कायम होनेके बादसे आप हमारी दरिद्रताका अंदाजा लगाएँ। पहले हम पन्द्रह-बीस विद्यार्थियोंको मास्कोमे उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए छात्र-वृत्ति दिया करते थे, अब अपनी निजकी दो लड़कियोका खर्च चलाना भी मुश्किल हो रहा है।"

यहाँपर मैंने उन्हे टोका—"क्यों? स्कूलका सारा खर्च तो सोवियत सरकार देती है। पढनेवालोंमे अधिकाशके लिए ही तो, सुना करता हूँ, कि छात्रवृत्ति है।"

"यह है साधारण श्रेणीवालोंके लिए। हम लोगोंको तो उक्त श्रेणीवाले घृणा करते हैं, नीच समझते हैं, इसलिए उनके साथ तो हमारे बाल बच्चोंकी नही बन सकती। साथ ही, साधारण श्रेणीवालोंके समान सूखी रोटी खाकर तो हमारे बच्चे ज़िन्दे नहीं रह सकते। मेरी लडकियोंका स्कूलसे सिर्फ पढ़ने-भरका नाता है। यदि हम इससे भी उन्हे रोक सकते तो अच्छा होता, पर यह संभव नहीं। अब देखिए, उन्हीं दो लडकियोंके पीछे हम लोगोंका दादाके जमानेसे इकट्ठा किया हुआ धन,—सोना,—असली सोना खर्च हो गया।

"आगे कैसे चलेगा? नया तो कोई आमदनीका जरिया हमे मिलता नहीं। खेत सब सामूहिक रूपसे जोते-बोये जाते हैं, उसमे हमे सिर्फ अपना निजकी मेहनतका हिस्सा मिल सकता है। यदि अंगूर बेचकर उसकी तिजारत करना चाहें तो उसके लिए यहाँ सख्त सज़ा है। उसे यहाँ 'जूआ' नाम दिया जाता है। सोवियत अर्थशास्त्रियोंकी दृष्टिमे सब व्यापारी जुआरी होते हैं। उन्हे वे जड़-मूलसे उखाड़ फेकते हैं।

" साधारण लोगोंकी तरह हम सूखी रोटी खाकर जी नही सकते, अच्छी रोटीके लिए चिल्लाते हैं तो सोवियत सरकार हमारे ऊपर हँसती है। हम अपने जर्मनीके भाइयोंको अपनी दुरवस्थाके बारेमे लिख भेजते हैं। अभी आपने अख़बारोंमे भी देखा होगा कि सारे जर्मनी और आस्ट्रियामे हम लोगोंके लिए आन्दोलन चलाया जा रहा है। 'संकटमे पड़े भाई' के नामसे यह आन्दोलन वहाँ चल रहा है। हिटलर, उसकी नात्सी पार्टी, पोप और सब तरहके गिर्जोंके पादरी इसमे भाग ले रहे हैं। उन्होंने हम लोगोंके लिये धन भी इकट्ठा किया है। यहाँ कितने लोगोंके पास कपड़े, रोटियोंके पार्सल और मनिऑर्डरसे रुपये भी भेजे गये हैं। पर सोवियत सरकारको यह नागवार गुजर रहा है। वे हमसे यह आशा रखते हैं कि जर्मनीसे अपने भाइयोंद्वारा भेजा गया धन हम लौटा दें। कितनेही बेवकूफोंने इसे वास्तवमे ही लौटा दिया है। हमे समझाया जा रहा है कि हिटलर और पोप दोनो हमारे शत्रु हैं। कहिए भला, मै इसे किस प्रकार मान सकता हूँ? इस दुर्दिनमे वे हमारे सहायक हुए और हम उन्हे ठुकरा दें, बोल्शेविक हमे ऐसी कृतघ्नता सिखला रहे है।

" आप मेरा ही उदाहरण लीजिए। सर्दीका मौसम आ रहा है पर ओवरकोट नहीं। तीन सालसे लोगोंने सारे जर्मन वोल्गा प्रान्तमे सिर्फ किसानोंद्वारा पहना जानेवाला ओवरकोट देखा है। फरके बढ़िया ओवर-कोटकी सूरत भी देखनेको नहीं मिली। आप हमारे दुखोंकी थाह नही लगा सकते।"

उन्होने एक दीर्घ साँस ली और साथ ही चौंक भी उठे। शायद अब उन्हे याद आया कि उन्होने अपना हृदय आवश्यकतासे अधिक खोलकर दिखला दिया है। वे इसे शायद बर्दाश्त नही कर पा रहे थे। इसका उन्हे थोड़ा अफसोस भी हुआ। मेरी ओरसे समर्थन या विरोध-सूचक कोई वाक्य न निकलता देख वे 'भली भाँति सोइए' कहकर वहाँसे चले आये।

" लेकिन यह भी कैसे कहा जाय ? शुरू शुरू तो हम लोगोने इतना मास खाया कि हमारे सारे इलाके-भरके लोगोका पेट दो हफ्ते तक खराब रहा । " एक तीसरे बूढे किसानने कहा ।

" और अब उसीको अच्छा करनेके लिए हम वर्षोंसे शाकाहारी बन गये हैं । " सबके सब हँस पड़े ।

" लेकिन कसूर किसका है ? " गोर्की दादाने उन्हे टोका ।

यह कसूर साबित करनेके लिए बहुत देर तक बहस चलती रही । वास्तविक मामला यह था कि जब कलखोज स्थापित किये जाने लगे तो गॉव-भरके घोड़े और मवेशियोको एक साथ मिलाकर उन्हे कलखोजकी सम्पत्ति बना दी गई । जिन धनी किसानोके पास अधिक घोड़े या मवेशी थे उन्हे उन जानवरोको सामूहिक सम्पत्ति बना देना अखरता था । उन्होने उन मवेशियोको कलखोजमे देनेकी अपेक्षा मारकर उनका मास खाना अधिक उपयुक्त समझा । दूसरे किसानोने भी उनकी देखादेखी की । नतीजा यह हुआ कि उस इलाकेके मवेशी लाखोकी संख्यामे मार डाले गये । लोगोने बदहजमी हो जानेपर भी उनका मास नहीं छोड़ा । दो हफ्तोके बाद उसीका यह परिणाम हुआ कि उस इलाके-भरमे मवेशियोकी संख्या बहुत कम हो गई और मासकी बड़ी तंगी पड़ने लगी । वह अवस्था कई वर्षों तक नही सुधारी जा सकी ।

किसान उसका कसूर ढूँढते ढूँढते धनी किसानोके सर उसका अपराध मढने लगे । बूढे केलरसे यह बात सही नहीं गई । उन्होने कहा—" यदि धनी किसानोका ही कहना सुनना था तो दूसरी बातोमे भी सुनते । उन्होने तो यह भी फैलाया था कि सबकी स्त्रियॉ सामूहिक सम्पत्ति बना दी जायॅगी, फिर उन्हे भी पीटपाटकर क्यो नहीं खा गये ? "

" उस वक्त बदहजमी हुई थी । " गोर्की दादाने मुस्कराते हुए उत्तर दिया । सब किसान खिलखिलाकर हॅस पडे । केलर यह साबित करनेकी चेष्टा करते रहे कि कसूर साधारण किसानोका ही था । गोर्की

दादा बतला रहे थे वह अपराध किसानोकी अविश्वासी प्रकृतिका था। किसी नई चीज़पर इन्हे जल्दी विश्वास नहीं होता कि वह उनके भलेके लिए है। इसपर केलर उनसे झगडते हुए कहने लगे—"लेकिन किसानोकी अपेक्षा तो मज़दूर कहीं ज्यादा अविश्वासी प्रकृतिके हुआ करते हैं। मैंने तो सुना है कि कितने ही मजदूर अब किसानोकी हड्डियोसे एक नये प्रकारका तेल निकालना चाहते हैं जिससे उनकी मशीने साधारण तेलोंकी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह चला करेगीं। कौन जाने यह भी कही सत्य न साबित हो जाय।"

किसानोका चेहरा गंभीर होता जा रहा था। वे चाहे केलरकी बातपर भले ही विश्वास न करते हो, पर इन बातोंने उन्हे सोचमे अवश्य ही डाल दिया था। गोर्की देर तक समझाते रहे कि किसानोके सबसे बडे मित्र मज़दूर ही हैं। वे किसानोके लिए आवश्यकता पडे तो अपनी खाल खीचकर भेट कर दे सकते हैं और कितनी ही बार उन्होने वास्तवमें वैसा किया भी है।

केलर निरुत्तर होते जाते थे। उनकी दृष्टि गोर्की दादाके चेहरेकी अपेक्षा उनके ओवरकोटपर अधिक थी। उन्होंने उसे दिखलाते हुए पूछा—"आप मजदूरोके इतने बडे पक्षपाती बने हैं क्योंकि आपके शरीरपर ऐसा सुन्दर विदेशी कोट है। किसानोको अपनी खाल खींचकर देनेकी बात तो दूर रही, मजदूर पहले अपना ओवरकोट ही तो उतार-कर दे दे।"

"हॉ, जाडेमे कोटोकी बडी कमी है, यदि वे वही हम सबके लिए भेजवा दे तो हम उन्हे अपना सच्चा दोस्त मानने लगेगे।" कई किसान एक साथ ही बोल उठे।

एक किसान गोर्कीकी ओर इशारा कर बोल उठा—"यह तो इन महाशयोसे होगा नहीं, जो बीतती है वह तो हम लोगोपर। इन्हे क्या है? जहाजपर दुनियाकी सैर किया करते हैं; मौज करते हैं।"

उसने धीरेसे गोर्की दादाके कानमे कहा—" हमारे लिए कोट अवश्य भेजवा दे। जाड़ेके मारे हमारे सारे घरके लोगोका चमड़ा क्या मास तक फटता जाता है और हड्डियॉ कॉपती रहती हैं।"

बाहर पानी बरसना शुरू हो गया था। उसकी बौछार उस मजलिस तक पहुँचने लगी थी। जहाजने भी पुक्की दे दी थी। केलरसे बिदा ले मैं ऊपर गोर्की दादाके केबिनकी खिडकी बद करने चला गया।

थोड़ी देरमे जब वे अपनी केबिनमे आये तो देखा उनके शरीरपर ओवरकोट नहीं था।

३

गोर्की दादाको किसानोकी वह मजलिस चेष्टा करनेपर भी नही भूल रही थी। उन्हे वहॉपर भारी आघात लगा था जिसकी वेदना उन्हे चैन नहीं लेने दे रही थी। कभी कभी उन किसानोपर उन्हे बडा क्रोध हो आता और वे कहने लगते—

' ये किसान वास्तवमे बड़े स्वार्थपर होते है। अपनी क्षुद्र-बुद्धि भुल नही पाते। सन्तोष तो उन्हे कभी होता ही नहीं। उन्हे सब कुछ एक साथ ही चाहिए। जारशाहीके जमानेसे अब वे अपनी तुलना नही करते। उस समय उन्हे चूँ करनेका भी अधिकार नहीं था। पर अब उन्हे यदि जरा सी चीजकी कमी हो जाती है तो वे राज्य-शक्तिके खिलाफ होने लगते हैं।

" ये बडे अदूरदर्शी हैं। देखते नहीं कि सोवियत सरकारने जिस वक्त राज्य-भार अपनाया, देशकी क्या अवस्था थी। पिछडा हुआ कला-कौशल, खेतीके पिछडे हुए साधन, उसपर भी महा समरकी तबाही, फिर गृह-युद्धकी बरबादी; सारे देशमे अशिक्षितोकी भरमार और सबके ऊपर किसानोका महा-स्वार्थपर संकुचित स्वभाव,—यहींसे तो सोवियत सरकारको आरंभ करना पड़ा था। देशकी खेती और शिल्प दोनोके लिए मशीनोकी आवश्यकता

थी। शत्रु चारो तरफसे घेरते आ रहे थे, उनका सामना करनेके लिए शिल्प-वृद्धिकी और भी अधिक आवश्यकता थी। इसके लिए यदि थोड़ा त्याग न दिखलाया जाता तो वे महान् कार्य कैसे पूरे होते? खाना-कपडा आदि-तकमे उसीके लिए तो कमी की गई। ये चीजे उन्हें ज़ारशाहीके जमानेसे अधिक मात्रामे तो आज भी मिल रही हैं, फिर भी उन्हे सतोष नहीं है। उन्हे सब एक साथ चाहिए। वे कहते हैं—'यह शिल्प, कलखोज और मशीन लेकर हम क्या करेंगे। हमे चाहिए ओवरकोट, पहननेके पूरे कपडे, खाने-पीनेकी चीजोकी प्रचुरता,—हम उसीसे संतुष्ट रहेंगे।' लेकिन ये समझते नहीं कि इसका क्या नतीजा होगा? करोड़ो नहीं, अरबोकी जो पूंजी बड़े कष्टसे सोवियत सरकारने शिल्प-वृद्धिके लिए इकट्ठी की थी उससे बहुत-सा खाना, बहुत-से कपड़े मिल जाते, पर नतीजा क्या हुआ होता? देशमें कोई मशीन बनानेवाला शिल्प नहीं रहता। सोवियत यूनियनको विदेशोपर निर्भर रहना पडता, विदेशी जब उसके ऊपर आक्रमण कर बैठते तो हथियारके अभावमे सोवियतको अपनी सत्ता ही मिटा देनी पडती। किसान इसे ही पसंद करते हो, यह बात भी नहीं है। यदि उनकी जमीन फिरसे जमींदारोको दी जाने लगे, तो वे इसे कभी बर्दाश्त नहीं कर पाएँगे। पर साथ ही उसकी रक्षाके लिए त्याग करनेमे भी आनाकानी करते हैं। यह नहीं समझते कि आज वे आधा पेट खाकर बिना ओवरकोटके भी स्वतंत्रताकी ज़िन्दगी बिता सकते हैं। इस हालतमे भी उनकी जमीन अपनी बनी रह सकती है। पर बिना मशीन तैयार किये वे स्वतंत्र नही रह सकते, ज़मीनपर उनका आधिपत्य नहीं रह सकता।

"ये बाते उन्हे क्यो कर समझाई जायँ?"

४

वे किसानोको पूरी बात नहीं समझा सके, इसके लिए कभी कभी अपने ऊपर भी खीझते, अपने आपको कोसनेतक लगते—

"लेखक दरिद्रता देखकर पानी-पानी हो जाते हैं; उनके लिए ऑसू बहा देना बड़ा आसान होता है। पर परिस्थिति तो ऑसू बहानेसे नहीं बचाई जा सकती।

"उस रोगी किसानका चेहरा बार बार मेरी ऑखोके सामने आ जाता है। उसने जो बाते कही, वे कानोमे अब भी गूँजा करती हैं। दरिद्रता है,—स्वीकार करता हूँ, पर उससे बचनेका उपाय? मैंने अपना कोट दे दिया। उससे क्या परिस्थिति सॅभल गई? मालूम नही, उस रोगीके समान और कितने ही रोगी समूचे सोवियत यूनियनमे पड़े हैं जिनके पास ओवरकोट नही। मैं उतने कोट कहॉसे लाऊँगा? सोवियत सरकार ही कहॉसे ला सकती है? उन्हे बिना ओवरकोट जाड़ेसे ठिठुरता हुआ देखना भी अब मुझसे बर्दाश्त नही होता। जारशाहीके ज़मानेमे बर्दाश्त कर पाता था पर अब तो ये इतने अपने हो गये हैं कि देखा नही जाता। कैसी दुर्बलता है!"

वे अपनी केबिनमे टहल रहे थे। अपनी दुर्बलताको हजार गालियाँ दे डालते पर वह छूटती दिखलाई नही देती। मुझसे वे कुछ खतोंका जवाब लिखवाना चाहते थे पर इस वक्त उसके लायक मिजाजकी गति नहीं थी। उत्तर देना ही होगा, सोचकर एक खत उन्होंने हाथमे लिया पर तुरत ही उसे मेजपर पटकते हुए कहने लगे—

"हॉ, खूब झूठ बोला करो। गोर्की बड़ा है,—न्यूयॉर्कके ऊलवर्थके मकानसे भी ऊँचा है, क्यो? मोटा है,—इस जहाजके पेट जितना मोटा है, क्यों? भारी है,—पहाड़के जितना भारी है; क्यो? मिथ्यावादी! —क्यो साश्का, ये हमे चिढानेके लिए तो ऐसा नहीं लिखते?"

"नहीं देदुश्का।" मैंने सर हिलाते हुए कहा।

"पर देखो न! ऊँचाईके मारे तो इस केबिनकी छतसे मै टकराता नहीं, मोटाईके मारे दरवाजेमे अटकता नही, मेरे बोझसे यह जहाज भी तो एक तरफ नही झुकता।" वे प्रत्येक बातको व्यवहारमे साबित करके दिखलाने लगे। उनका यह बच्चोंका-सा सरल व्यवहार देख मैं हॅसने लगा।

वे वास्तवमे गंभीर होते जा रहे थे। वे मेरी मेजके पास आ खड़े हुए। सर ऊँचा किये रहनेके कारण ललाटकी सिकुडन सरके बालोके पास इकट्ठी होने लगी थी। बड़ी बडी मूँछें और भी भयकर दीख रही थीं। उन्होने हुक्म देते हुए कहा—"सबको लिख दो कि गोर्की वैसा नहीं, वह मामूली-सा निझनीका रहनेवाला लेखक है।"

वे वास्तवमे किसानोको भलीभाँति न समझ सकनेके कारण अपनेको किसी परीक्षामे अनुत्तीर्ण हुए विद्यार्थी जैसा मान रहे थे। सोवियत सरकारको भी लिख देना चाहते थे कि उसने उनकी योग्यताके हिसाबसे बहुत अधिक सम्मान दिया है जिसके वे पात्र नहीं।

निझनी

१

लगभग तीन सप्ताहके बाद हम लोगोका जहाज घूमता-घामता निझनी नवगोरोद पहुँचा। यह शहर बहुत पहलेसे ही वोल्गा किनारे बसे शहरोंमें सबसे प्रमुख रहता चला आया है। मध्य युगमे जब रेल नहीं थी और उपयुक्त सडकोकी भी बहुत कमी थी तब एक प्रकारसे निझनी ही सारे रूसका व्यापारिक केंद्र था। यहाँके बाजारमें मंगोल, तातार, उजबेक, मुसलमान, पोल, यहूदी, उक्रैनियन, कारेलियन, सब तरहके दूकानदार अपने अपने रंगमे रँगे दूकानोंपर बैठे दिखलाई देते थे।

जारशाहीके उत्कर्ष-कालमे निझनीकी समृद्धि बढी थी। एक समय था जब यहाँके बडे बडे व्यापारी और शिल्पपर अधिकार रखनेवालेके फैशनके अनुसार मास्को अपना फैशन बदला करता था। साथ ही वोल्गा प्रान्तमे जितने बडे बडे लेखक और साहित्यिक हुए उनमेसे अधिकाशने अपना लेखक-जीवन यहीसे आरंभ किया।

सोवियत युगमे निझनीकी कुछ कम तरक्की नहीं हुई। मज़दूर राज्यने अपना सबसे पहला मोटर बनानेका कारखाना यहीं खोला। यहाँ कपडेके कारखाने भी बनाये गये। शहरकी जन-सख्या दिनोदिन बढती ही गई।

इन विशेषताओंके सिवा निझनीको पनपानेमे गोर्कीका भी बहुत बड़ा हाथ था। उन्होने अपना बचपन,—जिसे उन्होने अपनी कहानियों-

द्वारा अमर कर रक्खा है, यहीं बिताया था। उनका लेखक-जीवन भी यहींसे आरंभ हुआ था। कोरोलेंकोसे उन्होंने यहींपर अपनी कहानियोकी भाषा और तर्जके बारेमे शिक्षा ली थी। बचपनमे जो छाप इस शहरकी गोर्कीके मनपर पडी थी वह उत्तरोत्तर गहरी ही होती चली गई। वे कहते भी थे—"संसारके जिस किसी हिस्सेका मैं वर्णन क्यो न करूँ, मेरे सामने सबसे पहले वोल्गाका दृश्य नाच जाता है। जितने लोगोका चरित्र चित्रण करना चाहता हूँ या किया है, वे नये नहीं हैं, जॉच कर देखता हूँ तो स्पष्ट पता चलता है कि बचपनमे निझनीमे जिन लोगोको देखा था सर्वप्रथम वह चित्र उन्हीं लोगोका है। मेरे लिए संसारमे निझनीमे देखे हुए लोगोकी दूसरी आवृत्तिके सिवा और कोई नवीनता नहीं।"

गोर्कीने निझनीको प्यार किया था, घृणा भी की थी, उसे छोडकर निकल भागना भी चाहते थे, किन्तु वह उन्हें चारो तरफसे बार बार घेर लाता था।

इस शहरके प्रति उनके भीतर छिपा हुआ गहरा प्रेम था। गोर्कीके साथ इस शहरके वैसे घने सम्बन्ध रखनेके ही कारण जब उनके लेखक जीवनका चालीसवॉ वार्षिकोत्सव मनाया जाने लगा तब उस शहरका नाम सोवियत सरकारने 'गोर्की' रख दिया। सिर्फ शहर ही क्यो सारे प्रातका भी नाम गोर्की कर दिया गया।

सोवियत सरकारका यह काम अवश्य ही उपयुक्त था। सोवियत रूसके वर्तमान विकासमे गोर्कीका कितना बड़ा हाथ रहा है, इसका अन्दाजा लगाना आसान नहीं। वहॉ तरह तरहके विकास हुए थे। नये नये कल-कारखाने खड़े कर दिये गये थे। नई नई झीले खोद डाली गई, नदियोका बहाव पलट दिया गया, हवाई रास्ते निकाले गये, दिनपर दिन हजारो ही तरहके नये आविष्कार होने लगे जिनका महत्त्व वास्कोडिगामा या कोलंबसके आविष्कारोसे कम नहीं। सोवियत यूनियनकी

इस वृद्धिद्वारा वहाँके बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और वैज्ञानिकोंका अनेक दिनोंका स्वप्न पूरा हो रहा था। लेकिन इन सब अविष्कारोंसे भी बड़ा एक और आविष्कार हुआ जिसका महत्त्व सबसे अधिक था। इन आविष्कारोंके करनेवाले मनुष्यका ही पुनः निर्माण करनेका स्वप्न ससारके बहुतसे महान पुरुषोंने देखा है। गोर्कीने भी यह स्वप्न देखा, किन्तु उनकी विशेषता यह थी कि उनका स्वप्न कार्य-रूपमे परिणत हुआ।

गोर्की इस महान लक्ष्य-प्राप्तिका अनुभव कर रहे थे—किन्तु उसमें अपना भाग,—अपना हाथ बहुत तरहसे अस्वीकार करनेकी चेष्टा किया करते। उन्होंने समाजके साथ अपनेको इतना अधिक मिला दिया था कि एक क्षणके लिए भी अपनेको उससे अलग कर देखना उनके लिए बहुत सख्त साबित होता।

२

उन दिनों उनकी बड़ी झुँझलाई हुई मानसिक अवस्था थी। वे बार बार बंगलेके बरामदेमे बेचैनीसे टहला करते और किसी समस्याको हल करनेका प्रयत्न करते। उनके सामनेकी समस्या थी—

"किसानोंका स्वभाव आखिर इतना स्वार्थी क्यों होता है? मनुष्यकी स्वाभाविक प्रकृति तो वैसी नहीं होनी चाहिए। उन्हे विपरीत दिशाकी ओर ले जानेमें किस शक्तिका हाथ है? उससे उन्हे किस प्रकार बचाया जा सकता है?"

एक साथ ही उन्होंने तीन पुस्तकें लिखना आरंभ किया। अपनी समस्याकी तह तक न पहुँच सकनेपर वे झुँझलाकर कहते—

"मजदूरोंसे इतनी दूर रहना मेरी भूल है। वे ही हमारे गुरु हैं। उनके यहाँ जाना चाहिए।"

एक दिन शामको उन्होंने कपड़ेके कारखानेमे काम करनेवाले मजदूरों जैसे कपड़े पहने और घूमने निकले। उन्हे जाननेवालोंको भी उन्हे

पहली झलकमें पहचान लेना कठिन होता। उन्हे उसी प्रकारसे छिपकर मजदूरोंके अड्डे या शराब पीनेके अड्डोतक जानेका अभ्यास था। अपनी पुस्तकें लिखते समय उन्हे यह बडा आवश्यक मालूम पडता था।

शहरमे कारखानेके पास कई चाय-खाने थे। हम लोग जहॉ सबसे अधिक भीड थी वहॉ भीतर घुसे। धुएँसे सारा कमरा भरा हुआ था। मेजोपर चायके गिलासोकी अपेक्षा बियरसे भरे बडे बडे लोटोकी सख्या अधिक थी। मज़दूर छोटी छोटी टोलियोंमें बॅटे बातें कर रहे थे। अब उन्हे ऐसा अभ्यास हो गया था कि वे आपसमे गाली-गुफ्ता क्या, अधिक बियर पिये रहनेपर भी मुॅहसे कोई अभद्र शब्द नहीं निकालते थे।

हम लोगोके आसपास बैठे लोग ऋणकी चर्चा कर रहे थे। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाको शीघ्र समाप्त करनेके लिए सोवियत सरकारको कुछ अरब ऋणकी आवश्यकता थी। मजदूरोंके सामने इसकी मॉग आई थी। एक मजदूर कह रहा था—"इसमे क्या सोचना है,—मैं अपनी दो महीनेकी तनख्वाह दे दूँगा।"

उस मज़दूरके कपडे और लोगोसे भी अधिक फटे हुए थे। मजदूर काम करनेकी पोशाक बदलकर वहॉ आये थे। यह पोशाक उनके थिएटर जाने या समाजमे हिलने मिलनेकी थी। फिर भी वह बहुतसे छेदोसे भरी थी। उनके घरके वे ही सबसे सुन्दर कपडे थे जिन्हे वे शायद चार-पॉच वर्षोंसे सम्हालकर पहनते आ रहे थे।

"लेकिन तुम्हे तो कपडे खरीदने ही पडेंगे।" एक दूसरे मजदूरने टोका—"कितने सालसे तो चिथडे ही लादे चलते हो।"

"फिर भी चल ही जाता है!" थोडा मुसकराते हुए पहले मज़दूरने उत्तर दिया।

"दो महीनेकी तनखाह अगर दे दोगे तब तो यहॉ आकर खाने-पीनेके लिए तुम्हारे पास कुछ नहीं रह जायगा।"

"नहीं रहेगा,—मत रहे। उसके बिना भी चल जायगा। लेकिन

स्तालिनग्रादमे ट्रैक्टरका और चेल्याबिन्स्कमे मोटरका कारखाना तैयार किये बिना तो नहीं चलेगा। बिना ट्रैक्टरके तो हमे रोटीकी ही कमी हो जायगी, बिना मोटरके जापानी और जर्मन यहाँ पहुँचने लगेगे।"

दूसरी ओरके मज़दूर प्रतिद्वद्विताकी बाते कर रहे थे। हरेक मजदूर, चाहे उसकी अवस्था कितनी ही खराब क्यो न हो, अपनी एक महीनेकी मज़दूरी खुशी खुशी दे देगा। इसमे तनिक भी सन्देह नहीं था। उनके सामने प्रश्न था कि यह रकम वसूल हो जानेकी खबर मोटरके कारखाने और कपड़ेके कारखानेवाले मजदूरोमे कौन पहले सोवियत सरकारके पास भेजता है।

चायखानेसे निकलकर, गोर्कीने कहा—"ये कितनी शांतिसे बातें करते हैं! दो-चार महीने तक आधा पेट खाकर रह जाएँ इसकी इन्हे परवा नहीं, पर दो महीनेकी तनखाह सोवियत-रक्षाके लिए दे देंगे। ये जानते और महसूस करते हैं कि इनका त्याग किस लिए है और उसका क्या महत्त्व है! किसान इसे नहीं समझ पाते, पर उन्हे भी समझानेके लिए मजदूरोकी भाषाके सिवा और कोई दूसरी भाषा नहीं हो सकती।"

३

गोर्कीके इलाकेने ऋणकी रकम सबसे पहले पूरी की। सोवियत सरकार तथा और प्रान्तोके मज़दूरोके यहाँसे इसके लिए गोर्की दादाके पास बधाईके तार आने लगे। उन तारोको गोर्की दादा काँपते हुए हाथोसे खोलते और कहा करते—

"ये बधाईके तार नहीं,—लेखकोके ऊपर और भी अधिक भार लादे जा रहे हैं। अब समय आ गया है कि सोवियत लेखक अपनी जिम्मेदारी पूरी तरहसे महसूस करे। और देशोके लेखकोकी तरह इन्हे अब किसी परित्यक्ता स्त्रीकी जीवन-गाथा अथवा किसी धनी व्यक्तिकी औरतोके सबधमे 'ऐडवेन्चर' की कहानी लिखनेका अवकाश नहीं। यहाँके मज़दूरोके

जीवनके साथ ही साथ उनका मानसिक जीवन भी बहुत आगे और बडी तेज़ रफ्तारके साथ बढता जा रहा है। लेखकोंको उनके साथ प्रतिद्वंद्विता करनी पडती है। लेखकोंका काम आगे रहना है, उन्हे यह देखते रहना है कि वे कही उस समाजके द्वारा लादे गये भारमे पीछे तो नहीं पडते जा रहे हैं। लेखककी जिम्मेवारी बहुत बडी है। अगर यहॉकी सामाजिक प्रगतिके निरीक्षणमें वे एक बार चूक जाएँ,—एक बार उनकी भावुकता उन्हे चंचल बना देनेमे समर्थ हो जाय, तो उन्हे उसके सुधारनेमे काफी ताकत लगानी पडेगी, उतने वक्तमे मजदूर कहीं आगे बढ गये होगे।"

अन्तिम वाक्य उन्होने अपने हालके अनुभवको सामने रखते और उसपर कटाक्ष करते हुए कहा। उनके पास पुराने और नये लेखकोंके बहुतसे लेख और पत्र आया करते थे जिनमे साहित्यमे पथ-प्रदर्शन करनेकी माँग रहती। वे उनपर खीझते और कहते—"सीखना तो है उन्हे यहाँके मजदूरोसे, यहाँके साधारण जन-समाजसे,—उनके पास जानेमे इन्हे हिचक क्यों हो रही है? शायद बोर्जुआ संस्कारके कारण अभिमानमे थोडा धक्का लग रहा है।"

पुराने लेखकोंके विषयमे वे प्रायः कहा करते—"उन्हे अपना अभिमान छोडना ही पड़ेगा। उनका सबसे बडा दोष यह है कि वे जीवन जितना सरल है उसे उतनी ही सरलतापूर्वक व्यक्त नहीं करते। ख्वामख्वाहके आडम्बरसे व्यर्थमे जटिल बना देते हैं और उसी जटिलताकी उलझनमे उलझ कर अपने विकासका रास्ता रोक लेते हैं। उनके लिए शब्दाडम्बरके सिवा और कुछ शेष नहीं रह जाता। जनताकी नाडी टटोलनेमे उन्हे भय लगता है, देशका वास्तविक प्राण उन्हे सहमा देता है क्योंकि वे उससे अलग,—अपने मरे हुए मानसिक जीवनमे रहना अधिक पसन्द करने लगे हैं।"

इसीलिए पुराने लेखकोंके पास पत्र लिखते समय वे बार बार उन्हे चेताया करते—"शब्दाडम्बर छोडना पड़ेगा। साधारण और सरल

बोल-चालकी भाषामें रचनायें हों तो अधिक अच्छा हो, क्योंकि उसमें जन-साधारणके प्राणकी झलक रहेगी जिसके बिना कोई भी रचना सफल नहीं कही जा सकती।"

नये लेखकोंको वे बराबर प्रोत्साहित किया करते, किन्तु जब उनकी रचनाओंकी भूल सुधारने लगते, तब लाल पेन्सिलके उसपर इतने दाग हो जाया करते कि तिल-बराबर भी जगह नहीं रहती। उनके विषयमें उनकी खास शिकायत यह रहती कि वे लेखक 'फोटोग्राफर' बनते जा रहे हैं। गोर्की उन्हें 'कलाकार' के रूपमें देखना चाहते थे। इन नये लेखकोंकी रचनाओंमें गोर्की दादाकी दृष्टिसे जीवन तो रहता, पर भाषा और लिखनेके ढंगकी अवहेलना की गई होती। इसे वे पुराने साहित्यके मास्टरोंसे सीखनेकी सलाह देते।

अक्सर ऐसा होता कि लेखक गोर्की दादाकी कड़ी समालोचनासे घबड़ा जाते और उनसे पूछते—'आखिर मेरे भाग्यमें लेखक होना बदा है या नहीं?' गोर्की यह प्रश्न अपने आपसे पूछते रहनेकी सलाह दिया करते। इनकी समालोचनाकी सबसे बड़ी विशेषता यह रहती कि जिस प्रकार वे अपनी रचनाको बहुत ही कड़ी कसौटीपर कस हमेशा जाँचते रहते, अपनी कमी बहुत जल्दी ही महसूस कर लिया करते, उसी प्रकार और लेखकोंमें भी उसी प्रकारकी प्रवृत्तिकी आशा करते।

४

गोर्की दादाके साथ रहनेका पहला नतीजा यह होता कि आदमी अपनी निजकी टीका-टिप्पणी करना आरम्भ कर देता। मनुष्य अपने भीतर टटोल कर अपना निजका वास्तविक स्वरूप देखनेकी चेष्टा करता। वह किस अंशमें समाजके लिए उपयोगी और किस अंशमें अनुपयोगी है इसका पता लगाने लगता। अपने जीवनका कोई भी ऐसा कोना बाकी नहीं बचता जिसकी भली भाँति जाँच न होती।

इस प्रकारकी तीव्रता सहन कर पाना आसान काम नहीं था। इसने उनके साथ मेरा एक घरमे रहना बड़ा मुश्किल बना दिया था। वे बाहर जो कुछ भी देखते उसका पूरा पूरा नक्शा अपने मनमे खींच लेते। और इसके बाद एक एक कर उस नकशेका विश्लेषण करने लगते। इस कामके सिलसिलेमे बहुत बार ऐसा होता कि बाह्य समाजका भार, अपने ऊपरका भार और समाजकी त्रुटिको वे अपनी त्रुटि मानने लगते। उनके भीतर ही भीतर बड़ा तूफान आ जाया करता। इसका असर आसपासके रहनेवालेपर भी पड़ा करता। निकट रहनेवाले लोगोको सदेह होने लगता कि कहीं उनकी त्रुटिसे ही तो उस बूढे लेखकका मन चिन्तित नहीं हुआ ?

इस क्षेत्रमें मुझे अपने आपकी जॉच करनेकी आवश्यकता नहीं थी। अपने ऊपर नज़र डालते ही मुझे पता चल जाता कि मेरा स्वभाव बहुत लापरवाह है। दादाके साथ रहनेके कारण जिम्मेवारीका जो भारी बोझ मेरे ऊपर लद रहा था उसे सम्हालना मेरे लिए कठिन था। चारो तरफके वायुमडलको देखते रहना और अक्सर उसीमे भूल जाना मेरे लिए अधिक स्वाभाविक था और वही सुखकर भी प्रतीत हुआ करता।

इस विभेदने मुझे निझनीमे और अधिक दिन नहीं टिकने दिया। मेरी तबियत दिनो दिन ऊबती जाती थी। मैं अपने अनुकूल समाज और वातावरण चाहता था।

ढूँढनेपर भी अपने मनबहलावका साधन मुझे निझनीमे नहीं मिल रहा था। मन अधिकाधिक उचाट होता गया। इस ओर गोर्की दादाका ध्यान नहीं खिंचने देना चाहता था पर उनकी चतुर ऑखोसे कुछ छिपा रखना भी बड़ा कठिन था। शायद मेरे भीतर चलते हुए संग्रामका भी उन्हे पता लग गया था। एक दिन वे हठात् पूछ बैठे—

"बड़ा उचाट लग रहा है, क्यों ?"

मैं कुछ उत्तर नही दे पाया।

" ड्रामा लिखनेकी अपेक्षा उसे देखना अधिक प्रिय लगता है, क्यो ?"

इस बार मैने हुँकारी भरी ।

" ठीक कहते हो । लिखनेवाले बदसूरत पर खेलनेवाले बड़े सुन्दर होते हैं । " निझनी छोड़नेकी अनुमति उन्होने खुशी खुशी दे दी ।

५

मैं मास्को जा रहा था । वे स्टेशन तक टहलते चले आये थे । गाडी छूटनेमे देर थी । इंजिन-ड्राइवर कुछ देर तक ध्यानसे उनकी ओर देखता रहा । थोड़ी देरमे शायद वह उन्हे पहचान गया । नज़दीक आ उसने सर झुकाकर नमस्कार किया और पाकेटसे कुछ निकालते हुए कहा—" इस बार मैने मास्कोमे आपके ही नामके थियेटरमे ' नाद्रिये ' (अन्तर्जगत,—गोर्कीका लिखा एक ड्रामा) देखा । यह है लूका (ड्रामाके एक पात्र) के एक महीनेकी तनखाह—"

गोर्की उसकी ओर अवाक् होकर देख रहे थे । ड्राइवर कहता गया—

" सोवियत साहित्य और थियेटरके सींचनेमें इसका उपयोग हुआ तो मै अपना जीवन सार्थक मानूँगा । "

गोर्कीने ड्राइवरके कोयला और तेलसे रँगे हाथ कस कर दबाये ।

मुझे आज दूसरी बार उनकी आँखे भरी हुई दिखलाई दीं ।

चतुर्थ खंड

मास्को

१

मैंने मास्कोकी जैसी कल्पना की थी उससे वह भिन्न निकला। यहाँका 'अक्टूबर स्टेशन' पैरिसका 'ल-गार-दु-नौर' बन रहा था। सब लोगोंको जल्दी पड़ी थी। बोल-चालमे पैरिसियन तर्जकी चुस्ती और फुर्ती थी। लोगोके ललाटपर ज़िम्मेवारीके भारके कारण जिन चिन्ताकी रेखाओंकी कल्पना कर रहा था वे देखनेको नहीं मिलीं। इसके बजाय उनके मुँहपर हँसी थी। उनके कपड़े प्रान्तीय शहरोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर कटे-सिले थे। चाल-ढाल तौर-तरीकेमें भी अधिक तेजी थी।

दिसम्बर महीना था। तीन बजेके ही लगभग सूर्यास्त हो चुका था। इस मौसिमका धुँधला कुहासा अधिकाधिक घना होता जाता था। फाहेके समान वर्फ गिर रही थी। फरकी टोपियोसे लोग कान ढकने लगे थे। ओवरकोटका कालर ऊँचा कर मुँह तक ढक लेते,—सिर्फ आँख और नाकके पासके हिस्से दिखलाई देते थे। साँसकी गरमीसे बकरेके कानके समान दीखनेवाली ओवरकोटकी खूँटपरकी बर्फ़ पिघल कर गीली हो जाती। लोग उन्हें बार बार पिता करते।

ट्रामकी खिड़कियाँ और छत मोटी बर्फकी तहसे ढकी थी। दोनों ओरकी बेंचोपर बैठे लोग कापेक (रूसी सिक्का) निकालते, शीशेकी खिड़कीपर जमी बर्फ़को उससे खरोंचते और मुँहसे भाफ देकर आँखोंके

बराबर जगह साफ कर लेते। वहींसे उन्हें बाहरका दृश्य दिखलाई देता और वे ट्रामका चौराहेपर पहुँचना पहचाना करते। उनकी साफ की हुई जगहपर बहुत जल्दी जल्दी बरफकी तह मोटी होती जाती। इसीलिए उन्हे बराबर ही उसे साफ करते रहना पड़ता।

चढ़नेवालोंकी भीड़का कुछ पूछना नहीं था। हैंडिल पकड़कर ऊपर उठ ही रहा था कि पीछेके लोगोंने ढकेलते ढकेलते गाडीके बीचमे पहुँचा दिया। धक्कामुक्कीके कारण शरीरमे थोड़ी गरमी आ गई जो उस समय बहुत ही प्रिय जान पड़ी। यदि मैंने ऊपर लगी हैंडिल न पकड़ ली होती तो शायद उस धक्केने मुझे ट्रामके अगले दरवाजे तक ठेलकर उसीकी राह बाहर उतार दिया होता। अपनी जगह कायम रखनेके लिए मुझे जरा जमकर खडा होना पड़ा। संयोगसे मेरे पास ही बेंचपर एक जगह खाली हुई। मैं उसपर जा बैठा। दूसरे लोगोंकी ही तरह बर्फ खरोंचकर बाहर देखने लगा। स्त्री कंडक्टर प्रत्येक चौराहेपर ज़ोरसे चिल्लाकर स्थानका नाम कह दिया करती। मेरे लिए सब बराबर था। यदि कहीं उतरना भी चाहता तो उस भीडके कारण काफी देरतक मल्लयुद्ध करना पड़ता। एक 'बुलवार'के पास पहुँचनेपर भीड़ कुछ खाली हुई। मैंने ट्राम छोड़ दी।

बुलवारमें टहलनेके रास्तेपर सैर करनेवालोंकी भरमार थी। दोनों तरफ रखी बेंचोपर बर्फ जमी हुई थी। फिर भी उसपर बहुत-से जोड़े बैठे हुए थे। कितने तो बिल्कुल निश्चिन्त हो बैठ गये थे। उन्हे बर्फ पड़नेकी कोई परवाह नहीं थी। जल्दी किसीको भी नहीं थी क्योंकि लोग टहलनेकी ही नीयतसे आये हुए थे।

मुझे सरदी लग रही थी। दस्ताना पहने रहनेपर भी हाथ अकड़ा जा रहा था। अभी थोड़ी देर पहले ट्रामसे उतरनेके लिए उसे पाकेटसे निकालना पडा था और उतनी ही देरमे वह काठके समान सख्त हो गया था। घर छोड़कर यहाँ आ प्रेमालाप करनेवालोंको देखकर आश्चर्य हो रहा था।

कहाँ जाऊँगा, यह मुझे जल्दी निश्चय करना था। और कोई चारा न

देख सामनेके एक चायखानेमें चला गया। वहीं घंटो बैठा रहा।

२

कमरे और चायकी गर्मीसे स्वस्थ होकर बाहर निकला। बर्फका गिरना बन्द हो गया था। सर्दीमें गीलेपनका अभाव रहनेके कारण अब वह अप्रिय नहीं थी। थोडा आगे बढा। पासकी ही किसी घडीमे नौ बजनेकी आवाज़ आई। यही तो रूसमे घूमने जानेका सन्ध्याका समय गिना जाता है! इसी समय बिछावनपर लेट जानेका अभ्यास महीनोंसे छूट चुका था।

स्केटिंग-रिंगसे बडा ही सुन्दर संगीत सुनाई दे रहा था। तीरकी गतिके समान स्केट करते हुए जोड़े 'जुट......जुट......जुट' आवाज़ बर्फ़पर करते हुए घेरा लगा रहे थे। मेरा जूता ताजे स्नोपर—'मत......मत......मत' की आवाज कर रहा था। स्केटिंग-रिंगमें ही जुटना मुझे अन्तमे तय करना पड़ा।

३

शीशेकी तरह चिकनी सख्त जमी हुई बर्फका मैदान देखकर स्वाभाविक ही स्केट करनेवालोंके (बर्फपर दौडनेका स्पोर्ट) पॉव फड़फड़ाने लगते हैं, हृदयकी धडकन तेज होने लगती है और दिल छूटकर बाहर कूद आना चाहता है। इस मजेका अनुभव स्केटिंग जाननेवाले ही पूरी तरह कर सकते हैं। बर्फ़पर दौडनेका लोभ इतना प्रबल होता है कि लोग सारे ससारका सुख भी किनारे रख उछलकर स्केटिंग रिंगमे पहुँच जाते हैं।

फाटकके पास ही किरायेपर स्केट दिये जाते थे, उसके लिए अपने पॉवोका माप बतलाना पडता था। मैंने भी अपना ओवरकोट और बूट रखनेके लिए देकर स्केट ले लिया। एकतालिस नंबर पॉवमें ऐसा बढ़िया फिट हुआ मानो वह मेरे लिए ही खास तौरसे बनाया गया हो।

खुशीके मारे उछलता हुआ बर्फपर आया। इस साल पहले पहल स्केट करने उतरा था। पॉव कॉप रहे थे। पहले कुछ कदम तक शरीरके भारके अंदाज़पर खयाल रखना पड़ा पर मैदानके बीच पहुँचते न पहुँचते सब आपसे ठीक हो गया। यह ठीक तैरनेके समान होता है। तैराकोंको हाथ-पॉव चलानेके बारेमे सोचना नहीं पडता कि कौन पॉव और कौन हाथ कैसे चलाया जाय, वे स्वाभाविक ही चलने लगते हैं। ठीक उसी प्रकार स्केटिंगमे भी पैर आगे बढने लगते हैं। रिंगके एक किनारे लाल सेनाका एक स्कैड्रन स्केट करनेवालोंके मुआफिक बाजा बजा रहा था। उस बाजेका 'टैक्ट' पैरोंको और भी अधिक हलका कर देता था। उनमे एक प्रकारका 'स्प्रिंग' आ गया-सा महसूस होने लगा।

बड़ी तेज़ रफ्तारसे आगे बढ़ता, एकाएक मुडता, फिर पीछेकी ओर घूम जाता,—आगेकी अभ्यास की हुई कलाये एक एक कर याद आने लगीं। एक खास तरहसे सॉपोकी तरह लचकदार शक्लमे पीछेकी ओर दौड़नेका अभ्यास न होनेके कारण जो तेज गति चाहता था और जितनी लचक पावोंमे चाहिए थी नहीं आ रही थी। पर जितना कुछ हो रहा था उसीमे मग्न हो आँखे मूँद पीछेकी ओर हटता जा रहा था। हठात् किसीसे टकरा गया। अपनी समान उम्रकी लड़कियोंके एक जोडेका तलमला कर बर्फपर गिरना अपने गिरनेके साथ ही मालूम पड़ा। हम लोग उठे। उनके कपड़ेकी बर्फ झाडते हुए मैं 'इजविनीन्चे' (माफ कीजिएगा) बुदबुदा रहा था और वे 'निचीवो' (कोई हर्ज़ नही) कह रही थीं। 'पइद्योम्चे' (चलिए, साथ चलिए) कह कर उन्होंने मुझे बीचमे ले लिया और हम लोग आगे बढ़े।

"आप लोगोंको चोट तो नहीं लगी?" मैंने पूछा।

"स्केटिंगसे भी बढकर कोई बढ़िया मज़ा होता है? यहॉ क्या चोट लगेगी?" उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

उनका कहना ठीक था। हम लोगोंने एक साथ कई प्रकारसे स्केट

करनेका अभ्यास किया। कभी एक टाँगपर बैठकर गये, कभी जोडा बना, कभी तीनो आगे-पीछे हो। हम लोगोको गर्मी लगने लगी। कोटका बटन खोल हम लोगोने रिंगके किनारे रखी एक बेंचपर थोड़ा विश्राम लिया। तीनो ही हाँफने लगे थे। मुँह बन्द कर ठंडी हवामे साँस ली।

बर्फपर 'फौक्स ट्रौट' नाचनेकी मेरी प्रिय मेलोडी बाजावालोंने आरंभ की। मैं उपयुक्त सगिनीकी खोजमे निकला। जाते जाते मैंने उन दोनो लडकियोसे फिरसे माफी माँगी। उन्होने कहा—"यह तो आपकी बड़ी खराब आदत है। माफी माँगनेसे हमे बडा गुस्सा आता है। रोज आकर हमे वैसा ही गिराया कीजिए।" हमे उसीमें मज़ा आता है।'

रिंगके बीचमे अधिक कुशलता-पूर्वक स्केट करने वाले लोग जुटे थे। सारे संसारके कुशल स्केट करनेवालोकी प्रतिद्वंद्वितामे प्रथम आनेवाली सोन्याकी चर्चा चल रही थी। कई लडकियाँ उसीके समान कला-पूर्ण नाच दिखलानेकी चेष्टा कर रहीं थीं। हम लोग चारो तरफ खडे हो अपने अपने हाथके दस्ताने खोल उनके लिए तालियाँ पीटा करते। नृत्य-कला सिखलानेवाला यदि अपनी किसी शिष्यासे बहुत अधिक प्रसन्न होता तो उसे गोदमे ले, कभी ऊपर उठा, उसके साथ नाचने लगता। हम लोग उस जोडेकी कुशलतापर हृदयसे मुग्ध हो तालियाँ पीटा करते।

स्केटिंग-शिक्षक इसके बाद कला सीखने वालोंसे स्केट करते हुए अँग्रेजी सख्या आठ (8) की जैसी शक्ल तैयार करवाने लगे। इसका मैं पहले ही अभ्यास कर चुका था। शिक्षक महाशयने इस परीक्षामे मुझे पास घोषित किया और नृत्य-वर्गमे दाखिल कर लिया। उन्होने ही हम लोगोके जोड़े लगा दिये। मुझे उसी जगह अपने क्लबका सदस्य भी बना लिया।

मेरी संगिनी ठीक मेरे ही कदकी और मेरे ही समान दुबली-पतली थी। स्केटिंग वह मुझसे थोड़ा ही अधिक जानती थी। नृत्यकी ऐसी कोई शक्ल नहीं थी जिसमे मैं उसका साथ न दे पाता होऊँ। नृत्यकी नई नई

शक्लें ढूँढ निकालनेमे वह बड़ी ही प्रवीण थी।

हम लोगोंके ही जैसे दस जोड़ और थे। एक साथ ' वाल्च ' नाचते हुए हम लोग सारे रिंगका ही चक्कर लगाने लगे। देखनेवाले कहते—" ज़िन्दगीका मजा तो ये ही लूटते हैं। "

उनकी ये बाते ही मुझे फिरसे इस दुनियामे ले आतीं। नहीं तो, उस दिन स्केटिंगमे इतना मस्त हो गया था कि कोई भी चिन्ता मनमे नही रह गई थी। मैं वास्तविक आनन्दकी उस अवस्थामे था जिसका अनुभव वा अन्दाजा बरफका खेलाड़ी ही लगा सकता है।

स्केटिंग-रिंगमे दो-तीन सौ आदमी रहे होगे पर उन चन्द घंटोंके ही बीच कोई अपरिचित नहीं रह गया था। उस रिंगमें पहले पहल स्केट किया है, इसपर स्वय ही विश्वास करना कठिन हो रहा था। बारह बजेका घंटा सुनाई दिया। इतनी जल्दी,—वह भी सर्दीके मौसममे जब कि तीन बजे ही सूर्यास्त हो जाता है, आधी रात आ जायगी इसपर कम ही स्केट करनेवालोंको विश्वास हो सकता था। पर डिनामो स्केटिंगके संचालक भी व्यवस्था करते करते थकते जा रहे थे। रिंग बन्द करनेका समय आ गया था।

हम लोग हँसते हुए स्केट उतार बूट और ओवरकोट ले रहे थे। कई ' परिचित ' मेरे पास ही बैठे थे। और अधिक परिचय प्राप्त कर लेनेपर स्केटिंग-शिक्षकने मेरा होटल जानेका निर्णय सुन कहा—"इसका मैं सोवियत खेलाड़ी होनेकी हैसियतसे सख्त विरोध करूँगा। खिलाडी खिलाड़ियोंकी कद्र करना यहाँ जानते हैं। और अब स्केटिंग-शिक्षक होनेके नाते मैं क्लबकी ओरसे आपको आज्ञा देता हूँ कि आज मेरे घरपर ही आपको रात बितानी पड़ेगी। "

दूसरे खड़े लोगोंने ताली पीट उनका समर्थन करते हुये कहा—" बहुत ठीक! होटलोंमे तो विदेशी या हमसे अपरिचित लोग ही जाकर टिका करते हैं, आप न तो विदेशी और न अपरिचित हैं, इसलिए होटलमे जानेकी बात सोचकर ही आपने अन्याय किया है। "

मेरी स्केटिगकी संगिनियोंने भी कहा—" आपको अनुशासन मानना ही होगा। "

४

एक सप्ताहके ही अन्दर मैं मास्कोका ' पुराना वाशिन्दा ' बन गया। शहरके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक कोई भी स्थान ऐसा नहीं रहा जिससे मैं परिचित न होऊँ। परिचित लोगोका भी अभाव नहीं था।

वहाँके ' वेचरनाया प्रावदा ' (सन्ध्याके समय निकलनेवाले मास्कोके अखबार) ने मुझे मास्कोका सर्दीके दिनोका खेल-सवाददाता नियुक्त कर लिया था। काम बडा ही आसान और मन लगनेवाला था। मुझे स्केटिंगकी प्रगतिके विषयमे विशेष रूपसे सवाद भेजना पड़ता था और यही काम था जिसके लिये मास्कोमे कुछ दिन रहनेकी इच्छा हुई थी।

रूसी प्रणालीके अनुसार रहन-सहन, खान-पान, वेष-भूषा रखनेके कारण किसी भी बातकी तकलीफ नहीं थी। मकान-भाडेकी बिल्कुल ही चिन्ता नहीं, भोजनके लिए एक स्टोलोवाया (भोजनालय) विशेषकर खिलाडियोके लिये ही सोवियत सरकारने बनवा रखा था जहाँ स्पोर्ट-सस्थाकी ओरसे दिये गये भोजनके कार्ड दिखलाने पर भोजन मिल जाया करता था। सैर-सपाटे तथा अन्य दैनिक फुटकर खर्चके लिए अखबारसे काफी पैसे मिल जाते थे। मेरा रहना ' रईसो ' जैसा होता जा रहा था।

विदेशी बने रहनेवालोको मास्कोमे उन दिनो बेहद तकलीफ हुआ करती थी। बहुतोका तो जिस प्रकार मैं रह रहा था उस प्रकार रहनेपर दिवाला ही निकल जाता। होटलोके कमरेके लिए पचास रुपये, दैनिक भोजनके लिये सौ, और सैर-सपाटेके लिये पचास,—कुल लगभग दो सौ रुपये उन्हे रोजाना खर्च करना पड़ता। हाँ, रूसी यात्री-सघके जरिये सैर करने यदि आये होते तो बात दूसरी थी,—उन्हे पचीस-तीस रुपये ही रोजाना खर्च करने पड़ते। लेकिन, उस हालतमे वे एक महीनेसे अधिक

रूसमें टिक नहीं सकते थे।

मास्कोमे सबसे पहले यह बात झलक जाया करती कि रूसमे सर्व-साधारणका राज्य है। इस धारणाके विपरीत भाव रखनेवालोके लिये वहाँपर अत्यधिक तकलीफ़ उठाना स्वाभाविक था। यह बहुत कुछ विपरीत धाराकी ओर तैरने जैसा होता, और वह भी सामाजिक बहावमे, जो साधारण बहावसे कहीं अधिक जटिल होता है। यहाँ विदेशी बने रहनेवालोको केवल शरीरिक ही नहीं मानसिक क्लेश भी बहुत अधिक पानेकी सभावना थी।

समाजमे हिल-मिल जानेके सिवा मैं वहाँकी सरदीका भी अभ्यस्त हो गया था। जो सरदी पहले दिन बूलवारमे मुझे संता रही थी वही अब प्रिय मालूम पडने लगी। बरफ़पर बैठकर प्रेमालाप करनेवालोको देख अब आश्चर्य भी नहीं होता, बल्कि सरदीकी मौसिमका वही वास्तविक फैशन होना चाहिये, इसका मैं पक्का हामी बनता जा रहा था।

शहरमे दर्जनो स्केटिंग-रिंग थे। उनमे चार-पॉच सबसे अच्छे लगे। प्रायः ऐसा हुआ करता कि एक सन्ध्यामे ही सब जगह थोडा थोडा स्केट कर आता। मेरा वास्तविक कार्यक्रम सात बजे शामको आरंभ हुआ करता और रोजाना दो बजे रातको मैं सोया करता। जिस दिन बारह-एक बजे दिनमे संयोगवश थोडी धूप निकल आती, सरदी और भी अधिक बढ जाया करती। उस सरदीमे गरमानेके लिये अब चायखाना नहीं बल्कि स्केटिंग-रिंगकी शरण लेता।

कुछ खेलाडियोके सीनपर एक तरहका तमगा झूलता हुआ देखता। ध्यानसे देखनेपर उसपर जी० टी० ओ० तीन अक्षर लिखे दिखलाई पडे। पूछनेपर लोगोंने उसका अर्थ बतलाया—'श्रम और देशरक्षाके लिये तैयार।' यह एक तरहका स्पोर्ट-पदक था। लगभग बीस तरहके खेलोमे परीक्षा पास कर लेनेपर यह पदक दिया जाता था।

युवा-युवतियोके लिए उन खेलोमे पास होना विशेष कठिन नहीं हुआ करता। मैं भी उसकी तैयारी करने लग गया। इसके लिए

सैनिककी भाँति भी थोडी शिक्षा लेनी पडती थी । परीक्षाके विषयोमे निशाना लगाना, ग्रानाड (एक प्रकारका बम) फेकना, गैस-मास्क लगाकर एक मीलका रास्ता तय करना, आदि बाते भी रखी गई थीं । इनके सिवा ऊँची और लम्बी कूद, सौ गज और एक मीलकी दौड, तैरना, ग्रानाड लेकर तैरना, स्केटिग, स्की आदि विषय भी रखे गये थे । तमगेके लिए उतना नहीं जितना कि इन विषयोमें दिलचस्पी रखनेके कारण मैंने ये परीक्षाये दीं । उत्तीर्ण भी हुआ । नियत दिन बैंड आदिसे सुसज्जित समारोहके बीच दूसरे सौ साथियोके साथ तमगेसे विभूषित भी किया गया ।

उस दिनकी मेरी खुशीका कुछ पूछना ही नहीं था । तमगा लगा कर सब परिचित स्केटिंग-रिंगमे स्केट कर आया । धीरे धीरे यह भी अनुभव करने लगा था कि उस तमगेका स्पोर्टके सिवा और भी कुछ महत्त्व होता है । मनुष्य श्रमको आदरकी दृष्टिसे देखना सीख जाता है । दूसरे देशोसे सोवियतकी विभिन्नता प्रदर्शित करनेवाली शायद यही सबसे बडी विशेषता है । और देशोमे आलसी निकम्मे लोगोकी,—दूसरेके श्रमपर जीवित रहनेवालोकी ही अधिक कदर हुआ करती है । वैसे ही लोग समाजमे श्रेष्ठ और अगुआ गिने जाते हैं । सोवियतमे ठीक इसका उलटा है । वहॉ आलसियोकी गुज़र नहीं,—दूसरोके श्रमपर जीवित रहनेवालोंका नामोनिशान भी उठा देनेकी तैयारी है । इज्जत, कदर, श्रद्धा, बल्कि यो कहा जाय कि पूजा भी श्रमकी ही की जाती है ।

अब तक सोवियत रूसका जितना कुछ देखा था, जितनी जगहे देखी थी, जितने लोगोसे मिला था, जितने लोगोंके बीच रहा था,—सबको वास्तवमे समझ पानेकी यही वास्तविक कुञ्जी दिखलाई देने लगी ।

५

आकाश बडा ही स्वच्छ,—एकदम निर्मल था । चाँद और कई तारे ठीक हमारे सरपर खिलखिला कर हॅसते हुए चमक रहे थे । ऐसी सन्ध्या सरदीके दिनोमे मास्को बहुत ही कम देखता है ।

हम लोगोंने नदी किनारेका रास्ता लिया। मास्को नदी बर्फके कारण स्थिर हो गई थी। पुलोंतक जानेकी आवश्यकता नहीं। जिस किसी स्थानसे नदीकी छातीपर पॉव रखते हुए उसे पार किया जा सकता था।

सामने क्रेमलिन (मास्कोका पुराना राजप्रासाद जहॉ आजकल सोवियतके नेता रहते हैं) का गुम्बज सर ऊँचा किये खडा था। हम लोग उसीकी ओर बढ रहे थे। रेड स्क्वायर (क्रेमलिनके सामनेका ऑगन) की बर्फ कुछ मज़दूर साफ कर रहे थे। क्रेमलिनकी ओर ठीक बीचमे मौसेलियम (समाधि) थी। बिजलीकी अपेक्षा चॉदके प्रकाशमे ही उसके मुख्य द्वारके पॉच रूसी अक्षर पढे जाते थे। लेनिन। लेनिन।

लेनिन-स्मारक मे एक रास्ता भीतर जानेका और दूसरा बाहर निकलनेका था। भीतर जानेवाले रास्तेके सामने लम्बी कतार लगी थी। लोग सरदीमे बड़ी शान्तिपूर्वक उस कतारमे खड़े थे। रॅग-ढॅगसे मालूम पड़ता वे रूसके सुदूर प्रदेशोंसे आए हुए लोग हैं। उन्हे मास्कोवालों जैसी जल्दी नहीं पड़ी थी। बारी बारीसे वे उस स्मारकके भीतर घुस रहे थे। उनके पीछे हम लोग भी जा खड़े हुए और अपनी बारी आनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

मुख्य दरवाजेपर लाल सेनाके दो सैनिक चमकती हुई संगीने लगी राइफल लिये अटेन्शनकी हालतमे खडे थे। उनके बीचसे हम लोगोने भीतर प्रवेश किया। रास्ता दॉये घूमता था। थोड़ी दूरपर ही लेनिनकी समाधि थी। देखनेपर कोई भी उसे जीवित न हो, ऐसा नहीं समझ सकता था। उसकी पोशाक मुझे कमसोमोल (युवा कम्युनिस्ट) जैसी दिखलाई पड़ी। वह गहरी नींदमे स्वप्न देख रहा था। कहीं हमारी आहट न उसे सुनाई दे जाये, इस भॉति निःशब्द हम लोग दूसरे दरवाजेसे निकल आये।

उस समाधिके पास ही क्रेमलिनकी दीवार थी। इस दीवारके पास भी बड़े बड़े प्रोलिटारियन नेताओंके भस्म गडे हैं। संसारके बडे बडे मज़दूर-

नेताओका यह समाधि-स्थल है जिनका स्वप्न सोवियत यूनियनके रूपमें वास्तविकता बन चुका है।

लेनिनकी समाधिकी दाई ओर कुछ दूरपर गिर्जेके आकारकी एक और इमारत थी। उसीके सामने जारशाहीके जमानेकी वधस्थली थी। पिछली शताब्दियोमे दलितोके बडे बडे नायक-योद्धाओंका सर वहींपर कुल्हाड़ेसे अलग किया जाता था। जिन दो लोहेके खभोके बीच काटनेकी सुविधाके लिए सर दबा रखा जाता था वे अभी भी वर्त्तमान हैं और इस वक्त बिलकुल काले दीख पड़ते हैं। पुगाचेव, स्तेंकाराजीनके जैसे किसान-नेता, चेरनीशेव्स्की, दस्तयेव्स्की जैसे लेखकोके साथी,—कितने ही क्रान्तिवादियोंके खूनसे वह जगह तर हुई होगी। उन लोगोंके भी स्वप्न आज सोवियत यूनियनके रूपमे सफलीभूत हुए हैं!

समाधिकी बाई ओर 'क्रान्तिका अजायबघर' था। यहाँ क्रान्तिकारी आन्दोलनका विकास संसारके किस देशमे किस प्रकारसे हुआ है, इसका इतिहास दिखलाया गया है, तथा क्रान्तिके जमानेके बहुतसे स्मृति-चिह्न, इकट्ठे कर रखे गये हैं। उसे पार कर हम लोग त्वेरस्काया और अब 'गोर्की सड़क' पुकारे जाने वाले रास्तेपर आये। लोगोकी बडी चहलपहल थी। यह मास्कोके सुन्दरतम रास्तोमे एक है। चलनेवालोंके चेहरेपर मुस्कुराहट थी, भीतर आनन्द था,—वे विजेता थे। इसके साथ साथ चेहरे यह भी व्यक्त करते थे कि वे श्रमके पुजारी हैं। समाजके विकासमे वे यथाशक्ति हाथ बँटा रहे हैं और इसीलिये उन्हे अपने जीवनसे पूरा पूरा सन्तोष है।

उस दिन न मालूम क्यो जिस किसीके चेहरेपर दृष्टि जाती मुझे आनन्द और सुखकी ही झलक दिखलाई पड़ती।

घर लौट कर गरम बिस्तरेपर पक्षियोके पंख भरे रजाईसे लिपट कर सोया उस समय भी मनमे यही आ रहा था—क्या इससे भी और सुखी कहींका समाज हो सकता है?

मास्को आँसुओंसे नहीं पिघलता

१

अपनी पुरानी नोटबुकके पन्ने उलट रहा था। शुरूके एक पृष्ठपर नाद्याकी लिखावट मिली। उसका हमेशा हँसता हुआ चेहरा याद आया। समुद्री जहाजपर उसका सदा तान्याको चिढाते रहनेका पूरा दृश्य आँखोके सामने नाच गया।

नाद्याने विदा होते समय अपना मास्कोका पता मेरी नोटबुकमें लिख दिया था और तीन बार कहा था—'आना। आना। आना।' अब तक उसे क्योंकर भूला रहा, इसीपर आश्चर्य हुआ। उसी दिन सन्ध्या-समय उसके घर जाना तय किया।

बनारसके समान कई गलियाँ पार करनेके बाद वह मकान मिला। दरवाजा खुला था। भीतरकी सीढियाँ सड़ककी रोशनीमें आधी दूर तक दिखलाई दे रही थीं। मैं एकतलेपर चला गया। एक तरफके दरवाजेकी फाँकसे रोशनी आ रही थी। मैं उधरसे ही नाद्याकी हँसी सुननेकी प्रतीक्षा करने लगा, पर वह सुनाई नहीं दी। मैंने दरवाजा खटखटाया।

एक प्रौढा दरवाजेपर आ खड़ी हुई। उनके चेहरेमें फ्राउ ग्राफ जैसी समानता देख मैं चमक गया। होठ वैसे ही पतले, लाल लिपस्टिकसे पुते, भँवे उसी प्रकार मुड़ी हुई, पूरे टॉयलेट (साजबाज) मे नाइयोंकी कलाका वही चमत्कार! पर ये कुछ दुबली थीं और शायद इसी कारण कुछ लम्बी भी दीखती थीं। चेहरेपर 'बड़े घराने' की औरतो जैसे

अधिकार जमानेकी कलामें निपुणताके चिह्न थे। शायद उनमें अहंकार रखने और रुआब दिखलानेकी भी आदत थी। पर यह रूसी औरतोंके समान नहीं जो ये भाव सिर्फ मर्दोंको अपनी ओर खींचनेके लिए दिखलाया करती हैं। उनकी उम्र और जीवन-उपभोग करनेकी प्रवृत्तिमें बड़ी असमानता थी। उनके यौवनकी बहुत-सी वासनायें अपूर्ण रह गई हैं इसे वे न तो छिपानेकी कोशिश करती थीं और न यह उनके प्रयत्नसे छिपाई ही जा सकती थी। वे भीतर ही भीतर यह अवश्य महसूस करती थीं कि उनकी वे लालसायें पूरी होनेके दिन बीत गए, फिर भी सिर्फ उम्र कुछ अधिक होनेके कारण अपनी हार मान लेना उनके स्वभावके विरुद्ध था। उन्होने संक्षिप्त, स्पष्ट, तीव्र पर चटपटे पेरिसीयन ढगसे कहा—" बोसुआ—" (गुड इवनिङ्ग)।

मैंने झुक कर उसका उत्तर दिया। शायद मैं आवश्यकतासे अधिक झुक गया था। उन्हे यह पसन्द आया। उन्होनें पूरा दरवाज़ा खोल दिया और पूछा—" इतालियानो "

उन्हें शायद रूसीकी अपेक्षा पश्चिमी यूरोपीय तौर-तरीका अधिक पसंद था। मैंने नाद्याका ज़िक्र किया। उन्होने मुझे घरके भीतर लेते हुए कहा—

" फिर यही क्यो नहीं कहते कि आप नाद्याके दोस्त हैं ? और अधिक परिचयकी मुझे आवश्यकता नहीं। "

मेरी बॉह पकड़ वे बैठकमे ले गईं। एक सज्जन वहाँ पहलेसे बैठे थे। उनका परिचय उन्होने दिया—' जेनरल मिखाइलोव— ' और मेरे विषयमे ऐलान किया—

" काउट कवालियेरो,—इटालियन लेखक—"

मैं उनके 'लाल बुझक्कड़' दिमागकी मन ही मन सराहना करने लगा। खयाल आया, कहीं मेरी काउंटकी पदवीके ही समान तो सामने बैठे सज्जनको जेनरलकी पदवी नहीं मिली है ? इस प्रकारके सन्देहके कारण

भी थे। वे सज्जन जिस प्रकारकी साधारण पोशाकमें थे उसकी अपेक्षा वर्दी पहनकर आना किसी भी देशके जेनरलने उपयुक्त समझा होता। मिलिटरी उजड्डुताके स्थानपर बनिया होनेके लक्षण ही इनमे अधिक थे। पेट दोनोंके ही तने होते हैं, इसलिए उससे कुछ अंदाज़ लगाना कठिन था।

उन्होंने जिस प्रकार मुझसे ज़िरह करना शुरू किया उससे यह भी पता चला कि वे खुफियावालोंके काममे निपुण हैं। उन्होने कटाक्ष करते हुए पहली दृष्टि मेरी ओर फेरी थी। कुछ देर बाद शायद अपने ही वर्गका समझ कुछ सम्हल गये थे, पर स्पष्ट स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं हो रहे थे। उन्हे मेरा उस मौकेपर पहुँच जाना नागवार अवश्य महसूस होता था, पर जिस समाजके होनेका वे बाहरसे दावा करते थे उसके लिए इस नागवारीका प्रकट होने देना अस्वाभाविक था। इसके लिए वे यदि घुड़कते भी तो घरवालीकी ओर दृष्टि फेरकर। शायद वे उन्हें इशारेसे जतला देना चाहते थे कि इस विदेशीको लाकर खड़ा कर देनेमें सारा अपराध तुम्हारा ही है। और कोई अधिक स्पष्ट तरीका न पा उन्होंने मौसिमकी ओट लेते हुए कहा—"मादाम वासिलियेवना, आजका मौसिम कितना खराब है! मैं तो कुत्तोकी तरह अकड़ा जा रहा हूँ।"

"बहुत ख़राब जेनरल! बहुत ही ख़राब है," मादामने उत्तर दिया। उनकी इस बातमें जेनरलके प्रति सहानुभूतिकी अपेक्षा अन्यमनस्कता ही अधिक थी। मेरा वहाँपर रहना उन्हे अपनी चालके सफलीभूत होनेमें सहायक साबित होगा, शायद यह भी वे इन चन्द मिनटोमे मन ही मन स्थिर कर चुकी थीं। उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा—"नाद्या कुछ कह नहीं गई है। शायद जल्दी ही लौट आये। क्या कुछ देर प्रतीक्षा करनेका आपको अवकाश है?"

मैंने अपनी सम्मति जतलानेका इशारा किया। जेनरल इसे बर्दाश्त नहीं कर पाए। मन ही मन वे कुछ दूसरा ही प्लैन तैयार कर वहाँ पहुँचे थे। उन्होंने कहा—

"काउटको यहाँ बैठनेमे शायद तकलीफ हो रही है। वह सोफा कहाँ गया ?"

वे उसे ढूँढने लगे। वह उन्हे एक कैनवैसकी आडमें मिला। उन्होंने मुझे वहाँ बैठनेका इशारा किया। मैं परदेके पीछे बैठा। मुझे मेज़से एक किताब उठाकर पढनेके लिए दी। मैं उसके पन्ने उलटने लगा। पुस्तक नाटय-कलाके विकासपर लिखी गई थी। उसका पहला पेज मैं समाप्त भी नहीं कर पाया था कि अपने सामने दूसरा ही नाटक चलता हुआ मुझे दिखलाई देने लगा।

कैनवैसका पर्दा उस कमरेको दो हिस्सोंमे बॉटनेके लिए टॉगा गया था। मैं जहाँ बैठा था वहाँसे दूसरे कमरेके लोग दिखलाई नहीं देते थे, पर उनकी प्रत्येक हरकत परदेपर स्पष्ट दिखलाई देती थी। इस समय उसपर दो छाया देख रहा था। कुछ देरमे उन्हे एक होते देखा। यह ठीक एक सिनेमाके जैसा और उसीके समान आडबर, नखरे और कलापूर्ण रूपमे हुआ। उनकी फुसफुसकी आवाज आने लगी। ध्यानसे कान देनेपर वे स्पष्ट सुनी जा सकती थीं।

"आखिर तय क्या किया ?" जेनरलकी आवाज थी।

"मुझे बडी शरम लगती है।"

"छोडो ये नखरे।"

"ये नखरे नहीं।"

"फिर क्या हैं ?"

"आखिर दुनियामे कुछ शीलका चिह्न बाकी रहने दोगे या नहीं ?" शीलकी यह चर्चा मादामके मुँहसे कुछ अस्वाभाविक रूपमे निकल रही थी। फिर भी अभी अपनेको बचानेके लिए उनके लिए यह मेरी ढालका काम कर सकती थी।

"इसका शीलसे क्या सरोकार ?"

मादामके मुँहसे कोई उत्तर नहीं निकला। बाहरसे देखनेपर मालूम

पड़ता था कि उनकी सोचने विचारनेकी आदत बिलकुल ही नहीं होगी। पर इस समय वह धारणा भूल साबित हो रही थी।

"जवाब क्यों नहीं मुँहसे निकलता?" जेनरलने ऐक्टरकी भाँति पूछा—

मादाम इस बार भी चुप रहीं।

"और आज रूसके कम्युनिस्ट कोई शील आचार नहीं मानते फिर भी वे ज़िन्दे हैं या नहीं?" जेनरलने तनकर बैठते हुए कहा।

"मैं उनसे घृणा करती हूँ—" मादामने धीमे शब्दोंमे कहा— "लेकिन फिर भी उनमे तुमसे अधिक शीलका ख़्याल है। तुम्हारी मैं इज्जत करती हूँ, इसीलिए कहती हूँ। और चाहे जो करो इसकी चर्चा कभी न उठाना।"

"लेकिन मेरे लिए उस प्रकार जीना बड़ा कठिन हो रहा है।" इस बार उन्होंने कुछ रोमाञ्चक स्वरमें कहा।

"तुम्हारा तो मैं इसमे सर्वनाश देख रही हूँ। तुम यहाँकी पार्टीमें ऊँचा ओहदा रखते हो, समाजमें तुम्हारी इतनी इज्जत है, तुम आदर्श कम्युनिस्ट गिने जाते हो, लोगोंको जैसे ही पता लगेगा कि तुमने अभिनेत्रीसे शादी की है, तुम्हारी सारी धाक हवा हो जायगी।"

"ये हैं पुरानी दुनियाकी बातें। कौन किससे शादी करता है आज यहाँ किसीको देखते रहनेकी फ़ुर्सत नहीं। दूसरी बात, और देशोंकी भाँति यहाँ अभिनेत्री नीची निगाहसे नहीं देखी जाती।"

"अभिनेत्रियाँ चाहे न देखी जाती हो पर ज़ारशाही जमानेके रईस और धनी लोग तो नीची निगाहसे ही देखे जाते हैं। उन्हें तो सोवियत समाज ख़ूँखार विषधर साँपसे भी अधिक भयंकर मानता है। सम्भ्रान्त कुलोंकी स्त्रियाँ सड़ी हुई नालियोंसे भी अधिक गंदी समझी जाती हैं। उनसे कोई हिलता-मिलता नहीं, सब नाक-भौं सिकोड़कर किनारे हो जाते हैं। हमारा जीवन तो यहाँ कुत्तोंसे भी गया गुजरा है।"

मादामका बनावटी स्वभाव रहनेपर भी उनकी ये बाते विश्वसनीय जॅचती थीं, क्योंकि उनकी आवाज़मे सचाईकी ध्वनि थी।

जेनरल इन मामलोको तनिक भी महत्त्व देनेके लिए तैयार नहीं थे। उन्होने दलील दी—

" और किसीको पता ही कैसे चलेगा ? पुरानी बाते दबा दी गई हैं। नाद्या तो कौमसोमोल (युवा कम्युनिस्ट दल) की सदस्या है ही, मैं तुम्हारे लिए भी पार्टी-टिकट ले सकता हूँ। "

" यह ढोग मुझसे पूरा नहीं हो सकेगा। " मादामने अपना हाथ छुडाते हुए कहा।

जेनरलने उनका हाथ फिर पकड़ लिया और कहा—" यह सब डर कुछ भी नहीं, तुम्हे तय करना ही होगा। "

ये बाते जोर देकर कही गई थीं जिसके सामने दलीले काम नहीं कर सकती थीं।

" फिर तुम्हीं क्यो नहीं पूछ देखते ? "

" नहीं, यह तुम्हें ही ठीक करना होगा। "

मादाम हाथ छुडाकर सिसकने लगी थीं। जेनरल उन्हे मेरी ओर उॅगली दिखला चुप रहनेका इशारा कर रहे थे।

" तुमने मेरा सब कुछ छीन लिया है, " उनका सिसकना बंद नहीं हुआ—" अब केवल यही एक, छोड दो। "

" तुम्हें यह भी ख्याल रखना चाहिए कि मैंने तुम्हारी जान बचाई है। मेरी ही बदौलत तुम आज भी जी रही हो और मौजसे रहती हो। "

" कुछ मेरे लिए नहीं। " अब मादामको थोड़ा क्रोध आ रहा था— " तुमने डाकुओकी तरह बर्ताव किया है। कम्युनिस्टोसे बचाया लेकिन अपने स्वार्थकी वेदीपर बलिदान कर दिया। यदि पहलेसे पता होता कि तुम आगे चलकर ऐसा बर्ताव करोगे, तो मैं उस समय जीवन त्याग देना ही अधिक उचित समझती। "

"आत्म-हत्याकी तो चेष्टा की थी" जेनरलने हँसी उड़ाई—"लेकिन सुई भोंक कर ही तो शहीद होना तुम्हारा असली मक़सद..."

"और हमको उसकी याद न दिलाओ। मैं तुम्हे देखना नहीं चाहती।" वास्तवमे मादामके चेहरेसे स्पष्टता प्रकट हो रही थी।

"फिर..." बहुत भारी धमकी थी। जेनरलने ऑखे तरेर ली थीं। इसका सामना करना मादामके साहसके बाहर हो गया। वे उसके पॉवोपर गिर पडीं। बहुत मनाया। जेनरल राजी न हुए।

"लेकिन वह तो तुम्हारी ही लड़की हो सकती है।" बहुत धीमे कठसे सिसकनेके भीतरसे आवाज आई।

"यह कैसे?" कर्कश स्वरमे प्रश्न हुआ।

"दिन गिन लो। उसके जन्मके ठीक नौ महीने पहले तुम मुझे पेट्रोग्रादसे भगा लाये थे।"

"मैं विश्वास नहीं करता। किसी औरतका इन मामलोमे विश्वास नहीं करता। और तुम्हारा आना वासिलियेवना!" जेनरल जोरोसे हॅस पडे।

मादामने अपना मुँह छिपा लेनेकी कोशिश की। जेनरलने इस बार उच्च कठसे कहा—"और जो तुम कहती हो, सच भी हो, तो उसकी मुझे परवाह नही।"

सीढीसे किसीके आनेकी आहट सुनाई पडी। आना वासिलियेवना उसे देखनेके बहाने दरवाजेके पास गई। आहट छतकी ओर चलती चली गई। शायद दो तलेपर कोई जा रहा था। आना देर तक नहीं लौटीं। जेनरल अपने सामने टॅगी एक तसवीरकी ओर देख अपने मोटे 'बास' स्वरमे गुनगुनाने लगे—

"नाद्युश्का पेत्रोवना,
    ग्दे वी तेपेर।
पोल जिज्न ज्दाल या,
    तोल्को वाम विदात॥"

(छोटी नाद्या पेत्रोवना, आप अभी कहाँ हैं ? मैं सारी ज़िन्दगी केवल एक बार आपको देखनेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।)

मैं भी काफी देर तक प्रतीक्षा कर चुका । नाट्य-कलाकी किताब मैंने बद कर दी । नाद्या उस समय तक नहीं लौटी । दूसरे दिन फिर आनेका वादा कर मैं वहाँसे बाहर निकल आया ।

२

अंधेरा रहनेके कारण अपरिचित सीढ़ियोंसे बहुत धीरे धीरे नीचे उतर रहा था । मेरे पीछे पीछे ऊपरके तलेसे और भी कोई नीचे आ रहा था । मुख्य दरवाजेपर हम लोगोंकी देखादेखी हुई । वह मेरी ही कदका कोई युवक था । हाथमें स्केट दबाये बाहर जा रहा था । उसने ही मुझे टोका—"आपको तो पहले पहल इन सीढ़ियोंपर देख रहा हूँ ।"

"जी हाँ । मैं पहली बार ही यहाँ आया हूँ ।"

"नाद्याके उम्मीदवारोंमे..." उसने ध्यानपूर्वक मेरी ओर देखकर कहा । मैंने नाद्यासे परिचय होनेकी सच्ची बातें कह दीं और पूछा—"आखिर ये लोग हैं कौन ?"

"चोर्तिये ज्नायत (शैतान ही जाने)," उसने स्वाभाविक रूसी तरीकेसे कहा ।

"शैतान तो खैर जानते होंगे, आप उनके पड़ोसी हैं, आपको कुछ विशेष पता तो उन लोगोंके विषयमें अवश्य होगा ?"

"पड़ोसियोंसे वे चिढ़ते हैं—दूर वाले उन्हें अधिक पसद आते हैं । हम लोगोंसे तो गाहेबगाहे जब कभी सीढ़ियोंपर देखा देखी हो गई तो 'सलामवालेकुम' हो जाती है, नहीं तो हम लोगोंका जाना-आना एक दूसरेके यहाँ कतई नहीं होता । हाँ, देखता हूँ, बाहरके लोग यहाँ अक्सर आते-जाते रहते हैं । नाच-गाना, हल्ला-हसरात खूब हुआ करता है । इससे

मालूम पड़ता है कि वे बड़े दिलचस्प लोग हैं । हर वक्त वहाँपर थियेटर ही हुआ करता है।"

"कितने लोग रहते हैं कि हर वक्त थियेटर चालू रहता है?"

"रहनेवाले माँ-बेटी दो ही प्राणी हैं पर दोनोंके ही दर्जनो दोस्त हैं। अभी आज नाद्या नहीं है, नहीं तो ऐसा सुनसान हमारा मुहल्ला नहीं रहता। यहाँ रात-भर ग्रामोफोन बजता रहता है और नाच हुआ करता है। हम लोगोंका सौभाग्य है कि हम ऊपर रहते हैं, नहीं तो इतने जोरसे वे लोग नाचते समय पैर पटका करते हैं कि उससे हरवक्त छत टूट कर नीचे आ जानेका भय लगा रहता है। उनके कमरेकी सतह आपने देखी? वह नाचसे दो सालमें कमसे कम चार इञ्च घिस गई होगी।" वह हँसने लगा।

"बड़े मजेके लोग हैं?" मैंने उसे सहारा देते हुए कहा।

"भला मज़ेका क्या पूछना है? जीवनका तो मज़ा ये ही लूटते हैं। हर वक्त हाहा हीही हुआ करती है। बाहरसे आनेवालोंको खूब ठगते हैं।"

"ठगते हैं! यह कैसे?"

"कहनेका मतलब कि अपनी मर्जीसे ठगे जाते हैं। मास्कोमे ससारके जितने राष्ट्रोंके प्रतिनिधि हैं, और उनमे ठगे जानेवाले जितने बेवकूफ हैं वे सब यहाँ हाजरी बजाते हैं। वे सबके सब नाद्याकी आँखोंके इशारेपर नाचा करते हैं। अभी एक महीना पहलेकी बात सुनिए,— अमेरिकन दूत नाद्याकी ऐक्टिंग वलशोई थियेटर (मास्कोका सबसे बडा ऑपेरागृह) मे देखकर इतना मुग्ध हो गया था कि पिछले हफ्ते तक सीधे इटलीसे टोकरीकी टोकरी गुलाब फूल मँगाकर भेटके लिए यहाँ भेजा करता था। फूल तो नाद्याने ले लिए, उपहारकी और भी बहुत-सी चीजे ले लीं लेकिन जब वह बेचारा मुलाकातके लिए आया तो घरमे ले जाकर उसे ऐसा बनाया कि ससारका शायद ही कोई आदमी कभी वैसा बेवकूफ बनाया गया होगा।"

" यह कैसे ? "

" अमेरिकन राजदूत कदमे लम्बा था। मूँछे बडी सजी हुई रखता था। मूछोकी तारीफ कर नाद्याने उन्हे उस्तरेसे एक तरफसे बिलकुल ही साफ कर दिया, फिर आधा मुँह पुरुषो और आधा स्त्रियोंके जैसा पेंट करना शुरू किया। इसके लिए दोनो विभागके मास्कोके सबसे बड़े थियेटरके पेंटर बुलाये गये थे। पोशाक भी राजदूतके लिए खास तरहसे तैयार की गई थी। स्मोकिंग कोट लम्बाईकी ओरसे बीचोंबीच आधा कर दिया गया और उसमे आधा औरतोंका झुलिया लगा दिया गया था। पाँवोकी भी सजावट वैसी ही की गई थी। बाँयें पाँवमे जाँघोंतक मोजा पहनाया गया था और दाँये पाँवमे बिना मोजाका बूट-जूता दिया गया। कमरमे नाचनेवालियो जैसा ओछा घाँघरा। यही तो कहता हूँ, बिलकुल कमाल किया गया था। चेहरेके औरतोंवाले भागमे कानोंमे कर्णफूल और नाकमे नथिया झुलाना भी नाद्या नहीं भूली थी। ऐसे मामलोंमे उसका दिमाग गजबका काम करता है। इसका नाम उसने ' इडियन फैटासी ' दिया था और कहती थी कि अपनी यूरोप-यात्रामे वह यह कला सीधे लडनसे सीख कर आई है।

" इस प्रकार सजाकर अमेरिकन राजदूतको उसके घरके भीतर चारो तरफ घुमाया और नाद्या उसके पीछे-पीछे ताली पीटती हुई—' क्या मजा है, क्या मजा है, ' कहती हुई लडकोको बटोरने निकली। इस घरके विभिन्न मञ्जिलोपर रहनेवाले जितने लडके थे सब इकट्ठे हो चले। नाद्याकी सूझ और भी आगे जा रही थी। वह राजदूत-को आगे कर उसका जुलूस निकाल रेडस्कायर तक ले जाना चाहती थी। और मालूम नहीं, उसने क्या क्या आगेके लिए सोच रखा था। यही तो आपसे कहता हूँ, वह बडे मजेकी लडकी है। जितने फँसनेवाले बेवकूफ घरमे आते हैं, किसीको आनेसे रोकती नहीं, उन्हें और आनेके लिए प्रोत्साहित करती है और उनका मज़ाक बना इस प्रकार

मज़ा लूटती है। इतने मज़ेकी लड़की आपने शायद ही और कहीं देखी होगी।"

"और उसकी माँ?" मैंने पूछा—"वह भी क्या नाद्या जैसी ही है?"

"जी नहीं। उससे ठीक उल्टी। आपने दोनोंके चेहरेसे ही पहचान लिया होगा। माँ जितनी गभीर है, लडकी उतनी ही चचल। नाद्या सम्भ्रान्त समाजका जितना ही मजाक उडाती है उसकी माँ उसे उतना ही पसन्द करती है। हमे कभी कभी सन्देह होता है,—कहीं वह अपनी माँको चिढानेके लिए ही तो इतने प्रकारके फितूर नहीं सोचा करती है!"

"तो फिर उसकी माँ वैसी दिलचस्प नहीं?"

"जी नही, वह भी अपने ढगके सिलसिलेमें काफी दिलचस्प है। नाद्या तो दूसरोंको जालमें फँसाकर स्वय उड़ जाती है, फँसे हुए लोगोंको बनाकर रखनेका काम तो उसकी माँ ही करती है। उपाधियोंकी तो उसके पास भरमार है। वह सब किसीको उपाधिसे विभूषित देखना चाहती है। अदनासे अदना आदमी भी उसके पास क्यो न पहुँचे, लॉर्डकी टाइटल मिलते उसे देर नही लगती। काउट, बैरन, जेनरल, सर, मेजरकी तो उसके पास भरमार है। मामूली मज़दूर जो पोचारा देनेके लिए घरमे जाता है ग्रैंड रोआएल इजिनियरकी पदवी पाकर बाहर निकलता है। हम लोग आसपासके लोग तो इसी पदवीके डरसे उसके पास जाते नहीं। वह अपने आप 'रानी' कहलाना पसन्द करती है। आप उसे 'नोवा जेमूलिया' (सदा बर्फसे ढका रूसी आर्कटिकका एक द्वीप—जहाँ आदमी नही रहते। रूसी नाम 'नोवा जेमूलिया' का अर्थ है 'नई जमीन') की रानी कह दे और फिर देखे वह चुम्बनोंके मारे आपका नाकोदम कर देगी।

"वह, मालूम नहीं, अपनी किस प्रकारकी दुनियामे रहती है। साधा-

रण मज़दूरोंसे हिलना-मिलना उसे पसन्द नहीं। अपने चारों तरफ संभ्रान्त समाज ही चाहती है। यदि यह समाज उसे नहीं प्राप्त होता तो जिस किसी समाजको सम्भ्रान्त मान अपनी कल्पनामे अपनेको उसके बीच देख खुशी होती है। नाद्याको तो बचपनसे ही 'साधारण समाज' के साथ मिलने देनेके वह खिलाफ है। जहाँ तक उससे बन पडता है अब भी उसे पार्कोंमे जानेसे रोकती है। क्योंकि उसे सन्देह होता है नाद्या अब भी साधारण समाजको सम्भ्रान्त बना डालनेके बजाय स्वयं ही अपनी कुलीनताको साधारण समाजके साथ मिला दे सकती है। आना वासिलियेवना इस सिलसिलेमे अपने सिद्धान्तकी बिलकुल पक्की है।"

हम लोग चलते चलते एक स्केटिंग रिंगके पास पहुँच गए थे। फाटकपर दिवालीके समान बिजलीकी बत्तियॉ जल रही थी। भीतरसे बाजे बजनेकी आवाज आ रही थी, लोग बर्फपर पॉवमे स्केट लगाकर दौड़ रहे थे। मेरे साथीने कहा—"खैर, अब मै स्केट करने जाता हूँ। आप अब तो उनके यहॉ जाया-आया ही करेंगे, उनकी मौजसे स्वय ही परिचित हो जायॅगे।"

"उनका जीवन बडा सुखी होगा।" मेरे मुँहसे निकल पडा। मुझे सर्दी लग रही थी और उनके घरका गर्म सोफा याद आ रहा था।

युवक हँस पडा—"स्वप्नके जीवनको यदि सुखी माना जाय तब तो वे अवश्य ही सुखी कहे जा सकते हैं, पर मुझे तो मालूम पडता है कि उन्हे वास्तविक जीवनमे सुख नहीं है, इसीलिए अपने अभिनयके जीवनको ही सच्चा मान अपनेको सुखी समझनेकी चेष्टा करती हैं। अभिनय करते करते उनका जीवन ही अभिनयमय बन गया है। रानी, डचेस, काउण्टेस आदिका पार्ट यादकर अपनेको वास्तवमे ही वही मानने लगी हैं। वे स्वय महसूस भी करती हैं कि यह सच नहीं है, फिर भी वह अपना प्रिय-सुन्दर मोह तोडना नहीं चाहती। यही मोह तो उनका सत्यानाश करेगा।"

वह दस्विदानिया (विदा) कहकर स्केट करने चला गया। उसकी बातें इतनी दिलचस्प थीं कि मैं सर्दी महसूस करना भी भूल गया।

३

कुछ चेहरे मुझे वास्तवमें धोखा देनेमें समर्थ हुए थे। नाद्याका बाहरी जीवन देखकर मैं उसे काफी सुखी समझता था। उसके घर कई बार गया और प्रत्येक बार प्रमोदकी नई नई सामग्री उसके यहाँ देखी। थोड़ा अधिक ध्यानपूर्वक देखनेपर मुझे सन्देह होने लगा। नाद्या स्वय ही बड़ी अद्भुत मालूम पड़ती थी। पहली दृष्टिमें उसका चेहरा चाहे जिस किसीको अत्यन्त ही सरल दिखलाई देता, पर फिर भी थोड़ा सन्देह रह ही जाता कि उसके पीछे अवश्य कुछ रहस्य छिपा है। उसके उतने आनन्दोल्लासके पीछे अवश्य ही कुछ रहस्य है—यह पता लगा लेना बहुत अधिक कठिन नहीं था।

साधारण लड़कियोंसे वह कुछ भिन्न थी। काफी घनिष्ठताके बाद उसकी हँसीका थोड़ा थोड़ा रहस्य मुझे ज्ञात होने लगा। अब मुझे भान होता, मानो उसकी हँसी मुझे ताना देकर कह रही है—

"मैं तुम्हें धोखा देनेमें समर्थ हुई। तुम्हारी आँखोंमें भी काफी धूल झोक चुकी हूँ, तुम मुझे पहचान नहीं सके। मेरी हँसीका, मेरा निजका रहस्य पहचान पानेसे अभी तुम कोसों दूर हो।"

एक दिन उसने अपनी माँकी उपस्थितिमें ही मुझे खुशखबरी सुनाई—

"साश्का, तुम्हें मालूम् है, मेरी शादी होनेवाली है। मैं दुलहिन सजूँगी। गलेमें मोतियोंका हार, हाथोंमें सोनेकी चूड़ियाँ, कानोंमें हीरे-जड़े कर्णफूल होंगे। मेरे कपड़े पेरिसकी काटके रहेंगे, बालोंमें फूलोंका सौन्दर्य स्वर्गकी अप्सराओंको लजाता रहेगा,—मैं परी,—परीसे भी अधिक सुन्दर बन ठनकर बैठूँगी। और मेरे बगलमें कौन होगा, जानते हो? जेनरल! दस हजार सैनिकोंको हाँकनेवाला जेनरल,—अपने कम्बलके

लबादेमे, दात उसके नकली होंगे, सर सफा चट, होठ खूब मोटे, आवाज फौजी, उम्र मुझसे सिर्फ तीन गुनी अधिक। बताओ तो, कैसा मजा रहेगा ? तुम्हे उसका खुशी नही। हमारी जोडी देखकर सारा मास्को..."

"नाद्या।" उसकी माने आँखें दिखलाते हुए कहा—"मैं तुझे मना करती हूँ, इस तरहका मज़ाक न उडाया कर।"

"मैं तुम्हारा मजाक तो उडाती नहीं। मेरी शादी मास्कोवालेको कैसी लगेगी, यही कल्पना कर देख रही हूँ।"

"मास्कोवालेसे हमे क्या लेना है ?"

"क्यो, मेरी शादीमे वे उत्सव नहीं मनायँगे ? मेरे जानते तो मेरी सहेलियाँ बहुत ही खुशी होगीं। हमारी जोडी देखकर हँसीके मारे उनके पेट फूलने लगेगे। विदेशोमे भले ही हो, किन्तु हमारी जैसी शादी सोवियत समाजमे तो देखनेको बहुत ही कम मिलती होगी।"

'सोवियत समाज'का नाम सुनकर आना वासिलियेवनाको स्वाभाविक ही चिढ हो जाती थी। उनका हृदय उस समय जल-भुनकर खाक हो जाता था। वे कहने लगीं—"सोवियतका इसमे कुछ आता-जाता नही, मैं एरिस्ट्रोक्रैट हूँ और रहूँगी। अपनी लडकीकी भी शादी ऐरिस्ट्रोक्रैटके साथ और ऐरिस्ट्रोक्रैटिक ढँगपर देखना चाहती हूँ।"

"ऐरिस्ट्रोकैटके साथ कैसे अम्मीजान! जेनरल तो कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर हें।"

"आज कलकी दुनियाको वह भली भाँति पहचानता है। यहाँ जीवित रहनेके लिए उसकी जरूरत पडती है,—वास्तवमे उसका हृदय ऐरिस्ट्रोकैटका है, वह एक नहीं हजार सोवियतके द्वारा भी नहीं बदला जा सकता।"

"तब तो साश्का, और भी मजा होगा। पुराने ढँगके अनुसार मैं उन्हे गिरजेमे घसीट ले जाऊँगी। पोप हमे आशीर्वाद देंगे, हमारे लिए खास सरमन पढा जायगा, बूढे-बूढ़ियोकी जमात हमें घेरे रहेगी,—वही

जमात तो मैं पसन्द करती हूँ ।"

"चुप रह पगली !" उसकी माँने आधा गुस्सा और आधा मखौल उडाते हुए कहा—"लोग सुनेंगे तो तेरा मज़ाक़ उड़ायेंगे ।"

"और तुम जो अंधेर रचने जा रही हो उसमे कोई मजाक नहीं, क्यो ?"

"जो भी हो, मैं तुझे जिन्दा जी मज़दूरिन नही होने दूँगी, चाहे इसके लिए हमे अपने आपकी कुर्बानी ही क्यो न करनी पडे ।"

यह मज़दूर और ऐरिस्ट्रोकैटका झगडा हज़ार चेष्टा करनेपर भी दोनोको एकमतपर नहीं ला सकता था । आना वासिलियेवनाकी आदत किसी विषयको लेकर अधिक झगडनेकी भी नही थी । सरमे भयानक पीडा हो आनेके भयसे वे उस स्थानसे टल जातीं, आज भी उन्होने ऐसा ही किया ।

वास्तवमे नाद्याको वह जेनरलके हाथ दे देना चाहती हो, ऐसी बात नहीं थी । पर कई कारणोसे उन्हे नाद्याकी शादी शीघ्र कर देनेकी चिन्ता लग गई थी । उसके उम्मीदवारोको छाँटते छाँटते अब केवल उनके सामने दो रह गए थे । एक जेनरल और दूसरे बैरन ख्वोस्तोव । ख्वोस्तोवकी उम्र कुछ कम थी । उन्होने अपनेको पोलैंडका भारी जमींदार बतलाया था और कहा था कि केवल नाद्याकी आँखोकी मारके कारण ही वह उतने दिनोसे अपना राजपाट छोड मास्कोमे छिपकर दरिद्रताके दिन बिता रहे थे । पता चलनेपर नाद्याने उन्हे भी एक दिन खूब बनाया था । कैसा वर उसे पसन्द आएगा, यह बतलाते बतलाते और अन्तमे उसका ख्वोस्तोवपर प्रयोग करते करते उनका चेहरा पेट कर बिलकुल बन्दर जैसा बना दिया था । वह भी शाम्पाञ्जीके ढाँचेका । ख्वोस्तोवने उसी दिनसे नाद्याकी आशा छोड दी थी । पर आना वासिलियेवनाको किसीको अपने घरसे उस प्रकार बना कर बिदा कर देना अच्छा नही लगता था ।

वह प्रौढा हो जानेपर भी अपनेको वैसी औरतोकी श्रेणीमे गिना

करती थी जो केवल प्रेम करने और किये जानेके लिए बनाई गई होती हैं। हॉ, कई युवकोंसे ठोकर मिल चुकी थी, इसी कारण थोड़ा स्वभाव भी बदल गया था। उसके लिए अब प्रेम भावुकताके कारण नहीं, बल्कि आवश्यकताके कारण जरूरी मालूम पड़ता था। अच्छे भोजनके अभावमें साधारण भोजन भी जीवित रहनेके लिए जैसे आवश्यक हो जाता है उसी प्रकारका आवश्यक उसका इन दिनोका प्रेम था। ख्वोस्तोवसे उसे निजके मामलेमे हताश होनेकी उम्मीद नहीं थी।

अब नाद्याके लिए ख्वोस्तोवके हट जानेपर उनकी दृष्टिमे विचार करने योग्य उम्मीदवार सिर्फ जेनरल मिखाएलोव बच जाते थे। उनके हजार छिपानेकी चेष्टा करने पर भी नाद्याको इस बातका पता चल गया था। शायद जेनरलने स्वय ही इसका इशारा किया था। इसके लिए उन्होने कई प्रकारके भय भी दिखलाये थे। वे साम, दाम, दण्ड, विभेद,—चारोसे काम लेना जानते थे।

इधर पचवर्षीय योजनाके कारण समूची सोवियत जनताने तो अपना खर्च कम कर लिया था पर पुराने बचे हुए ऐरिस्ट्रोक्रैटोके लिए ऐसा करना मुश्किल हो गया था। उनमे कितने ऐसे थे जो सिद्धान्ततः अपना खर्च कम करनेके पक्षमे नहीं थे। ऐसे ही लोगोमें आना वासिलियेवनाकी भी गिनती थी। चाहे उन्हे कितना भी, किसी प्रकारका भी त्याग क्यों न करना पडे अपने रहन-सहनका दर्जा ओछा करनेके पक्षमे वे नहीं आ सकती थीं। इन मामलोमे जेनरल मिखाएलोव उनके बहुत ही बड़े सहायक साबित हो रहे थे। वे अपनेको जेनरल नामसे पुकारा जाना पसन्द करते थे और मालूम नहीं कहॉतक यह बात सच थी। कहा करते थे कि वे रिजर्व फोर्सके जेनरल हैं पर उनका वास्तविक कार्य मास्कोके एक बड़े स्टोर-घरमे था। उस स्टोर-घरके वे ही संचालक थे। पूँजी अवश्य ही सोवियत सरकारकी थी, पर उसे अपनानेके लिए मिखाएलोव जैसे लोगोमे न तो हिचक ही होती थी और न उसे वे अपनी नीतिकी

परिभाषाके अनुसार किसी दृष्टिसे हीन माननेको तैयार थे।

उनके लिए आना वासिलियेवनाके ऐश-आरामके सामान जुटाना भारतके धनी सेठ साहूकारोंका गायोंको मालपुआ खिलानेके जैसा धार्मिक कार्य और कर्त्तव्य बोध होता था। स्टोरकी सबसे नवीन और सुन्दर चीजे आना वासिलियेवनाके यहाँ पहुँचती थीं। जेनरलने इसका इन्तजाम इस चातुरीसे किया था कि तीन साल बीत जानेपर भी इसकी भनक किसीके कानोंतक नहीं पहुँच पाई थी। पार्टीमे उनकी इतनी धाक थी कि यदि कोई जानता भी होता तो वह उस ओर इशारा करनेकी हिम्मत नहीं कर सकता था।

अब जबसे नाद्याका उन्होंने कुछ दूसरे प्रकारका रुख देखा तो वे आना वासिलियेवनाका सामान जुटाना बद कर देना चाहते थे। आनाके लिए काम करनेसे बढकर हतकइज्जती नहीं हो सकती थी, इसलिए उसका तो सवाल ही नहीं उठ सकता था। जिस ऐशआरामकी वे अभ्यस्त हो गई थीं उसके बिना भी जीवित रहना मुश्किल था। अब अन्तमे उनके सामने दो सवाल थे: या तो नाद्याको जेनरलके हाथ सौंपना और नहीं तो कहीं काम कर अपनी रोजी चलाना और साथ ही सब तरहके ऐशआरामसे बाज़ आना। उन्हें बहुत सोचने-विचारनेपर नाद्याकी ही 'कुर्बानी' मुनासिब जँची।

इस विषयमे शादीकी चर्चाके पहले माँ-बेटीके बीच काफ़ी बहस-मुबाहसा हो चुका था। नाद्या जेनरल मिखाएलोवका नाम सुनते ही जल भुनकर ख़ाक हो जाया करती। उसने अपनी घृणा व्यक्त करनेके लिए उनका नाम ही 'यूडा' रख दिया था जिसका अर्थ उसकी समझमे उसूलको न माननेवाला व्यक्ति था। अपनी माँको भी वह थोडी घृणाकी दृष्टिसे देखने लगी थी और एक बार कह भी डाला था—

"अम्मा, तुम्हारी आदमियत उस यूडेने ही नष्ट की है, उसीने तुम्हें भ्रष्टा बना दिया है।"

अपनी लड़कीके मुँहसे कभी भ्रष्टा कहलानेकी उमीद आना वासि-

लियेवना नहीं रखती थी। उनका चेहरा लाल हो आया। आँखे उनके स्वभावके विपरीत बडी बडी बन गई। वे थोड़ा दाँत पीसने भी लग गई थीं। उन्होंने कहा—" हाँ, आज तुम्हारे सामने भी ऐलान करके कहती हूँ,—मैं भ्रष्टा हूँ। लेकिन इससे क्या हुआ ? यदि मैं आज भ्रष्टा नहीं होती तो आज तू उस गद्देपर बैठकर बाते नहीं करती, तेरे बैठनेके लिए टूटी कुर्सी भी नहीं जुटती, तेरे शरीरपर यह लकदक नहीं होती, तू अपनेको चीथड़ोंमे लपेटा करती, इतना ही नहीं, सुबह चारपाईपर दस बजे तक पड़े पडे तुझे स्वप्न देखनेका मौका नहीं मिला करता। चार बजे सुबह ही कारखानेका बिगुल सुन दौडना पडता, आधी रातको ही उठना पडता, रात-रात भर जागना होता और जरा-सी झपकी, जरा-सी देर होनेपर उस कामसे भी निकाल दी जाती, तुझे सडकपर भी शरण नहीं मिलती। आज जो इतनी ऐंठकर बाते कर रही है, वे तेरे मुँहपर नहीं होतीं।"

" नाराज क्यो होती हो माँ!" नाद्याने अपनी माँका गुस्सा ठँडा करनेके लिए फ्रेंच तरीका अपनाया—" मैं तो तुम्हारा अपराध नहीं बतलाती, अपराध तो उस यूडेका है जिसने...।"

" और मैं नहीं सुनना चाहती। अपराध उसका नहीं, अपराध आजकल राज्य करनेवालोका है जिनके भीतर दयाका नामोनिशान नही; जिनके लिए आदमियोके आँसुओंकी कीमत नहीं।"

" यह कैसे ?"

" उनकी क्रान्तिने ही मुझे भ्रष्टा बनाया है। मेरा सब कुछ छीन लिया है। मैं और औरतोंकी भाँति नहीं जो स्वेच्छापूर्वक अपनी मौजके लिए भ्रष्टा बना करती हैं। मुझे आज भी अपने जीवनकी वह मोड़ याद है जहाँसे मैं इस रास्तेपर आई जिससे तू भ्रष्टा कहती है। हम लोगोके घरके सारे सामान कम्युनिष्ट सैनिक जबरदस्ती छीन कर ले गए, खानेका सामान भी नहीं छोडा। इसके बदले कहा—होटलोमे जाकर जहाँ सब लोग खाते हैं खा लो। तुझे तो मैं अपनी सहेलीके यहाँ खारकोव भेज

चुकी थी। मेरे पास रह गये थे दो प्यारे कुत्ते। उन्हे मैंने बचपनसे पाला था। उनके प्रति मुझे इतना मोह हो गया था कि मैं स्वय बिना खाये रह सकती थी पर उन्हे भूखके मारे भूँकता नहीं देखना चाहती थी। साधारण भोजनकी उन्हे आदत नहीं थी। राज्य-द्वारा खोले गये होटलोका भोजन उन्होने सूँघा तक नही। मैं उन्हे लेती हुई सीधे लेनिनके पास गई। मैं उतने बड़े घरानेकी औरत खुद लेनिन जैसे मजदूरके पास गई। मेरी ऑखोमे ऑसू भर आये थे। लेनिनने उन्हे देखा। मैंने दो दिनोसे कुछ नही खाया था, इसे भी उसने परख लिया। मेरे दोनो कुत्ते भी मेरे साथ थे, भूखसे छटपटा रहे थे। अपने बारेमे तो मैं नहीं बोल सकी लेकिन कुत्तोके बारेमे कहा, तो लेनिनने हँस दिया। मेजपरकी नही, फेकी हुई रोटीका टुकडा जो उस समय आदमी ढूँढ ढूँढकर खाते थे उसपर उन्हे जीवित रखनेके लिए कहा। दयाका तो नाम नही। जानवरोको इस प्रकार पालकर मार डालना कितना पाप है! मेरा भी लेनिनने कुछ ख्याल नही किया। कोई सुनवाई नहीं। लुटेरोके सरदार कब सुनने लगे! उसका हुक्म कि मैं होटलोके खानेपर जीवित रहूँ, आगेके लिए भी कायम रहा। मैं थी बडे घरकी। उस प्रकारका खाना देखा तक नहीं था, छूनेकी तो बात ही दूर रही। अपने घरमे आकर मैंने दरवाजा बंद कर लिया। कुत्ते मेरे सामने छटपटाकर मर गये। मैंने भी आत्म-हत्या कर लेनी चाही पर साहस नहीं हुआ। ख्याल आया तुम्हारा। तुम्हारा सारा जीवन। ये मजदूर भूखे भी जी सकते हैं, उन्हें अक्सर भूखे रहनेकी कितनी ही पुश्तोसे आदत पड़ गई है। सर्दी, भूख उन्हे हम लोगो जैसी नहीं सताती। लेकिन हमे ईश्वरने सोनेके चम्मचोसे दूध पिलवाया था। हमारा बसर कैसे मजदूरोकी तरह हो सकता है? उससे तो मर जाना कहीं अच्छा। तू मुझे भ्रष्टा कहती है, लेकिन यदि मैं भ्रष्टा नही होती तो तुझे भी मेरी ही तरह भूखे, सर्दीके मारे जमीनपर पड़े रहना पड़ता। शायद तू तो उतनी तकलीफ बर्दाश्त करनेके पहले

ही हृदयकी गति बंद हो जानेके कारण मर जाती। तुझे मजदूरिन बननेसे बचानेके लिए भ्रष्टा होनेके सिवा और क्या चारा मेरे सामने इन क्रान्ति-कारियोंने रख छोडा था ?"

वे नाद्याकी उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगीं। शायद बोलते-बोलते कुछ थक भी गई थीं इस लिए थोडा विश्राम ले लेना भी आवश्यक था। पर नाद्याने कहा—"कहती जाओ माँ, आज तुम्हारी बातें सुनते सुनते और भी सुननेकी इच्छा हो रही है।"

"मेरा कहना क्या ठीक नहीं?"

"ठीक ही है। आगे कहो।"

"औरतें तो सिपाही नहीं कि लूट मारकर अपना गुजारा चलाये। उनमें तो विदेशोंमें जाकर कारखाना खोल, ऊँची-ऊँची नौकरियाँ कर, जमीनपर कब्जा कर धनी बने रहनेकी ताकत नहीं। रूसी औरतोंके लिए देश छोड़ना भी क्या लेनिनने संभव रक्खा था? फिर मेरे पास क्या था जिसके आधारपर मैं अपनेको, अपने धनी मिजाज आरामके जीवनको आबाद रख सकती? हम औरतोंके पास उसके लिए अपना शरीर देनेके सिवा और क्या बच गया था? मेरे सामने दो ही रास्ते थे, या तो सारा जीवन—अपनी जवानीसमेत दरिद्रतामें बिताना पडता या अपनी आँखोंसे लुभा-लुभाकर लोगोंको अपने यहाँ बुला उन्हें अपना शरीर देना होता। मेरे समान परिस्थितिमें तूने भी ऐसा ही किया होता नाद्या।"

नाद्या रो रही थी। वह कुछ उत्तर नहीं दे सकी। उसकी माँकी आँखोंमें आँसू नहीं थे पर नाद्याको दिखलानेके लिए ले आनेकी चेष्टा कर रही थीं। उन्होंने अपना गला रुँधा हुआ-सा बनाया। इस कलाका उन्होंने बहुत पहलेसे अभ्यास किया था और कहा—"अब हमारे सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं नाद्या। जीवन जैसा कटता है उसे उसी ढर्रेपर चलने देनेमें तेरा भी कल्याण है।"

४

सारा मास्को ही उन दिनो गैर-वर्गके लेगोपर छीः छीः थू-थू करने लगा था। उसकी दृष्टिमें शोषणद्वारा दूसरोकी मेहनतपर जीनेवाले लेग इतनी निम्न श्रेणीके थे कि उन्हे मनुष्य नहीं गिना जा सकता था। कितने आदमी तो ऐसे उग्र बन गये थे कि उनकी ओरसे ऐरिस्ट्रोक्रैटोसे सम्बन्ध रखते हुए विभिन्न तरहके प्रस्ताव पेश होने लगे थे। वे प्रस्ताव बड़े ही निराले ढंगके थे। एकमे यह राय प्रकट की गई थी कि मास्कोके मुख्य चौराहोपर ऐरिस्ट्रोकैटोका अजायबघर बनवाया जाय और उनके भीतर ऐरिस्ट्रोक्रैट अपनी जारशाहीके जमानेकी लक-दकमे बैठाए जायँ। प्रत्येक पिंजड़ेपर उनकी तारीफ रहा करे—'मनुष्य-शोषक जतु'—'समाजको नीचे ले जानेवाले खूँखार प्राणी'—'रुपयोंके गुलाम'—'मनुष्य-हिसक जानवर' इत्यादि।

इस प्रकारके कई प्रस्ताव वास्तवमे सोवियत सरकारके पास भेजे जानेवाले थे। मजदूरोंके भीतर शोषकोंके प्रति घृणा और प्रतिशोधकी भावना जाग उठी थी। इस मौकेपर भी लेगोंके भावोका समुचित रूपसे नियंत्रण पार्टीने ही किया। उसीने लेगोंको सुझाया कि जिनको वे हिंसक जन्तु बतला रहे हैं उनके भीतर भी मनुष्यताकी थोड़ी-सी बू सभव है, लेग उसे जागृत करनेकी चेष्टा करे। ऐसी हालतमे उदारता और क्षमाकी भावनासे काम करना चाहिए। इतनी रोक थाम करते रहनेपर भी सोवियत समाजका ज़ारशाहीके जमानेके बचे हुए ऐरिस्ट्रोक्रैटोको धिक्कारना बद नहीं हो रहा था।

इसी लहरके कारण आना वासिलियेवना और नाद्याके जीवनमे भी भारी परिवर्त्तन आ गया था। उन लेगोंके खानदानका वास्तविक पता सोवियत सरकारको लग गया था। ये रिबुरिंस्कीके परिवारके थे। यह रिबुरिंस्की परिवार ज़ारशाहीके जमानेमे मास्कोके बहुत धनाढ्य परिवारोंमें

एक था। उनके पन्द्रह-बीस कपडेके कारखाने थे और हजारो बीघे जमीनपर उनका कब्ज़ा था। मास्कोकी बहुत सी दूकानोमे उनकी पूँजी थी। उनकी आय करोडोकी थी। जितने लेगोंके शोषणपर यह परिवार धनाढय बना था और आगे बनता जा रहा था उनके भीतर इस परिवारके प्रति बहुत ही अधिक प्रतिशोध लेनेकी भावना जगी थी क्योंकि खिुशिंस्की अपने मजदूरो और किसानोंके प्रति अत्याचारके लिए बहुत पहलेसे ही प्रख्यात हो चुके थे। क्रान्तिके बाद ज़ारशाहीके जमानेके जो इस प्रकारके शोषक साइबेरिया भेजे जानेवाले थे, उनमें खिुशिंस्की परिवारका नाम सबसे आगे था, पर वे कई टुकडोमे बँट गए थे और कितने देशका बहुत-सा धन अपने साथ लेते हुए विदेश पहुँचनेमे भी समर्थ हुए थे। उस समय आना वासिलियेवना और उनकी छोटी लड़की नाद्याको मिखाएलोवने ही छिपा रखा था। आनाने स्वय डरके मारे इस बातकी चर्चा किसीसे भी नहीं की थी और नाद्याको भी इसका पता नहीं था।

उनके असली स्वरूपका पता चलनेके बाद कई आदमी इन लेगोको वास्तवमे साइबेरिया भेज देनेके पक्षमे थे, पर सोवियत सरकारने वैसा नहीं किया। उनके ऊपर कडी दृष्टि रखे रहनेका आदेश देकर ही उन्हें मुक्त कर दिया गया। इस वर्तावका माँ-बेटी दोनोपर ही दो तरहका असर हुआ। नाद्याने तो आगे भी नाट्य-कलाके स्कूलमें पढ़ते रहना स्वीकार किया पर आना वासिलियेवनाको जितने भी प्रकारके काम सोवियत सरकारकी तरफसे दिये जानेके प्रस्ताव लाये गये उन्होंने सबको ही खारिज किया और स्पष्ट शब्दोंमे बहुतोंके सामने घोषित किया—"ऐंठके ही बल मैं जीती हूँ। मैंने जिस उच्च खानदानमें जन्म लिया है उसकी चाल हमेशासे रस्सीकी तरह रहती चली आई है। रस्सी जल जाती है किन्तु उसकी ऐंठन नहीं जाती। मुझे ईश्वरने मजदूरी करके खानेके लिए नहीं गढा है। जो गढे गए हो वे मजदूर बना करें पर मैं...मैं किसी भी तरहकी मजदूरी नहीं कर सकती।"

इसके साथ ही अपना आराम-पसन्द जीवन भी छोड़नेके लिए वे तैयार नहीं थीं। इसके लिए अपने चरित्रको झोंक देनेमें उनके भीतरकी हिचक बहुत पहले ही दूर हो गई थी। वे अब खुले आम और नाद्याकी उपस्थितिमें भी कहा करतीं—"हमारे वर्गवालोंमें पहले आराम और फिर उसके बाद चरित्रका स्थान है।"

सोवियत समाज इसे माननेके लिए तैयार नहीं था। नाद्या भी नहीं। वैसे आचरणको जब फिर एक बार उसने भ्रष्ट साबित करनेकी कोशिश की तो उसकी माँने गुस्सेमें आकर कहा—"पहले अपनी सम्हाल फिर मुझसे बातें कर। तेरे अपने बापका ही कुछ ठिकाना है? तू असलमें किसकी बेटी है, तुझे पता है?"

"रहने दो!" नाद्याका चेहरा लाल हो आया था—"यह तुम्हारे ही जाननेकी बात है और उसका पता अपने तक ही रहने दो।"

"मैं खुद भी क्या जानूँ। हो सकता है तू किसी जेनरलकी होगी, हो सकता है किसी काउटकी और मुझे ऐक्टरोंका भी शौक था। तू उनकी भी बेटी हो सकती है।"

यह निर्लज्जता नाद्याके बर्दाश्तके बाहर हो गई। इसने वास्तवमें उसके मर्मस्थलमें आघात पहुँचाया। वह बिंधी हुई हरिणीकी भाँति वहाँसे उछलती घरके बाहर चली गई।

५

सोकोलनिकोव पार्कमें उस दिन मैं बहुत सबेरे ही पहुँच गया था। अकेले स्केट करनेमें मन नहीं लग रहा था। चारों ओर परिचितोंको ढूँढनेके लिए आँखें फेर रहा था। चायखानेमें मुझे आना वासिलियेवना बैठी हुई मिलीं। इधर कई दिनोंसे उनसे देखा देखी नहीं हुई थी। मैंने उन्हें नमस्कार किया। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया। इधर-उधर देख सकोचवश सहमा हुआ मैं वहाँ गया। उनके सामने एक और व्यक्ति

बैठा था। उसकी पीठ मेरी ओर होनेके कारण मैंने उसका चेहरा नही देख पाया था। उसे दिखलाते हुए आना वासिलियेवनाने मुसकुराते हुए जल्दीसे मेरे कानमे कहा—"मेरे नये स्वामी पोलैंडके बैरन ख्वोस्तोव।"

ख्वोस्तोवका नाम पहले भी सुन चुका था, फिर भी आना वासिलियेवनाकी दोनो ही बाते मुझे नवीन जान पडीं। उन्होने 'शादी' की थी यह मुझे मालूम नहीं था और ख्वोस्तोवका चेहरा भी विशेष रूपमे नवीन देखा। वह चेहरा बहुत कुछ विदूषको जैसा था। उसे देखकर हँसी रोक पाना स्वाभाविक ही बडा कठिन हो रहा था। 'शादी' की खुशीका बहाना कर मैं जोरोसे हँसने लगा।

आना वासिलियेवनाने अपना आगेका कार्यक्रम बतलाया। अपने 'नये पति'के साथ उन्होने पोलैंड चला जाना तय किया था। वहाँके आराम, सोवियत यूनियनके दुख और कई अंशोमे यहाँके असभ्य जीवनका उन्होंने पूरा-पूरा खाका मेरी आँखोंके सामने खींच देनेका प्रयत्न किया और अतमे पूछा—"मैं कितनी सुखी होऊँगी, आप क्या उसका अन्दाज लगा सकते हैं?"

मैं चुप रहा। "लेरमतोवने अपनी जवानीमें कहा था"—उन्हे रोमैन्टिक रूसी कवियोकी बहुत-सी कविताये हमेशा होठपर-ही रहा करतीं—"विदा गंदे रूस! विदा...।"

पेरिसियन ढंगसे उन्होने 'ओरिवुआर' के जैसा 'विदा' उच्चारण किया और कहा—"जिस दिन मैं भी इस गदे रूससे उसी प्रकारकी विदाई लूँगी, उस दिन मैं कितनी सुखी रहूँगी!"

"वे दिन अधिक दूर नहीं आना वासिलियेवना," ख्वोस्तोवने कहा—हम लोगोको चाय देनेवाला वहाँ चाय देकर खडा हो गया था। पता नहीं उसे आना वासिलियेवनाकी बातें उतनी दिलचस्प मालूम हुई थीं अथवा ख्वोस्तोवका चेहरा जिसपर वह इस समय गौरसे देख रहा था। हठात् उसने ख्वोस्तोवकी ओर हाथ बढ़ाते और मुस्कुराते हुए कहा—

"देखो तो, मैं उसी वक्तसे सोच रहा हूँ और तुझे ही नहीं पहचान पा रहा था। कोल्या, यह बैरनकी उपाधि तुझे कब मिली ? अहा ! शादीके बाद ही तो यह उपाधि मिला करती है। पर देख तो, तूने शादी की और उसकी खबर तक हमें नहीं दी। क्या आपसमें भी तुझे यही करना मुनासिब था ! ठहर, और साथियोंको भी बुला लाता हूँ।"

आना वासिलियेवना अवाक् हो सुन रही थीं। चायवालेपर थोड़ी-बहुत घुड़की भी दिखला रही थीं पर उनका ध्यान ख्वोस्तोवपर था। ख्वोस्तोव स्वयं लज्जाके मारे गड़ा जा रहा था। उसका यह शरमाया हुआ चेहरा और भी अधिक हँसानेवाला बनता जा रहा था। चायवालेके और साथियोंको बुला लानेके लिए चले जानेपर वह एक बार उठकर वहाँसे भाग भी जाना चाहता था पर कोटका पॉकेट मेजसे अटक जानेके कारण एक काण्ड हो गया। चायके गिलास लुढ़क गये जिससे आना-वासिलियेवनाके कपड़े गीले हो गये। वे 'फुई फूई' कर एक किनारे जा खड़ी हुई। गिलासोंके टूटनेकी आवाज़से चौंककर स्वयं ख्वोस्तोव चीख उठा था। ठीक इसी समय चायखानेमें काम करनेवाले चार-पाँच आदमियोंने उसे पकड़कर ऊपर उछाला। वे एक साथ बोल उठे—
"मास्को होटलके दरवान अब बैरनकी उपाधि पानेवाले हमारे साथी ख्वोस्तोवकी शादीके उपलक्षमें तीन बार—हिप—हिप हुर्रे !..."

आना वासिलियेवना होठोंको दाँतोंके नीचे दबाकर पत्थरकी मूर्तिकी तरह खड़ी थीं। टलनेके पहले उन्होंने सारी उपस्थित जनताके सामने इस प्रकार दाँत पीसे कि उनकी ऐंठकी प्रत्येक भाव-भंगीसे सब लोग परिचित हो गए।

उपस्थित लोगोंमें कानाफूसी आरम्भ हुई—"ये कमेडियन (हँसाने-वाले) हमारे बीच आ बैठे थे। बड़े ही मजेके जीव हैं।"

लोगोंका हँसना देरतक बंद नहीं हो रहा था।

नाद्या

१

स्केटिंगके सिवा यदि और कोई चीज़ इन दिनो मेरा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित करनेवाली थी तो वह थी नाद्या। इधर कई सप्ताहसे उसका चेहरा उदास देखा करता था। यह मुझे खटकता था। मास्कोके वायु-मडलमे यह विशेष प्रकारकी उदासी बहुत ही कम दीखती, इसलिए उसकी ओर और भी अधिक ध्यान खिचा करता। न जाने क्यो मेरी आन्तरिक इच्छा उसे भी हॅसती हुई देखनेकी हो रही थी। उसका इस प्रकारसे उदास रहना सिर्फ अपने निजके वायु-मण्डलमे नही बल्कि मुझे सारे मास्कोके वायु-मडलमे कमी जैसा दीख रहा था।

उससे उदासीका कारण पूछना भी बेकार-सा ही था। वह इसे मुझसे छिपाये रहनेका भी भरपूर प्रयत्न किया करती पर फिर भी कभी कभी दिलकी ऑधी रोकना उसके लिए असम्भव हो जाया करता।

एक दिन स्केटिंगके लिए जानेके पहले रास्तेमे उसके घरसे होता गया। सोचा था शायद स्केटिंगमें उसका दिल बहले। वह उस दिन घरमे अकेली मिली। मैं बहुत देर तक उसके पास बैठा रहा। वह बार बार याद दिलाती—" आज स्केटिंगमें बडी देर कर रहे हो। "

" तुम्हारे चेहरेने स्केटिंग भुला दिया है। तुम दो तीन सप्ताहसे बडी विचारशील बनती जा रही हो। "

"यह औरतोका स्वभाव ही होता है"—उसने रूखी हँसी दिखलाते हुए कहा—"मौसिमके हिसाबसे हम लोग भी बदला करती हैं। देखते नहीं आज बाहर कैसा कुहासा छाया है।"

वह देर तक इसी ढगकी बाते करती रही। जो बाते उसे सता रही थीं उसकी चर्चा वह जान-बूझकर नहीं छिड़ने देती। बातचीतका तॉता भी नहीं टूटने देती। मेरे चलनेके समय उसने कहा—"सुबहको जैसा विचार लेकर मैं जगती हूँ, सारा दिन मेरा वैसा ही बीतता है। जिस दिन कोई वैसा खास विचार नहीं रहता मैं बिस्तरेपर लेटी लेटी किताबे पढा करती हूँ। डेढ दो घण्टे तक पढती हूँ और उसके ही अनुसार मेरा सारा दिन बीतता है। कल शेक्सपियरका ओथेलो पढ रही थी इस लिए सारे दिन डेस्डेमोना बनी रही। आज दस्तयेव्स्की पढा है इस लिए नास्तास्या फिलिपोवना बनने जा रही हूँ पर वह ठीक उतर नहीं रहा है। देखूँ कल कैसे दिन आरम्भ होता है। जो भी हो यदि मौसिम बदला तो तुम मुझे भी बदला हुआ पाओगे।"

दूसरे दिन वह घरपर थी ही नहीं। एक सप्ताह तक गायब रही। मॉको जाते समय खत लिख दिया था कि मैं सहेलियोंके साथ मन बहलानेके लिए गॉवोंमे जा रही हूँ। मॉके पास जानेके पहले मेरे घर आई और पहली बात सुनाई—"आज किसानोका मुँह देखकर उठी हूँ इसलिए ऐसी दीखती हूँ। जरा आइना तो देना।" शीशेमे थोडी देर देखनेके बाद बोली "नहीं, यह चेहरा तुम्हे भी पसन्द नही आयगा। अभी आती हूँ।"

पासके नाईके यहॉसे खूब बाल सजाकर पाउडर लिपस्टिक लगाकर फिर घरके शीशेमे चेहरा देख कर कहने लगी, "हॉ यह ठीक है।"

इसके बाद उसने अपनी कहानी कह सुनाई। पिछले सप्ताह उसने अपनी परिस्थितिपर खूब गंभीरतापूर्वक विचार किया था। जितने उपन्यास और नाटक वह जुटा सकी लाकर उसने पढे—नये पुराने सब तरहके।

उसे अपनी तरहकी परिस्थितिमे पड़े हुए बहुतसे चरित्र मिले। उनमे कई-की नकल करनी उसने ठानी। एक उपन्यासमे उसने पढा था—लडकी ऊबकर जंगलमे चली जाती है और चिल्लाती है—"बचाओ "बचाओ," उसकी पुकार सुन साक्षात् भगवानका कलेजा पसीज जाता है और आकर वे उसे उबार लेते हैं। दूसरीको एक अज्ञात अपरिचित युवकने बचाया था, शायद वह किसी राजा या धनी सेठ साहूकारका लडका था जिसके पास दोनो हाथोसे उस लडकीके लिए लुटा सकनेके लिए अगाध धनका खजाना पड़ा था। तीसरीको स्वय ही जगलमे किसीका छूटा हुआ खजाना मिल जाता है और वह सारी जिन्दगी सारे ससारको अपने यौवन और धन दोनोसे ही ललचाती रहती है। नाद्या जंगलमे गई सही पर न तो उसे खजाना मिला, न राजाका लड़का और न भगवान। अठारहवीं शताब्दीके उपन्यासोने उसे शरण नहीं दी।

अब उसने उन्नीसवीं शताब्दीकी धनी घरके लडकोको पढानेवाली मास्टरनी हो जाना सोचा। वैसी मास्टरनियाँ धनी घरके छोटे सरकारका कलेजा चुरा लेनेमे समर्थ होती हैं और अन्तमें पटरानी बन जाती हैं। इसका भी मौका उसके लिए सोवियत यूनियनमे खोजने पर भी न मिला। यहाँ तो वैसे धनी घर ही आबाद नही रहे। किसी पादरीकी लिखी किताब पढ उसने 'नन' हो जाना ठाना, पर सोवियतमे एक तो उसकी सुविधा नहीं और दूसरे नाद्याका स्वभाव उस ननके शुष्क जीवनको कल्पनामे भी बरदाश्त नहीं कर पाता।

उसने कारखानेमे काम करनेवाली अथवा किसानकी लडकी हो जाना सोचा। कारखानेके फाटकपर देर तक लड़कियोका चेहरा ध्यानसे देखती रही। वहाँसे चीखती हुई भागी—"ये तो परिश्रम कर अपनी जवानी नष्ट कर रही हैं।" किसानके घरमे कुल दो घटे टिक सकी। वहाँ उसकी परिभाषाके अनुसार लोगोको पहनने खाने बोलनेकी तमीज

नहीं। इससे भी अधिक—उनके भीतर भावुकता नहीं, सोचनेकी शक्ति ही नहीं।

अपने ढर्रेके सिवा और सब लोगोका जीवन उसे नीरस दिखलाई दिया। पर अपने जीवनसे भी उसे एक प्रकारका असंतोष था! क्या करे, कुछ तय कर पाना उसके लिए असंभव हो रहा था।

घरसे भाग कर भी उसने देख लिया था, उससे भी समस्या हल नही हो सकती थी। विदेशमें जाकर जीवन व्यतीत करना चाहा; पर उसे भी तो वह स्वय आँखो देख चुकी थी। दूसरे देश तो सोवियत ससारकी अपेक्षा कहीं अधिक इस मामलेमे गये गुजरे थे। सोवियतमे तो कमसे कम जो औरतें हुनर जानती हो और उस प्रकारके श्रमद्वारा समाजको सहायता पहुँचाती हुई अपना विकास करनेकी इच्छा रखती हों उनके लिए उसकी गुंजायश थी; दूसरे देशोमे तो साधारणतया विभिन्न रूपमे वेश्या-वृत्तिके सिवा और कोई चारा नहीं रह जाता।

उसने बहुतसे उपन्यासोमे पढा था वेश्यावृत्तिद्वारा औरतोंने अपना बाहरी जीवन भले ही आमोद-प्रमोदमें पूर्ण बना लिया हो पर अपनेको सुखी कभी बना नहीं पाईं। उसके सामने अपनी माँका ही उदाहरण था। उस दिन मेरे घरसे जाते जाते उसने कहा—"मेरा आगेका जीवन सुखी होगा या दुखी उसकी परवाह नहीं। अब मैंने वास्तवमें वैसा महान् रास्ता पकडना तय किया है जो हमारे जैसी लड़कियोके लिए हमेशाके लिए आदर्श बना रहेगा।"

२

नाद्या जैसी प्रवृत्तिवालोंका जीवन दुखी रहनेका एक विशेष कारण था। सोवियत समाज जिस प्रवाहमे बहता जा रहा था उससे उन्होंने अपनेको अलग कर रखा था। जिसकी सोवियतवाले आराधना किया करते उसी श्रमको ये नीची दृष्टिसे देखा करते।

इसमें उनका निजका उतना कसूर नहीं था जितना उस समाजका जिसके प्रतिनिधिस्वरूप वे इस समय भी सोवियत यूनियनमें बच गये थे। धनने उनके माता-पिताकी मनुष्यता जहरीली बना दी थी और इसी जहरका असर इतने दिनोंके बाद भी दूर नहीं हो रहा था।

जेनरल मिखाएलोवकी सहायता बन्द हो जानेके बाद उनकी अवस्था दिनोदिन खराब होने लगी। नाद्या मॉसे बहुत कुछ झगड़ कर थियेट्रिकल सोसायटीमे भर्ती हो गई थी जहॉसे उसे साधारण रूपसे खर्च चलाने-भरकी आय हो जाती थी। पर यह बात न तो आना वासिलिएवनाको मान्य थी और न वे उतने कम खर्चमे अपनेको जिन्दा रखनेके लिए तैयार ही थीं। रूसी लोगोसे उन्हें आन्तरिक घृणा हो गई थी और उनमे बहुत कम ही ऐसे मिलते जिनसे उनका मतलब सध सकता था। वे अब केवल विदेशियोकी खोजमें रहा करतीं। इन विदेशियोसे उन्हे विदेशी रुपये मिलते जिनसे टोर्गसीनसे सामान खरीदा जा सकता था। जो सामान विदेशी पैसेसे एक आनेमे टोर्गसीनमे मिलता वही उन दिनों और दूकानोमें रूसी सिक्केसे तीन रुपयेमे भी मुश्किलसे प्राप्त होता।

कभी कभी ये विदेशी विशेष कर यात्री आना वासिलियेवनाका घर देख जाते। नाद्यासे भी यह बात छिपी नहीं रही। उसने और कोई चारा न देख आत्म-हत्याकी धमकी दे मॉको सड़कपर जानेसे रोकना चाहा।

इन दिनों नाद्या जितना अधिक उपन्यास और नाटकोके पन्ने उलटती उसकी समस्याऍ उतनी ही अधिक जटिल बनती जातीं। कुछ ठीक ठीक नतीजे पर पहुँचना उसके लिए असम्भव हो रहा था। मुझे नाद्या और उसकी मॉको देखकर अनायास ही 'बेजप्रिजेर्नियो'की याद आ जाती। शायद इसका कारण यह था कि दोनोंको ही मै पुरानी दुनियाका अवशिष्ट माना करता। उनका जीवन पूँजीवादी समाजने अधिक

लापरवाही दिखला कर नष्ट किया था और इन ऐरिस्ट्रोक्रैट्सका इनके प्रति बहुत अधिक परवाह दिखलाकर—पर नष्ट हुई थी मनुष्यता दोनोकी ही। सोवियत सरकारद्वारा बेजप्रिजोर्नियोकी समस्या हल होते देख चुका था। उन्हे नये जीवनका रास्ता पकडते, समाजोपयोगी कार्योंमे लगते, अपने भीतरकी मनुष्यता फिरसे जाग्रत करते देख चुका था। मास्को आनेके बाद पुराने जारशाहीके जमानेके ऐरिस्ट्रोक्रैट्सकी समस्या देखने लगा था पर उसके सुधारका कोई रास्ता है या नहीं, सोवियत सरकारकी उनके विषयमें क्या नीति रहती है आदि बाते अभी भी देखना बाकी था। हॉ, इतना अवश्य समझ रहा था कि सोवियत समाजके लिए यह ऐरिस्टोक्रैसी एक गदगी अवश्य रह गई थी जिसे यदि दूर नहीं कर दिया जाय तो आगे उसके विषके रूपमे परिणत हो जानेकी अवश्य ही बहुत बडी संभावना थी।

३

गीला गीला स्नो पड रहा था। आधा बर्फ आधा पानी, सडकपर आते आते सबका सब पानी। स्नोके कारण धुँधला कुहासा छाता जा रहा था। रास्तोपर स्नो और पानीके अनवरत मिलते रहनेसे कीचड ही कीचड़ हो रहा था। चलते समय उसकी छींटे पडा करतीं। वह भी मास्कोके लोगोका चलना था। ऐसे मौसिममे लोग जूतोके ऊपर रबरका दूसरा जूता पहन लेते हैं जिसे वे गालोशे कहते हैं। इन गालोशोंमे भी स्नोका पानी भर जाया करता और उनकी आवाज़ 'धप धप' जैसी हुआ करती। सरदीके दिनोवाली सख्त बर्फपरकी 'टिकटिक' की आवाज जाती रही थी। यह मौसिम था सरदीके विदा लेने और वसन्तके आगमनकी प्रथम सूचना।

रास्ता चलनेवाले नाक भौह सिकोडते हुए जा रहे थे। मौसिमने उनके बहुतेरे कार्य-क्रम रद कर दिये होगे। रादेवू (मिलन) का वादा पूरा करनेका यह मौसिम नहीं था। हठात् ऐसा आरम्भ हो गया था कि

पहलेसे थिएटरका टिकट खरीद लेनेका शायद ही किसीको सूझा होगा। घरके बाहर पैदल निकलनेमे ही इस समय बहुत साहसकी आवश्यकता थी, टहलने जानेकी तो बात दूर रही।

मै अपने कमरेमे ही अकेले टहल रहा था। दरवाजा धीरेसे खटखटाते हुए किसीने पूछा—" आ सकती हूँ ?"

नाद्या। आज उसका चेहरा भी बाहरके ही मौसिम जैसा दीख रहा था। यदि कुछ भेद था तो यही कि उसके चेहरेपर बाहरकी जैसी नरमी नही।

अपना गालोशे खोलकर उसने कमरेके बाहर ही रखा। ओवरकोट उतारनेमे मैने सहायता की। वह आकर जंगलेके पासवाली मेजपर बैठ गई। उसके बाल गीले थे, उन्हींके कारण कधे भी गीले होते जा रहे थे। वह उन्हे आईनेमे अपनी शकल देख सॅवारने लगी।

" बडा ही खराब मौसिम है ?" मैंने कहा।

उत्तरमे वह थोडा मुसकराई। उसके चेहरेपर हँसी लानेके लिए मैंने उसे सोकोलनिकोव पार्कवाली 'कौमेडी' की याद दिलाई। वह हॅसी—पर अनोखे ढॅगसे। मै उस कौमेडीका विस्तृत वर्णन उसे सुनाने लगा। बिना 'हॉ ना' किये चुपचाप वह सुनती रही। सरके बाल यदि कभी कभी मेरी ओर देखनेमें रुकावट डालने लगते तो वह उन्हे पीछेकी ओर हटा लेती। उसकी दृष्टि मेरी ओर थी, मुॅह खुला था, होठ अलग अलग थे। वह शायद कुछ कहना चाहती थी लेकिन तुरत ही उसने अपनेको रोक लिया। पाकेटसे रूमाल निकाल उसने अपना चेहरा ढक लिया। रूमाल गीला हो चला। उसका चेहरा ऐसा होता जाता था मानो सॉपका विष उसपर चढता जाता हो।

अब मैंने महसूस किया कि जिसे मैं कौमेडी समझ रहा था वह उसके लिए ट्रैजेडी बन रही थी। अपनी मॉको चाहे वह जितनी भी नीच क्यो न देखती हो उसके हृदयके भीतर उनके लिए कोमल स्थान था।

मेरी बातोंने उसके उसी स्थानपर आघात पहुँचाया था। अपनी गलती महसूस करने पर मैंने कहा—" तुम्हें मैंने बडी तकलीफ दी।"

ऑसू अब बडी बड़ी बूँदोके रूपमे ढुलकने लगे थे। मैंने उसे बोलनेके लिए बाध्य किया। वह थोडा खिसक कर बैठी। मैं उसका आधा प्रोफील देख पा रहा था। वही बतला रहा था कि " मैं हॅसीका नहीं, दयाका पात्र हूॅ पर किसीके भी पास मेरे लिए दो ऑसू नही।"

इस बार उसके बाल मैंने अपने हाथो पीछेकी ओर फेक दिए। उसका स्नोके समान सफेद चेहरा चमक उठा। उसने उसे रूमालसे ढक लिया। उसके ढक लिए जानेपर सौन्दर्यका पता लगा। कोई भी उसे देखकर कहता—" यह ट्रैजेडी है। इससे बढकर संसारमे और कौन-सी ट्रैजेडी हो सकती है। यदि वह बोर्जुआ समाजमे होती तो उसके दिन राजमहलमे डिनर देनेमे, मीठीसे मीठी शराब पीनेमे बीतते। धनीसे धनी आकर उसका हाथ चूमा करते।"

अपनी कल्पनामे इतनी दूर देख जानेपर याद आया—" नहीं, फिर इसमे इस मुहूर्तका सौन्दर्य कहॉ रह जाता! वह तो इसकी बिना प्राणोकी छाया रहती। आजके जैसा जीवित सौन्दर्य उसमे कहॉसे आ सकता था!"

पता नहीं उसके दुखी चेहरेमे ही क्यो उसके भीतरकी मानवता झलक रही थी। मन ही मन स्थिर किया—" इस चेहरेमे सुख नहीं, पर हृदय है। सुखी पर प्राणरहित चेहरा दुखी किन्तु सहृदय चेहरेकी अपेक्षा कितना कुत्सित दिखलाई देगा!"

उसके बालोपर हाथ फेरते हुए मैंने कहा—" ये कितने गीले हो गये हैं!"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उससे उस समय छेड़छाड़ न करना ही मैंने अधिक अच्छा समझा। खड़ा हो कमरेमे घूमने लगा। जब जब उसकी ओर दृष्टि जाती तब सोचने लगता—" यदि यही अपने आपको अस्वीकार करनेके बदले स्वीकार करती—यदि अपना सुख औरोसे भिन्न

न रख उसे सारे समाजके ही सुखमे देख पाती तो यही कितनी सुखी बन सकती थी!"

उसके दिमागमे क्या क्या चल रहा था मुझे पता नहीं पर बड़ी देरके बाद उसने कहा—"मैं 'गैर' हूँ, सारे समाजकी शत्रु हूँ; तुम्हारी भी शत्रु हूँ।"

४

अप्रैलका महीना आ गया। सूर्यमे फिरसे गर्मी आने लगी। महीनोका जमा हुआ स्नो पिघलने लगा। पहाडियो और मैदानोने अपना सर्दीके मौसिमका सफेद वस्त्र त्याग दिया। मास्को नदीका भी पत्थरके समान सख्त बर्फका वक्षस्थल टुकडे टुकड़े हो बहने लगा। चारों तरफका दृश्य बडी ही उदासी लानेवाला बनता जा रहा था।

स्केटिगसे विदाई लेनेके साथ स्केटिंग रिंगके भी अधिकाश दोस्तोसे विदाई ले चुका था। आना वासिलियेवनाके यहाँ जाना बहुत दिनोसे बन्द कर दिया था। नाद्या कभी कभी स्वयं ही मेरे घर आया करती थी, पर इधर उसने जबसे एक नीग्रो बस-ड्राइवरसे शादी कर ली थी उससे भी मुलाकात बहुत कम ही हुआ करती।

इन दिनो सर्दीके मौसिमके खेलोका समय बीत चुका था और गरमीके खेलोका वक्त आ नहीं पाया था। साथ ही दिन भी बहुत लम्बे होते जा रहे थे। सरदीके दिनोकी लम्बी रात कभी नहीं खटकती थी किन्तु इन दिनोका लम्बा होता जाना ज्यो ज्यो अकेलापन महसूस करता अधिक ही खटकता था।

मन-बहलावका और कोई चारा न देख सड़कोंपर खूब चक्कर लगाया करता। मास्को नदीके सब पुल नाप आता पर उससे भी तबियत ऊबती जाती। खेल-कूदके दिनोमे जिनसे सड़कपर मुलाकात होने पर मामूली नमस्कार कर खिसक जाया करता अब उन्हीं लोगोसे देर

तक बातें करता रहता । आँखे सब समय ही किसी परिचितको ढूँढ निकालनेकी खोजमें रहतीं ।

" साश्का ! " नाद्याने पीछेसे पुकारा । " आज मैं तुम्हारे साथ टहलने जाना चाहती हूँ । मुझे गोर्कीपार्क कल्चरमें ले चलो न ! "

रास्तेमें उसने नीग्रोके साथ अपने संबध-विच्छेद होनेका किस्सा सुनाया। वह स्वयं डेस्डेमोना बनना चाहती थी और नीग्रोको ओथेलोका पार्ट करता हुआ देखना चाहती थी। उसका नीग्रोके साथ शादी करनेका मक़सद यही था। पर नीग्रो ओथेलोका पार्ट तो दूर रहा किसी भी प्रकारकी ऐक्टिंगके अयोग्य था। बहुत खींच तानकर नाद्याने उसे सिखलाया भी तो वह ओथेलो जैसे व्यक्तियोंकी चाल अपनानेसे कोसों दूर रहा। वह नाद्यासे अन्ततक—नाद्याके और लोगोंके साथ वास्तवमें प्रेम करने लग जानेपर भी, रुष्ट तक नहीं हुआ। नाद्याको इसी कारण अपने नीग्रोपतिसे अलग हो जाना पड़ा। मुझसे वह कहने लगी—" मैं चाहती थी कि वह मेरी हत्या करे—ठीक उसी भाँति काली मूठके पैने छुरेसे जिससे ओथेलोने डेस्डेमोनाकी की थी; लेकिन यह उससे संभव ही नहीं हो सका। "

उसने मुझे कुछ दुचित्ता-सा देख एक वाक्य धीरेसे कहा— " शायद यह ऐक्टिंग भी मुझे स्वय ही करनी पडेगी। "

५

गोर्की पार्क कल्चर मास्कोका सबसे बडा पार्क है। नदी किनारे किनारे यह बहुत दूर तक चला गया है। पार्कके भीतर मन-बहलावकी बहुत-सी चीजे हैं। होटल, सिनेमा, थियेटर, तरह तरहके क्रीडा-स्थल और विश्रामस्थानके सिवा एक बडी-सी झील और पहाड़ी भी उसके हातेके अन्दर है। उसी पहाड़ीपर लेनिन अपनी अन्तिम रुग्णावस्थामें रहा करता था। वहाँसे सारा मास्को शहर दिखलाई पड़ता था।

सूर्यास्तके कुछ पहले हम लोग उस पहाड़ीपर पहुँचे। और भी थोड़े-से आदमी वहाँ घूमने आये थे। लड़कियोंकी सख्या कम रहनेके कारण नाद्या दूरसे ही लोगोंके ध्यानमें आ जाया करती थी। उसे देखकर सोवियत राजधानीके वास्तविक वाशिन्दोंका थोड़ा टीका टिप्पणी करने लग जाना स्वाभाविक ही था। इस ओर हम लोगोंका ध्यान भी वैसा नहीं खिंचता, पर दो युवतियोंने एक और ही प्रकारकी चर्चा नाद्याको देखकर छेड़ी। वे दोनों हम दोनोंके थोड़े ही पीछे आ रही थीं, इसलिए उनकी बातें हम उनके धीमे बोलनेकी चेष्टा करते रहनेपर भी बहुत स्पष्ट सुन सकते थे।

"यह तो वही..." एकने कहा।

"हाँ। उसी खिर्शिस्की खान्दानकी है।"

"गैर! गैर-वर्गकी है। हम लोगोंके शत्रुओंके दलकी है।"

नाद्याने शायद इसे स्पष्ट सुना; मैंने उसका ध्यान ठीक उन शब्दोंके उच्चारण होनेके समय दूसरी ओर फेर देनेकी चेष्टा की पर सफल नहीं हुआ।

पहाड़ीकी चोटीपर टीनकी एक छोटी-सी छत लगी थी और उसके नीचे चारों तरफ कुछ बेंचे रखी हुई थीं। मैं मास्कोकी ओर मुँह कर बैठ गया।

"मैं अभी आई।" कह कर नाद्या एक ओर चली गई। मैं सूर्यकी अन्तिम किरणोंमे क्रेमलिनके गुम्बजकी सुनहली चमक देख रहा था। अनायास ही मनमे आ रहा था, इन गुम्बजोंने ठीक इसी प्रकार सर ऊँचा कर इसी मास्कोको कितने रूपमे परिवर्तित होते देखा है ? एक समय यहाँ ज़ारका आधिपत्य था, आज मज़दूर-किसानोंका आधिपत्य है !

हमारे पीछे आनेवाली लड़कियाँ भी मेरे पासकी ही बेंचपर आकर बैठ गई थीं। पहले वे आपसमें ही बातें करती रहीं फिर हठात् मुझसे पूछ बैठीं—"आपकी सगिनी कहाँ है ?"

"अभी आ जायगी।"

वे हँसने लगीं। यह हँसी नाद्याके लिए, थी अथवा मेरे लिए मैं ठीक ठीक कुछ समझ नहीं सका।

बड़ी देर तक उसके लौटनेकी प्रतीक्षा करता रहा। चारो तरफ दृष्टि दौडा आता। वह कहीं भी दिखलाई नहीं देती। अँधेरा हो आया। वे दोनो लडकियाँ भी उठकर चली गई।

मैं भी उठा। मन ही मन स्थिर किया—नाद्या जैसे स्वभावकी लड़कियाँ अवश्य ही नदी किनारेका रास्ता लेगीं। उसी ओर मैं भी चला। चारो तरफ सन्नाटा था। इस सन्नाटेकी ओर वह क्यो आयेगी? फिर भी आगे बढता गया। दूरपर लकड़ीका बना जहाजोके टिकनेका एक मञ्च दिखलाई दिया। फिर सन्देह हुआ—वहाँ तो गरमीके दिनोमे शहरके लोग जहाजोपर पार्क घूमने आया करते हैं। अभी तो नदीकी बर्फ पूरी पूरी पिघली ही नहीं, जहाज चलेंगे कैसे? पर हवामे गरमी देख कर अन्दाज़ लगाता, शायद आजसे ही जहाजोका चलना आरम्भ हो गया हो।

वह मञ्चके एक किनारे खड़ी थी। उसकी बोली सुन मैं किनारेपर ही रुक गया। उसकी बातचीत अपने आपसे हो रही थी। बहुत बार ऐसा ही हुआ करता है,—जब मनुष्य अपने भीतरका आवेग और अधिक नही रोक पाता तब अपने आपसे बातचीत करने लग जाता है। उसकी बोली उसी भाँतिकी थी। मैं झाड़ीमें चुपके-से छिप गया।

"कल इस समय तक मेरी लाश दफनाई जा चुकेगी। मेरे लिए कोई बाजा नहीं रहेगा, मञ्जिलमें साथ जानेवाले नहीं रहेंगे। आँसू बहानेवाले दोस्त नहीं रहेंगे। माँको यदि पता भी चलेगा तो कह बैठेगी, 'मूर्ख थी! पगली थी! अपनी बेवकूफीके कारण मरी' और बस!

"आँखोमे मेरे लिए दो आँसू भी नहीं रहेगे। यदि कोई दिखलाने लायक आदमी संयोगवश उस समय माँके पास होगा तो माँ शायद

बहुरूपियोंकी तरह नकली आँसू भी आँखोंमें ले आयें। दूसरे लोग, जिन्हे कुछ पता नहीं होगा कि मैं कौन थी, कहेंगे—'आहा! अभी तो जवान ही थी! सारा जीवन आगे पड़ा था! सुखका भंडार छोड़ कर मरी! अफसोस!' कौमसोमोल कहेंगे—'अच्छा ही हुआ! मर गई! गैर थी। इसका अफसोस क्या?'

"लेकिन इन बातोंसे मेरा क्या बनता-बिगड़ता है? मैं तो उस समय तक दूसरी दुनियामे रहूँगी। पर मरनेके पहले एक बार अपना चेहरा तो देख लूँ।"

उसने अपने हाथके छोटे बैगको खोल उसमें लगे शीशेमे अपना मुँह देखा—"कल तो मेरी ऐसी शक्ल नहीं रह जायगी? मुर्दा देखनेमें कितना वीभत्स होता है! सुन्दरसे सुन्दर चेहरा भी कैसा बीभत्स बन जाता है! नहीं, मैं अपना चेहरा वैसा बीभत्स नहीं होने दूँगी। कभी नहीं। जीवन जैसा चल रहा है वैसा ही चलता रहे।

"क्या मेरा जीवन कभी पलटा नहीं खायगा? जरूर खायगा। मुझे भी लोग प्यार करेंगे। मैं भी नकली हँसीके बदले सुखसे जी खोलकर हँसा करूँगी। यह सम्भव है।"

आईना उसने बन्द कर लिया।

"नहीं, मै तो गैर हूँ। सारे समाजकी शत्रु हूँ। मेरे लिए और लड़कियों जैसा सुखी जीवन,—हँसता हुआ जीवन कहाँ?

"उस प्रकारका जीवन ही नहीं तो फिर जीनेसे लाभ क्या? फिजूल ही इस धरतीपर भार बनी हूँ। बस अब अन्त मृत्यु..."

उसने आसमानकी ओर देखा। चाँद बादलोंसे ढका था। उसकी सूरत रोती हुई युवती जैसी हो रही थी।

"मरना! मैं तो कितनी बार मर चुकी हूँ। स्टेजपर कितनी ही ट्रैजेडी खेल चुकी हूँ। अन्तर तो सिर्फ यही होगा कि यह आजकी वास्तविक ट्रैजेडी गिनी जायगी! और बारकी नकली,—आजकी असली होगी।

"फिर मेरी ऐक्टिंग यहीं सीमापर पहुँचती है।" कुछ देर सोचते रहने पर उसे याद आया—"सबसे अच्छा मारूस्याकी तरह मरना होगा। अस्त्रोव्स्कीके ड्रामामें वह अन्तमें नदीमे डूब कर मरती है। उसकी लाश तो लोगोको मिली नहीं। मेरी भी नहीं मिलेगी। मेरी भी भद्दी शक्ल संसारके सामने नहीं आयगी।

"फिर...ग़ैर! समाजकी शत्रु..." वह हँसी। आसुओंके बीच हँसी—"पापिन...चल...कूद...कूद...कूद..."

एक उतराती हुई बर्फकी चट्टानपर उसने पॉव रखना चाहा। वह फिसलकर वास्तवमे नदीमे चली गई।

बर्फ गला पानी इतना ठंढा था कि चंद मिनटोमे ही हृदयकी गति रोक दे सकता था। पहली डुबकीके बाद ऊपर आते ही मैंने उसे मंचपर खींच लिया। वह बेहोश हो गई थी। उसके गीले कपड़े खोलकर उसे अपने ओवरकोटमे लपेट लिया।

उसकी बेहोशी थोड़ी देर तक रही। बोली ठंढ लग जानेके कारण नहीं निकल रही थी। मैंने उसे गोदमे उठा लिया। ओवरकोट और मेरी छातीकी गरमी थोड़ी देर तक लगती रहनेके बाद उसने आँखें खोलीं। मैं उसे उठाकर खड़ा करने लगा। उसने कहा—"नहीं, थोड़ा और रुको, मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।"

उसकी मूर्खताके लिए मैं उसे डॉटने लगा। उसने कहा—"तुम जानते नहीं, मैं अभिनेत्री हूँ सारका!"

~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~

पंचम खण्ड

सफाई

१

जितना ही अधिक मास्कोका चक्कर लगाता उसकी विशेषताये उतनी ही अधिक स्पष्ट होती जातीं। शहर और वहाँके वाशिन्दे दोनोकी एक ही हालत थी—कोई भी स्थिर नहीं, वहाँकी हरएक चीज गतिमान थी। मेरे देखते देखते ही शहरके बहुत-से हिस्सोंका स्वरूप पलटता जा रहा था। ईंट और पत्थर बिछी सड़के मेटलकी सड़कोमें परिणत होती जा रही थीं, पुराने मकान तोड़कर उनके स्थानपर नई सुन्दर इमारते खडी की जा रही थीं। कितने ही चौराहोपर घेरे लगाकर उनके नीचे जमीनके नीचे चलनेवाली रेलके स्टेशन बनाये जा रहे थे। यदि कोई ध्यानसे देखनेवाला मास्कोका केवल एक ही चक्कर लगा आता तो उसे स्पष्ट हो जाता कि मास्कोमे आन्तरिक और बाह्य दोनो ही परिवर्तन बड़ी तेज़ रफ्तारके साथ किये जा रहे हैं।

प्रकृति इस काममे सहायताके बजाय बाधा ही पहुँचा रही थी पर लोग उसके खिलाफ भी कमर कसकर वैसे ही लड़ते जा रहे थे। सरदी अकसर पानीके बर्फ़के रूपमें जम जानेकी सीमाके तीस पैंतीस डिग्री नीचे चली जाया करती। लोग उसकी परवाह नहीं करते। सड़कोपर चलनेवाले उस सरदीके सामने अपने हाथोंके मोटे स्नायु दिखला दिया करते। स्नो कभी कभी कई दिन तक लगातार पड़ती जाती, यदि उसे यो ही छोड़ दिया जाता तो रास्तोपर ट्राम बस आदिके जानेकी तो बात ही दूर रही,

पैदल चलनेवाले भी वहीं धँस जाया करते। सड़कोंपर कई पुरत स्नो जम जाती और लोगोंको सड़कोंपर भी स्की हमेशा व्यवहारमें लाना पड़ता। पर इसका भी इतजाम था। एक ओर स्नो पड़ती जाती और दूसरी ओर सड़कपर काम करनेवाले उसे बटोरते जाते। रास्ते हमेशा ही साफ रहते। स्नो बटोरकर चौराहेपर लाई जाती और वहाँ एक खास मशीन-द्वारा पिघलाकर बहा दी जाती।

कितने नाले भी बर्फ़से जम जाते। उन्हें भी ऊपरकी बर्फकी तह तोड़कर साफ किया जाता। उनके नीचेसे बहुतसे स्मृति-चिह्न निकला करते। कितने चौराहोंपर घंटों खड़ा रह मास्कोका वह महकता हुआ पुराना इतिहास देखा करता। पुराने ज़मानेके सागवानके बने घरोंके टुकड़े सड़ी हुई लकड़ियोंके रूपमें निकला करते। पीतल-ताँबेके घड़े निकलते। कभी कभी मनुष्योंकी खोपड़ियाँ तक उन नालोंसे निकलतीं।

उन स्मृति-चिह्नोंपर उन्हें निकालनेवालोंको विचार करने या एक मिनटके लिए भी भावुक बनकर खड़े रहनेका अवकाश नहीं मिलता। उनका अभ्यास ही अनवरत वैसा करते रहनेके लिए उन्हें बाध्य कर रहा था। बाहरके मौसिमके साथकी लडाईने उनकी आन्तरिक प्रकृतिको ही उस हद तक बदल दिया था कि उन भावुक बातोंको प्रकट करनेके लिए किसीपर एक मूक दृष्टि भी फेर देनेकी बात उनके मनमें नहीं उठा करती।

उन्हें उस प्रकार काममें लगे देखकर मेरे मनमें अकसर यह प्रश्न उठा करता कि शहरकी सफाईके लिए इतना प्रयत्न किया जाता है, तब इन लोगोंका क्या मनुष्योंके भीतरकी सफाईकी तरफ अन्यमनस्क रह सकना संभव है? आदमीके भीतरकी गंदगी भी तो वायुमण्डलको इन नालियोंकी गदगीसे कम दूषित नहीं करती।

उन्हीं दिनों सारे सोवियत युनियनमें कौम्युनिस्ट पार्टीकी भी सफाई

चल रही थी। वहाँके अखबार उसी सफाईकी चर्चासे भरे रहते। बड़ी मुस्तैदी और संलग्नताके साथ यह सफाईका काम किया जा रहा था।

इस सफाईके समय पार्टीके सदस्योंके व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक व्यवहार, समाजको उन्नत बनानेमे उनके कार्य, उनके अध्ययन, लक्ष्य आदि सब बातोपर विचार किया जाता। उन्हे अपने सामाजिक उद्भव, राजनीतिक कार्य इत्यादिका सच्चा सच्चा इतिहास खोल कर बतलाना पड़ता और आगेके कामोका भी ब्योरा सबके सामने रखना पडता।

सफाईके कामके लिए ही विशेष सभाये बुलाई जातीं, उन सभाओमे पार्टीके सदस्य और गैर दोनो ही समान रूपसे भाग ले सकते थे और जिस सदस्यकी सफाई की जाती उसके विषयमे टीका-टिप्पणी करनेका सबको समान अधिकार होता।

सफाईकी इतनी सीढियाँ होतीं कि किसी सदस्यका अपना इतिहास या अपना किसी भी प्रकारका दुर्गुण छिपाये रहना अत्यन्त ही कठिन होता।

प्रत्येक सदस्यको यह साबित करना पडता कि पार्टी और सोवियत जनताकी ओरसे दी गई जिम्मेवारीका काम उसने किस हद तक पूरा किया है, और यदि कोई त्रुटि रह गई है तो कहीं जान बूझकर तो उसने उसे नहीं रख छोडा है। अपने आपकी टीका-टिप्पणी करनेको भी बहुत ही अधिक महत्त्व दिया जाता। आदमीसे गलती हो सकती है, इसे सफाईमे भाग लेनेवाले भली भाँति समझते, पर सोवियत जनताके सामने उस गलतीको छिपा रखना भारी अपराध गिना जाता।

सदस्यकी शिक्षामे किसी प्रकारकी त्रुटि है या नहीं, इस बातकी भी जॉच की जाती और मार्क्सवाद, लेनिनवाद, क्रान्तिके विज्ञान आदिसे संबध रखते हुए प्रश्न उससे किये जाते। सदस्योके लिए बहुत बडी परीक्षाके समान यह सफाई थी। इसलिए उन्हें इसके लिए काफी अच्छी तरहसे तैयार होकर आना पड़ता।

जिन सदस्योकी सफाई निकट भविष्यमे होनेवाली थी, उनमे कईसे मैं

परिचित था। जेनरल मिखाएलोवकी सफाई पहले ही हो जानेवाली थी, क्यो कि वे सफाई-कमेटीके एक विशेष अध्यक्ष बनाकर कई कारखानोके सदस्योकी सफाईके लिए भेजे जानवाले थे। इस सफाईके ऊपर उनके आगेके जीवनका बहुत-सा कार्यक्रम निर्भर करता था। वैसे वे स्वभाववश सामाजिक टीका-टिप्पणीको तुच्छ समझनेवाले व्यक्तियोमे थे, पर इस समय उससे उन्हे गुजरना ही पड़ता, इसलिए वे कुछ चिन्तित भी बनने लग गये थे।

उनकी सफाईके दिन मास्कोकी एक बहुत बड़ी दूकान मोस्तोर्गका बड़ा हॉल खचाखच भर गया था। बहुतसे लोग इस मौकेकी ताकमे थे। यह बात सभाके पहलेकी कानाफूसीसे स्पष्ट होती जाती थी। मिखाए-लोवका दिल उतना ही अधिक धड़कता जाता था, किन्तु वे जिस स्वभावके थे उसके लिए धड़कनको सम्हालते जाना और अपने चेहरेपर हँसीकी रेखाये दिखलाते जाना काबूके बाहरकी बात नही हो सकती थी।

अपना इतिहास और अपने कामोका ब्योरा उन्होने इस ढंगसे और ऐसे शब्दोमे दिया कि किसीको भी उन्हे सच्चा प्रोलेटारियन-सेवक करार देनेमे हिचक नहीं हो सकती थी। पर बिना अध्यक्षोकी अनुमतिकी प्रतीक्षा किये ही एक मज़दूर उठ खड़ा हुआ,—शायद वह अभी अभी कोई नाला साफ कर बाहर निकला था। उसके शरीरकी बदबू हाथ-मुँह धो लेनेपर भी पूरी पूरी दूर नहीं हो पाई थी। ललाटपर पसीनेकी झलक अभी तक वर्तमान थी। उसने कहा—"यह बुडा भी पार्टीका सदस्य है, मैं आज ही जान पाया हूँ। गृह-युद्धके समय सफ़ेद जेनरल कोलचककी ओरसे इसीने मुझे कौम्युनिष्टोंका साथ देनेके कारण गोलीसे उड़ा दिये जानेका हुक्म दिया था।"

उस मज़दूरमे वाक्पटुता नहीं थी। अपनी बाते बडे ही उजड्ड ढगसे उसने शुरू की थीं,—वे भी जल्दी और उतावलेपनके कारण सिलसिले-वार उसके मुँहसे नहीं निकल रही थीं। एक बात तो तुरत ही

साबित हो गई जिसे मिखाएलोव झूठा साबित करनेकी चेष्टा करनेपर भी समर्थ नहीं हुए। उन्होने ज़ारशाहीकी ओरसे लड़नेवाले सफेद अफसरका लड़का होना छिपाकर अभी कुछ ही देर पहले अपनेको लोहारका लड़का बतलाया था।

दूसरे किसी भी समाजमे यह अजीब-सी बात लगेगी कि अफसरका लड़का छिपाकर अपनेको लोहारका लड़का बतलाता है! पर तुरत ही मुझे याद आई,—यह था सोवियत-समाज जहाँ लोहारकी इज्जत अफसरसे कहीं अधिक होती है। धनी-समाजमे पले हुए लोग प्लेगकी तरह देखे जाते हैं, उन्हें लोग नालेके कीड़ोसे भी गया गुजरा समझते हैं!

सभामे बैठे लोगोका रुख एकाएक पलट गया था। सबके चेहरोपर मिखाएलोवके प्रति घृणा और क्रोधका भाव जाग्रत होता आ रहा था। चारो तरफसे आवाज आने लगी—'गैर! गैर!—यह गैर-वर्गका, शत्रु-वर्गका आदमी है। आज परदा खुला है। छिपकर हमारे बीच चला आया था, और गुस्ताखी तो देखो, सिर्फ पार्टी-सदस्य ही नहीं, उसमें उतना ऊँचा ओहदा दखल कर चुका था!'

'निकालो, निकालो!' की आवाजके बाद 'पकड़ो! पकड़ो!' की आवाज आने लगी। मिखाएलोव गे० पे० ऊ० के हवाले किये गये। उनकी जॉच आरम्भ हुई।

जॉचके सिलसिलेमे उनके सिर्फ ऐरिस्ट्रोक्रैट खान्दान और जारशाहीके जमानेमे उनके गुप्तचर-विभागमे ही काम करनेकी बात नहीं, बल्कि और भी बहुत-सी बातोका, उनके औरतोंके विषयमे ऐडवेंचर तकका, पता चल गया। उनके जासूसी कार्य बड़े ही मनोरजक और आश्चर्यजनक थे। किसी जासूसी उपन्यास लिखनेवालेको उसके कई उपन्यासोंके लिए अकेले उनके जीवनसे बहुत-सा मसाला मिल सकता था। सोवियतके लोगोको उसके लिए फुरसत नहीं थी। उन्हे चिन्ता वैसे विषैले जासूसोंसे सोवियत-समाजको मुक्त करनेकी थी। उनकी जॉचका यही सिलसिला आगे भी जारी रहा।

सफाईके ज़मानेके लिए ऐसी बाते अनोखी नहीं गिनी जाती थीं। मिखाएलोव जैसे उदाहरण अक्सर ही पाये जाते थे और उनकी चर्चासे अख़बारोके बहुतसे कालम भरे रहते थे। मिखाएलोवकी जॉचके सिल-सिलेमे उनका आना वासिलियेवानाके साथ संबंधका पता भी मास्कोवा-लोको लग गया था। एक अखबारने उन्हीं दिनो लिखा था—
"ज़ारशाहीके जमानेके ऐरिस्ट्रोक्रैट अब भी 'रगे स्यार' की तरह हमारे बीच छिपे हैं। शत्रु-वर्गकी जड़ उखाड़ फेकनेके लिए इन्हे प्रकट कर देना,—प्रकाशमे ले आना, आवश्यक है। इसमे हरएक सोवियत नागरिकको हाथ बटाना चाहिए। ये पूँजीवादके अवशेष केवल हमारी सोवियत सरकारके ही रास्तेमे नहीं, बल्कि सारे मानवीय विकासके रास्तेमे बहुत बड़े बाधक हैं। इसके लिए मोस्तोर्गके मैनेजर मिखाएलोवका उदाहरण ही काफी होगा। सोवियत सरकारकी यह शुरूसे ही चेष्टा रहती चली आई है कि उसकी सीमामे प्रत्येक स्वरूपमे वेश्यावृत्ति मिटा दी जाए। फिर भी, उसका निशान मिखाएलोव जैसे लोग ही मिटनेसे रोक रहे हैं। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि वेश्याकी परंपरा ऐरिस्ट्रोक्रैट समाजका एक आवश्यक अग है ? यदि हमे पूँजीवादकी खूँख़ार लीलाको नष्ट करना है, तो उसके साथ ही ऐरिस्ट्रोक्रैटोकी बची-खुची दूषित सामाजिक भावनाको भी जड़-मूलसे उखाड़ अपने समाजसे अलग कर फेक देना होगा।"

जिस गंदगीको मैं भी बहुत दिनोसे देखता आ रहा था और जिसके कारण मास्कोके सौन्दर्य, वॅहाकी चहल-पहल, वहॉके विनोद, वहॉकी हॅसीमे कमी दिखलाई देती थी, वह अब इस पार्टीकी सफाईके ज़मानेमे सबके सामने बहुत ही स्पष्ट रूपमे ले आई गई। सोवियत नेताओंका काम यहींपर समाप्त नहीं होता था। वे और गंदगियोकी भॉति इस गदगीको भी दूर करनेमे अपनी बोलशेविक तत्परतासे लग गये।

~~~~~~~~
~~~~~~~~

नई दुनिया

१

नई दुनियाके लोगोकी प्रकृति भी धीरे धीरे बदलती जा रही थी। ऐसे लोगोकी सख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही थी जो रोज़मर्राके जीवनके ऊपर अपनी उड़ान ले जाना चाहते थे। दैनिक भोजनकी ही चिन्तामे अपना समय बिता देना, अथवा जिसे 'ऐशोआराम' कहा जाता है उसीमे अपनेको भुला देना मनुष्यके वास्तविक आदर्शसे बहुत नीचा दीखता था।

ऐसे लोगोंकी लडाई प्रकृतिके साथ चल रही थी। रोज़ ही नये-नये अद्भुत चमत्कारपूर्ण कार्योंकी रिपोर्टे अखबारोमे छपा करतीं। मनुष्यके इतिहासमे उसके प्रकृतिके साथकी लड़ाईके पहलेके बहुतसे रेकर्ड रोज़ाना ही टूटते जा रहे थे। एक दिन ख़बर मिलती, सोवियत वायुयानिक पामीरकी उपत्यका लॉघ गये। दूसरे दिन स्ट्राटोस्फियरमे चौदह मील ऊँची उड़ानकी खबर मिलती। तीसरे दिन उन्होने उत्तरी ध्रुव विजय किया। चौथे दिन रूससे उड़कर ध्रुव पार करते सीधे अमेरिका पहुँच गये।

ऐसे रेकर्ड दूसरे देशोंके लोग भी तोड़नेका प्रयत्न करते हैं पर उनके मानसिक विचार कुछ दूसरे रहते हैं। उनमे अधिकाशको नाम और रुपये कमानेकी इच्छा रहती है, कितने ही अपने पूँजीपति मालिकको खुश

करनेकी धुनमे रहते हैं और सरकसवालोंके जैसा रेकर्ड तोड़कर दिखलाया करते हैं। यह नई दुनियाके दृष्टिकोणसे मनुष्यके आदर्शसे बहुत नीचा दीखता था।

सोवियत यूनियनमे यदि वैसा कोई भी बड़ा प्रयत्न होता तो उसमे सारे समाजकी शुभ कामना, सब लोगोकी विजय पानेकी दृढ-प्रतिज्ञा, रोज़मर्राके जीवनसे ऊपर उड़ान मारनेवालोको सहायता पहुँचाया करती। जन-समाजकी यह इच्छा बड़े बड़े आश्चर्यजनक चमत्कार दिखलाया करती। आर्कटिक, प्रदेशोकी विजयमे तो इसका बहुत बडा हाथ रहा है। लेनिनग्रादसे आर्कटिक-क्षेत्रमे बर्फ़ जमे समुद्रसे होकर बेहरिंगके मुहाने तककी सबसे पहली यात्रा प्रोफेसर श्मिटके ही सोवियत जहाज सिबिरियाकोवने की थी। दूसरी यात्रा वे 'चेल्युस्किन' जहाजपर उसी रास्ते करना चाहते थे, पर लक्ष्यपर पहुँचनेके लगभग दो सौ मील पहले ही बर्फमे उनका जहाज अटक गया। वह जहाज डूब गया। प्रोफेसर श्मिट और उनके चेल्युस्किन जहाजके साथी सोवियत नागरिकोने बर्फ़पर अपने खीमे डाले। बर्फ़का वह मैदान जिसपर खीमा डाला गया था समुद्रके प्रवाहमे बहता जाता था। इतना ही नही, बर्फमे हठात् दरार फट जाने पर लोगोके बर्फमें डूब जानेकी आशंका प्रतिपल रहती थी। श्मिटके साथियोमे दस औरते भी थीं, जिनमे एककी गोदमे नवजात शिशु था। सारे संसारने समझ लिया था कि अब वे कुल एकसौ-दस आदमी बचाये नहीं जा सकते।

पर सोवियत-निवासियोकी दृढ़ इच्छा इसे सहन नहीं कर सकती थी,—वे उस प्रकार हिम्मत नहीं हार सकते थे। वे प्रोफेसर श्मिटके बचानेके जितने भी रास्ते हो सकते थे निकाल रहे थे और उन्हे उन सबकी सूचना रेडियोद्वारा देते जाते थे। पर बचानेका काम आसान नहीं था। यदि सिर्फ प्राण देना होता तो सोवियत यूनियनमे बहुतसे वैसे आदमी थे जो बर्फ़पर खीमा डाले हुए लोगोके लिए अपनेको

न्यौछावर कर देते, पर सिर्फ उससे काम नहीं चल सकता था। आवश्यकता थी धैर्यकी और उससे भी अधिक सारे देशके लोगोकी दृढ़ इच्छाकी। यह इच्छा यथेष्ट मात्रामे प्राप्त थी। प्रोफेसर श्मिटको भी सबसे बडा बल,—सबसे बड़ी आशा यही थी। जो हवाई जहाजके उड़ाके उन्हे बचानेके लिए गये थे, उन्हे भी सबसे बड़ा बल उन्हीं सोवियत निवासियोकी दृढ इच्छाका था। आर्कटिकके उस हिस्सेमे हवाई जहाजसे उड़ना ससारके सब प्रख्यात वायुयानिकोने असम्भव करार दे दिया था, पर यह सोवियत वायुयानिकोको हतोत्साह नहीं कर सका। वे चालीस डिग्री ठढके बीच (४० डिग्री सेल्सियस शून्यके नीचे) उड़े, उनकी मोटरे सोवियत-निवासियोंकी दृढ इच्छाके साथ तैयार की गई थी, वे बर्फका हुक्म मान बंद नहीं हो सकती थीं। वायुयानिक बर्फके छोटेसे मैदानमे उतरे, पहले औरतोको ढोकर जमीन पर ले आये, फिर एक एक कर और लोगोको। चालिस डिग्री सरदीमे और आर्कटिकके तूफानमे चालीस दिनो तक उन लोगोको बर्फपर रहना पडा था, पर अन्तमे सोवियत नागरिकोकी दृढ इच्छाने उन्हे बचा लिया।

संसारके किस देशके अन्वेषकोको जनताकी वैसी सहानुभूति और इच्छाकी एकता प्राप्त रहती है? कौन अपने अन्वेषक और वैज्ञानिकोको सोवियत यूनियनके समान आदर और उनके योग्य ऊँचा स्थान दे सकता है? ये बाते सिर्फ नई दुनियॉके लिए ही संम्भव थीं।

२

वैसी रफ्तारसे आगे बढ़ते हुए समाजके बीच रहते समय किसी भी अन्य देशवासीको अनायास ही ख़्याल आ जाता—"और हम?—हमारा देश?"

सोवियत समाजके सामने हरएक व्यक्तिको तथा हर किसी समाजको सर नीचा कर लेना पडेगा। हिन्दुस्तान तो सदियो पीछे,—रसातलको गया

हुआ दीखेगा। इसमे यहॉके व्यक्तियोका दोष नहीं दीखेगा वल्कि उस प्रणालीका जिसके चक्रमें उनके जीवनके सव अरमान कुचल दिये जाते हैं, जो उनके भीतरकी क्रियाशील शक्तिकी तो वात ही दूर रही साधारणसे साधारण उत्साह भी कुचल देता है।

निष्पक्ष भावसे देखना आरम्भ करते ही सोवियत और भारत दोनो जगहोंके समाज दो विपरीत दिशाओमें जाते दिखलाई पड़ेगे। एक हमेशा नये, सुन्दर, मनुष्य-जीवनकी ओर और दूसरा अनवरत खोखले, भद्दे और अधिकाधिक पशु-जीवनकी ओर।

पर रूसी लोगोका भी तो अभी कुछ ही वर्ष पहले वैसा ही खोखला, भद्दा पशु-जीवन था। उन्होंने उसे छोडकर दूसरा जीवन अपनाया है। ऐसे मौकोपर गोर्की दादाकी वाते याद आतीं—"मैं अपने व्यक्तिगत तजुर्बेके आधारपर कह सकता हूँ कि सोवियतके समान नवीन और मनुष्योचित समाज संगठित करनेके लिए उसके पहलेकी पुरानी और पाशविक समाज-प्रणालीको वैसी ही घृणाकी दृष्टिसे देखना पडेगा।"

मेरा ध्यान तुरत ही भारतकी ओर जाता। यहॉ पाश्चात्य सभ्यता नवीन गिनी जाती है, शायद उसमे नवीनताके गुण वर्तमान भी हैं, पर फिर भी वह सोवियत सभ्यतासे वहुत पीछे और पुरानी पड गई है। दूसरी बात यह भी दीखती है कि पाश्चात्य सभ्यता अपनी सीमापर पहुॅचकर नीचेकी ओर पशुताकी ओर खिंची आ रही है। उदाहरणके लिए अधिक देर रुकना नहीं पड़ता। इटलीकी अबीसीनिया-दखल करनेकी तैयारी आरंभ हो चुकी थी और अखबार इन ख़बरोंसे भरे रहा करते। अपनी साम्राज्य-लोलुपता, पशुता और बर्बरताकी ओर दौड़नेवाली प्रवृत्तिको निर्लज्ज भावसे यूरोपके अखबारोंमे 'यूरोपीय सभ्यताका प्रसार' नाम दिया जाता।

सोवियतवासी मनुष्यको आपसकी लड़ाईसे हटाकर प्रकृतिके विरुद्ध लड़नेके लिए प्रेरित कर रहे थे और दूसरी ओर फैसिस्ट अपना आर्थिक

घाटा पिछड़े हुए लोगोका खून लेकर पूरा करना चाहते थे। दोनोंमे अन्तर बहुत बडा था। मनुष्य होनेके नाते एकको जितना ही अधिक प्यार किया जा सकता था, दूसरेसे उतनी ही अधिक घृणा करनी पड़ती थी।

३

मैं बहुत प्रकारके समाजमें रह चुका था पर सोवियत समाज उन सबसे भिन्न था। सब समय 'तवारिश' सुननेमे आता। हज्जाम, शिक्षक, कप्तान, नौकर,—सब तवारिश। यह 'भाई' के अर्थमे प्रयोग किया जानेवाला खोखला शब्द नहीं था। यह उनकी एक दूसरेके प्रति व्यक्त की जानेवाली आन्तरिक भावनाओका द्योतक था। मनुष्योका परस्पर कैसा व्यवहार रहना चाहिए, इसका आदर्श उस एक शब्दमे भरा था।

यहॉके समाजमे नौकर और मालिकका विभेद नही। इस विभेदके मिट जानेसे मनुष्य-समाजका एक बहुत ही महान् और सुन्दर स्वप्न पूरा हुआ है। दलितोको बधन-मुक्त करनेका स्वप्न बड़े पुराने जमानेसे संसारके महान् कलाकार और साहित्यिक देखते आये हैं, जर्मनीके महान दार्शनिक, कवि तथा साहित्यिक गेटेने भी अपने 'फाउस्ट' के जरिए समुद्र-किनारेके एक अति सकीर्ण स्थानमे स्वतंत्र भूमि और स्वतंत्र लोगोके बीच रहनेका स्वप्न देखा था। आज मजदूर-समाजने पूँजीवादके दलित और गुलामोके समुद्रमें अपना छोटा-सा संकीर्ण स्थान नहीं बल्कि एक विशाल महादेश कायम कर लिया है। आज 'स्वतंत्र भूमि और स्वतत्र लोगो' का दायरा समुद्र-किनारेका सकीर्ण स्थान नहीं, बल्कि दुनियाका छठा हिस्सा है।

इस नई दुनियाके समाजका विशाल रूप देखना मेरे लिए अब भी बाकी था। यह मौका पहली मईके अवसरपर मिला।

पहली मई

१

पहली मई ! मज़दूर-एकताका दिन ! अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर जागृतिकी जन्म-तिथि ! समाजवादी क्रान्तिका वार्षिकोत्सव ! लाल झण्डेकी विजय ! हँसिया-हथौड़ेके नारे, रक्तपात,—आज़ादीका दिन ! मज़दूर-वर्गका सबसे बड़ा त्यौहार !

इस दिन सारे संसारमे लाल झण्डेके नीचे मज़दूरोके जुलूस निकलते हैं। प्रोलेटारियाटके लिए लाल दिन और वोर्ज़ुआ (धनी) लोगोंके लिए यह काला दिन रहता है । मज़दूर अपनी आज़ादी घोषित करने निकलते हैं, शोषक बदूके लेकर, दॉत पीसते हुए उन्हे गोलियोसे भून डालनेकी ताकमे रहते हैं। यह क्रान्तिकारी शक्तियोकी परीक्षाका दिन होता है। यह दलितोके पुनरुज्जीवन और आज़ादीका, मनुष्यताके युवा-हृदयके विकास, विजय और अपनी शक्तिमे अटूट विश्वासका दिन रहता है।

सोवियत यूनियनके लिए यही सबसे बड़े उत्सवका दिन है। वे क्रिस-मस और दशहरा नहीं मनाते। ईस्टर और होलीसे उन्हे ताल्लुक नहीं। ये दिन कब पड़ते हैं, शायद क्रान्तिके बाद रूसमे विरले ही किसीने खोज करनेका कष्ट उठाया होगा। यह पहली मई श्रमकी पूजाका दिन ठहरा। इसे वे बड़ी धूमधामके साथ मनाते हैं। लगातार तीन दिनो तक यह

उत्सव जारी रहता है। इन दिनों मास्कोकी सजावटका क्या कहना है! यह है आज़ाद, विजयी, नयी दुनिया बसानेवाले कार्यशील मनुष्योंकी राजधानी। इनके इस उत्सव मनानेके ढंगकी तुलना और कहीं ढूँढ़नेपर भी कैसे मिल सकती है?

इस वर्ष भी इस उत्सवकी तैयारियाँ बहुत पहलेसे ही हो रही थीं। घर, रास्ते, चौराहे, ट्राम, बस, रेल, दूकान,—सब सजाये जा रहे थे। जिधर दृष्टि जाती उधर लाल ही लाल दिखलाई देता। इन दिनों हिम पिघल गया होता है। गरमीके दिनोंकी सब्ज साड़ी पहननेके पहले राजधानी पहले नया लाल वस्त्र पहन लेती है। जगह जगहपर मेले लगने लगते हैं। लोग उछलते-कूदते, गाते-बजाते हैं। चौराहोंपर भी भीड़ लगी रहती है। उत्सवका दिन है, लोग सवारीकी परवाह नहीं करते। कितने मनचले-युवक ट्राम-ड्राइवर और युवती कंडक्टरको भी उतार कर बूलवारमें एक बार नचा लेते हैं तब आगे बढ़ने देते हैं। उत्सवके दिन यह सब माफ रहता है।

इस वर्ष भी वे दिन आये। मई दिवसके एक दिन पहलेसे ही धूप निकलने लगी। सूर्यमें नरमी और गरमी थी। लोगोंने मोटी मोटी खालके कालरोंवाले ओवरकोट खूँटियोंपर टाँग दिये। ऐसे दिनोंमें मास्को विशेषकर सुन्दर दिखता है। यहाँ वालोंकी स्वाभाविक गति,—चलनेकी रफ्तार और भी अधिक बढ़ जाती है। पाँवोंमें अब सिर्फ जूतोंसे ही काम चल जाता है। उसपर रबरके गालोशोंकी आवश्यकता नहीं, इसीलिए लोगोंको चलना हलका मालूम पड़ने लगता है।

राजधानीके ही वाशिन्दे अपने ही मुहल्लों और सड़कोंपर अजनबीकी भाँति खड़े हो चारों तरफ अवाक् हो देखना शुरू कर देते हैं। उनके लिए भी बहुत-सी चीजे बिलकुल नई दिखलाई देती हैं। पिछले दिनों तैयार हुए राजपथ आज ही उन्हें पहले पहल खुले हुएसे दिखलाई देते हैं। नये वोल्गा कैनालसे आए जहाजोंपर उनकी पहले ही पहल दृष्टि पहुँ-

चती है पर उनकी सूचना घर घरमें अधिक खाने-पीनेकी सामग्री पहुँचनेके कारण पहले ही मिल गई होती है। मन ही मन जहाजके कप्तानोसे वे कहने लगते हैं—" आगेसे और भी भर भर कर जहाज लाना, हमारी जरूरतें बहुत बढ गई हैं।"

नई इमारतोपर लाल झडे देखकर उन्हे उनकी ऊँचाईका अन्दाजा मालूम होता है, ज़ारशाहीके जमानेमे तैयार हुई इमारते उनकी तुलनामे बौनी मालूम होने लगती हैं। इन नई सड़कोंके निकालनेमे,—पुल, नहर, नई इमारतोद्वारा शहरके अधिक सुन्दर बनाये जानेमे मास्कोवासी अपना हाथ देखते हैं। इसीलिए उसकी खुशी भी उन्हे विशेष प्रकारकी होती है।

जमीनके नीचे चलनेवाली उनकी रेल भी तैयार हो गई। काम न रहनेपर भी सिर्फ उसका सौन्दर्य देखनेके खयालसे ही वे एक चक्कर लगा आते हैं और कहते हैं—" ये सब हमारे बनाये हैं, इन सबके मालिक हम हैं, संसारका और कौन-सा शहर इतना सुन्दर हो सकता है?"

इसी नई दुनियाकी राजधानीमे पहली मईके उपलक्षमे सभाये होती हैं। लोग अपनी विजय मनानेके सिवा सारे ससारके दलित-वर्गपर दृष्टि डालते हैं और उनके प्रति अपना कर्त्तव्य निर्धारित करते हैं। क्यो?—सारे संसारके मजदूर रिश्तेमे उनके भाई लगते हैं।

२

बलशोई थियेटरमे हॅसिआ-हथौड़े नामके बिजलीके कारखानेके मज़दूर अपनी सभा कर रहे थे। उस थियेटरके सब दरवाजे, खिड़कियाँ और खम्भे तक बिजलीकी बत्तियोसे पच्चीस वर्षोंकी दीवालियोके एक साथ सजाये जानेके समान जगमगा रहे थे। थियेटरके सामनेके पार्कमे राहगीरोके लिए उन्होने एक अपने कारखानेकी नुमायश लगा रखी थी जिसमे बिजलीकी करामात तरह तरहके रूपमे दिखलाई दे रही थी। ठीक पार्कके बीचमे और थिएटरके मुख्य द्वारके सामने बिजलीकी बत्तियोसे लेनिनके

नामपर बनाया गया द्रेप्रोस्त्रॉयका हाइड्रोएलेक्ट्रिक प्लैंट दिखलाया गया था। द्रिपर नदीका बाँध और जलप्रपात बिजलीसे जगमगाते रहनेके कारण बहुत ही सुन्दर दिख रहे थे।

थिएटरके एक दरवाजेपर एक लड़की मुस्कुराती हुई प्रवेश करनेवालोसे टिकट वसूल कर रही थी। मेरे पास उस तरहका टिकट नहीं था। लड़कीने सर उठाकर मेरी ओर देखा और कहा, 'फिर ?' उसका चेहरा मुझे वेलाके जैसा दिखलाई दिया। कीवके इंस्टिट्यूटके दरवाजेपर उसे उसी भाँति देखा था। लड़कीने स्वयं ही कहा—"दवाईचे,—हर्ज नहीं, भीतर जाओ।"

समूचा थिएटर-घर लोगोंसे खचाखच भरा था। स्टेजके सामनेके पाँचों मंजिलोपर तिल रखनेका भी स्थान नहीं था। हजारो आदमी खड़े थे। आज वे सबके सब अपनी सादी पर सुन्दरसे सुन्दर पोशाकमे आये थे। कमसोमोल लड़कियोकी पोशाक दूरसे ही चमक जाती थी। स्टेजपर बड़ी-सी मेजपर लाल कपड़ा बिछा था और तीन ओर कुरसियाँ लगी थीं। सभापतिके लिए स्टालिन, वोरोशिलोव, कागानोविच और मोलोटोवके साथ साथ कारखानेमें सबसे अधिक दत्तचित्त हो काम करनेवालो, पार्टीका काम सुचारु रूपसे चलानेवालो और अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेवारी सबसे अधिक समझनेवालोंके नाम पेश हुए। इन सभापति और सभानेत्रियोका लोगोंने खड़े होकर और ताली बजाकर स्वागत किया। साथ ही इंटरनैशनल भी बज रहा था।

लोगोंके फिर बैठ जानेपर सभाकी कार्यवाही आरंभ हुई। बोलनेके मंचपर एक युवती आई। उन दिनो वह बल्ब बनानेके विभागमे काम करती थी। लोगोंकी करतल-ध्वनिने उसे सहमा दिया था। बीस हज़ारसे भी अधिक आँखे एक साथ उसपर जा लगीं थीं। वह बारबार 'तवारिशी'...कहती और उसे हल्ला शान्त होनेके लिए रुकना पड़ता। अपनेको भली भाँति सम्हाल लेनेपर उसने कहा—

"आज हमारा सबसे बड़े उत्सवका दिन है। हम आजादीके साथ इसे मना रहे हैं, पर दूसरे देशोंमे हमारे करोड़ो भाई बहन हैं जो अभी भी गुलामीकी जंजीरमे बँधे हैं, उनके ऊपर होनेवाले अत्याचारोका पारावार नहीं। हमारा काम, हमारा ध्येय तब तक पूरा नहीं समझा जायगा जब तक सारे संसारके लोग हमारी ही तरह आज़ादीसे मजदूर-वर्गका यह उत्सव मनानेके हकदार नहीं हो जाते।"

उसे बोलनेकी आदत नहीं। हृदयके उद्गार चंद शब्दोंमे व्यक्त कर बैठ गई। और लोगोंके बोलनेका भी वही ढंग रहा। लोगोंने बतलाया कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-वर्गकी सहानुभूति और मदद सोवियत यूनियन-को नहीं मिली होती तो आज सोवियतका टिक पाना मुश्किल होता, इतने—क्षेत्रोंमे तरक्की करनेकी बात तो दूर रही। दूसरे लोगोंने कारखानेके कामके और भी अधिक सुचारु रूपसे चलानेपर ज़ोर दिया क्योंकि उनका काम जितना ही आगे बढेगा अन्तर्राष्ट्रीय शोषण और दरिद्रताका उतना ही शीघ्र नाश होगा। ज़ारशाहीके ज़मानेके सताये गये वेजप्रिंजोर्नीका जीवन व्यतीत करनेके लिए बाध्य हुए कलके मामूली घसकटे इस समय बिजली-घरके इंजीनियर बन गये थे। ऐसे लोगोंके भी व्याख्यान हुए। उनमे व्याख्यान देनेकी बड़े बडे राजनीतिज्ञो जैसी कुशलता नहीं थी, फिर भी उन राजनीतिज्ञोसे हजार गुना अधिक उपयोगी उनका व्याख्यान था। वे अपने जीवनका उदाहरण देकर लोगोंको समझाया करते, बडी बडी पोथियोंसे उन्हे कम ही ताल्लुक हुआ था। एक कमसोमलने कहा—"हमे सोवि-यत-दुनियाका सदस्य होनेका गर्व है और इसी गर्वकी रक्षाके रास्तेमे यदि हमे चीन, भारत, स्पेन आदि देशोंके शोषित लोगोंकी मददमे अपने प्राण दे देने पड़े तो हम अपना अहोभाग्य मानेगे।"

यहाँ किसी बड़े विद्वानका, अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी समस्यासे परिचित किसी महान् व्यक्तिका व्याख्यान नही था। यहाँ थे सोवियत जनताके अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-समाजके प्रति अपने भीतरके छिपे हुए उद्गार।

सोवियत-जीवनकी और सादगियोंके ही समान ये उद्गार भी बड़े सीधे सादे सरल व्यक्तियोंके मुँहसे और उन्हींके उपयुक्त निष्कपट, निश्छल, भावपूर्ण भाषामे निकल रहे थे । उन उद्गारोंका किसी लेखकके लिए व्यक्त कर सकना असभव होगा ।

मेरे सामनेकी खिड़कीसे मास्को दिखलाई पड़ता था । जब उसे ये सोवियतवासी अपना कहते, अपनेको उसका मालिक बतलाते तो उनका वह ' अपना ' तथा उनके उस आधिपत्यकी सीमा कितनी विशाल हो सकती है, यह उनके व्यक्त करनेके भावसे ही पता चल जाया करता । वे अन्तर्राष्ट्रीय दलित मजदूर-वर्गके ' उद्धारकर्ता 'की डींग नहीं वल्कि उसके प्रति अपने कर्त्तव्य, अपनी कृतज्ञता प्रकाश कर रहे थे ।

इतना विशाल अन्तर्राष्ट्रीय भावपूर्ण जीवन सोवियत राजधानीमें ही पाया जाना स्वाभाविक और संभव था ।

३

सभाकी कार्यवाही समाप्त होनेके बाद थियेटर आरंभ हुआ । यह भी और देशोंके थियेटरोंसे भिन्न था । यहाँ दर्शकोंमें काम-भाव जाग्रत करना उद्देश नहीं । सभ्य भाषामे भद्दे मजाकोंको यहाँ स्थान नहीं । धनी-वर्गके लिए प्रचार भी इसका उद्देश नहीं । ठीक इन भावोंके विपरीत किसीको ' मनुष्योपरि ' बना कर, या किसी व्यक्ति-विशेषकी वीरताको इस चरम सीमापर पहुँचा कर, दिखलाना कि साधारण मनुष्य अपनेको उसके सामने चींटीसे भी छोटा समझे, आदि बाते भी इस नाटकमे नहीं थीं ।

इस नाटकमे सोवियतका निजका कुछ ही वर्ष पहलेका इतिहास था । सोवियत समाज जिन मंजिलोसे होकर गुज़र चुका था उसीका चित्र सामने दिखलाया जा रहा था । नाट्यकारने लाल सेनाके संगठित होनेका प्रारं-

भिक स्वरूप दिखलाया था। सबसे बड़ी विशेषता इस नाटककी यह थी कि इसमे मनुष्यको खयाली मनुष्य नहीं बल्कि हाड माससे बने हुए वास्तविक मनुष्यो जैसा दिखलाया गया था। दर्शकोको यह बतलाना इसकी उद्देश था कि लक्ष्यका स्पष्ट होना, लक्ष्य प्राप्तिके लिए आवश्यक धुन, और प्रत्येक रुकावटको तोड़ डालनेवाली चरित्रकी दृढता,—ये तीनो ही बाते महान् उद्देश्योंकी पूर्त्तिके लिए आवश्यक होती हैं।

सोवियतके लोगोने अपने संग्राममे यह भी देख लिया था कि धुन और दृढता एकदम अपनी पूर्णताकी सीमापर नहीं पहुँच जातीं बल्कि उनके विकासकी भी सीढियॉ होती हैं। विकासके ही रास्तेमें उनके अपने सुधारका काम जारी रहता है। जनताका नेतृत्व करनेवाले व्यक्तिविशेष पहलेसे ही नेतृत्वके सब गुणोसे आभूषित नहीं होते बल्कि मौकोपर उन गुणोको वे सीखते हैं और अपने समाज-विशेषके भाग्य-निर्णयकी जिम्मेवारी भलीभाँति महसूस करते हैं। ऐसे मौकोपर सिर्फ व्यक्तिगत बहादुरीसे, मनुष्योपरि त्याग-भावना अथवा एक व्यक्तिद्वारा ऊँचेसे ऊँचे आदर्शको कार्य रूपमे परिणत कर देनेसे काम नहीं चलता।

लाल-सेनाके संगठित होनेमे, सामूहिक जागृति, व्यवस्था, एकता आदिके साथ साथ संगठनकर्त्ताकी दृढ इच्छाका क्या भाग रहा है, यही विशेषरूपसे मंचपर दिखलाना नाट्यकारका उद्देश था।

४

अस्त्र-शस्त्रोसे भरी लारियो, आर्टिलरी और टैंकोकी घडघडाहटके कारण चार बजे ही नींद टूट गई। सडकका दृश्य ऐसा दिखलाई दिया मानो लड़ाई छिड़नेवाली है और सेनापतिने सेनाको तैयार होकर युद्ध-क्षेत्रके लिए रवाना होनेका हुक्म दे दिया है। लड़ाईके सामानसे सुसज्जित मास्कोका गैरिज़न रेडस्क्वायरकी ओर जा रहा था।

गोर्की रोडपर कतारमे खडे बहुतसे टैंक दिखलाई दिये। लड़ाईमे उपयोग किये जानेवाले इन विकराल दैत्योंको पहले ही पहल देखा था। और देशोमे ऐसे हथियारोंके पास साधारण आदमियोको फटकने भी नहीं दिया जाता पर यहाँ ये सडकपर खड़े थे और कुछ उत्सुक लोग उन्हे देखनेको भी जुटते जा रहे थे। एक बूढा टैंक कमान्डरको आशीर्वाद देने लगा—"तुम सदा युद्धमे विजयी हो। जर्मन जापानी चाहे जो भी आक्रमण करनेका साहस करें उसे तुम मार भगाओ, यही मेरा अशीर्वाद है।"

वह बूढा १९०५ की लड़ाईमे जापानके विरुद्ध लड़ चुका था पर टैंक जैसी चीजे उसने नही देखी थीं इसीलिए उसकी जानकारीके लिए वह टैंक कमाडरकी ओर देख रहा था। कमाडरने उसे टैंकोका इतिहास सुनाया। महासमरके समय सबसे पहले अँग्रेजोने इसका व्यवहार किया था। शुरू शुरूमे इसका खूब असर रहा पर तुरत ही जर्मन भी इनका बनाना सीख गये। साथ ही इसकी काट भी जान गये।

इन बातोंके बतलाते बतलाते बहुतसे आदमियोने टैंक कमाडरको चारों तरफसे घेर लिया था। किसीने भीडमेसे ही प्रस्ताव किया—"फैसिस्टोद्वारा आक्रमण किये जाने पर तो हम युद्ध-नृत्य करेगे ही अभी हम लोग 'याब्लच्की' नाचे। हारमोनिया बजने लगा। टैंकके बगलमें ही छोटा-सा घेरा बना लोग नाचने लगे। टैंक कमाडरको नाचनेके लिए कहना नहीं पडा। दूसरे दो जोड़ोंको थकता हुआ देख वह स्वय ही बीचमें कूद पडा और एकदममें ही तीन पार्टनरोको मात कर दिया। लोग चिल्ला उठे—"दा ज्द्रास्त्व्युते क्रासनाया आरमिया—'लाल सेना ज़िन्दाबाद।"

५

उस दिनका प्रभात और दिनोंकी अपेक्षा अधिक लाल दीखता था। इसका कारण शायद यह था कि मैं लाल राजधानीके लाल चौकमे

ठीक लेनिनके मोसालियमके पास खड़ा था। जिधरसे सूर्योदय हो रहा था उधर ही तिमंजिलेपर दो दो पुरस ऊँचे अक्षरोमे लिखा था—"पहली मई—अन्तरराष्ट्रीय प्रोलेटारियटका लाल क्रान्तिकारी दिवस चिरजीवी हो।"

उसके दोनो किनारोपर लेनिन और स्तालिनके विशाल चित्र अंके थे और हँसिये हथौडेका चिह्न बना था।

नौ बजेसे मास्को गैरिज़नकी पैदल सेनाकी टुकड़ियाँ आने लगीं। थोड़ी ही देरमे उनकी संख्या बीस हजार हो गई। वे लोग अपने अपने स्थानपर खड़े थे। उनके नायक भी अपने अपने स्थानसे हुक्म दे रहे थे।

मेरे बगलमे विदेशी राजदूत, भिन्न भिन्न देशोके मज़दूर-संघोके प्रतिनिधि, लाल सेना, कारखाने, कलखोज आदिके प्रतिनिधियोके लिए स्थान था। यह जगह भी लोगोसे खचाखच भरने लगी। लेनिन-स्मारकपर सोवियट नेताओके पहुँचनेपर लोगोने खड़े हो उनकी अभ्यर्थना की। बहुत देर तक करतल-ध्वनि होती रही।

क्रेमलिनके गुम्बजसे इंटरनैशनलके स्वरमे दस बजनेका घंटा सुनाई दिया। अभी उसकी प्रतिध्वनि मिट भी नही पाई थी उसी समय क्रेमलिनके एक फाटकसे लाल सेनाके सबसे बड़े सेनापति मार्शल वाराशिलोव, घुडसवार सेना-विभागके नायक मार्शल बुदयोनीके साथ घोड़ेपर निकले। क्रेमलिनके भीतरसे दनादन तोपोकी आवाज़ आ रही थी। लेनिन-स्मारकके पासके बैंडने इटरनैशनल बजाना शुरू किया। दूरपर हवाई जहाजोके उड़नेकी घड़घडाहट सुनाई देने लगी। यह पहली मईको सोवियट यूनियनकी ओरसे लाल सेनाद्वारा सलामी दी जा रही थी।

"स्मिर्ना—" गैरिसनके नायकने हुक्म दिया 'दाये घूम।' बीस हजार आदमी एक साथ राइट-टर्न हुए। मालूम पडता था जैसे एक आदमीका घूमना हो, आवाज बिलकुल एक थी।

"तवारिश कमादियर" गैरिसन नायकने फौजी सलामी देते हुए कहा—"मास्को गैरिसन पहली मईकी पैरेडके लिए तैयार है।"

"ज्द्रास्तव्युते तवारिशी"—वाराशिलोवकी आवाज आई। "ज्द्रास्ता-व्युते...(नमस्ते)" एक स्वरसे बीस हजार आदमी बोल उठे। लेनिन स्मारकके पास पहुँचनेपर वाराशिलोव और बुदयेनी घोडोकी बागडोर तान खडे हो गये। सब तरहके समुपस्थित लोगोको सम्बोधन करते हुए उन्होंने कहा—

"हम सोवियत-निवासियोको शोषण-प्रणालीके विरुद्ध लड़ाइयोंमें सबसे पहले सफलता मिली है। सारे संसारके बोर्जुआ राष्ट्रोकी सेनाओसे घिरे रहनेपर भी हम लोग एक नई दुनिया बसाते आ रहे हैं। यह मनुष्योंके रहने योग्य नई दुनिया हम बहुत कुछ बसा चुके हैं। इसकी नींव अजर अमर हो चुकी है।

"पर अब भी बोर्जुआ राष्ट्र अपनी हरकतोसे बाज नहीं आते। प्रोलेटारियटके त्योहारके दिन हम उन्हें एलान कर देना चाहते हैं कि हरे भरे सोवियत बागीचेमे अपनी सुअरोकी नाक घुसेड़नेसे फैसिस्ट राज्य बाज आये। बीस वर्ष पहले हम उन्हे अच्छा सबक सिखा चुके हैं, वही उनके लिए काफी होना चाहिए। उस समय हम आज जैसे मजबूत नहीं थे, फिर भी विजय हमारी ही हुई। आज सोवियत यूनियनकी हमारी यशस्विनी लाल सेना वह बूता रखती है कि एक जर्मनी जापान और इटली नहीं, इनके जैसे कितनोका वह अकेले तीन गुने अधिक सशस्त्र हथियारोके जोरसे और हजार गुनी अधिक बहादुरी दिखलाते हुए सफलतापूर्वक सामना कर सकती है। फैसिस्टोने हमारी सोवियट क्यारी छूनेकी गुस्ताखी की नहीं कि लाल सेना उनके घरोमे पहुँची रहेगी।

"हम अहिंसावादी नहीं। प्रोलेटारियन मातृभूमिकी रक्षाके लिए, संसारकी प्रोलेटारियटको शोषण और गुलामीकी जंजीरसे मुक्त करनेके लिए हम शत्रुओके रक्तकी नदियाँ बहा सकते हैं। हमारी यह लड़ाई

अपनी रक्षाके लिए है और इसीलिए मनुष्यताकी दृष्टिसे सबसे अधिक जायज है।

"साथियो, आज इस उत्सवके दिन हम ससारके सब देशोंके प्रोलेटारियाट, सब दलित राष्ट्रोंके पास यह शुभ संदेश भेज देना चाहते हैं कि वे अपनेको खूँखार पूँजीवादी शोषण-प्रणालीके विरुद्ध लडाईमे अकेला न समझे। उनके बधन-मुक्त करनेमे उनका सबसे बडा साथी, वर्गमे भाईका रिश्ता होनेके कारण सोवियत यूनियन और लाल सेना है।

" आज पीड़ित दलित लोग भी मई दिवस मनाते होगे। उन्हे बोर्जुओकी गोलियोका शिकार होना पडता है। पर उनके वैसे ही दिन हमेशा नहीं रहेंगे। यह बात लाल-सेनाकी विशाल शक्तिसे ही स्पष्ट होती जाती है।

" हमारी लाल सेनाकी युद्ध-भेरी वे आज सुन सकेंगे। यह उन्हे स्वातन्त्र्य-संग्राममे सबसे अधिक प्रोत्साहित करेगी। परवाह नहीं यदि हम उनसे हजारो मील दूर हैं। वे हमे देख रहे हैं, सुन रहे हैं—वे हमारे साथ हैं, हमे लाल सेनाकी मार्चके समय उनकी आवाज सुनाई देती है। मुझे पूरी उम्मीद है, वे हमारे कधेसे कधे मिलाकर युद्ध-क्षेत्रमे उतरेंगे।

" तवारिशी, हमारी लाल सेना अन्तर्राष्ट्रीय प्रोलेटारियाटके प्रति हमेशा वफादार रहेगी, उन्हे शोषणसे छुटकारा दिलानेमे हमेशा मदद पहुँचायगी। यही हमारे सोवियत यूनियनकी प्रतिज्ञा है।

" भाइयो ! मजदूरोका यह उत्सव, दलित-वर्गकी एकताका यह क्रान्तिकारी दिवस...यह पहली मई चिरजीवी हो !..."

लाल सेनाका बैंड जोरोसे इंटरनैशनल बजाने लगा। उसीकी तालपर इन्फैंट्री मार्च करने लगी। आकाशमे चार सौ वायुयान एक साथ उतर आये थे। रेड स्क्वायरपर बहुत नीचे उतर आ अपनी सलामी बजा वे फिर ऊँचे चले गये और आकाशमे वहाँ रूसी अक्षरोंमे लिखा—'एस, एस, एस, आर' (सोयूज सोवियेत्सकीख सोचिआलिस्तिचस्कीख रेस्पू-

विलकीख—जिसे संक्षेपमे सोवियत यूनियन कहते हैं)।

सात मछलियोके आकारके हवाई जहाज जो लेनिन स्केड्रनके नामसे प्रख्यात थे रेड स्क्वायरपर चक्कर लगाने लगे। ऊपर उनकी मोटरोकी आवाज़, हवामे इटर नैशनलकी गूँज और जमीनपर इन्फैटरीकी तालपर मार्च करनेकी आवाज़। लालसेनाका पैरेड आरभ हुआ।

६

'सागम...मार्श...' गठीले बदनवाले इन्फैटरी (पैदल सेना) कमाडरने हुक्म दिया। थोडा आगे जानेपर कहा—' प्रयामो ' (सीधे)।

लाल सेनाकी इन्फैन्टरी मार्च कर रही थी। फौलादकी तरह सख्त और धीर भावसे उनके पॉव पड़ रहे थे। धरती कॉप रही थी। उनमेंसे कितनोंने ही जर्मन, जापान तथा अन्य राष्ट्रोंके साथकी गृह-युद्धके समयकी लडाईमे भाग लिया होगा। चूड झील, नीवा तट, कुलीकोवो और लिवोनियाकी लडाईकी स्मृति अब भी उनके अन्दर जाग्रत होगी। कितने वोल्गा और द्निपर-तट, कितने उराल और साइबेरियामे अपनी बहादुरीकी स्मृति छोड आये होंगे, मास्को और पेट्रोग्राडके संरक्षक रहे होंगे।

यह ऐतिहासिक इन्फैन्टरी थी। इनके पूर्वजोने सदियो पहले स्वयं अपने तथा दूसरोको आज़ाद करनेके लिए आवाज उठाई थी, वे फॉसी और गोलियोंके शिकार होते रहनेपर भी अपने दृढ़ निश्चयसे कभी नहीं डिगे। इनमे कितने स्तेका राजिन और पुगाचेवके वशज होंगे; जारके खिलाफ आवाज़ उठानेवाले दिसबर-वादियोकी औलाद होगे। उतने दिनोसे ये असफल हुए थे, अक्टूबरकी क्रान्तिने इन्हे महान् विजेता बनाया। आज वे अपने सीनेके ही समान संगीन तान कर अपनी दृढता एव अपने पूर्वजोके समान आज भी लडनेवालोंके प्रति अपनी एकता जतला रहे थे।

इनके बाद घुडसवार सेनाकी बारी आई। आगे आगे उनकी कंपनियोंके सेनापति नगी तलवार भॉजते चल रहे थे और उनके पीछे पीछे

उनकी फौज उसी इशारेपर कतारमें आ रही थी। घोड़े भी उन्हीं तलवारोंके इशारेपर चाल चलना सीख गये थे। मनुष्योंके ही समान उनकी टाप एक साथ और कदम भी मिले हुए-से बढते दीखते थे। आज उन जानवरोंको देखकर भी कोई नही कह सकता था कि उनके भीतर अदम्य उत्साह नहीं भरा है।

तलवार ऊँची कर घुड़सवार सैनिक ट्रिब्यूनके सामनेसे होकर गुजरते और उनके सेनापति मार्शल वाराशिलोवने जिस सोवियत प्रतिज्ञाका जिक्र किया था उसका वे पूरा पूरा समर्थन करते। यह उनकी तथा उनके घोड़ोंकी प्रत्येक गतिसे स्पष्ट हो रहा था। घुडसवार सेनाके प्रधान नायक उनकी कुशलताके लिए बार बार 'हुर्रा' कह कर बधाई दिया करते।

अब मेशिनगन, मोटर साइकिल, आरमर्डकार, आर्टिलरी और टैंकोंकी क्रमशः वारी आई। इन अस्त्र-शस्त्रोमे लाल सेनाकी तरक्की देखने ही योग्य थी। वर्त्तमान युद्ध-प्रणालीमे आवश्यक इन हथियारोमे शायद ही संसारका ऐसा कोई हथियार रहा होगा जो उस दिन रेड स्क्वाय-रसे होकर न गुजरा हो। फिर भी यह केवल मास्को गेरिजनकी पैरेड थी। ठीक उसी ढंगकी पैरेड सोवियत यूनियनके प्रत्येक शहरमे उसी घटेमे साथ साथ चल रही थी। शायद गॉव भी उससे बाकी नहीं बचे होगे। बडे बड़े शहरोकी पैरेडकी सूचना रैडियोद्वारा मिलती जा रही थी।

विदेशी राजदूत लाल सेनाकी यह शक्ति देख दॉतो उँगली दबाने लगे थे। युद्धके लिए आगे आनेवाले राष्ट्रोके लिए यह बहुत बड़े भयका कारण और शान्ति चाहनेवालोके लिए बहुत हिम्मत बँधानेवाला बन रहा था। यही संसारके प्रोलेटारियर्न और दलित वर्गकी सहायक, सोवियत मातृभूमिकी रक्षा शस्त्रोद्वारा करनेके लिए हमेशा तैयार रहने-वाली लाल सेना थी। एक घटेके पैरेडमे ही उसकी कुशलता, महती शक्ति और तैयारीका पूरा पूरा सबूत मिल जाता था।

इस लाल सेनाके पीछे पीछे चलनेवाले सोवियत यूनियनके सब

नागरिक थे। उनका एक पूरा समुद्र ही उमडता हुआ रेडस्क्वायरसे गुजरने लगा। इनमे पार्टिजान, कारखानोमे काम करनेवाले, स्कूलोमे पढ़नेवाले, कलखोजनिक, राजकीय मुहकमोमें काम करनेवाले सब श्रेणीके लोग थे। चारो तरफ लाल ही लाल दीखता था। अपने अपने विजयके नारे उन्होने लाल कपडोपर लिख रखे थे और उन्हे साथ लेते जा रहे थे। यह था लाल राजधानीके लोगोका जुलूस। युद्ध-विद्यामे ये लाल सेनाके समान प्रवीण नहीं थे फिर भी उनके पॉव अनाड़ियोकी तरह नहीं बल्कि सैनिको जैसे उठ रहे थे। एक ध्येय, एक विचार, एक लगनसे प्रेरित हो नई दुनिया बसानेवालोका बड़ा ही विशाल, समुद्र उमड़ता हुआ आ रहा था।

"दा ज्द्रास्तव्युते पेरवोवो माया—तवारिशी" (पहली मई ज़िन्दाबाद—साथियो) स्तालिनने अपनी ताकत-भर चिल्लाकर उनकी अभ्यर्थना की।

"हुर्रा! दा ज्द्रास्तव्युते पेरवोवो माया! हुर्रा—" सारा समुद्र गरज उठा।

"दा ज्द्रास्तव्युते मिरोवई रिवोल्यूचिया—तवारिशी..." (संसार-व्यापी क्रान्ति ज़िन्दाबाद) वाराशिलोवने सेनापतिकी स्वाभाविक आवाजमें कहा—"हुर्रा! दा ज्द्रास्तव्यूते मिरोवोई रिवोल्यूचिया...हुर्रा हुर्रा..." गर्जना घटो जारी रही। सोवियत-निवासियोके इस समुद्रका कहीं अन्त होता नहीं दिखलाई देता था।

सारा सोवियत यूनियन ही मार्च कर रहा था। शोषण-प्रणालीके साथ साथ आनेवाली असख्य तरहकी गुलामी, आतंक आदिकी गन्दगी जिसने मनुष्यतापर सदियोसे कलंकके धव्वे लगा रखे थे उन्हे धो डालनेके लिए यह पिघले हुए फौलादका समुद्र उमडता आ रहा था।

उसकी उस दिनकी गर्जना वास्तवमे ही सारे संसारको सुनाई पड़ती होगी।

लेनिनग्राद

१

मास्कोसे 'क्रासनाया स्त्रेला' (लाल तीर) साढे ग्यारह बजे रातको छूटती थी। सारे सोवियत-यूनियनमे सबसे अधिक आरामदेह और तेज चलनेवाली यही एक्सप्रेस मास्को और लेनिनग्रादके बीच दौडा करती है। जिस समय मैं उसपर सवार हुआ अभी संध्या हुई-सी ही मालूम पड़ती थी। 'लाल तीर' उत्तर-पश्चिम दिशामे छूटी जा रही थी।

मास्कोकी बिजलीबात्तियोंके ओट होते ही प्रभात हो गया-सा दिखलाई देने लगा। मुझे बडा आश्चर्य हुआ। खिड़कीसे मुँह बाहर निकाल कर देखा—चॉदनी रातसे भी अधिक प्रकाश। पर चॉदका पता नहीं। आकाशमे बहुत कम तारे टिमटिमा रहे थे। इतने कम तारोंको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

दूसरे दिन तडके लेनिनग्राद जा पहुँचा।

२

लेनिनग्रादमे गरमीके इन खास दिनोमे अँधेरा होता ही नहीं। सड़कके किनोर बिजली नहीं जलाई जाती। आधी रातके समय भी इतना उजेला रहता है कि लोग आसानीसे बिना बत्तीके ही सडकपर अखबार पढ सकते हैं। रात इस प्रकारकी रहनेके कारण प्रभातमे लोगोंको कोई खास विशेषता नहीं दिखलाई देती। अंधकारके दूर हो जानेपर एक प्रकारका

अज्ञात आश्चर्य जो सुबहमें जगनेवालोको हुआ करता है वह इन दिनों लेनिनग्रादवालोको नहीं होता। इन दिनो लोग रात-भर टहलते रहते हैं और सुबहके वख्त बिस्तरेपर लेटते हैं।

मैं नेव्स्की प्रोसपेक्टसे गुजर रहा था। इसका नाम क्रान्तिके बाद '२८ वीं अक्टूबरकी सडक' पड़ गया है। लेनिनग्रादकी यही सड़क मास्कोकी ट्रेनसे उतरनेपर सबसे पहले मिलती है। मै सीधे उत्तरकी ओर चला। लेनिनग्रादकी सब सडके बिल्कुल सीधी गई हैं और मकान भी तरतीबसे बनाये गये हैं। शहरके सर्व प्रथम बसानेवाले पीटर महान्‌मे सैनिक गुणके साथ साथ कला समझनेके भी गुण थे यह परिचय इस शहरकी प्रत्येक सड़कसे मिल जाया करता है।

नेव्स्की प्रोसेपेक्ट नीवा नदीके तटपर जाकर समाप्त हुआ। उसके एक किनारे ज़ारका शीतमहल था। आज कल वह अजायबघर है। सरसरी दृष्टिसे उसे झॉकता नीवाका पुल पार कर दूसरी ओर गया। उस भागको लोग वासिलियोवका टापू कहते हैं। वहीं नाबेरेजनी (नदी किनारे) सडक पर मेरे एक मित्र रहते थे। मैं वहीं टिका।

खिड़कीसे बाहर झॉककर देखा। यहॉसे लेनिनग्राद शहरके तीनों ही विभाग दिखाई देते थे। पेत्रोग्रादके हिस्सेकी ओर नदीमे एक टापूपर 'पिटर और पॉलका दुर्ग' था। इस दुर्गका इतिहास बहुत पहलेसे ही सुन चुका था। जारशाहीके जमानेमे भयानक समझे जानेवाले क़ैदी यहीं बद कर रखे जाते थे और उन्हें तरह तरहकी यत्रणाये दी जाती थीं। रूसी क्रान्तिकारियोद्वारा लिखे गये इस दुर्गके बहुत-से वर्णन पढ चुका था। आज कल यह भी अजायबघर और टकसालका काम देता है।

हमारे ठीक सामने घोड़ेपर सवार पिटर महान्‌की मूर्ति थी। उसके पीछेसे लेनिनग्रादके सबसे बडे और सुन्दर गिरजाघर ईसाकके बड़े बड़े आलीशान खम्भे झॉक रहे थे। घोडेपर सवार पिटर महान्‌की मूर्ति कलाकी दृष्टिसे भी अद्वितीय समझी जाती है।

इस मूर्तिके विषयमें लिखी गई पुश्किनकी कवितायें याद आने लगीं। इसीके सामने दिसंबर-वादियोंने सबसे पहला विद्रोह ज़ारशाहीके विरुद्ध किया था। वे परास्त हुए थे और उसी स्थानपर गोलीसे उड़ा दिये गये थे। वह क्रान्तिकारी भूमि आज भी वर्तमान है। उस जगहसे टहलनेवालोंकी जमात गुजर रही थी। शायद यह भी रात-भर टहलकर लौटनेवालोंका एक जत्था था। इनके पिता प्रपितामहने क्रान्ति इसी लिए की थी कि ये आनन्दके साथ जीवन व्यतीत कर सकें—उनके टहलनेमें कोई बाधा नहीं पहुँचा सके और जो स्थान सिर्फ़ धनी लोगोंके लिए थे, जो मकान स्वयं ज़ारके रहनेके लिए थे उन सबपर सिर्फ उस समयके रूसकी राजधानी पिटर्सबुर्गके ही नहीं बल्कि सारे रूसके ही प्रोलेटारियाटका आधिपत्य हो।

पिटरकी मूर्तिके आगे 'दिसबर-वादियोंके चौराहे' पर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट हो रहा था कि क्रान्तिकारियोंके खूनका एक क़तरा भी बेकार नहीं जाया करता। पुराना पिटर्सबुर्ग क्रान्तिके युगमें लेनिनग्राद बन गया है।

मैंने मन ही मन इसे नमस्कार किया।

३

उस दिन मेरा जहाज खुलनेवाला था। जहाजघाट जानेके लिए मोटर दरवाजे पर आ लगी थी। उसपर सामान भी लादा जा चुका था। मैं उसपर बैठने जा रहा था। ड्राइवरके कान चौराहेपर लगे रेडियोकी ओर लगे थे। मैंने कई बार उसे पुकारा पर उसने मुझे थोड़ा रुकनेका इशारा किया। कोई दिलचस्प ख़बर होगी समझ कर मैं भी उस ओर बढ़ा।

रेडियोद्वारा सोवियत वैज्ञानिकोंकी ध्रुव-यात्राका समाचार दिया जा रहा था। उसी सिलसिलेमें रेडियोसे आवाज आ रही थी—

"हमारे प्रोफेसर फ्रान्चयोजेफ़लैंड (उत्तरी ध्रुवके निकटका टापू) में

हवाकी तेजीकी रफ्तार अपने एक विशेष तरीकेसे जॉचना चाहते थे। इसकी उन्हें गैसके आविष्कारके लिए आवश्यकता थी। हठात् मौसिम पलट गया। ध्रुवके इलाकेमें बड़ा तेज झकोरा आया। बडे बडे बर्फ़के ढोंके लुढ़क चले। जहाज लंगर गिराकर मोटी जंजीरसे किनारे बॉध दिया गया। फिर भी इसपरके आदमी झूल झूल रहे थे। किसीके जहाजसे उतरनेकी तो बात ही दूर रही बाहर झॉंकने तककी हिम्मत नहीं हो रही थी।

" प्रोफेसर सिदारेंको (मैं चौंक पड़ा) के मुँहपर हॅसी थी। शायद वे ऐसे ही मौकेकी ताकमें थे। उन्होंने जो यंत्र थोडी दूरपर लगा रखे थे उनकी जॉचके लिए जानेका सबसे उपयुक्त वही समय समझा। लोगोंके मना करने पर भी वे नहीं रुके। अपना यत्र उन्हें ठीक काम करता दिखाई दिया। पर लौटते समय झकोरेके सामने और अधिक टिकनेकी शक्ति उनमें नहीं रह गई। वे एक तरफ लुढक गये। बडी देरतक लुढ़कते रहे। जहाजके चार खलासी उन्हें बडी मुश्किलसे उठा लाये। प्रोफेसर थोड़ी देर बाद ही होशमें आये। उन्होंने अपने यंत्रमें जो कुछ देखा था उसका बयान कागज़पर लिखा। अब भी उनके सरमें पत्थरोंके चोट लगनेके कारण असह्य वेदना थी। वे मूर्छित हो गये। उनकी हालत कई दिनोतक खराब रही पर अब जहाज सकुशल लौटा आ रहा है। उनकी हालत भी सुधरती जा रही है। "

४

वैज्ञानिकोंके विषयमें जहाजपरके पार्टी-सेक्रेटरीका व्याख्यान रेडियोद्वारा सुनाया जाने लगा—

" हमारी इस यात्रामें प्रोफेसर सिदारेंकोका प्रयत्न सबसे अधिक सफल रहा। जो सामग्री उन्होंने जुटाई है वह विज्ञानमें कायापलट करनेवाली है और उसीके आधारपर मनुष्यका जीवन भी बदल जाए तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं।

"मनुष्य चाहे जहाँ भी, जिस परिस्थितिमें भी मनुष्यके उत्थानके लिए कुछ करना चाहता है उसके रास्तेमें बाधायें आती हैं—मनुष्यका कर्तव्य है उन बाधाओंसे लड़ते जाना—इसी कामके लिए हमें मनुष्य-जीवन दिया गया है।

"प्रोफेसर सिदोरेंकोने यह जीवन सफल बनाया।"

सड़कपर इकट्ठे लोगोंने उनकी जयजयकार मनाई। मेरे ड्राइवरने भी मोटर स्टार्ट की। इस बार उसे मोटर साइकिलपर आये तार पहुँचानेवाले डाकियेने रोका। उसने मेरे हाथमें एक रेडियोग्राम दिया। मैंने उसे नीचेसे पढ़ा। लिखा था—

'बेला।'

मैं चौंक उठा।

सफ़ेद रात्रिका संगीत

१

" उत्तरी ध्रुवसे स्नेहालिंगन—वेला।"

'मालेगिन' जहाजसे भेजे गये रेडियोग्राममें ये ही शब्द लिखे थे।

वेला प्रोफेसर सिदोरेंकोकी सेक्रेटरीकी हैसियतसे गई थी। कीव छोड़नेके बाद उससे बहुत कम ही चिठ्ठी-पत्री हुई थी क्यो कि हम दोनों ही यह विचार रखते थे कि चिठ्ठियाँ सिर्फ किसी खास कामके लिए ही लिखी जानी चाहिए।

अब वह ध्रुव-विजय कर लौट रही थी। उसे देखनेकी दबी हुई और बहुत बार जबर्दस्ती दबा कर रखी गई उत्सुकता एकबएक जाग्रत हो उठी।

उसकी अगवानीके लिए उसी दिन आर्खान्गेल्स्कके लिए प्रस्थान किया।

२

रेलके डब्बेमें सिर्फ दो ही आदमियोंके लिए नरम और साफ़ बिस्तरे लगे थे। मैंने ऊपरका बर्थ दखल किया। मेरे नीचे कोई वेला बजाने-वाले सज्जन थे क्यों कि संगीतज्ञोंके चेहरे तथा हाव-भावके साथ ही साथ जब उन्होंने उस डब्बेमें प्रवेश किया था उनके हाथमें एक वायोलिन झूलता हुआ मैंने देखा था।

डब्बेके वरामदेमें रेडियो लगा था। अभी अभी उसमे क्रेमलिनके घण्टेसे 'इंटरनैशनल 'के स्वरमे बारह बजनेकी आवाज आई थी। यही सोवियत रेडियो स्टेशनोंके प्रत्येक दिनके प्रोग्राम समाप्त करनेका चिह्न है। रेडियो बंद हुआ। मैं सोनेकी तैयारी करने लगा।

नीचेके वर्थपर बैठे संगीतज्ञ अब भी कुछ गुनगुना रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा—"यदि मैं थोड़ी देर वायोलिन बजाऊँ तो इसमे आपको आपत्ति तो न होगी?"

"जी नहीं! आप शौकसे बजायें" मैंने उपरले बर्थपर चढते चढते कहा—"अफ़सोस इतना रहेगा कि मैं संगीतका पारखी नहीं।"

"ऐसा क्यों?"

"पहली बात तो यह है कि संगीत मेरी समझमें ही नहीं आता और दूसरी बात है कि मुझे नींद आ रही है।"

उस दिन शामको मिला रेडियोग्राम मेरी ऑखोंके सामने नाच रहा था और मैं उसीको अपने दिमागमें यथार्थ बनाकर देखना चाहता था।

३

आगेका स्वर कुछ अस्पष्ट पर अंतमे—

"नि–ध–ध–प–म–ग–रे–सा..." के जैसा।

यह क्या? यह संगीत तो मैं जानता हूँ। इसे कहीं सुना है। पर उसके आगेकी गत? बिल्कुल नवीन! कहीं सुनी नहीं। कहीं सुनी नहीं तो फिर ऐसा चौंक क्यों उठता हूँ? अवश्य सुनी होगा।

यह तो उत्तरी देशोंका संगीत नहीं। इसमें पूर्वकी उष्णता और लोगोंके हृदयकी गरम आह है। क्या इटलीके किसी ओपेरेमे सुना है? संभव है गुनो वा वेर्डीकी कीर्ति हो। नहीं, बिल्कुल ग़लत। उसके आगेकी मेलोडी तो इस प्रकारकी नहीं थी।

तब शायद हाडेल, बाख वा बेटहोवेनका स्वर होगा। पर उनके स्टाइलमे तो फिर भी थोड़ा फैशन रह जाता है—यह सादी सीधी मेलोडी तो जर्मन लोगोंकी नहीं हो सकती। यह तो कभी बाज़ारमे बिकते नहीं देखी गई।

यह और भी अधिक उत्तर पूर्वकी होगी। रूसकी। संभव है चाइकोव्स्की गा रहे हैं—'हे सुन्दर निष्ठुर अतीत...'

अतीत। पर इसमे तो और भी एक प्रकारकी झंकार है। फिर भूल। आज क्या मेरा माथा खराब हो गया है? उत्तरकी ओर जाओ। उत्तर और उत्तर! ध्रुव तक पहुँचो।

ठीक कहा। ध्रुवसे ही तो यह सुर आ रहा है। कौन गा रहा है? 'सादको'।

मैं स्वप्न देख रहा था। अपनेको उत्तरी ध्रुवके समुद्री क्षेत्रमे विचरण करनेवाला राजकुमार 'सादको' बना हुआ देख रहा था। वहींपर तो समुद्रमें विहार करनेवाली सफेद रंगकी देव-बाला रहा करती है। वह कितनी सुन्दर है! उसके यहाँ रात्रि कभी होती ही नहीं। काले रंगकी कोई चीज कभी दिखाई ही नहीं देती। सब चीजे स्नोकी-सी सफेद हैं।

स्वर आगे सुनाई दे रहा था।

यह उस देव-बालाकी झकार थी।

झंकार! झकार! झकार!

वह मेरे बिल्कुल निकट आ गई। उसके हाथोंमे वरमाला है। वह आलिंगन करने आ रही है। मेरी ही ओर तो आ रही है। मैं ही तो 'सादको' हूँ।

नहीं, नहीं! स्वप्नमें सब बाते ही उल्टी पल्टी दीखती हैं। मैं तो 'सास्का' हूँ। बेलाका 'सास्का।' पर वह देव-कन्या कौन?

फिर स्वप्नकी भूल।

४

" तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! "

यह क्या ? यह तो रेल चलनेकी आवाज है । वह सुर कहाँ ? झंकार कहाँ ? और देव-कन्या ? लोप हो गई ।

" तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! " रेल । सब लुप्त हुआ । अंधकार हो गया ।

" तैयार होइए । " नीचेके बर्थपरके संगीतज्ञ मुझे जगा रहे थे । मेरी नींद टूट गई ।

" आपकी तो बड़ी ज़बर्दस्त नींद है ! " उन्होने कहा—" अब आर्खांगेल्स्क आया । उठिए । तैयार होइए । "

" आप क्या वायोलिन बजा रहे थे ? " मैंने बर्थसे नीचे कूद उनसे पूछा ।

" जी हाँ । " सहमते हुए उन्होने पूछा—" क्या आपकी नींदमें कुछ खलल पहुँचा ? "

" जी नहीं । ठीक उल्टा । "

वे मुसकराये ।

" आप बजा क्या रहे थे ? "

" चाइकोव्स्कीकी एक सिन्फोनी । "

मैं चुप रहा । उन्होने समझा शायद मुझे उनका बजाना अच्छा नहीं लगा । वे माफी मॉगने लगे—" इसे मैं बहुत कुछ अपने ढगपर बजाता हूँ । "

" इस सुरका नाम क्या दिया है ? "

" सफ़ेद रात्रिका संगीत "

५

जहाजकी एक केबिनपर लिखा था 'प्रोफेसर सिदारेंको'। बिना खटखटाये ही मैंने उसे खोल दिया।

वह प्रोफेसरके सिरहाने बैठी उनके सरपर बर्फ़का थैला रख रही थी। मुझे देखते ही उसने अपने हाथ आगे बढ़ा मुझे अपनी ओर चुपचाप खींच लिया।

प्रोफेसर दाँत कटकटाते हुए कह रहे थे—"मैं चला था गैससे लोगोंको बचाने लेकिन उससे भी भयानक गैससे उन्हे मार डाला। मैंने यह आदमीयतका काम नहीं किया......" वे डेलिरियमकी हालतमे आगे कहते गये—"कहॉ सफल हुआ ? मेरा सारा प्रयत्न ही असफल हुआ। मजदूरोका उतना रक्त उनकी कमाईके रूपमें मुझे मिला—मैंने उससे इंस्टिच्यूट बनाया—लेकिन आदमी मारनेके लिए...असफल..."

वे बडी देर तक ये बाते बकते रहे। जिन भावोको आजतक उन्होंने किसीके सामने व्यक्त नहीं किया था वे ही इस समय फटकर बाहर निकल रहे थे।

बडी देर बाद उन्हे होश आया। उठा कर वे डेकपर लाये गये। सामने सोवियत जनता खडी थी। उन्हे शायद इस समय पूरा पूरा होश आ गया था। माइक्रोफोन अपने सामने खींचते हुए उन्होने कुछ कहना चाहा पर—'तवारिशी...' कह कर ही चुप हो रहे। डाक्टरोने उन्हें बोलनेसे मना किया। सामने खड़े लोग जोरोंसे तालियाँ पीट उनके नामका जयजयकार कर रहे थे। प्रोफेसरने इशारेसे मना किया और धीरेसे कहा—"मेरा गैसका प्रयोग अभी सफल नहीं हुआ।"

"आपकी सफलता असफलता सबमे सारा सोवियत-यूनियन आपके साथ है।" सामने खडे लोग एक स्वरसे चिल्ला उठे।

उनकी आँखे सजल हो आईं। उनके मनमे चलते हुए विचारोका पता लगाना कठिन था पर चेहरा चमकता जा रहा था। मालूम पड़ा जैसे बहुत दिनोसे वे जो प्रयोग करते आ रहे थे और अतमे जिसकी सफलताकी आशासे हाथ धो हताश हो बैठ रहना चाहते थे ठीक उसी समय उनका प्रयोग सफल हो गया है।

६

डाक्टरोकी रायके मुताबिक और वैज्ञानिकोके विदा हो जानेपर भी प्रोफेसर सिदोरेको जहाजपर ही रहे। पूरी तरह चंगा होनेमे उन्हे अधिक समय नहीं लगा। उन्होने अपना आगेका कार्यक्रम तय कर लिया। वे इस बार 'नोवा जेमलिया'मे अपना यत्र लगाना चाहते थे और वहीं उन्हें अपने प्रयोगके सफल होनेकी पूरी उम्मीद थी।

उन्होने बेलाकी ओर देखा। उसका चेहरा कहता हुआ दिखलाई दिया—

"मुझे हिचक नहीं।"

७

सूर्यने अभी अभी समुद्रमे डुबकी लगाई और तुरत ही वह फिर बाहर निकल ऊँचा चढ़ने लगा। वैसे पता लगाना कठिन था पर घड़ी देखनेपर पता लगा—आधी रातका वख्त रहा होगा। सूर्य आकाशके एक किनारे सफेद बादलोंसे लुका-छिपी खेल रहा था।

जहाजकी सीढी हटाई जाने लगी। मुझे याद आया—'मैं तो उससे विदा लेने आया हूँ।'

मैंने उसकी समुद्र-जलके समान साफ नीली आँखोमे देखा।

"अरे! तुम्हे मिलने भी नहीं आता!" कहते हुए प्रोफेसरने हम दोनोका आलिंगन कराया।

धक् धक् ! धक् धक् !

परिचित हृदय-स्पंदन । प्रत्यक्षमे ही स्वप्नकी देव-बालाकी झंकार । वही निराला सुर, ताल, गत । 'सफेद रात्रिके संगीत' से भी मधुर । सारे ब्रह्माण्डका केन्द्रीभूत सुख । जवानीका सुन्दरतम अनुभव ।

और भी धक् धक् ।

पर क्षणिक ।

जहाज खुला । मैं कूद कर जेटीपर आ गया । भारसे लदा जहाज धीरे धीरे आगे बढा । मैं उसके साथ साथ चला । उसने हाथ आगे बढ़ाया । वह मेरे पास तक नहीं पहुँच सका । मैं तेजीसे चलने और उसके बाद ही दौडने लगा । जेटीके छोरपर जा पहुँचा ।

आगे समुद्र ही समुद्र ।

वह ऑखोके ओट हो गई ।

कुछ देरमे जहाज भी ऑखोके ओझल हो गया ।